स्वतन्त्रता आन्दोलन में बुन्देलखण्ड (उ0 प्र0 म0 प्र0) की महिलाओं का योगदान (1857–1947)
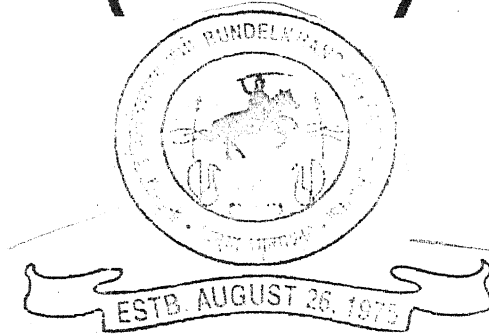
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झांसी में इतिहास विषय की

पी0एच0डी0 की उपाधि हेतु

प्रस्तुत शोध प्रबन्ध

2000
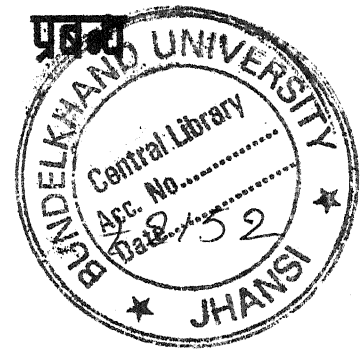
शोध निर्देशिका

डा0 शारदा अग्रवाल

अध्यक्ष इतिहास विभाग

डी0वी0सी0कालेज

उरई जालौन

शोधार्थिनी

श्रीमती स्नेहलता गुप्ता

प्रवक्ता इतिहास

राजकीय महाविद्यालय

मौदहा

डॉ0 शारदा अग्रवाल
प्रवक्ता, इतिहास विभाग
दयानन्द वैदिक डिग्री कालेज
उरई (जालौन) उ0 प्र0

निवास :
मूलचन्द्र पार्क नया रामनगर
उरई (उ0प्र0)-285001
फोन नं0: (05281)252184

पत्रांक-   दिनांक- 1/3/05

प्रमाण पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि श्रीमती स्नेहलता गुप्ता प्रवक्ता इतिहास विभाग मौदहा हमीरपुर ने मेरे निर्देशन में शोध कार्य किया है। यह शोध कार्य मौलिक है। इस शोध कार्य को अथक परिश्रम एवं लगन के साथ 5 वर्ष की अवधि में पूर्ण किया है।

दिनांक-
1/3/05

शोध निर्देशिका
(हस्ताक्षर)
डॉ0 शारदा अग्रवाल
विभागाध्यक्ष इतिहास
डी0वी0(पी.जी.)
कालेज उरई

प्रस्तावना

जंगे आजादी में बुन्देलखण्ड देश और प्रदेश के केन्द्र बिन्दु में स्थित होने से देश की कला एवं संस्कृति का संगम स्थल रहा हैं। यमुना, नर्मदा, बेतवा, चम्बल और टोंस वाला यह क्षेत्र सभी कालों में विदेशियों और विधर्मी सत्ता को चुनौती देता हुआ अपने स्वातन्त्रय प्रेम की पताका सदैव ऊंचे उठाये रहा है। आजादी के लम्बें समय तक चलने वाले आन्दोलन (1857-1947) में इतिहास इस बात का साक्षीं हैं कि हमारा यह भू- भाग भी संघार्ष में पीछे नही रहा है। जिन महान आत्माओं ने उत्सर्ग और बलिदान कर आजादी के लिये अपना सबकुछ न्योछावर कर दिया तथा जो आज हमारे बीच मौजूद हैं उनकी मैं वन्दना करती हूॅ।

'' भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास स्वतन्त्रता के लिये स्त्री पुरूष के सयुंक्त एवं समान संघार्ष की अद्भुत कहानी है। घार का मोर्चा हो या राजनीति का रणक्षेत्र, नारी ने जिस साहस, सहिष्णुता, और वीरता से स्वतन्त्रता संग्राम के लिये अपनी भूमिका निभाई वह इतिहास की धारोहर है।

सन् 1857 का विद्रोह भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का पहला ऐसा विस्फोट था जिसकी नायिका एक नारी थी।उस नारी ने जिस अद्भुत , वीरता, पराक्रम और दिलेरी का परिचय दिया उसके लिये तो स्वंय अंग्रेज शासक भी प्रशंसा किये बगैर न रह सके और सर हृयूरोज को झांसी की रानी लक्ष्मीबाई के अद्भुत पराक्रम से चकित होकर कहना पड़ा कि सैनिक विद्रोह के नेताओं में महारानी झांसी सर्वाधिक बहादुर और सर्वश्रेष्ठ थीं। रामगढ़ की रानी तथा जालौन की ताई बाई ने भी 1857 के रण क्षेत्र में लड़ते लड़ते अपने प्राण त्याग दिये।

सन् 1885 में भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस के जन्म ने महिलाओं को एक राजनीतिक मंच पर खड़ा किया। 1920 में गांधी जी के रचनात्मक कार्यक्रम, सविनय अवज्ञा आन्दोलन, भारत छोड़ो आन्दोलन में महिलाओं ने सक्रिय भाग लिया। अनेकों यातनाओं को सहते हुये महिलाओं ने राजनीतिक कार्यक्षेत्र की बागडोर सभाली।

जिस समय सम्पूर्ण राष्ट्र स्वतन्त्रता आन्दोलन के प्रवाह में बह रहा था उस समय बुन्देलखण्ड उससे कैसे अछूता बचता। श्रीमती राजेन्द्र कुमारी, सरयू देवी, किशोरी देवी, सरस्वती देवी, अनुसुईया देवी, श्रीमती गुजरिया बाई, तुलसा देवी, सुभद्रा कुमारी,

गौतम, श्रीमती मदनदेवी नवल, श्रीमती जमुनादेवी राठी , अनुपमा देवी भदौरिया इत्यादि अनेको महिलायें स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़ी।

अहिसात्मक आन्दोलन में बुन्देलखण्ड की अग्रणी महिलायें ऐतिहासिक अनुसंधान की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। बापू के आह्वान पर नारियों ने एक बार पुनः अपनी मातृभूमि को स्वतन्त्र कराने के लिये अंग्रेजी शासन के विरूद्ध हाथ में शस्त्र थाम लिये तथा सहयोग देकर नवीन अध्याय की सृष्टि की।

मुझे इस शोध प्रबन्ध को पूर्ण करने में डॉ0 शारदा अग्रवाल विभागाध्यक्ष इतिहास एवं शोध निर्देशक का अमूल्य सहयोग मिला है जिसके लिये में ह्दय से आभारी हूँ एवं उन्हे धान्यवाद देती हूँ। विभिन्न पुस्तकालयों जैसे राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली का आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होने इस कार्य में मेरा सहयोग किया है ।

भवदीया

स्नेहलता

श्रीमती स्नेहलता गुप्ता

प्रवक्ता

इतिहास

राजकीय महाविद्यालय

मौदहा हमीरपुर

विषय सूची

प्रथम अध्याय

(अ)बुन्देलखण्ड– भौगोलिक स्थित और विस्तार –(1857–1947)

नामकरण–बुन्देलखण्ड की स्थिति भारत के ठीक मध्य में है । इस जनपद का नाम बुन्देलखण्ड 16 वीं सदी के मध्य में यहाँ बुन्देलो के उत्कर्ष और उनके सत्ता हस्तगत करने के बाद पड़ा। प्राचीन काल इसे विभिन्न नामों से जैसे पुलिन्द, दशार्ण, चेदि, मध्यदेश आदि से जाना जाता था।[1] इसी प्रान्त को आगे चल कर जैजाक भुक्ति नाम भी प्राप्त होता है । इनसाइक्लोपीडिया विट्रानिका में भी बुन्देलखन्ड का जैजाक भुक्ति के रूप में उल्लेख किया गया है। राजा जैजाक का जय शक्ति बडा प्रतापी राजा हुआ और इसके राज्य का विस्तार यमुना से नर्मदा तक बतलाया गया है । इसी नाम पर यमुना से नर्मदा तक का भाग जैजाक भुक्ति कहलाया ।[2]

एक अन्य मत के अनुसार 1545 ई0 में शेरशाह का सामना करने वाला कीरतसिंह या कीरतराय चन्देल ही था 1531 ई0 में हुमॉयू के भी कालिंजर पर आक्रमण कर वहॉ के चन्देल राजा से राज्य कर वसूल करने का उल्लेख मिलता है। यह चंदेल राजा संभवतः कीरत सिंह चन्देल ही रहा होगा । [3]

कुछ विद्वानो के अनुसार चन्देलों के पश्चात इस प्रदेश पर काशी के गहरवार जाति के वशंजो ने अपना आधिपत्य जमाया यह अपने को काशी के गहरवार राजा वीरभद्र के पंचम पुत्र के वंशज मानते हैं । [4] गहरवार जाति के नरेशो ने आगे चलकर अपने नाम के आगे बुन्देला शब्द जोड़ लिया बाद में इन्ही नरेशों के प्रभुत्व से प्रसारित हो सम्पूर्ण प्रदेश का नाम बुन्देलखण्ड हो गया । [5]

बुन्देलखण्ड का भौगोलिक आधार

भारत के मध्य में स्थिति बुन्देलखण्ड की पारम्परिक भौगोलिक भाषाई और सांस्कृतिक सीमायें युग युगान्तर से उत्तर में यमुना, दक्षिण में नर्मदा, पश्चिम उत्तर मे चम्बल और पूर्व उत्तर में टोंस नदियों से निर्धारित होती रही है। [6] बुन्देल खण्ड का प्राचीन नाम दर्शाण था और दर्शाण शब्द का अर्थ है 'दशाजल वाला' । इस प्रकार बुन्देलखण्ड या दर्शाण नाम दस नदियों के कारण पड़ा जो इस प्रकार हैं। धसान. पार्वती. सिन्ध. बेतवा. चम्बल.

जमुना नर्मदा,केन टोंस और जामनेर । [7]भारत का वयोवृद्ध पर्वत विन्ध्याचल इस भूभाग का एक मात्र पर्वत है, उत्तर में इस पर्वत की भाड़ेर कुलपहाड़ , तथा चित्रकूट की श्रेणियाँ हैं इसी प्रकार पूर्व में पन्ना और विजावर की पर्वत श्रेणियाँ दूर तक फैली हुईहैं। इन पर्वत मालाओं में वे धसान, केन, टोंस, मन्दाकिनी ,पयस्वनी ,आदि नदियाँ अपनी अनेक शाखाओं सहित सर्पिणी की भाँति लटकी हुई हैं । 8जालौन की चौरासी परगने की भूमि दक्षिण पश्चिम में हवेली कुटरी, काठर,खटोला और मालवा के उपजाऊ प्रदेश उत्तर पश्चिम में कछेडवा और मालवा के हरे भरें भाग दूर दूर तक फैले हैं । 9

बुन्देलखाण्ड सदैव से ही केन्द्रीय सत्ता के लिये सिर दर्द का कारण रहा है उसे कभी भी पूर्ण रूप से नियंत्रित अथवा स्थाई रूप से केन्द्रीय शासन या प्रान्तीय सरकार के आधीन नही लाया जा सका उदाहरण के लिये दिल्ली सुलतानों के काल में कुतुबुद्दीन एबक 1203–10 से लेकर शेरशाह सूरी 1540–45 के समय तक इसे बार बार जीता गया और बार बार खो भी दिया गया शेरशाह की तो मृत्यु हीं कालिंजर के घेरे में हुई । शाही मुगलों के काल में विशेषकर अकबर जहाँगीर शाहजहाँ और औरंगजेब के समय में बुन्देलखाण्ड पर मुगलों की प्रभुसत्ता में स्थिरता आई लेकिन तब भी ओरछे के मधुकरशाह, वीरसिंह देव, जुझार सिंह , चम्पतराय और पन्ना के छत्रसाल उसे यथा अवसर सालतेही रहे । 10

मराठों के अर्न्तगत भी बुन्देलखाण्ड में इसी स्थिति की पुनरावृत्ति होती रही पर अंग्रेज शासकों नें कूटनीति से काम लिया वे विभाजन करने की नीति में सिद्वहस्त थे अतः उन्होने सम्पूर्ण बुन्देलखाण्ड को तीन भागों मेंविभाजित कर दिया एक भाग संयुक्त प्रान्त में मिला दिया गया । दूसरा सेन्ट्रल इंडिया (मध्यभारत) में जोड़ दिया गया और तीसरा अंग्रेजों के पिठ्ठू बुन्देलखाण्ड के रजवाडों को उनकी सेवाओं के लिये सौंप दिया गया । 11बुन्देलखाण्ड क्षेत्र के अर्न्तगत उत्तर प्रदेश के झाँसी, जालौन, बाँदा और हमीरपुर जिले तथा भूतपूर्व बुन्देलखाण्ड एजेंसी के ओरछा दतिया, समथर, पन्ना ,चरखारी ,विजावर,अजयगढ,छतरपुर ,अलीपुरा ,टोडी फतेहपुर, विजना पहाड़ी

कामता,रजौला, पालदेव, पथरा,ढराव, गहरौली, गौरिहार, जसोह, जिगनी,खनियाधाना,लुगासी ,नौगाव, सरीला आदि देशी राज्यो एवं जागीरें शामिल थी । 12

इस प्रकार संयुक्त प्रान्त (अब उत्तर प्रदेश)में बुन्देलखण्ड के जो प्रदेश जोडें गये उसमें झाँसी ,बाँदा,हमीरपुर,जालौन और ललितपुर के जिले निर्मित हुये सेंट्रल इण्डिया में जो बुन्देलखण्डी संभाग मिले उनसे सागर, दमोह, नरसिंहपुर और जबलपुर के जिले बन गये । 13

अतः भारत स्वतंत्र होने पर उपयुक्त सभी राज्यों और जागीरों का आधुनिक उत्तर प्रदेश और मध्यप्रदेश के प्रान्तों में विलीनीकरण करने के पश्चात बुन्देलखण्ड जनपद अब उत्तर प्रदेश और मध यप्रदेश के जिलों में बँट गया है । उत्तर प्रदेश में झाँसी ,ललितपुर,बाँदा, हमीरपुर और जालौन जबकि मध्य प्रदेश में जो जिलें आते है उसके अन्तर्गत टीकमगढ ,दतिया, पन्ना,छतरपुर,सागर,दमोह, विदिशा, जबलपुर और नरसिंहगढ, गुना क्षेत्र के चन्देरी ,मूंगावली,ग्वालियर के भांडेर और शिवपुरी जिले के करेहरा संभाग भी बुन्देलखण्ड के ही भाग है । 14

महान भूगोलवेत्ता **स्पाक** ने यमुना के दक्षिणी मैदानी भाग से लेकर रीवा के पठार तक इसका विस्तार बताया है किन्तु **डा0 आर0एल0सिंह** अपनी पुस्तक इण्डिया रीजनल ज्योग्राफी में बुन्देलखाण्ड के अन्तर्गत मध्य प्रदेश के पन्ना, दतिया,छतरपुर,टीकमगढ,एवं **ग्वालियर** के **भाण्डेर** व भिण्ड के**लहारतहसील** एवं उत्तर प्रदेश के **हमीरपुर, झाँसी, ललितपुर, जालौन, तथा, बाँदा,जिलों** को सम्मिलित किया है । बुन्देलखण्ड के इस क्षेत्र में ऐतिहासिक एंव सांस्कृतिक द्रष्टिकोण से भौगोलिक परिवेश में बहुत सी असमानतायें दृष्टिगोचर होती है ।मैने वर्णित इस क्षेत्र में उस हिस्से को जहाँ आज भी बोलचाल में बुन्देलखण्ड का व्यवहारिक हिस्सा माना जाता है अध्ययन क्षेत्र माना है । इस द्रष्टि से मेरे अध्ययन क्षेत्र उ0प्र0 के पाँच जिले हमीरपुर, झाँसी, बाँदा, ललितपुर तथा जालौन तथा मध्यप्रदेशके सागर, जबलपुर, पन्ना,टीकमगढ,विदिशा,नरसिंहपुर,छतरपुर,दतिया तथा बुन्देलखण्ड के अन्तर्गत आने वाली देशी रियासतें शामिल है ।

<u>सीमा</u>–ऐलेक्जेण्डर कनिंघम ने बुन्देलखाण्ड की सीमा प्राचीन जुझौती प्रदेश की सीमा ही अर्थात यमुना से नर्मदा और वेतवा से विन्ध्यवासिनी तक मानी है ।[15]

विट्रिश शासन काल में इसके मानचित्र में सीमांकन 660 48' से 26^{0}26 तक रेखाकिंत किया गया हैं ।[16]

बुन्देलखाण्ड की बोली बुन्देली है तथा यहाँ यमुना और नर्मदा के मध्य की सिन्ध पहुँज, वेतवा,धसान,सोनार , बीला और केन के कछारी भूभाग के ग्रामीण अंचलो में बोली और समझी जाती है जिसके केन्द्रीय स्थल झाँसी टीकमगढ और सागर हैं ।[17]

यहाँ नर्मदा से यमुना के मध्य के क्षेत्र के लोगों का सामाजिक जीवन व्रत त्योहार,वेषभूषा,वस्त्राभूषण और नित्यप्रति की दैनिक क्रियायें समान है।

(ब) स्वतंन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाली महिलाओं की सामाजिक आर्थिक व शैक्षिक पृष्ठभूमि –

महिलाओं की सामाजिक दशा–

पश्चिमी जगत का भारतीय सभ्यता पर सबसे बड़ा प्रभाव पुरुष और महिलाओं के रिश्तों पर पड़ा। पुरुषों के मामले में पश्चिमी सभ्यता ने एक नई सोच पैदा की, लोगों मे पुरानी रूढ़िवादी प्रथाओं के विरुद्व एक नई चेतना जाग्रत की । पश्चिमी मानसिकता की बजह से पुरुष एवं महिलाओं की आर्थिक सामाजिक एवं राजनैतिक मानसिकता में बदलाव आया । लेकिन ये सब महिलाओं में पुरुषों की अपेक्षा धीमी गति से प्रभावित हुआ। लेकिन वह भी इस नई सोच के प्रति जाग्रत हुई ।यदि पुरुषों ने पश्चिमी सभ्यता के प्रभाव से अपने को एक नये भारत का नागरिक माना तो महिलाओं ने भी अपने आपको नये सामाजिक नियमों के अर्न्तगत मानवीय सम्मान को प्राप्त किया। [18]

पुरुष एवं महिलाएं समाज के दो महत्वपूर्ण पहलू हैं और उन्होने हमेशा सुख एवं दुख में बराबर रूप से सहभागिता निभाई है ।जहॉ एक तरफ पुरुषों ने अपने आप को गुलामी से आजाद कराने की कोशिश की वहीं दूसरी ओर महिलाये भी इस क्षेत्र मे पीछे नही रहीं ।भारत का सम्पूर्ण इतिहास पुरुष एवं महिला दोनो के बहादुरी पूर्ण कृत्येंा से भरा पड़ा है ।इसमे उन्होने अपनी मातृभूमि की सफलता के लिये संघर्ष किया । भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका रही ।महिलाओं का संग्राम के प्रारंभिक समय मे सामाजिक आर्थिक दशा का कोई स्वतंत्र रूप नही था । 19वी शताब्दी के मध्य तक यह धारणां थी कि महिलाएं केवल घरेलू कामकाज के लिए ही सीमित हैं और उनका स्थान केवल रसोईघर में ही बेहतर है । **मार्गरेट कजिन्स** जो कि **वूमेन्स इण्डिया एशोसियेसन** की सस्थंा की सस्थंापक थीं और उनमे से एक जिन्होने लगभग 30 वर्ष तक महिलाओं की दशा सुधारने के लिये काम किया और लोगों के सामने महिलाओं की दयनीय सामाजिक स्थिति का यर्थाथ चित्रण किया । उनके अनुसार पूरे भारत वर्ष मे महिलाओं की शैक्षिक सामाजिक व आर्थिक स्थिति लगभग एक जैसी थी जो कि बहुत बुरी थी । [19]

31 अगस्त 1866 को फेंड आफ इंडिया नामक संस्था ने

महिलाओं के बारे मे उपरोक्त विचारें का सर्मथन करते हुये कहा कि महिलाओं को जन्म से लेकर पूरे जीवन तक कई प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता था, उनको बालविवाह जैसी कुप्रथाओं का सामना पड़ता था तथा पूरे जीवन चारदीवारी के अन्दर बंध कर रहना पड़ता था। प्रत्येक वर्ग की महिलाओं की दशा एक जैसी थी उनमे केवल धार्मिक एवं परिवार के सामान्य नियमों का अन्तर था। वह अपने चारों तरफ के संसार से पूरी तरह से अपरिचित थीं और संसार को भी उनके बारे मे अधिक जानकारी नही थी।महिलाओं के मानसिक स्तर को सामाजिक रीति रिवाजों के माध्यम से दबा दिया गया था उनको सही और गलत करने का निर्णय का अधिकार नही था।उनका जीवन पशुओं के सदृश था।[20]

19वी शताब्दी के पूर्वाद्ध में बुन्देली समाज में महिलाओं की दशा–

19वी शताब्दी मे भारत के सभी हिस्सों मे महिलाओं की सामाजिक आर्थिक एवं शैक्षिक दशा ठीक नहीं थी उन्हे स्वतंत्र रुप से कुछ भी करने की छूट नहीं थीं। बुन्देलखाण्ड जैसे पिछड़े क्षेत्र में महिलाओं का समाज मे स्वतंत्र रुप से कोई अस्तित्व नहीं था। समाज में बहुत सी कुप्रथायें जैसे बाल विवाह, लड़की को जन्म के समय मार डालना, विधवाओं की दयनीय दशा और महिलाओं को शिक्षा से दूर रखाना इत्यादि मौजूद थीं। इन कुप्रथाओं की वजह से भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन मे महिलाओं की भूमिका प्रभावित हुई।[21]

बुन्देलखाण्ड मे स्त्रियों को जन्म से लेकर मृत्यु तक अपने माता पिता, पति और पुत्र के और उनके आभाव मे किसी रिश्तेदार के संरक्षण मे रहना पड़ता था। कन्या का जन्म परिवार के लिये दुखा का कारणं होता था पतिव्रत धर्म को सर्वाधिक महत्व दिया जाता था क्षत्रियों मे **जौहर की प्रथा** आम थी बुन्देलखाण्ड मे स्थान स्थान पर सती चौरा और सती स्तंभ पाये जाते हैं विधवा को समाज मे अपेक्षित जीवन व्यतीत करना पड़ता था। वह न अच्छे वस्त्र धारण कर सकती थी और न आभूषणं पहन सकती थी। उसे उत्सव समारोहों तथा बाग बगीचों मे जाना भी वर्जित था। बाँझ का जीवन भी ताने सुनते ही बीतता था।[22]

स्त्रियां सभी तरह से अपने स्वामी के आधीन रहती थीं।उनकी सेवा

करना और उनकी इच्छा के अनुकूल कार्य करना उनका परम धर्म माना जाता था। उनके लिये पति ही परमेश्वर था वह कैसा भी हो उसका साथ निभाना और उसकी मन लगाकर सेंवा करना ही पत्नी के लिये मुक्ति का मार्ग समझा जाता था।

पर्दा प्रथा

प्राचीन समाज मे पर्दा प्रथा का कोई इतिहास नही मिलता है लेकिन धीरे धीरे यह प्रथा हिन्दु समाज में अपना स्थान बनाती गई प्रारंभ मे यह प्रथा महिलाओं को घुसपैठियों से होने वाले अपमान एवं सम्मान की सुरक्षा हेतु की गई थी।[23] लेकिन बुन्देलखण्ड में ब्राम्हण , क्षत्रिय और वैश्य तीनो ही वर्णों में घूंघट निकालने की प्रथा आरम्भ हो गई पर निम्न वर्गों की स्त्रियों में इस प्रथा का प्रचार कम अथवा उतना नहीं था क्योंकि अपने दैनिक सेवा कार्यो के लिये इसमें उन्हें असुविधा होती थी।

बालहत्या

इसके अतिरिक्त उच्च जाति के हिन्दुओं में लड़की का जन्म बहुत ही असुभ माना जाता था और खासकर राजपूतों के अनुसार उनके लिये यह दिन सबसे बुरा है जबकि उनके यहॅा लड़की जन्म लेती है।[24] और इन्ही सब मान्यताओं और कुप्रथाओं के चलते लड़कियो को जन्म के तुरंत बाद मार डालने की प्रथा प्रचलित थी। 1853 में एक सर्वेक्षण मे यह पाया गया था कि उत्तर प्रदेश, पंजाब, राजस्थान और गुजरात में बालहत्या सर्वाधिक प्रचलित थी।

बहुविवाह

पुरुषों मे कई विवाह करने का प्रावधान था यह प्रथा मुख्यतः हिन्दु राजाओं एवं कुछ उच्च वर्ग मे प्रचलित थी लेकिन विधवाओं को विवाह करने का अधिकार नही था बंगाल में यह प्रथा कुलीन ब्राम्हणों मे मौजूद थी एक कुलीन जो कि 100 पत्नियों से विवाह कर लेता था वह सम्मान का पात्र होता था।

मुसलमानों में पुरुषों में कई विवाह करने का धार्मिक रुप से अधिकार प्राप्त था धनवान मुसलमानों मे कई शादियां करना एक नियम था।यह पश्चिम पंजाब मे रहने बाले मुस्लिम परिवार में शौक एवं सम्मान का कार्य था।यहॉ तक कि पुरुष काफी उम्र के बाद भी नयी उम्र की लड़की से विवाह करने का अधिकार रखता था।[25]

आर्थिक दशा (बुन्देलखण्ड के सन्दर्भ में)

20वीं शताब्दी के दूसरे व तीसरे दशक में बुन्देलखान्ड के देशी राज्यों की दशा अत्यंत सोचनीय थी और इसका कारण जनता में भयंकर असंतोश व्याप्त था। राजाओं के निजी व्यय उनके भोग विलास के कारण इतने बढ़ चले थे । कि राज्य की आय का एक बडा भाग उनके स्वयं के ऊपर र्खच होता था और जनकल्यांण की योजनाओं के लिये बहुधा धन का आभाव रहता था। राजाओं ने भिन्न भ्न्नि प्रकार के ऐसे कर लगा रखे थे जिनको चुका पाना प्रजा के लिये संभव नही था।

इनकरोंमे चरूहरोका, यड़वा, कास्तचुजयावन मड़वाशादी,मइआ,गुलयावन ,चुलयावन,महूटा,नजराना,जजियों,पान की जमीन का कर भरने पर चौथ, निकासी मलवा,विधावा के पुर्नविवाह पर कर इत्यादि सम्मलित थे। पिता के मरने पर चौथवी की जाती थी। लगान पर आधा आना प्रति रूपया के हिसाब से नजराना लिया जाता था।

खेत मे बनाई गई मड़इया मे जो लकड़ी उपयोग की जाती थी उस पर मड़वा कास्त नामक कर लगता था।हल के लिये ली गई लकड़ी पर हरौका देना होता था तथा महुओं के फल एकत्रित करने के लिये प्रति पेड़ महटा का कर देना होता था।जंगल मे जानवरों को चराने के लिये चरू लगती थी।बोयाई कर भी लगता था।चौकीदारी मदरसा बगैरह के लिये के लिये दामी देनी पड़ती थी।[26]

किसान और व्यापारी इन करों के फलस्वरूप अत्यधिक परेशान व हैरान थे। इन राज्यों में लगान की दरें भी बहुत अधिक थी । कुल मिलाकर हालत ऐसी थी जिससे जीना दूभर था और जनजीवन मे घोर निराशा थी। केवल करों की ही समस्या नही थी। उसके अतिरिक्त हरिजन आदिवासियों से भी बेगार ली जाती थी और राज्य के अधिकारियों व र्कमचारियों के अतिरिक्त जागीरदारों, जमीदारों व उनके कारिन्दों को भी प्रत्येक प्रकार का अन्याय करने की खुली छूट थी।[27] सन् 1930 मे आर्थिक मंदी के कारण अनाज की कीमत आधी रह गई थीजो कोदों सन्1920 में रुपये की 16 सेर के भाव से बिकती थी वह सन् 1931 मे घट कर 30 सेर प्रति रुपया हो गई थी । गैर सरकारी सूत्रों के अनुसार इस वर्ष ज्वार

तथा जवा 1 रुपया के 60 सेर गेहूं प्रति रुपये ,25–30 सेर सरसों का तेल 12सेर प्रति रुपया व घी 12 सेर प्रति रुपया था। कंगाली मे आटा गीला हो गया था।[28] एक तो वेसे ही करों का बोझ वहन कर सकने में जनता असमर्थ थी दूसरे इस मन्दी ने स्थिति को पहले से बदतर बना दिया और फलस्वरूप जनता विद्रोह करने को बिवश हो गई विद्रोह की आग भड़काने मे वसूली के दौरान शासन द्वारा की जाने बाली सख्तियों ने भी बड़ा योगदान दिया । वसूली के दौरान कास्तकारों की निर्ममतापूर्वक मारपीट की जाती थी । उनकी छाती पर पत्थर रखाकर उनपर राज्य कर्मचारी चढ़ते थे और हर प्रकार से उन्हे बेइज्जत करते थे ।

कुछ लोग स्त्रियों के आभूषण आदि बेचकर चुका दिया करते थे परन्तु अधिकांश कास्तकारों के लिये यह मार्ग भी खुला नहीं था।[29] बुन्देलखण्ड के दोषी राज्यों की जनता जब इस प्रकार अत्याचारों और अनाचारों की चक्की मे पीसी जा रही थी,तो उनका ब्रिट्रिश सरकार के प्रति आक्रोसित होना स्वभाविक ही था और इसकी प्रतिक्रिया स्वरूप सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड की जनता चाहे वह नर हो या नारी आन्दोलन के लिये खड़ी हो गई। [30]

स्त्रियों की शिक्षा

स्त्रियों मे शिक्षा का आभाव बहुत हद तक उनकी सामाजिक दुर्दशा के लिये जिम्मेदार था । ब्रिटिश सरकार ने बहुत पहले से ही इस क्षेत्र मे कदम उठाने प्रारंभ कर दिये थे और इस कार्य मे ईसाई मिश्नरियां पहले से ही कार्य कर रहीं थी हालाकि उनका यह कार्य बहुत धीमी गति से हुआ क्योंकि महिला अध्यापकों की पहले से कमी थी । इस बात की पुष्टि 1881–82 मे किये गये सर्वेक्षण से होती है । इस सर्वेक्षण के अनुसार पूरे भारत वर्ष मे लड़कियों की संख्या 515 थी।[31] बालविवाह और पर्दाप्रथा जैसी कुरीतियाँ भी लड़कियों की शिक्षा मे बाधक थी। लड़कियों से यह आशा नही की जाती थी कि बे बाहर जाकर काम करें और उनकी शिक्षा इसलिये आवश्यक नही समझी जाती थी।

किताबें केवल लड़कों की आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध थीं और लड़कियों के लिये यह पुस्तकें अनुपयोगी मानी जाती थीं।[32]

दादा भाई नौरोजी के प्रयासों से चार नये विद्यालय खोले गये इन स्कूलों मे शिक्षण का कार्य कालेज के विद्यार्थियों को दिया गया।[33] मद्रास मे सर्वप्रथम स्त्रियों की शिक्षा कार्य ईसाई मिशनरियों द्वारा किया गया 1881 मे पहली बार स्काटिश चर्च से सम्बंधित मिश्नरियों ने हिन्दू महिलाओं की शिक्षा के लिये कार्य करना प्रारभं कर दिया और भारतीय तथा यूरोपियन के सयुंक्त प्रयास से सर्वप्रथम 1845 मे पहला बालिका विद्यालय खोला गया ।

उत्तर प्रदेश मे लड़कियों की दशा बहुत ही खराब थी यह इस बात से प्रमाणित होता हैकि बहुत से बालिका विधालय मे केवल एक ही इस्पेक्टर गोपाल सिंह थे । लेकिन गोपाल सिंह ने इस दिशा मे बहुत ही अच्छा कार्य किया उन्होने बालिकाविधालयों के लिये सरकारी सहायता प्राप्त करने की दिशा मे सफलता पूर्वक कार्य किया । इस बालिका विधालय मे सभी वर्गों की लड़कियां शिक्षा प्राप्त करतीं थी । सभी वर्ग की बालिकाओं की शिक्षा व्यवस्था एक होने के कारण उनमे एकता हो गई तथा ऊंचनीच की भावना खत्म हो गई।[34]

निष्कर्ष

प्रश्न यह उठता है कि जिस समाज मे स्त्रियों की दशा दयनीय हो जहाँ ब्राम्हणों मे रक्त की शुद्धता .स्त्री सतीत्व की रक्षा और हिन्दू धर्म की रक्षा के नाम पर उसे इतने अधिक सामाजिक बन्धनो मे जकड़ दिया था कि उसके स्वतंत्र अस्तितव का कोई निशान न रहा था वहीं भारतवर्ष की स्त्रियाँ किन कारणों के परिणाम स्वरूप पुरूषों के कन्धो से कन्धा मिला कर सवतंत्रता के रणक्षेत्र में कूॅद पडी। उस समय स्त्रियों में पिछड़े पन का मूल कारण अन्धविश्वास,अज्ञानता और निरक्षरता था। लेकिन भारत मे बिट्रिश राज्य के प्रभाव से तथा शिक्षा का माध्यम विदेशी कर दिये जाने से भरतीय जीवन पद्धति और राज्यीय चरित्र मे कान्तिकारी परिवर्तन आया । भारत मे विदेषी माल की खपत के कारण कुटीर उद्योग धन्धे बन्द हो गये और संयुक्त परिवार बिखर गये। आर्थिक दशा का प्रभाव महिलाओं की स्थिति पर भी पड़ा आर्थिक दृष्टि से जब पुरुष कमजोर होता गया तो इस निर्बलता का प्रभाव महिलाओं के दैनिक जीवन पर भी पड़ा परिणाम स्वरूप परिवारपतन की ओर

अग्रसर होने लगे महिलाएं अपनी दीनहीनता के कारण बच्चों की परवरिश मे महत्वपूर्ण भूमिका न निभा सकीं। अग्रेंजो द्वारा किये गये अकथनीय अत्याचार से पुरुषों मे विद्रोह की भावना घर कर गई । यही विद्रोह की ज्वाला महिलाओं को भी स्वतंत्रता आन्दोलन में भाग लेने के लिये खींच लाई।

इसके अतिरिक्त समाज सुधारकों के प्रयत्नों के द्वारा सामाजिक बुराइयों को नष्ट किया जाने लगा राजा राममोहन राय ,ईश्वरचन्द्र विद्यासागर ,स्वामी दयानन्द , महार्षि कर्वे जैसे समाज सुधारकों का ध्यान सामाजिक सुधार व स्त्री शिक्षा की ओर साथ–साथ गया और उन्होने सती प्रथा उन्मूलन बाल विवाह पर प्रतिबंध तथा विधवा पुर्नविवाह की स्वीकृति प्रदान कर तथा स्त्रियों के सम्पत्ति अधिकार जैसे कानून बनाकर उन्हे सामाजिक अन्याय से राहत प्रदान कराई तथा दूसरी ओर उनकी शिक्षा के प्रबंध किये गये । इन प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप नारी में जाग्रति आई और नारी प्रगति के कारण इस अवधि में नारी ने अपनी सामाजिक पराधीनता और राजनीतिक पराधीनता की बेड़ियां काटने के लिये एक साथ संघर्ष किया तथा इसके लिये एक लक्ष्य एक मार्ग निर्धारित किया।

सन्दर्भ सूची

1– हेमचन्द्र राय चौधरी''पालिटिकल हिस्ट्री आफ एंशियेन्ट इण्डिया '' पृष्ठ सं0 68

2– डा0 कृष्ण लाल हंस ''बुन्देली और उसका क्षेत्रीय रूप'' पृष्ठ सं0 5

3– डा0 ईश्वरी प्रसाद ''दलाइफ एण्ड टाइम्स आफ हुमायूँ'' पृष्ठ सं0 49

4– डा0 भगवान दास गुप्ता ''महाराजा छत्रसाल बुन्देला ''पृष्ठ सं018

5– मधुकर पक्षिक– 1943 पृष्ठ सं0 49

6– एस0 एन0 बोस0 ''हिस्ट्री आफ चन्देला '' पृष्ठ 42

7– मोतीलाल त्रिपाठी ''बुन्देल खण्ड दर्शन '' पृष्ठ 27

8– भगवान दास श्रीवास्तव''बुन्देलों का इतिहास '' पृष्ठ सं020

9– वही पृष्ठ सं0 20

10– भगवान दास गुप्ता ''मुगलों के अर्न्तगत बुन्देलखण्ड का सामाजिक ''आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास'' पृष्ठ 3

11– भगवान दास गुप्ता –''मुगलों के अर्न्तगत बुन्देलखण्ड का सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास'' पृष्ठ

12– इन्ट्रोडक्ट्री नोट ए डिस्क्रीप्टिव लिस्ट आफ रिकार्डस आफ दि बुन्देलखण्ठ पालिटिकल एजेन्सी –राष्ट्रीय अभिलेखागार

13– एचिसन –''ट्रीटीज एंगेजमेन्ट्स एण्ड सनदस '' भाग 5 पृष्ठ सं0 46

14– भगवान दास गुप्ता ''मुगलों के अर्न्तगत बुन्देलखण्ड का सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास'' पृष्ठ 3

15– एलेक्जेण्डर कंनिघम –''दि एनसिऐंट ज्योग्राफी आफ इण्डिया'' पृष्ठ 406

16– रमेशचन्द्र श्रीवास्तव–बुन्देलखण्ड का सामाजिक ऐतिहासिक सांस्कृतिक वैभव पृष्ठ सं03

17– सर एम0 पी0 जायसवाल –ए ''ज्योग्राफी स्टडी आफ बुन्देलखण्ड'' पृष्ठ 9

18– ओ मैली मार्डन इण्डिया एण्ड द वेस्ट आक्सफोर्ड 1941 पृष्ठ 445

19– मार्गरेट कजिन्स इण्डिया वूमेन हुड टुडे इलाहाबाद 1914 पृष्ठ 15

20– फ्रेड्स आफ इण्डिया –''अगस्त 31 1866 इलाहाबादपृष्ठ15

21– मनमोहन कौर –स्टर्लिंग पब्लिकेशन नई दिल्ली स्वतन्त्रता संघार्षमें भारत की महिलायें पृष्ठ सं0 6

22– कवि प्रिया केशव–''रचित ''पृष्ठ 122,174 खाण्ड ।

23– भगवान दास गुप्ता –''बुन्देलखाण्ड का सामाजिक आर्थिक और सांस्कृतिक इतिहास

24– टाड –''राजस्थान का इतिहास ''पृष्ठ 50

25 बुच –''राइसएण्ड ग्रांथ आफ इण्डिया लिपेृशलिज्म बडौदा 1936 पृष्ठ 53

26– उत्सर्ग मध्य प्रदेश विशोषांक पृष्ठ 136

27– वही पृष्ठ 136

28– उत्सर्ग मध्य प्रदेश सन्देश पृष्ठ 136

29– वही पृष्ठ 136

30– वही पृष्ठ 136

31– सेन्सस फॉर इण्डिया 1881 खाण्ड 1 पृष्ठ 254

32– 1881–82 की भारतीय शिक्षा कमेटी की रिर्पोट पृष्ठ 521

33– वही पृष्ठ 524

34– मनमोहन कौर –'' भारत के स्वतंत्रता संघार्ष में महिलायें पृष्ठ संख्या 25

द्वितीय अध्याय

1857 का विद्रोह और बुन्देलखण्ड की महिलायें

भारत में 1857 के स्वातंत्रय समर की पृष्ठभूमि एवं विकास–

भारत में जब जब राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता का अवरोहण हुआ तब तब उसें न केवल दौर्वल्य का दँश झेलना पडा अपितु आजादी का अवसाद भी अंगीकार करना पड़ा है । भारतीय परतन्त्रता के पार्श्व में भारतीय भ्रातृत्व की भित्तियों का कमजोर होना एक मूल कारण रहा है ।[1]

भारत के सम्राटों और नबाबों की विलासिता दायित्व विमुखता एवं विद्धेषता के कारण विदेशी अर्थजीवियों ने यहाँ पर अत्यधिक अर्थाजन किया जिसमें से ईस्ट इण्डिया कम्पनी कीं प्रमुखता रहीं मुगल शासन के बाद विदेशी व्यापार को विनष्ट किया जाने लगा, ' किसान हताश होने लगें,[1] ' आपसी फूट के कारण देशी रियासतो की ' पराजय होने लगी । गोरे लोग सफलता के सोपान पार करने लगे । 1757 के ' प्लासी के युद्ध में प्राच्य धरा में आंग्लवाद का आरोहण हुआ जों जों आगे चलकर विट्रिश साम्राज्य के रूप में विकसित हुआ ।[2]

लार्ड क्लाइव ने 1757 की जिस समरधरा में ' आंग्ल सामृाज्य की स्थापना की द्रष्टि से प्लासी कें रणक्षेत्र में भारतीय दासता की जो दागबेल लगाई थी उसी समय 1857 की क्रान्ति की आधार भूमि तैयार हो गई थी ।

कारतूसों में चरबी का प्रयोग, लार्ड डलहौजी कीं राज्य हड़पने की नीति को ही कुछ अंग्रेज एवं भारतीय इतिहास कारों ने सत्तानवी समर कें निर्णायक तथ्यों कें रूप में वकालत की है जो कि सत्य नहीं है । चर्बी के प्रयोग कों 1857 कें स्वातंत्रय समर में धृताग्नि तो माना जा सकता है किन्तु प्रमुख निर्धारक तत्व नहीं । वारेन हेस्टिंग्स, लार्ड डलहौजी एवं लार्ड वेलेजली जैसे गर्वनर जनरल के कारनामों नें भारत में असन्तोष एवं आक्रोश कों जरूर आमंत्रित किया था लेकिन प्लासी के समर एवं ईष्ट इण्डिया कम्पनी की कुत्सित कोरव से 1857 के स्वातंत्रय समर का जन्म हुआ ।[3]

सम्राट हर्षवर्धन के काल से लेकर 16 वीं सदी के पूर्वतक भारत में अव्यवस्था एवं दौर्बल्य का दौर रहा जिसके फलस्वरूप 1526 में बाबर ने भारत में मुगल साम्राज्य की नींव डाली । मुगलकाल समृद्धता के लिये विख्यात था । भारत इस समय किसी भी यूरोपीय राष्ट्र से अधिक सम्पन्न एवं सभ्य था उसकी सम्पन्नता ही यूरोपीय राष्ट्रों के व्यापारियों के आकर्षण का प्रमुख कारण थी ।

भारतीय वाणिज्यक उत्कर्षता ही भारत में विदेशी व्यापारियों के आकर्षण का केन्द्र रहीं । भारत की पहले पहल खोज की पुर्तगाल निवासी वास्कोडिगामा ने । उत्तरी अंतरीप का चक्कर लगा 22 मई 1498 को वह भारत के पश्चिमी तट पर कालीकट आ पहुंचा । कालीकट के राजा जमोरिन ने भारतीय अतिथि परम्परा निभाई पर चतुर बनिये ने अपने उन्नत प्रकार के हथियारों के बल पर राजधानी लूट ली ।[4]

भारत में इसके बाद 1608 में कैप्टन हांकिन्स इंग्लैड से जेम्स प्रथम का मुगल सम्राट के नाम पत्र लेकर भारत आया परन्तु व्यापारियों के विरोध से उसे सूरत में ही रूकना पड़ा । 1612 में अंग्रेजी नौ सेना के कैप्टन नें पुर्तगाली सैनिकों को हरा दिया । अब सूरत तथा हुगली में अंग्रेजो व्यापारिक कोठियाँ बन गईं उन्होने धीरे – धीरे मद्रास और कलकत्ता में भी अपने पैंर जमा लिये । एक अंग्रेज डाक्टर ने जहाँगीर की लड़की को और शाहशुजा की बेगम को अपने इलाज से चंगा किया तो अंग्रेजो कोभारत से व्यापार करने कीं अनुमति और सुविधायें भी मिल गईं ।[5] हिन्दुस्तान के तवारीख में सम्राट जहाँगीर की यह एक बड़ी भूल थी ।[6] कम्पनी ने भारत और पूर्वी देशों से होने वाले व्यापार पर[7]

अपना एकाधिकार इसलियें चाहा ताकि दूसरे अंग्रेज या यूरोपीय सौदागर और व्यापारिक कम्पनियाँ उससे प्रतिस्पर्धा न कर सकें ।[8]

इस लिये बंगाल का चयन कम्पनी ने कई बातों को ध्यान में रखकर किया था । बंगाल की खाड़ी से सेना अत्यन्त सुगमता से प्रवेश कर सकती थी साथ ही यह पूरा क्षेत्र समृद्ध था । अंग्रेजो ने भारत के बंगाल प्रान्त में भितरघात को अंकुरित किया । कम्पनी के कुछ ईसइियों ने हिन्दुओं के साथ मिलकर मुस्लिम शासको के विरूद्ध मोर्चा खोला । अंग्रेज षड़यन्त्रकारियों ने हिन्दुओं साथ मिलकर मुस्लिम शासकों के विरूद्ध मोर्चा खोला । अंग्रेज षड़यन्त्रकारी कर्नल स्टाफ तथा कलकत्ते के एक व्यापारी अमीचन्द ने भारत में दगावाजी की नींव डाली । लार्ड क्लाइव ने मीरजाफर जैसे धोखेबाज से मिलकर 1757 कें प्लासी के युद्ध को फतह किया और भारत में अंग्रेजी साम्राज्य की नींव डाली । इसके बाद ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने भारत का जमकर आर्थिक दोहन किया ।

प्लासी के युद्ध को अंकेले अंग्रेजों द्वारा जीता जाना संभव नहीं था । इस युद्ध में नबाब सिराजुद्दौला को अंग्रेजो ने नहीं अपितु सेठ अभीचन्द मीरजाफर यार लुफ्त खाँ तथा मानिक चन्द जैसे दोगलों ने हराया था । प्लासी के प्रतिशोधं की सोच सुसुप्त नहीं हुई वह 1857 में आविर्भूत हुई ।[9]

1857 के क्रान्ति के विकासेतिहास में प्लासी से वेल्लोर तक के असन्तोष के अर्न्तगत मीरजाफर के साथ दगाबाजी, बंगालियों के साथ अन्याय एवं अप्रीत, राजा चेतसिंह के साथ अभद्र व्यवहार अवध की बेगमों के साथ अत्याचार मराठा साम्राज्य पर आघात टीपू सुल्तान के साथ साजिश, ग्राम पंचायती व्यवस्था का विनाश,भारतीय व्यापार का विनाश, वेल्लोर का विद्रोह, अंग्रेजों का दिल्ली सम्राट के प्रति अनुचित व्यवहार, अवध पर आघात, डलहौजी की हड़प नीति नाना साहब के साथ अन्याय भारतीयों को ईसाई बनाना एवं चर्बी वाले कारतूस प्रमुख थे ।

1857 की क्रान्ति का क्रियान्वयन और परिणाम—

1857 के स्वातन्त्र्य संघर्ष के लिये उपरिलिखित कारणों को उत्तरदायीं माना जा सकता है इस योजना की नींव विठूर यालन्दन में से किसी एक स्थान पर निर्धारित हुई थी । नाना साहब और

प्रतिभाशाली अधिवक्ता अजीमुल्ला खाँ इस योजना के मूल में रहे । [10] लन्दन में से किसी एक स्थान पर निर्धारित हुई थी । नाना साहब और प्रतिभाशाली अधिवक्ता अजीमुल्ला खाँ इस योजना के मूल में रहे । [10]

इस स्वातन्त्र्य समर के लिये एक विशाल गुप्त संगठन था, संगठन सुन्दर और सुव्यवस्थित था, गोरों जैसी जागरूक जाति इस योजना से बे खबर रही । नाना साहब के दूतों ने इस योजना के सन्देश को दिल्ली से मैसूर तक के नरेशों के पास प्रेषित किया । इस क्रान्ति में सम्पूर्ण अवध का सराहनीय योगदान रहा ।[11] महान विद्रोह ने असाधारण क्षमता के जिन दो चार सैनिक नेताओं को जन्म दिया उनमें तात्या टोपे एक थे ।[12] इस अभियान में सेठ साहूकारों ने दिल खोलकर आर्थिक मदद दी । नाना साहब अजीमुल्ला खाँ ने देश के अनेक क्षेत्रों में तीर्थ यात्रा के बहाने भ्रमण कर सम्पर्क स्थापित किया । क्रान्ति के प्रसारकों में मौलवी अहमद शाह काफी आगे थे ये उत्तर भारत के मुख्य नेता थे । [13] कमल और चपाती इस क्रान्ति के मुख्य चिन्ह थे। अंग्रेज अंचमित थे, कि रोटी और कमल बांटने का मकसद क्या है? रोटी और कमल के सफर से विन्ध्य, बुन्देलखण्ड, निवाड, महाकौशल आदि क्षेत्र भी अछूते नहीं थे । झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई का अनेक रियासतों के स्वामिंयो बजागीरदारों से पत्राचार जारी था । [14]

1857 में का विद्रोह के लिये चर्बी वाले कारतूसों कों जिम्मेदार ठहराया जाता है । लेकिन अनेक धार्मिक आर्थिक और सामाजिक कारण इस विद्रोह की जड़ थे [15] लेकिन चर्बी का कारतूस इसका तत्कालीन कारण बना । [16] कम्पनी द्वारा अनुमोदित चर्बी मिलें कारतूस का प्रयोग करने से इनकार करते हूये 19 वीं नम्बर की पल्टन के एक योद्धा मंगल पाण्डेय ने विट्रिश सारजेन्ट मेजर हयूसन को मारकर सतावनी शंखनाद का शुभारम्भ किया।[17] उसे 8 अप्रेल 1857 को मृत्यु दण्ड दिया गया जिसका बलिदान वह रक्तबीज बना जिसने अनेक मंगल पाण्डेय पैदा किये ।

6 मई 1857 को मेरठ में घूमने निकले हिन्दुस्तानी सिपाहियों को महिला व्यंगो ने उनके विद्धोह वीरता में चिन्गारी का कार्य किया ।[18] हर हर महादेव तथा मारो फिरंगियों के गगन भेदी नारों से सारें आकाश निनादित हो उठा इस प्रकार मेरठ में क्रान्ति का

प्रारम्भ समय से पूर्व प्रारम्भ हुआ । दिल्ली इस महान क्रान्ति का केन्द्र थी । इस समय लार्ड केनिंग गर्वनर जनरल था उसने क्रान्ति के दमन हेतु जनरल नील को बनारस तथा इलाहाबाद भेजा और प्रधान सेनापति एन्सन को दिल्ली ।

आजादी की इस लड़ाई में सागर तीव्र हलचल का केन्द्र बना सागर में 42 वीं बंगाल नेटिव इन्फेंटी के सूबेदर शेख रमजान ने एक जुलाई 57 को इस्लाम का झण्डा बुलन्द किया और नगाड़े पर चोट देकर लोगों को ललकारा । [19] पटियाला नाभा और जींद के सिम्ख जवानों ने तन मन धन तीनो प्रकार से अंग्रेजों को सहायता प्रदान की जिसका परिणाम क्रान्ति की विफलता रहीं ।

स्वातन्त्र्य समर के पूर्वारम्भ ने ही क्रान्ति की पूर्णता को प्रश्नचिन्हित कर दिया । 11 मई 1857 की सुबह मेरठ के विद्रोहियों ने नावों के फल से दिल्ली के लिये यमुना पार कीं । 12 मई को बादशाह ने दिल्ली में दरबार किया । [20]

1857 में पन्ना नरेश ने कम्पनी सरकार के प्रति अपनी बफादारी का पक्का सबूत देते हुये बाँदा के नबाब के खिलाफ लड़ाई में कालिंजर के किले मे डेरा डाले लेफ्टिनेंट रेमिंगटन की तोपें और सैनिक टुकड़ी भेजकर मदद की ।[21] 1857 की कृान्ति में जियाजीराव सिन्धिया एवं इन्दौर के होल्कर ने एक दोहरी भूमिका निभाई होल्कर ने 4 जुलाई को एक पत्र गर्वनर को भेजा जिसमें कम्पनी सरकार के प्रति अपनी निष्ठा को व्यक्त किया । इस प्रकार इन्दौर आनरेबुल कम्पनी के प्रति वफादार था । [22] लेकिन 9 जून को नीमच विग्रेड के सिपाहियों न आगरा में शौर्य प्रर्दशन के बाद दिल्ली में नजफरान की लड़ाई में हिस्सा लिया । इस लड़ाई में उन्हे भारी पराजय उठानी पड़ी । 5 जुलाई को इन जबाब लड़ाको ने कम्पनी बहादुरों के दँात खटटे कर दिये तथा 18 जुलाई को दिल्ली रवाना हो गये । इलाहाबाद और कानपुर के बीच जनरल हैवलाक ने भयंकर अमानुषिक अत्याचार किये। दिल्ली सेना में कोई योग्य एवं प्रभावशाली नेता नहीं था जो विभिन्न प्रान्तो से आयी सेना को एक सूत्र में पिरों सकता । [23] भारतीय सेना में अभिजात होने का घमण्ड मौजूद था सैनिको का यही दम्म 1857 की क्रान्ति के दौर्बल्य एवं असफलता का एक प्रमुख कारण था ।

1857 के स्वातन्त्र्य समर में अवध और विहार का योगदान कम नहीं रहा 30 मई को मड़ियाव में सिपाहियों ने हथियार

उठा लिये । 3 जून को सीतापुर में तैनात अनियमितों की दो रेजीमेंट और 14 वीं देशी पैदल सेना आटे में हड्डी का चूरा मिले होने की अफवाहों से भड़क उठी। के शेर कुंवर सिंह रहे । लार्ड केंनिग के शासन में उसने अनेक अंग्रेज सेनापतियों को हराया ।

माहारानी लक्ष्मी बाई और तात्या टोपे का भी 1857 कीं क्रान्ति में कम योगदान नहीं रहा झाँसी की इस वीरांगना को भी यदि भारतीय भितर घातियों ने धोखा न दिया होता तो हिन्दुस्तान की तस्वीर ही कुछ और होती। तात्याटोपें जैसा बुद्धिमान बहादुर और रण विशारद उस काल में बहुत कम दृष्टिगोचर हुआ ।

1857 की क्रान्ति निश्चित रूप में भारतीय आजादी की प्राप्ति के लिये छेड़ा गया एक महान प्रयास था । 1857 के स्वातन्त्र्य समर पर दृष्टिपात करने से यह तथ्य सुस्पष्ट होता है कि समय से पूर्व क्रान्ति का आरम्भ होना ही इसकी असफलता का कारण प्रतीत होता है और बड़ा कारण सिख्खों और गोरखों द्धारा साथ न देना भी था । क्रान्तिकारियों में अनुशासन का अभाव भी इसकी विफलता का एक कारण था।उन्होने आटे को नदीं में फेंक दिये जाने की माँग की ।[24]

23 सितम्बर को हैवलाक की सेना लखनऊ के पास पुहँच गई चार बाग पुल के पास जोरदार संग्राम हुआ क्रान्तिकारियों ने जनरल नील को मौत के घाट उतार दिया । बिहार का भी अंग्रेजो के विरूद्ध युद्ध में कम योगदान नही रहा बिहार में सत्तावन समर के शेर कुंवर सिंह रहे । लार्ड केंनिग के शासन में उसने अनेक अंग्रेज सेनापतियों को हराया ।

माहारानी लक्ष्मी बाई और तात्या टोपे का भी 1857 कीं क्रान्ति में कम योगदान नहीं रहा झाँसी की इस वीरांगना को भी यदि भारतीय भितर घातियों ने धोखा न दिया होता तो हिन्दुस्तान की तस्वीर ही कुछ और होती। तात्याटोपें जैसा बुद्धिमान बहादुर और रण विशारद उस काल में बहुत कम दृष्टिगोचर हुआ ।

1857 की क्रान्ति निश्चित रूप में भारतीय आजादी की प्राप्ति के लिये छेड़ा गया एक महान प्रयास था । 1857 के स्वातन्त्र्य समर पर दृष्टिपात करने सें यह तथ्य सुस्पष्ट होता है कि समय सेपूर्व क्रान्ति का आरम्भ होना ही इसकी असफलता का कारणप्रतीत होता है और बड़ा कारण सिख्खों और गोरखों द्धारा साथ न

क्रान्तिकारियों में अनुशासन का अभाव भी इसकी विफलता का एक कारण था ।

(अ) 1857 का विद्रोह और बुन्देलखण्ड की महिलायें

ईस्ट इण्डिया कम्पनी की काली करतूतें लार्ड क्लाइव द्वारा भारत में भेदियों की भिन्नियों को तैयार कर भारतीयता को भूमिसात करना, 1757 के प्लासी के युद्ध के बाद अंग्रेजो ने भारतीयों के दमन उत्पीड़न के द्वारा आक्रोशग्नि को दग्धाकर दिया फलतः 1857 में प्रथम स्वातन्त्र्य समर के रूप में भारत में अंग्रेजो के प्रति भारतीयों की ललकार का लावा फूट पड़ा ।

1857 के इस स्वातन्त्र्य संधर्ष में देश की समवेत सहभागिता रहीं देश का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं था जिसने आजादी के संघार्ष में अपना क्षात्र धर्म न निभाया हो । अग्नि धर्मा पहचान का प्रतीक बुन्देलखण्ड इस समर में भला कैसे पीछे रहता । उसने 1857 में ही नहीं अपितु अपने तपस्वी तेंवरों को 1842 के बुन्देला विद्रोह में पहले ही प्रकाट कर दिया था । 1 1857 के स्वातन्त्र्य समर में केवल पुरूष पुरोधाओं ने ही अपने पुरोधत्व का परिचय नहीं दिया अपितु इस धरती की वीरांगनाओं की अपनी अलग भूमिका रहीं । जिसे अलग करने पर 1857 के सांस्कृतिक इतिहास का अध्ययन अधूरा रह जायेगा ।[25]

इस स्वतन्त्रता की नींव बनाने में लक्ष्मी बाई झलकारी बाई ,अवन्ती बाई , तेज बाई,तथा जैतपुर की रानी जैसी वीरांगनाओं ने अपने प्राणों की बाजी लगाकर भारत वर्ष के सम्मुख जो अटूट आदर्श रखा, उसी आदर्श को लेकर नींव पर स्वतंत्रता का महल खाड़ा करने में कितनों ने अपना बलिदान कर दिया, न जाने कितने फॅांसी के तख्ते पर झूल गये , कितने भारत माता की गोद में से गये , कितनी माताओं बहिनों के माथे से सिन्दूर पुछ गये, न जाने कितनों की गोंद खाली हो गई न जाने कितनी बे घार बार हो गई ।[26]एक एक इंच भूमि खून के एक कतरे की एक एक बूंद से सिंच गई स्वतत्रंत के स्वप्न पूरे हुये । आजादी का महल तैयार हो गया । आज हम जिस स्वतत्रंता के महल में सांस ले रहे है उसकी जड़ 1857 की असंख्य नर नारियों ने अपने लहू से सींच सींच कर इतनी मजबूत कर दी कि उसका हिलना असम्भव है इसकी उपमा विश्व इतिहास में मिलना दुर्लभ है ।

रानी लक्ष्मी बाई और 1857 का स्वातन्त्र समर

स्वतंत्रता की जगमगाती दीप शिखा शौर्य की सजीव प्रतिमा महारानी लक्ष्मीबाई केवल झाँसी की ही नही भारत की ही नही वरन संसार की उन वीरांगनाओं में एक है जिनकी गिनती उगलियों में की जा सकती है । वह लक्ष्मी नाम है जिसने जनमानस में नारी के प्रति स्थापित कल्पना को परिवर्तित कर उसे अबला के स्थान पर सबला कोमलांगी के स्थान पर वज्रांगना और रमणी के स्थान पर रणचण्डी के रूप में प्रस्थापित किया । उसने सिद्ध कर दिखाया कि चूडियाँ धारण करने वाली कोमल कलाइयाँजब तलवार धारण करती है तो उसकी झन झन में भैरवी साकार हो उठती है ।

झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई ने जिस बहादुरी और वीरता के साथ अंग्रेजो के विरूद्ध लडाइयाँ लड़ी वह भारतीय इतिहास में स्वर्णाक्षरों में अकिंत है आज भी समस्त भारतवासी रानी की वीरता की गाथा गागाकर अपने अन्दर उंत्साह और साहस भरतें है ।सर हयूरोज ने रानी की प्रशंसा में अपनी डायरी में लिखा था **महारानी का उच्च कुल आश्रितों और सिपाहियों के प्रति उनकी असीम उदारता और कठिन समय में भी अडिग धीरज उनके इन गुणों न रानी को हमारा एक अजय प्रतिद्वन्दी बना दिया वह शत्रु दल की सबसे बहादुर और और सर्वश्रेष्ठ सेना नेत्री थी ।**

वीर बचपन – योरपन्त ताम्बे महाराष्ट्र के थे । वेसतारा के निकट बाई नामक एक गाँव के निवासी थे । योरोवन्त के पिता बलवन्तराव पेशवाई सेना में उच्चपद थे । [27] 1818 में अंग्रेजो द्वारा पेशवाई समाप्त करने पर बाजीराव के भाई चिमाजी अप्पा साहब बनारस चले गये उन्ही के साथ योरोपन्त भी बनारस पंहुचे । वहीं पर 19 नवम्बर 1835 को योरोपन्त की पत्नी भागीरथ बाई की कोख से मनु का जन्म हुआ । [28] इस समय इस दम्पति को स्वप्न में भी विश्वास नहीं था कि एक दिन उनका नाम इतिहास में अमर हो जायेगा । कौन जानता था कि यह पुत्री भारत के हाथों में अजेय तलवार बन जायेगी । इसकी कल्पना भी उस दम्पति ने नहीं की थी जैसे कंटीली डालियों को यह नही पता होता कि बसंत में उन्हीं के बीच मेंएक गुलाब फूलेगा जिसकी गन्ध से सारा विश्व जगमगा उठेगा । [29]

चिमाजी के निधान के बाद बाजीराव ने मोरोपन्त को बिठूर बुला लिया यहीं पर मनु की शिक्षा दीक्षा हुई मनु बचपन से ही बड़ी चतुर चपल किशोरी के रूप में बिठूर में प्रसिद्ध हो गई थी किन्तु पिता योरोपन्त द्वारा बाल जीवन में मिली शिक्षा प्रसंग ने उसके बाल चिन्तन को एक नया आयाम प्रदान कर दिया था । जब जब कोई भी ऐसा प्रकरण आता था जिसमें उसे लगता था कि पिता योरोपन्त सम्बन्धित प्रश्न टाल रहें है तब तब मनु उन्हे उन प्रसंगो और उदृरणों की याद दिलाती थी जो उसे योरोपन्त ने बचपन में सुनाये थे । इन बिन्दुओं से तथ्य सुस्पष्ट होने लगता है कि मनु के बचपन में गम्भीरता का भी क्रमशः विकास हो रहा था । [30]

विवाह के पूर्व जब मनु एंव उसके पिता झाँसी आये तो उन्हे झाँसी के कोठी कुँआ में ठहराया गया था। मनु की सेवा के लिये कुछ परिचारिकायें भेजी गयी थी । जिनेमें सुन्दर मुन्दर एवं काशी सहित अनेकों थी। मनु के समक्ष जब इन परिचारिकाओं ने अपना नाम पता इत्यादि वताकर अपने आपको दासी के रूप में प्रस्तुत किया तो मनु ने साफ शब्दों मेँ कहा कि मेरी दासी कोई नहीं होगी, तुम लोग मेरी सिर्फ सहेली हो सकोगी ।

<u>मनु का विवाह</u> – 1842 ईव में मनु का विवाह झाँसी के गंगाधर राव बाला साहब से हो गया वह झाँसी की महारानी हो गई । गंगाधर राव बहुत योग्य और आदर्श राजा थे । वे बडे प्रेम से रानी की बातें सुनते थे । लक्ष्मी बाई का बडा सम्मान होता वह पूजा पाठ करने के अलावा मल्लयुद्ध स्वयं करती और कुछ स्त्रियों को भी उसकी शिक्षा देती थी । उस समय राज परिवार की महिला कुश्ती लडे ओर घुडसवारी कर, युद्ध विद्या की शिक्षा दे , यह अभूत पूर्व घटना कही जा सकती थी । [31]

1851 में रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया जिसे सुनकर सम्पूर्ण झाँसी आनन्दित हो उठी । सम्पूर्ण झाँसी में पुत्रोत्सव मनाया गया । रानी प्रसव के बाद दो माह तक पूरी तरह स्वस्थ नहीं हो पायी थी, इसी बीच रानी की देश के हालात पर तात्या टोपें से एक बार बात अवश्य हुई थी । रानी ने तात्या से दिल्ली और लखनऊ का हाल पूछा इस पर तात्या ने उत्तर दिया कि नबाबों और नरेंशों को रंग मचींय शांम से फुरसत ही नही है। [32]

<u>*गंगाधर राव का निधन और आंग्लनिष्ठुरता –*</u>

उधार संयोग से तीन महीने बाद ही पुत्र चल बसा राज परिवार में पुनः निराशा छा गई रानी हतप्रभ हो गई राजा शोक सागर में उमड़ पड़े पर काल के समक्ष तो सभी को अन्त मे झुकना ही पडता है दुर्भाग्यवश गंगाधर राव अस्वस्थ हो गये उन्हे बचाने की भरपूर चेष्टा की गई । पर कुछ फल न निकला उनका देहावसान 21 नवम्बर 1853 को हो गया । [33] मृत्यु से पहले महाराजा गंगाधर राव ने आनन्द राव नाम के एक पाँच वर्षीय बालक को गोद ले लिया था उसका नाम दामोदर राव रखा गया । इसके कुछ ही दिन बाद महाराज चल बसें । महारानी 18 वर्ष की छोटी सी उम्र में ही विधवा हो गई । उस समय भारत में अंग्रेजी राज्य के विस्तार के लिये लार्ड डलहौजी की कूट नीति चल रही थी उन्होने मेजर एलिस को भेजकर झाँसी के राजकीय खजाने को सीलबन्द कर दिया । गंगाधर राव के दत्तक पुत्र को अवैध घोषितकर दिया और रानी को पाच हजार रूपये वार्षिक पेन्शन देकर राजमहल खाली करने का आदेश दे दिया । 34

गंगाधर राव की अन्तिम वसीयत के अनुसार दामोदर राव के वयस्क होने तक लक्ष्मी बाई राज्य की उत्तरा धिकारिणी थी । रानी ने अपने शासनाधिकार को बनाये रखने का काफी प्रयत्न किया पर व्यर्थ। पजांब के सिख बंगाल के नबाब और महाराष्ट्र के पेशवा सभी तो घुटने टेक चुके थे । कोई न कोई बहाना बनाकर या वारिस न होने पर राज्य कम्पनी की हुकूमत में मिला लिये जाते थें। झाँसी राज्य भी इसी तरह 1854 में अंग्रेजी राज्य मे मिला लिया गया। रानी विवश होकर अपने पुत्र के साथ एक किराये के मकान में रहने लगी । [35]

रानी ने मन ही मन झाँसी की आजादी के लिये भारत माँ को गुलामी से मुक्त करानें के लिये प्रतिज्ञा की थी अब वह कम्पनी सरकार के अत्याचार का विरोध करेगी जहाँ बहुत दिन तक लोग उत्पीडन को बरदास्त नही कर सकते जहाँ अन्याय और अत्याचाररहता है उसके खिलाफ क्रान्ति होती ही है । भारत के लोग अत्याचार सहते सहते ऊब गये थे कोई दूसरा रास्ता न देखकर रानी न सरकार के खिलाफ क्रान्ति करने का निश्चय किया ।

4 जून 1857 को झाँसी में क्रान्ति की लहर दौड पड़ी 4 जून

को झाँसी के सैनिकों नें अंग्रेज सरकार के खिलाफ क्रान्ति आरम्भ कर दी जिसका नेतृत्व गुरबख्स सिंह कर रहा था। 7 जून को रिसालेदार काले खाँ, तहसीलदार महमूद हुसैन तथा झाँसी के कुछ अन्य बहादुरों के नेतृत्व में झाँसी के दुर्ग पर आक्रमण कर क्रान्ति की पताका फहरा दी गई । अंग्रेजों ने आत्म समर्पण कर दिया उन्होने आपने अस्त्रशस्त्र रख दिये और दुर्ग का द्वार खोल दिया झाँसी की जनता बदला लेने के लिये तड्प रही थी उन्हे पता था कि जनरल नील ने किस प्रकार गाँव के गाँव जलाकर उनके बाल बच्चों की हत्या कर दी है । 36

मारों फिरंगियों को के नारे से आकाश गुंजायमान हो उठा अनेक सैनिकों के सर काट डाले गये अंग्रेजो ने झाँसी की रानी को ही इस हत्याकाण्ड के लिये दोषी ठहराया । परन्तु मनुष्य अपने पाप का फल आज या कल प्राप्त करता ही है । डलहौजी की दमन नीति और उसके अत्याचार के फलस्वरूप ही अनेक अंग्रेज गोलियों के शिकार हुये । कृान्तिकारी जय घोष कर रहे थे कि **'' खल्क खुदा का मुल्क बादशाह का और अमल रानी लक्ष्मी बाई का ''** ।
समस्त सैनिकों के आक्रोश को देखकर रानी ने क्रान्ति का झण्डा अपने हाथ में लें अपनी खोई झाँसी प्राप्त की ।

यह कार्य रानी ने स्थानीय अंग्रेज अधिकारियों की आज्ञा से ही किया दामोदर राव अभी नाबालिग था इस लिये शासन की बागडोर रानी ने अपने हाथ में रखी । [37]

महारानी ने अपने हाथ में आई सत्ता का बडी योग्यता से संचालन किया । सुरक्षा की व्यवस्था मजबूत की गई । तोप वारूद झाँसी में ही बनाये जाने लगे । सेना भर्ती शुरू हुई । रानी की सेना में हिन्दू पठान सभी थें । झाँसी के महल पर दिल्ली के बादशाह की पताका फैला दी गई । कम्पनी का झण्डा उठा दिया गया। प्रजा रानी के राज्य में सुख और शान्ति से रहने लगी रानी सदा सतर्क रहती । लक्ष्मी बाई ने घोषणा की '' मैं अपनी झाँसी कभी नही दूँगी''। रानी की ललकार से क्रान्तिकारियों में दुगुना जोश पैदा हुआ । क्रान्तिकारियों ने अंग्रेजो को मार भगाया झाँसी तथा उसके आस पास के गाँव जैसे नौगांव बाँदा, शाहगढ़ अंग्रेजी सत्ता से मुक्त हो गये । चारों तरफ रानी की जय जय

कार गूँज रही थी । झाँसी में अपना राज्य प्राप्त होने पर रानी ने चैन की सांस नही ली बल्कि इसे मजबूत बनाने पर ध्यान देने लगी। 1 रानी उस क्षेत्र की सर्वाधिक लोक प्रिया नेता बन गई थी ।

अंग्रेज यह महसूस करने लगे थे कि बिना झाँसी को दबाये उनका कल्याण सम्भव नहीं है । अतः झाँसी को दबाना आवश्यक है रानी के दृढ निश्चय को भी वेजान चुके थे अतः इसके लिये उन्हें सुव्यवस्थित ढंग से तैयारी की जरूरत महसूस हुई । सर हयूरोज 5000 सैनिकों तथा अनेक तोपों के साथ रानी के हौसलें को पस्त करने के लिये 6 जनवरी 1858 को चल पड़ा । [38]

सर हयूरोज का का कार्यक्रम – 6 जनवरी सन 1858 को सर हयुरोज मऊ से चला । रायगढ़ सागर , गानपुर चदेंरी इत्यादि स्थानों पर विजय करती हुई यह सेना 20 मार्च को झाँसी के निकट पहुची। झांसी इस समय समस्त प्रदेश के क्रान्तिकारियों का सबसे बडा गढ था नगर के अन्दर बानपुर का राजा मरदार सिंह और अनेक राजा और सरदार रानी के सहायता के लिये मौजूद थें । [39]

रानी ने झाँसी के आसपास के क्षेत्रों को वीरानकर दिया । जिससे उन्हे कष्ट न सहना पडें । सारी भूमि उजाड दी गई । वहां एक भी पेड पौधा नही रहने दिया गया । [40] उस समय न खेतों में अनाज की एक बाल भी न कहीं पर घास का तिनका था । अगर टीकमगढ़ के राजा और सिन्धिया ने अंग्रेजो की सहायता न की होती तो सर हयूरोज को अपनी सेना सहित भागने के अलावा कोई उपाय न रहता । लेकिन इन देशद्रोही सरदारों न अंग्रेजी सेना केलिये रसद और घोडों के लिये घास की पूरी व्यवस्था कर दी ।

लक्ष्मी बाई का सेनापतित्व – अंग्रेजी सेना को बढते देख रानी लक्ष्मी बाई न क्रान्तिकारियों का सेनापतित्व ग्रहण किया । एक एक मोरचा उसने अपने सामने तैयार कराया और आमने सामने फसील के ऊपर तोपें चढाई रानी लक्ष्मी बाई के साथ उस कार्य में झाँसी की सैकडों स्त्रियाँ तोप खानों और मैगजीनों में आती जाती और काम करती दिखाई दे रही थी ।

झाँसी में आठ दिन लगातार संग्राम – 24 मार्च को सबेरे सबेरे सबसे पहले झाँसी की एक तोप ने जिसका नाम घन गर्ज था कम्पनी की सेना के ऊपर गोले बरसाने शुरू किये । उसके बाद आठ दिन तक लगातार संग्राम होता रहा । [41]

झाँसी के इस घेरे के प्रारम्भिक चरण का आँखो देखा वर्णन एक दर्शक जो उस समय मौजूद था इस प्रकार लिखता है "25 मार्च से युद्ध प्रारम्भ हुआ शत्रु ने रात्रि दिन तोपों की वर्षा की" रात को तो दुर्ग तथा नगर तक भी गोलें पहुंचते थे । रात्रि एक भंयकर दृश्य के रूप में बदल जाती थी । उस अंधकार में 50–60 पौण्ड के गोलें देखने में टेनिस की गेद की तरह छोटे किन्तु दहकते हुये अंगारो की भाँति लगतें थे । ये गोले दिन के प्रकाश में तो दिखाई नही देते थें किन्तु रा़ि त्र को एक भयानक दृश्य बन जातें थें । 20 मार्च को अंग्रेजो ने दक्खिन द्धार का तोपखाना बन्द करा दिया । वहाँ का प्रतिकार भी समाप्त हो गया । रणबांकुरों का धीरज विचलित हो गया था, तभी पश्चिमी द्धार के तोपखानों के गोलदाजों ने तोपों का मुंह फेरकर चारों और अग्नि वर्षा पारम्भ कर दी और तीसरे ही धड़ाके में उसने अंग्रेज तोपखाने गोलदाजों को उडा दिया, फलतः अंग्रेजी तोपखाना बन्द हो गया । इस प्रकार से संतुष्ट होकर उस गोलंदाज को चाँदी का टुकड़ा पारितोषिक के रूप में दिया गया, । पाँचवे छठे दिन पुनः इसी प्रकार जमकर युद्ध हुआ । 4–5 घंटे तक रानी के तोपखाने द्धारा ऐसा प्रलय मचा जो न भूतों न भविष्यति था इससे अंग्रेजो की अपार क्षति हुई । सातवें दिन झाँसी की दीवारे और तोपें शान्त हो गई । शत्रु ने तोपों की अग्नि वर्षा से दीवार गिरा दी किन्तु रातों रात यह दीवार पूर्णताः सही कर दी गई । अंग्रेजो ने जब देखा कि कल की ध्वस्त दीवार आज फिर खड़ी हो गई और कल शान्त तोपखाना आज पुनः अग्नि वर्षा करने लगा तोउनके भीतर हड़कम्प मच गया ।

अंग्रेजी सेना में अव्यवस्था फैल गई और उसे काफी क्षति उठानी पडी। आठवें दिन अंग्रेजी सेना शंकर दुर्ग की और बढी अंग्रेजो को पास आधुनिक दूरबीन थी जिनकी सहायता से उन्होने दुर्ग के भीतर पानी के तालाब पर गोले बरसाना आरम्भ कर दिया पानी के लिये आये हुये 6 सात व्यक्तियों मे से चार मारे गये । इस मारकाट मेंरानी लक्ष्मी बाई स्वयं हर कार्य की देखभाल के लिये उपस्थिति रहती वे हर स्थल पर स्वयं जाती , तथा सैनिकों को उत्साहित करतीं । [42]

चरखारी का राजा – तात्या टोपों अपनी सेना सहित जमना के उत्तर में था जमना पार कर अब वह चरखारी के

राजा के यहां पहुंचा । चरखारी के राजा ने स्वाधीनता संग्राम में भाग लेने से इंकार कर दिया था। तात्या ने चरखारी पर हमला किया । राजा से 24 तोपें छीन लीं और युद्ध के खर्च के लिये तीन लाख वसूल लिये । इसके बाद तात्या कालपी पहुंचा। कालपी में उसे रानी लक्ष्मी बाई का एक पत्र मिला, जिसमें रानी ने उससे झाँसी की मदद के लियें पहुचंने की प्रार्थना की थी । तात्या झाँसी की तरफ बढ़ा । 1 अप्रेल को अंग्रेजी सेना ने साहस के साथ पीछें मुडकर तात्या के सेना पर हमला किया । तात्या के करीब डेढ़ हजार आदमी मारे गये उसकी तोपे अंग्रेजों के हाथ आई । [43]

<u>कृान्तिकारियों की स्थिति</u> – झाँसी की स्थिति अब और भी निराशाजनक हो गई फिर भी रानी लक्ष्मी बाई ने हिम्मत नही हारी । 3 अप्रेल को अंग्रेजी सेना ने झाँसी पर अन्तिम बार हमला किया । चारों ओर से एक साथ आक्रमण होने लगा । रानी अपने घोडें पर सवार सिपाहियों और अफसरों के हौसलें बढ़ाती हुई उनमें जेवर और खिलअत बाँटती हुई बिजली की तरह इधर से उध र तक फिर रही थी । शत्रु नें पहले नगर के उत्तर की तरफ सदर दरवाजें पर जोर दिया । आठ स्थानों पर सीढ़ियां लग गईं । रानी की तोपों ने अपना काम जारी रखा झाँसी की दीवारों पर गोलो और गोलियों की बौछार उस दिन अत्यन्त भीषण थी जिसके कारण अंग्रेजी सेना को पीछें हट जाना पड़ा । [44]

<u>विश्वास घात की करतूत</u> – रानी की जीत उस दिन अवश्य हो जाती यदि दक्षिणी द्वार पर कुछ देश द्रोहियों ने अंग्रेजो का साथ न दिया होता । वहाँ दूल्हाजू और वीर अली अंग्रेजों से मिल गयें । दूल्हाजू ने आगे बढकर ओरछा फाटक का कुण्डा लोहे से मारकर खोल दिया जिससे अंग्रेज आसानी से भीतर प्रवेश कर गये और हत्या दयन तथा लूट प्रारम्भ हो गया । [45]

<u>रानी लक्ष्मी बाई का प्रयत्न</u> – रानी ने किले पर से नगर निवासियों के कत्लेआम और उनकी बरबादी को देखा। वह तुरन्त एक हजार सिपाहियों सहित अंग्रेजी सेना की तरफ लपकी । दोनो तरफ से बन्दूकों को फेंककर तलवारो की लडाई होने लगी । दोनों तरफ से अनेंक जाने गई । कम्पनी की सेना को कुछ दूर तक फिर पीछे हटना पड़ा, इतनें में किसी ने आकर रानी को सूचना कि सदर दरवाजें का रक्षक सरदार खुदाबक्स और तोप खाने का

अफसर सरदार गुलाम गौस खाँ दोनों मारे गये । रानी का दिल टूट गया एक बार उसने किले की मैगजीन में अपने हाथ से आग लगाकर उसके साथ साथ अपने प्राण देने का इरादा किया , किन्तु फिर अधिक सोच कर उसने झाँसी से बाहर कहीं और पहुंचकर स्वाधीनता संग्राम में सहायता पहुंचाने का निश्चय किया, झाँसी पर कम्पनी का कब्जा हो गया ।[46]

लक्ष्मी बाई कालपी की ओर – उसी दिन रात में रानी लक्ष्मी बाई ने सदा के लिये झाँसी छोड दी । हथियार बाधें हुये मरदाना वेष में और अपने दत्तक पुत्र दामोदर को कमर से कसे हुये वह किले की दीवार पर से एक हाथी की पीठ पर कूद पडी । वह अपने प्यारे सफेद घोडे पर सवार हुई । 10 या 15 सवार उसने अपने साथ लिये और कालपी की तरफ चल पडी ।

सौ मील का अश्वारोहण –लेफटीनेन्ट बोकर ने कुछ चुने हुये सवार लेकर रानी का पीछा किया रानी और उनके सवारों ने अपने घोडें को सरपट छोड़ दिया। बोकर और उसके सवार बराबर रानी का पीछा करते रहें, सुबह होते होते रानी भाण्डेर नामक गाँव के पास ठहरी । गाँव से दूध लेकर उसने दामोदर कों पिलाया । अंग्रेजी सैन्य दल बराबर पीछा कर रहा था । लेफटीनेन्ट बोकर का घोडा रानी के पास आ पहुंचा रानी ने तलवार से बोकर को घायल कर दिया । रानीके साथ के सवारों और बोकर के सवारों में तलवार के हाथ होने लगें । अन्त मे घायल बोकर और उसके सिपाही हार कर पीछे रह गयें । सुबह से दोपहर , दोपहर से तीसरा पहर और चलतें शाम हो गई तारे निकल आयें बच्चे दामोदर को कमर से बाधें हुये , झाँसी से कालपी तक 102 मील से ऊपर का फासला तय करके रानी लक्ष्मी बाई ने कालपी में प्रवेश किया ।

रानी का प्रिय घोडा कालपी पहुंचते ही गिर कर मर गया । रानी ने बाकी रात कालपी में बिताई । सुबह रानी लक्ष्मी बाई नाना साहब के भतीजे राव साहब और सेनापति तात्याटोपें में परस्पर बातचीत हुई ।[47]

बाँदा का नबाब – जिस तरह सर हयूरोज से मऊ से झाँसी की ओर रवाना हुआ था उसी तरह जनरल ह्विटलाक 17 फररवरी 1858 को सागर इत्यादि फिर से विजय करने के लिये जबलपुर से निकला था। औरछा का राजा हिट्लाक के साथ होगया । सागर पर विजय

प्राप्त करने के पश्चात ह्विटलाक बाँदा की तरफ बढा । बाँदा के नबाब ने अनेक अंग्रजो को अपने महल में आश्रय देख रखा था उसका व्यवहार उनके साथ अत्यन्त उदार था । किन्तु साथ ही वह अपने प्रान्त के क्रान्तिकारियों का एक मुख्य नेता था। शुरू में ही उसने बाँदा से अंग्रेजी राज्य के चिन्ह उखाड़ कर सम्राट बहादुरशाह को हरा झण्डा नगर के ऊपर लगा दिया था । [48]

ह्विटलाक को आते देखकर नबाब मुकाबले के लिये तैयार हो गया । कई लडाइयाँ हुई अन्त में नबाब की हार हुई । विजयी ह्विटलाक ने 19 अप्रेल को बाँदा में प्रवेश किया । नबाब अपनी कुछ सेना सहित नगर छोडकर कालपी की तरफ निकल गया ।

करबी का राज्य – इसके बार ह्विटलाक ने करवी के राव माधोरव पर चढाई कर दी । माधोराव दस साल का बालक थां । उसकी नाबालिगीं के दिनों में रियासत का प्रबन्ध कम्पनी के नियुक्त कियें हुये एक अधिकारी के हाथों में था । ह्विटलाक की आने का समाचार सुनकर वह स्वागत के लिये आगें बढा। ह्विटलाक और उसकी सेना ने नगर में प्रवेश किया । तुरन्त बालक माधवराव कोकैद कर लिया गया । महल को गिरा दिया गया । राजधानी को लूटलिया गया । और रियासत को कम्पनी के राज्य में मिला लिया गया । [49] करबी के महल में सोने चाँदी जवाहरात और कीमती हीरे भरे हुयेथे । ह्विटलाक को इस धन का लोभ था । [50]

कान्तिकारियो में अव्यवस्था – रानी लक्ष्मी बाई राव साहब, तात्या टोपें बाँदा का नबाब , शाहगढ और बानपुर के राजा और अनेक क्रान्तिकारी नेता उस समय अपनी सेना सहित कालपी में मौजूद थे । इस विशाल सैन्य दल के लिये शत्रु पर विजय प्राप्त कर सकना अधिक कठिन न होता । किन्तु इनमें एक भी व्यक्ति ऐसा नही था जो सबको अपने अधीन चला सके । रानीसबसे योग्य थी किन्तु वह स्त्री थी औरउसकी आयु केवल 20 वर्ष की थी । तात्या टोपें वीर ओर दक्ष सैनिक था किन्तु वह साधारण घराने में पैदा हुआ था फिर भी रानी लक्ष्मी बाई कुछ सेना लेकर अकेले कालपी से 42 मील दूर कंचगाँव पहुंची । कंचगाँव में फिर रानी की हार हुई। [51] इस पराजय के बाद भी रानी की सेना आश्चर्य जनक व्यवस्था के साथ कालपी लौट आई । [52]

कालपी का संग्राम – सर हयूरोज ने अब कालपी पर हमला किया

। खूब घमासान युद्ध हुआ । लक्ष्मी बाई अपने घोडें परसबसे आगे थी इसके बाद स्वंय सर हयूरोज बाई तरफ से मुडकर लक्ष्मी बाई के मुकाबले के लिये बढा । अन्त में मैदान सर हयूरोज के हाथ रहा । 24 मई को कालपी की सेना ने कालपी में प्रवेश किया । रानी लक्ष्मी बाई रावसाहब बाँदा के नबाब और थोडी सी सेना सहित कालपी छोडकर निकल गई ।

सिधिया के नाम क्रान्तिकारियों का पत्र – क्रान्तिकारियों के पास न अब सामान था न कोई ढंग की सेना और न कोई किला । फिर भी लक्ष्मी बाई और तात्या टोपें ने हिम्मत नहीं हारी तात्या गुप्त रीति से कालपी से निकल कर ग्वालियर पहुंचा । ग्वालियर में उसने महाराजा सिंधिया की सेना और प्रजा कोअपनी ओर लिया । गोपालपुर में तात्या, लक्ष्मी बाई , बाँदा के नबाब और राव राव साहब ने फिर भेंट हुइ । लक्ष्मी बाई ने अब राव साहब को सबसे पहले ग्वालियर विजय करने की सलाह दी ताकि क्रान्तिकारियों का फिर से एक नया केन्द्र बन सके 28 मई सन 1855 को सब क्रान्तिकारी नेता ग्वालियर के सामने पहुंच गये ' महाराजा सिन्धिया के पास नीचें लिखा पत्र भेजा । '' हम लोग आपके पास मित्र भाव से आ रहे है। आप हमारे और पुराने
सम्बन्धों को याद कीजिये ' हमें आपसे सहायता की आशा है ताकि हम दक्षिण की तरफ बढ सकें । ''

ग्वालियर पर क्रान्तिकारियों का कब्जा – सिंधियां इन लोगों के साथ मित्रता दर्शाने के स्थानपर 1 जून सन 1858 को अपनी सेना और तोपों सहित उनके मुकाबले के लियें निकला ।
सिन्धिया के इरादें को देखकर रानी लक्ष्मी बाई तीन सौ सवारों सहित सिन्धियाँ की तोपों पर टूट पड़ी । किन्तु सिन्धिया की अधिकांश सेना अपने अफसरों सहित क्रान्तिकारियों की ओर आ मिली । जयाजी राव औरउसके मत्रीं दिनकराव को मैदान छोडकर आगरे की तरफ भाग जानापडा । सिन्धिया के अर्थ सचिव अमरचन्द भाटिया ने सिन्धिया का सारा खजाना क्रान्तिकारी नेताओं के हवाले कर दिया । [53]

लक्ष्मी बाई की नेक सलाह – लक्ष्मी बाई ने इस बात पर जोर दिया कि सब काम छोडकर सेना को तुरन्त सन्नद कर मैदान मे लाया जायें । लेकिन राव साहब ने इस सलाह की अवहेलना की

और अपना अमूल्य समय दावतों और उत्सवों में नष्ट किया । सर हयूरोज अपनी सेना सहित वेग के साथ ग्वालियर पर टूट पडा । ग्वालियर का राजा भी उसके साथ था । [54]

ग्वालियर का संग्राम – लक्ष्मी बाई अपनी तलवार के साथ युद्ध भूमि में प्रवेश कर गई उन्होने पूर्व दिशा में स्थित हार की रक्षा का भार अपने ऊपर ले लिया । रानी लक्ष्मी बाई के साथ उसकी दो सखियाँ मन्दिरा और काशी घोडों पर सवार वीरता के साथ शस्त्र भाला लियें थीं । रानी का युद्ध भेदन करना बहुत कठिन था दूसरे दिन स्मिथ ने और अधिक सेना के साथ रानी का सामना किया । रानी ने अधिक पराक्रम और धैर्य के साथ अपने शिविर से बाहर आकर अंग्रेजों पर चढाई कर दीं । [55]

मुन्दर की मृत्यु – सर हयूरोज की सेना बहुत बड़ी थी । किन्तु रानी की सेना शत्रु पर बराबर आक्रमण करती । किन्तु अब उसका कोई लाभ नही था सर रोज ने अपनी ऊँट सेना को रानी के पीछे पहुंचा कर उसका व्यूह भेदन कर दिया । रानी ने उत्साह नहीं छोड़ा । रानी का अंग्रेजो ने पीछा किया वह कुछ अंग्रेजो को मारतें काटतें आगे की ओर बढ़ रही थी । इसी समय गोली उसकी सहेली मन्दरा को आकर लगी मन्दरा घोडें से गिर कर मृत्यु को प्राप्त हुई । रानी ने उस सैनिक को दे मारा जिसने उसकी सुकुमार सहेली मन्दरा को अपनी गोली का शिकार बनाया था । [56]

लक्ष्मी बाई का बलिदान – रानी भी अब कुछ समय की मेहमान थी मार्ग में एक छोटा सा नाला था । एक छलांग के बाद अंग्रेजो का रानी लक्ष्मी बाई को छू सकना असम्भव हो जाता किन्तु रानी का घोडा नया था। घोडा बजाय छलांग लगाने के नाले के इस पार चक्कर खाने लगा । अंग्रेज सवार अब और निकट आ पहुंचे रानी चारों तरफ से धिर गई । रानी उस समय बिल्कुल अकेले रह गई उसने अकेले ही उन सबका अपनी तलबार से मुकाबला किया । एक सवार ने पीछे से आकर रानी के सिर पर वार किया सिर का दाहिना भाग अलग हो गया । दाहिनी आँख भी निकल कर बाहर आ गई , फिर भी रानी घोड़े पर डटी हुई अपनी तलवार चलाती रही इतने में एक बार रानी की छाती पर हुआ ।सर और छाती दोनां से खून का फब्बारा छूटने लगा । बेहोश होते होते

रानी ने अपनी तलबार से उस गोरे सवारको जिसने सामने से रानी पर बार किया था काट कर गिरा दिया । इसके बाद रानी की भुजा में और अधिक शक्ति न रह गई ।

लक्ष्मी बाई का एक वफादार नौकर रामचन्द्रराव देशमुख उस समय पास था । घटनास्थल के निकट गंगादास बाबा की कुटिया थी । रामचन्द्रराव रानी को उठा कर उस कुटिया में ले गया । गंगादास बाबा ने रानीको पीने के लिये ठंडा पानी दिया । और उसे अपनी कुटिया में लिटा दिया ।

लक्ष्मी बाईका अन्तिम संस्कार – चन्द मिनट के अन्दर ही रानी लक्ष्मी बाई का शरीर ठन्डा पड़ गया । रामचन्द राव ने रानी की अन्तिम इच्छा के अनुसार शत्रु से छिपा कर घास की एक छोटी सी चिताबनाई और उस पर रानी लक्ष्मी बाई के मृत शरीर को लिटा दिया । थोडी देर के अन्दर आग की लपटों में लक्ष्मी बाई के शरीर की केवल अस्थियाँ शेष रह गई । [57]

रानी की यह अन्तिम इच्छा पूरी हुई कि उनका शरीर अंग्रेज स्पर्श न कर सकें रानी लक्ष्मी बाई जब युद्ध भूमि में थी तभी पीर गुलमुहम्मद ने रानी के समक्ष कुछ अंग्रेज सैनिकों के टुकड़े टुकड़े कर दिये, बाकी भाग गयें । रानी का शरीर अभी भस्मीभूत हुआ ही था कि कुछ अंग्रेज सैनिक गिद्ध की तरह रानी की लाश लेने आये । लेकिन उस वीरांगना का शव उनके भाग्य में था कहाँ?गुल मुहम्मद और रघुनाथ सिंह ने धड़ाधड़ अंग्रेज सैनिकों पर प्रहार करना शुरू कर दिया । एक सैनिक ने रघुनाथ सिंह को गोली मार दी जिससे वीर रघुनाथ धराशाही हो गया।रानी की यादगार को कायम रखाने के लिये उस वीर पठान ने कुछ पत्थर इकट्ठेकर समाधि तैयार कर ली कुछ दिनों के बाद वहाँ अंग्रेज आ धमके उनके यह पूछने पर कि यह समाधि किसकी है । गुल मुहम्मद ने कहां यह एक उनके गुरू पीर की है । अंग्रेज चलते बनें ।

1857 की क्रान्ति की महान वीरांगना अवन्ती बाई लोधी

भारत की स्त्रियँा प्रारम्भ से ही समाज सेवा आध्यात्मिक चिन्तन एवं साहित्य सृजन में पुरूषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर योगदान करती आ रहीं हैं । भारतीय ललनाओं ने मुगल साम्राज्य एवं अंग्रेजी हुकूमत का विरोध किया 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम मं पुरूषों के साथ साथ महिलाओं ने भी अपनी अहम भूमिका निभाई । 1857 कीं आजादी की लड़ाई में मध्यप्रदेश के रामगढ़ रियासत की रानी अवन्ती बाई लोधी का नाम स्वर्णाक्षरों में अकिंत है । [58]

रामगढ़ मध्यप्रदेश की एक छोटी सी रियासत थी जो कि मंडला जिले की पहाड़ियो के मध्य स्थित थी जहँा गढ़ा मंडला के अधीन एक प्राचीन राजपूत सामन्त कुछ सौ गँावो की अपनी छोटी सी जागीर पर शासन करता था । रामगढ़ के राजाओं में अन्तिम था लक्ष्मण सिंह जिसका सन 1850 में देहान्त हो गया और उसका एक मात्र पुत्र विक्रमाजीत उसका उत्तराधिकारी हुआ । [59]

विक्रमादित्य अत्यधिक ईमानदार और निर्भीक पुरूष थें उस समय मंडला के छोटे छोटे राजाओं ने अंग्रेजी सत्ता के खिलाफ झण्डा उठा लिया था कुछ राजपूत सरदारों ने उनका साथ दिया आसपास के विद्रोहियों का केन्द्र रामगढ़ ही था और राजा विक्रमाजीत क्रान्तिकारियों का नेतृत्व कर रहा था । उनका शस्त्रागार सुरक्षित था अनेक स्वदेशी नरेश और सामन्त गोरखो और सिक्खा उनकी सहायता करते थे । इस प्रकार विक्रमाजीत उस समय प्रमुखा क्रान्तिकारी थे । [60]

रानी आवन्ती बाई का जन्म राजा जुझार सिंह मनकेड़ी के घर सोलह अगस्त 1.831 को हुआवह अपने माता पिता की इकलौती सन्तान थीं राजा जुझार सिंह ने अपनी चंचल और चपल बालिका का नाम अवन्ती बाई रखा।[61]

अवन्ती बाई की परम सखी थीं मुंगिया उसने बचपन से ही मुंगिया कि साथ बरछी,ढाल कृपाण कटारों के साथ रणविद्या में पांरगतता हासिल की थीं । घोड़े पर सवारी करना तथा तलवार वाजी करना यह दोनों सखियों के प्रिय खेल थे । यौवनवस्था में आने पर राजकुमारी अवन्ती बाई का सौन्दर्य चर्चा का विषय बन गया था । ज्योतिषी जनों का कहना था कि यह राज घराने में

जायेगी । यह बात रामगढ़ राजा लक्ष्मण सिंह के यहाँ भी गई और उन्होने अपने दूत भेजकर राव जुझार सिंह को सादर बुलवाया तथा अपने पुत्र विक्रमादित्य के साथ अवन्ती बाई के विवाहसम्बन्ध का अनुरोध किया । राव इस बात को सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुये और अवन्ती बाई सजी धजी डोली के साथ रामगढ़ राज्य आ गई ।[62]

अवन्ती बाई ने अपने सास और ससुर की आज्ञा से घूंघट प्रथा का त्याग कर दिया था । राजा और रानी दोनो ही अत्यधिक प्रसन्न थे कि उनको इतनी सुलक्षणा बहू मिली है । लक्ष्मण सिंह की मृत्यु के पश्चात विक्रमादित्य रामगढ़ के राजा बने । उन्होने एक फरमान के अनुसार किसानों के ऊपर लगान का भार कम कर दिया । रानी अवन्ती बाई द्वारा छोटे और बड़े दोनो ही किसानों को खुलकर मदद मिल रहीं थी । वह जनता के सुख और दुख दोनों में ही शामिल होकर उनकी प्रिय बनी हुई थी । उसका एक ही उददेश्य था कि दुखी प्रजा के कष्ट निवारण की हर सम्भव कोशिश की जायेगी । चाहे वह बढ़ा हुआ राजस्व हो या उनका सामाजिक शोषण किसी भी प्रकार के अन्याय को सहन नहीं किया जायेगा ।[63]

राजा अपना अधिकांश समय स्नान ध्यान और जब पूजा में व्यतीत करते थे । लेकिन गोरी सरकार के प्रति उनके मन में तीब्र आक्रोश था । वें कहते थे कि जब तक हमारें तन में रक्त की एक भी बूँद है तब तक कोई हमारा बालबांका भी नही कर सकता। उस समय लोधी, ठाकुर, गोड़ राजगोंड़ राजपूत , ब्राम्हण , बनियों के साथ अंग्रेजी पल्टनों के साथ देशी सिपाही भी कुछ कर बैठने के लिये कुसमुसा रहे थे, कि "अंग्रेजों ने हम सबका दीन विगाडनें के लिये गाय और सुअर की चर्बी के कारतूस चलाये है ।"[1] रानी को विश्वास था, कि अगर किसान और मजदूर हमारे साथ रहें तो इन परदेशियों के दाँत खटटे करने में रत्ती भर भी कसक नहीं रहेगी । उनका विश्वास था कि इस समय बस एक ही असली काम है कि साधारण जनता से हिलमिल कर रहना, उनकें सु:ख दु:ख में शामिल रहना और उनकी सहायता से इन परदेसियों को बाहर निकालना । वह जानती थी कि अपने प्रदेश भर में गौड़ो की जनसंख्या सबसे अधिक है लोधी ठाकुरो की भी संख्या बहुत है ।

इन सबको उठाने की बड़ी आवश्यकता है । उसने एक दिन राजा से विनती की कि सरकार देश का दुर्भाग्य है कि अंग्रेज परदेसियों के हमारे यहाँ अनेक सहायक है । काम का आरम्भ करने से पहले ही चुगलखोर उनके पास पहुँच जायेगें । काम बिगड़ेगा और अंग्रेज बदला ले डालेगे । [64]

राजा विक्रमादित्य अस्वस्थ रहते थे । उस समय दुर्बल मस्तिष्क होने के कारण वह बहुत दिनों तक शासन नहीं चला सके । डलहौजी की हड़पनीति का शिकार रामगढ़ भी हुआ । रानी की इच्छा के विपरीत वहाँ एक तहसीलदार नियुक्त किया गया । और राजपरिवार को पेन्शन दे दी गई । रानी घायल सिंहनी की तरह समय का इन्तजार करती रही। [65]

अंग्रेजो ने राज परिवार के लिये पेन्शन की व्यवस्था कर दी थी रानी उनके व्यवहार से मुग्ध थी । उन्होने इसके खिलाफ अपनी प्रतिक्रिया अभिव्यक्त की पर मदान्धा कम्पनी के शासक साधारणतः रानी के विरोध पर कोई ध्यान नहीं देते थे । लाचार होकर रानी ने मण्डला के तहसील दार को हटा दिया । और वहाँ की शासन व्यवस्था को अपने हाथ में ले लिया । [66]

रानी धीरे धीरे संगठन करती गई । इधर उधर हुये क्रान्तिकारी विस्फोटों के समाचार सुनकर जनता कुछ कर डालने कि लिये उतावलीं होने लगी थी । रानी ने उनकी उभरती–भड़भड़ाती शक्ति का मार्ग दर्शन किया । उन्होने सुहागपुर के थाने पर अधिकार करवा लिया उसके पूर्व में रीवा का राज्य था । सन्देह था कि रीवा नरेश अंग्रेजों का साथ देंगें । बीच में सोहागपुर पड़ता था वहाँ एक मोरचा बन जाने के कारण अपनी योजना की दृढ़ता और सुअवसर के समय चलाने की सुविधा प्रान्त हो गई थी । अग्रेंजी सेना कार्य व्यस्त थी, कई जगह क्रान्ति की आग लग चुकी थी । अवन्ती बाई ने युद्ध के साधन जुटा लिये थे । तोपें अवश्य एक ही थीं । परन्तु उनका और उनकी जनता का आत्मविश्वास प्रबल और सशक्त था । [67]

इसके कुछ समय पश्चात ही उसने गढ़ा मण्डला के उस राजवंश के अन्तिम प्रतिनिधि राजा और शंकर शाह को जबलपुर में दिये गये निर्दय मृत्यु का समाचार सुना, जिसके कारण कभी उसका रामगढ़ राज्य अस्तित्व में आया था । उसके प्रति जो

अन्याय किया गया था वह गढ़ा मण्डला के राजाओं के इस वंश के साथ किये गये आचरण की तुलना में उसे कम कठोर ज्ञात हुआ । उसने तुरन्त ही जिले के ठाकुरों और मालगुजारों से संपर्क स्थापित किया । कि इस प्रकार के अन्याय को सहन करने के स्थान पर शस्त्र ग्रहण करके अंग्रेजों का विरोध क्यों न किया जाये ।[68]

रानी के विद्रोह की खबर जबलपुर के कमिश्नर को दी गई वह आग बबूला हो गया। उसने रानी को आदेश दिया कि वह मण्डला के डिप्टी कलेक्टर से भेंट कर लें । रानी एक मजबूत इरादे की औरत थीं । अंग्रेज पदाधिकारीयों से मिलने के बजाय उसने क्रान्ति की भरपूर तैयारी की। आस पास के जमीदारों और समान्तों से सहायता मांगी ।रानी ने सिंहनी के समान गरजतें हुये कहां कि वह जीतें जी सरकार के सामनें घुटनें नही टेकेगी।[69] रानी ने रामगढ़ के किले को और मजबूत बनाया उसे पता था कि अंग्रेज अवश्य आक्रमण करेंगें। वह एक कुशल योद्धा की तरह अपने पक्ष को हर तरह से मजबूत बनाना चाहती थी । इस प्रयत्न से उसे कुछ लोगों ने सहायता की जब सरकार को यह पता चला कि रानी आत्मसमपर्ण नहीं करेगी तब उसे दबाने के लिये सरकार की ओर से विशाल सेना भेजी गई। कैप्टन बेंडिग्टन के नेतृत्व मेंगोरी सेना विद्रोह को दबाने के लिये चल पड़ी। शाहपुर के ठाकुरों को बेडिंग्टन ने युद्ध में परास्त किया।[70]

एक अप्रेल 1858 को बिट्रिश सेना ने रामगढ़ की ओर कूच कर दिया । किलो को घेर लिया गया रानी को आत्मसर्मपण के लिये सन्देश भेजे गये । लालच व धमकियँा दी गई पर उत्तर में रानी किले से बाहर निकलकर युद्ध मैदान में आ डटीं । सेना का नेतृत्व स्वंय उनके हाथों में था । उनकी ललकार युद्ध क्षमता देखकर अंग्रेज दंग रह गये।अंग्रेजो को काफी हानि भी उठानी पड़ी। अंग्रेज सेना को पीछे लौटना पड़ा । कप्तान वाशिंगटन ने दूसरी बार पहले से अधिक सेना लेकर आक्रमण किया । इस बार भी रानी खूब बहादुरी से लड़ी । स्वयं घोड़े पर चढ़कर अपनी सेना की कमान संभाल रहीं थीं । हजारों की संख्या में विट्रिश सैनिक मारे गये शेष मैदान छोड़कर भाग खड़े हुये । इस भगदड़ में वाशिंगटन का लड़का भी खो गया जिसे रानी ने बाद में खोजकर उदारता पूर्वक दूत के साथ लौटा दिया । पर रानी के

इस अहसान का बदला वाशिंगटन ने तीसरी बार विशाल सेना के साथ आक्रमण करके चुकाया ।[71]

पर बहादुरी से लड़ने के बाबजुद इस बार रानी की हार निश्चित हो गई थी कहाँ विशाल अंग्रेजी फौज की संगठित व यांत्रिक ताकत और कहाँ उनकी सेना का आत्मबल । जान माल की भारी हानि और हार सामने देखकर भी वह और उनके सैनिक अंत तक लड़े ।[72] अंग्रेजो की सहायता के लिये रीवा की सेना भी आ पहुंची रानी का धैर्य अडिग था । थोडे से किसान और साधारण सी युद्ध सामग्री हाथ में फिर भी उनमें कितना धैर्य और कितना शौर्य था । 1 रानी की सेना को चारों ओर से घेर लिया गया । सामने वाशिगंटन, दांए बायें बटिन और रोक बने के दस्ते पीछे से रीवां वाली सेना । रानी ने युद्ध जारी रखा । अचानक उसके बायें हाथ में गोली लगी बंदूक छूट कर गिर गई । रानी ने उमराव सिंह की ओर हाथ बढ़ाकर तलवार माँगी । तथा तलवार अपने पेंट में भोंक ली ।[73] जब वहाँ अंग्रेज पंहुचे तब वह मरणासन्न थी । सिविल सर्जन ने उसे जीवित करने का प्रयत्न किया किन्तु उसकी आत्मा को बन्दी न बनाया जा सका । विजेताओं के हाथ उसका केवल निर्जीव शरीर आया । अपनी पूर्वजा रानी दुगविती के समान उसे रणक्षेत्र में अन्तिम क्षण तक अपनी स्ववंत्रता की रक्षा करते हुये वीरगति प्राप्त हुई ।[74]

1857 का विद्रोह और जैतपुर की रानी

बुन्देलखण्ड क्षेत्र जो मध्यप्रदेश में स्थिति है उसके जागीरदार सरदार आदि यहाँ अंग्रेजी शासन स्थापित हो जाने से बहुत क्षुब्ध थे क्योकि उन्हे अपनी आबादी एवं परम्पराओं के लिये निहित खातरा दिखाई दे रहा था ।[75] ईस्ट इण्डिया कम्पनी के अधिकारी बड़े ही विस्तार वादी थे । लार्ड कार्नवालिस और लार्ड वैलेजली ने क्लाइव द्धारा स्थापित विट्रिश साम्राज्य में भारत के बचें खुचे सरदारों और राजाओं के अधिकार को भी समाप्त कर दिया था । "उन्होने सतारा झाँसी आदि सभी को अपनी चपेट में लें लिया था । लार्ड एलनबू ने छोटी सी रियासत जैतपुर के स्वतन्त्र अस्तित्व को भी तहस नहस कर दिया था ।"[76]

जैतपुर बुन्देलखण्ड की एक छोटी सी रियासत थी 27 नवम्बर 1842 को लार्ड एलनबू ने जैतपुर पर अपना अधिकार स्थापित कर लिया था उस समय जैतपुर के राजा पारीक्षित थे जो आजादी के प्रेमी थे उनका ध्येय अंग्रेजी सत्ता को उखाड़ फेंकना था पर वे उनकी तुलना में कमजोर पड़ते थे । अतः उन्हे कम्पनी की सेना ने बड़ी आसानी से पराजित कर दिया । राजा पारीक्षित अपने कुछ समर्थकों के साथ जैतपुर छोड़कर भाग खड़े हुये । अंग्रेज सरकार ने जैतपुर का शासन भार अपने एक समर्थक सामन्त को दे दिया । "जैतपुर के राजा इस दुःख को सहन न कर सके । उनका निधन हो गया ।" [77]

1843 में राजा पारीक्षित के कोई सन्तान न होने के कारण जैतपुर राज्य का विलय अंग्रेज कम्पनी में हो गया । जैतपुर को जलौन जिले में जोड़ दिया गया और "पारीक्षित की पत्नी को प्रतिमाह 1200 रू0 की पेन्शन दे दी गई ।" [78]

जैतपुर रानी का संघर्ष – जैतपुर के अपदस्थ राजा पारीक्षित की रानी को अपने पति के राज्य को पुनः प्राप्त करने के लिये अंग्रेज सरकार के विरूद्ध क्रान्ति का ही रास्ता अपनाना पड़ा जैतपुर सिमरिया को तो रानी ने अंग्रेजों से छीन ही लिया था । बल्कि दमोह जिले पर भी अपने शासन को स्थापित किया । इसी सिलसिलें में रानी ने 1857 की क्रन्ति में अहम भूमिका निभाई । और इस भूमिका को निभाने में बुन्देलखण्ड के कई सरदारों ने सहयोग दिया । [79]

स्थानीय मजिस्ट्रेट के आदेश के विरूद्ध रानी नें जैतपुर को एक हथियार बन्द सेना से मजबूत कर दिया । जैतपुर की रानी कों मजिस्ट्रेट के द्धारा दुबारा चेतावनी दी गई । मजिस्ट्रेट ने उन्हें सूचित किया कि वो जैतपुर से निकालने के लिये बहुत से उपाय किये गये । लेकिन रानी द्धारा मजिस्ट्रेट द्धारा डाले गये दबाव और कई प्रकार कें दिये गये प्रलोभनों को पूरी तरह से नकार दिया गया । ''अन्त में रानी को चेतावनी दी गई कि आपको जैतपुर से निकालने के लिये बल प्रयोग किया जायेगा । और अन्ततः रानी को जैतपुर से निकाल दिया गया ।''[80]

जैतपुर रानी को सबसे अधिक सहयोग दिय न देश पत से तो हो ही रहा था – अलीपुरा के जागीरदार हिन्दुपत के भतीजे राव बरन्त सिंह भी निडर होकर सहयोग कर रहा था । जून 1857 के प्रारम्भ में ही चरखारी राजा ने अंग्रेजी सरकार से कहा कि यदि वे कहें तो वह अपनी फौज जैतपुर भेजकर रानी को जैतपुर पर अधिकार करने से रोकें ।[81] अंग्रेजी सरकार के इशारे पर बहुत अधिक खून खराबी के बाद जैतपुर रानी को चरखारी की फौज ने 20जुलाई 1857 को कैद कर लिया तथा रानी की पेन्शन भी आधी कर दी गई । चरखारी राजा तों जैतपुर रानी को निगल जाने की ताक में था ही अतः उसने जैतपुर रानी को कैद करके टिहरी भेज दिया । टेहरी राज्य के गढ़ कुड़ार के सुद्धा दुर्ग में उसे कैद करके रखा गया ।[82]

1857 की राज्य क्रान्ति में जालौन की प्रथम महिला क्रान्तिकारी वीरांगना ताईबाई का योगदान

जालौन उत्तर प्रदेश का एक छोटा सा हिस्सा है । उसी जालौन में वीरांगना ताईबाई ने 1857–58 की क्रान्ति में हिस्सा लेकर तथा लगभग 7 माह जालौन जनपद में स्वतंत्र क्रान्तिकारी सरकार स्थापित करके उसके प्रमुख के रूप में कार्य किया और अन्य प्रमुख क्रान्तिकारियों जैसे राव साहब तात्या टोपे आदि की धन तथा सेन्यबल से सहायता की । अंग्रेज तो उनसे इतने अधिक नाराज थे, कि जनपद के जनमानस में उनकी स्मृति को लोप करने के लिये बहुत बाद में जालौन स्थित उनके किले को वर्ष 1860 में तुड़वाकर जमीन में मिला दिया था ।

ताईबाई जालौन कें मराठा राजवंश से सम्बन्धित थी ।

जालौन में मराठा राज्य के संस्थापक गोविन्द पन्त बल्लाल खेर थे । उनके छोटे पुत्र गंगाधर गोविन्द को कालपी और जालौन का इलाका बटवारे में प्राप्त हुआ था । गंगाधर गोविन्द के बाद उनके पुत्र नानाराव जालौन के राजा हुये गोविन्द राव नाना के बालाबाई नाम एक पुत्री हुई जिसका विवाह गोपालराव से हुआ । बालाबाई और गोपाल राव के एक पुत्री हुई जिसका नाम ताईबाई रखा गया । इस प्रकार ताईबाई जालौन के शासक गोविन्द राव नाना की नातिन थी । [83]

ताईबाई का विवाह हाता सागर के नारायण राव से हुआ, परन्तु पति पत्नि जालौन के किले में ही विवाह के पश्चात रहते थे । गोविन्द राव नाना की मृत्यु के बाद उनके पुत्र बालारव गोविन्द जालौन के शासक हुये । बालाराव की मृत्यु के समय उनके निःसतान होने पर पत्नी लक्ष्मीबाई ने अपने भाई गोविन्द राव को गोदलेकर जालौन की गददी पर बैठाया । दुर्भाग्यश वर्ष 1840 में गोविन्द राव की मृत्यु हो गई । [84]

अब की बार लक्ष्मीबाई ने गुरसराय के राजा केशव राय को गोद लेने का प्रस्ताव किया, परन्तु अंग्रेजी हुकूमत न इसको स्वीकार नहीं किया और जालौन स्टेट को ईस्ट इण्डिया कम्पनी के राज्य में मिला लिया । 3 ताईबाई की दावेदारी को भी अंग्रेजो ने नकार दिया । कम्पनी सरकार के इस अन्यायपूर्ण कार्य से ताईबाई के हृदय में अंग्रेजो के प्रति घृणा और असन्तोष की आग भड़क उठी जो 1857 –58 में ज्वाला के रूप में प्रकट हुई ।जून 1857 को कानपुर में क्रान्ति प्रारम्भ होने कीं सूचना 6 जून को उरई पहंची । 9 जुन तक सैनिकों कस्टम कर्मचारियों और पूलिस ने ने पूर्ण रूप से क्रान्ति का शँखनाद कर दिया । केशवराय अपने दो पूत्रों शिवराय तांतिया और सीताराम नाना तथा काफी सैनिकों के साथ जालौन आ गये । **85** ताई बाई ने केशव राय को सहयोग दिया लेकिन शीघ्र ही केशवराय ने कुछ ऐसे कार्य किये निससे यह साफ हो गया कि वह दोनों तरफ मिले है ।
जिधर पलड़ा भारी नजर आयेगा वे उसी तरफ हो जायेगें । क्यों कि दो अंग्रेज डिप्टी कलेक्टर जिनको कि केशवराय ने कैद करके चुर्खी में रखा था । **86** परन्तु कृान्तिकारियों के अनुरोध पर भी केशवराय में अंग्रेज अधिकारियों को मृत्यु दण्ड नहीं दिया । तथा

केशवराय ने पशन्हा ग्रिफिय और उनके परिवार के सदस्यों को सुरक्षित 2 सितम्बर को कानपुर पहुँचा दिया । इस धारना से ताई बाई को विश्वास हो गया कि के केशवराय अंग्रेजो के साथ है । 29 अक्टूबर 1857 को तात्याटोपे ग्वालियर के विद्वोही सैनिकों के साथ जालौन आयें ।[87] ताई बाई नें केशवराय और उसके पुत्रों के क्रिया कलापों से तात्या टोंपे को अवगत कराया केशवराय ने तात्या ओपे को खुश करने के अनेक प्रयत्न किये लेकिन तात्या टोपे द्धारा उनकी एक न सुनी गई अन्त में केशवराय गुरसराय लौट गया । तात्याटोपे ने ताई बाई के 5 वर्षीय पुत्र गोविन्दराव को जालौन की गददी पर बैठकर ताईबाई को राज्य की संरक्षिका घोषित कर दिया।ताई बाई ने भाऊ विश्वासराव को अपना प्रधान मंत्री नियुक्त किया । एक माह से भी कम समय में ताई बाई ने एक बडी सेना का गठन करके तात्याटोंपे के साथ कानपुर पर अधि ाकार करने के लिये भेजा। नवम्बर तथा दिसम्बर में कई बार इस सेना को भारी पराज्य का मुख देखना पडा । [88] पराजित सेना तात्या टोपे के साथ कालपी लौट आई ।

ताई बाई ने हिम्मत नहीं हारी । उसने अपने जेवरों को बेंचकर पुनः एक फौज खड़ी करने में तात्या टोपें की मदद की । इस फौज ने चरखारी पर आकृमण करके विजय श्री वरण किया । इस पूरे समय में क्रन्तिकारी सैनिकों का वेतन तथा खर्चे का भार ताई बाई ने उठाया । वर्ष 1858 कें प्रारम्भ होते होते दबोह और कछवाधार के कुछ भाग को छोड़कर पूरा जालौन जिला ताई बाई के अधिकार में आ गया । [89] 7 मई 1858 को कोंच के युद्ध में क्रान्तिकारियों को रोज की सेना के पराजित होना पड़ा । [90] कोंच पर अधिकार करके रोज की सेना 9 मई को हरदोई गूजर तक आ गई । [91] हरदोई गूजर में भयंकर लूटमार और नरसंहार अंग्रेजों द्वारा किया गया । जालौन में ताई बाई को कोचं और हरदोई गूजर की घटनाओं की सूचना मिली जिससे वह बहुत विचलित हो गई । उनके हृदय में निराशा घर कर गई ।

10 मई 1858 को उरई में नव नियुक्त डिप्टी कमिश्नर मिस्टर ए0 एच0 टरनन के समक्ष ताई बाई ने अपने सहयोगियों के साथ जिसमें उनके पति नारायण राव, पुत्र गोविन्द राव , दीवान विश्वासराव, उनके पुत्र गोपालराव आदि थे, आत्म समर्पण कर दिया । [92] ताई

बाई और उनके सहयोगियों पर अंग्रेजों के विरूद्ध क्रान्ति को प्रोत्साहन देने उसमें भाग लेने और राज्य के प्रति विद्रोह करने के आरोप में राजद्रोह का अभियोग लगाकर सबको आजीवन कारावास का दण्ड दिया गया । [93] मुगेर में निर्वासित जीवन की सजा भुगतते हुये वर्ष 1870 में ताई बाई की मृत्यु हो गई ।

1857 की क्रान्ति में जबलपुर की महिलाओं का योगदान

3 जुलाई 1857 को अंग्रेजो के कटु व्यवहार से रूष्ट होकर जबलपुर बावननीं वटालियन की तीन टुकडियों ने अंग्रेजो की भर्त्सना करते हुये बंदूके तान ली थीं । 16 जुलाई 1857 को सागर जबलपुर के कमिश्नर मेजर अर्सकिन ने एलिस को पत्र लिखा था कि "स्लीमाबाद परगना के सभी हिस्सों में अराजकता फैल गई है । स्लीमाबाद परगने मे चारों ओर डकैतियाँ हो रही है। लोग कह रहे है कि अंग्रेजी शासन का अन्त हो गया है।" [94]

2 अगस्त 1857 को कमिश्नर की लगातार और शीघ्र सहायता की माँग के अनुसार कामठी का फौजी दस्ता शासन की सहायता तथा विद्रोहियों को दबाकर शान्ति स्थापित करने के लिये जबलपुर पहँचा । कामठी फौजी दस्ते के जबलपुर पहुंचते ही शहर में खलबली मच गई । जितने नगर निवासी शहर मे जहाँ पाये गये उसी जगय संगीनों से उन्हें मार डाला गया इसी से समझा जा सकता था, कि मरने वालो की तादाद कितनी रही होगी जब कि एक एक मकान में चालीस चालीस पचास–पचास आदमी छिपे हुये थे । शहर के अन्दर सैकडों ऐसी औरतें थी कि जैसे ही उन्होने सुना कि कम्पनी की फौजें आ रही है, तो वे बेइज्जयती और मुसीबतो से बचने के लिये कुओं मे गिरने लगी । यहाँ तक कि अनेक कुंए औरतों की लाशों से भर गयें । अनेक मातायें बच्चों का दु:ख न देखकर उन्हें अकेला छोडकर कुंए में डूब मरी । इस प्रकार कामठी फौजी के दस्तो ने आतंक जमाने के लिये पूरे जबलपुर शहर की जनता के रोगटें खडे कर दिये । [95]

18 सितम्बर 1857 को राजा शंकर शाह और उसके बेटे को तोप से उड़ा दिया गया 26 सितम्बर को विजय के मद में मस्त प्रतिशोध की ज्वाला में कंटगी ग्राम में आग लगा दी गई एंव निर्दोष जनता की सामूहिक हत्या की गई। महिलाओं के साथ लोमहर्षक अनैतिक कार्य (व्याभिचार) कियें गये । कंटगी के हवलदार तिवारी, रामचरण एवं भोला सिंह के अंग भंग करके क्रूर यातना देकर फाँसी पर चढाया गया ।[96] 30 अक्टुबर 1857 को नरसिंह से कैप्टन उले के साथ सेना की एक टुकडी विजयराघोगढ़ के विद्रोहियों का दमन करने के लिये रवाना हुई । विजयराघोगढ़ के राजा सरजूप्रसाद और उसके पुत्र रानी के साथ भूमिगत हो गये और विवश होकर फकीर बैरागी बनकर राख बदन में लपेटें हुये एक हाथ में तोते का पिंजडा लिये जंगलों पहाडों की विषय परिस्थितियों से जूझते हुये, अपने दुर्भाग्य का समय काटतें रहें फिर भी अंग्रेजो की निगाहें उन पर लगी हुई थी कुछ राष्ट्रघातों के सहयोंग से अंग्रेजों ने जबलपुर में सन् 1864 में इन्हे गिरफ्तार कर लिया गया और राजद्रोह का मुकदमा चलाकर आजीवन काले पानी की सजा दी गई ।[97]

वीरानयनी और 1857 की क्रान्ति –

सन 1857 की कृान्ति के दौरान कर्नल व्हिसलर के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने विजय राघोगढ किले को चारों से घेर लिया और शत्रु तोपें अनवरतरूप से गोलों पर गोले किले पर बरसा रहीं थीं । तब स्त्रियों ने किले का द्रार बन्द कर लिया ,तब एक महिला सेनानी जिसका नाम वीरानयनी था और वह वीरंगना सरदार राम बोल की धर्मपत्नी थी , वह अपने पुत्र हरदौल को राजा की टुकडी के साथ रवाना कर चुकी थी । वह किले के नैत्रत्य कोण में अंग्रेजी सेना के गोले गिरते देखकर उस दिशा में लगी किले की तोपों के भी समुचित उत्तर देना शुरू कर दिया वीरानयनी ने सम्पूर्ण किले में घूम घूम कर ऐसा उत्साह भरा कि विजय राघोगढ़ किले की स्त्रियों ने बारूद और लोहे के साथ अपने सोने चांदी के आभूषणों तक को गोले के रूप में गलवा दिया । 18 सितम्बर 1857कोराजा शंकर शाह और उसके बेटे को तोप से उड़ा दिया गया 26 सितम्बर को विजय के मद में मस्त प्रतिशोध की ज्वाला में कंटगी

ग्राम में आग लगा दी गई एंव निर्दोष जनता की सामूहिक हत्या की गई। महिलाओं के साथ लोमहर्षक अनैतिक कार्य (व्यामिचार) कियें गये । कंटगी के हवलदार तिवारी, रामचरण एवं भोला सिंह के अंग भंग करके क्रूर यातना देकर फाँसी पर चढाया गया ।[96] 30 अक्टुबर 1857 को नरसिंह से कैप्टन उले के साथ सेना की एक टुकडी विजयराघोगढ़ के विद्रोहियों का दमन करने के लिये रवाना हुई । विजयराघोगढ़ के राजा सरजूप्रसाद और उसके पुत्र रानी के साथ भूमिगत हो गये और विवश होकर फकीर बैरागी बनकर राख बदन में लपेटें हुये एक हाथ में तोते का पिंजडा लिये जंगलों पहाडों की विषय परिस्थितियों से जूझते हुये, अपने दुर्भाग्य का समय काटतें रहें फिर भी अंग्रेजो की निगाहें उन पर लगी हुई थी कुछ राष्ट्रघातों के सहयोंग से अंग्रेजों ने जबलपुर में सन् 1864 में इन्हे गिरफ्तार कर लिया गया और राजदृोह का मुकदमा चलाकर आजीवन काले पानी की सजा दी गई । [97]

वीरानयनी और 1857 की क्रान्ति –

सन 1857 की कृान्ति के दौरान कर्नल व्हिसलर के नेतृत्व में अंग्रेजी सेना ने विजय राघोगढ किले को चारों से घेर लिया और शत्रु तोपें अनवरतरूप से गोलों पर गोले किले पर बरसा रहीं थीं । तब स्त्रियों ने किले का द्वार बन्द कर लिया ,तब एक महिला सेनानी जिसका नाम वीरानयनी था और वह वीरंगना सरदार राम बोल की धर्मपत्नी थी , वह अपने पुत्र हरदौल को राजा की टुकडी के साथ रवाना कर चुकी थी । वह किले के नैत्रत्य कोण में अंग्रेजी सेना के गोले गिरते देखकर उस दिशा में लगी किले की तोपों के भी समुचित उत्तर देना शुरू कर दिया वीरानयनी ने सम्पूर्ण किले में घूम घूम कर ऐसा उत्साह भरा, कि विजय राघोगढ किले की स्त्रियों ने वारूद और लोहे के साथ अपने सोने चाँदी के आभूषणो तक को गोलें के रूप में गलवा दिया । किन्तु दुर्भाग्य से गोरी सेना का एक गोला वीरानयनी के ऊपर गिरा जिसकी मार से वह वीरगति को प्राप्त हुई । अंग्रेजो के हाथ इस शहीद वींरागना के मृत देह को अपने सेनापति व्हिसलर के पास ले जाने के लिये दौडपडे थे । किन्तु इसके पूर्व ही कृपाबोल बाज की भाँति झपटटा मारकर वीरानयनी केशव को उठाकर पीछे की खाई से कूदकर

रहस्यमय ढंग से अर्न्तध्यान हो गया । [98]

विजयराघोगढ के दुर्ग पर कब्जा करने के बाद ब्हिसलर ने प्रत्येक घर में घुसकर कृपाबोल का पता लगाया । अचानक उन्हे कृपाबोल दिखाई दिया जो कि उसी तरफ आ रहा था । व्हिसलर चिल्लाया "सरदार तलबार रख दे" जबाब में कृपाबोल ने तलबार से ऐसा बार किया कि ब्हिसलर के दोनों पैर कट गये । ब्हिसलर ने गिरते पिस्तौल की सारी गोलियों के कृपाबोल के शरीर पर दाग दिया । क्रपाबाल गिरते हुये बोला "सरदार लोग यूँ ही तलवार रखा करते है " और इसके बाद उस वीर सेनानी का प्रणान्त हो गया।[99] जबलपुर स्वतंत्रता आन्दोलन के इतिहास में वीरानयनी और उसके शव को अंग्रेजो के हाथ न पड़ने देने वाले कृपाबोल को शोधर्थिनी का शत शत नमन ।

वीरांगना झलकारी बाई

वीरांगना बाई का जन्म 1830 में झांसी नगर में हुआ था । वह कोरी वंश की थी उसका गाँव लडिया था । उसके पिता सदोवा बड़े ही सरल स्वभाव के थे । उसकी माँ यमुना बड़ी ही चतुर व सुशील थी । झलकारी का बचपन का नाम झलरिया था । झलकारी के माता पिता की आर्थिक दशा बड़ी हीं शोचनीय होने के कारण उसको किसी प्रकार की शिक्षा नही मिल पाई। [100]

झलकारी बचपन से ही बडी चंचल व गुणवान थी । वह लड़ाकू होने के साथ साथ बडी जिददी थी । पिता के द्वारा वीरों की कहानियाँ सुनसुन कर वह निडर हो गई थी वह घने बीहड़ जंगलों में अकेले ही चली जाया करती थी । सन 1843में उसका विवाह नयेपुरा (झाँसी) में पूरन कोरी के साथ हुआ और वह ससुराल में रहने लगी।

झलकारी गेहुयें रंग की थी। शरीर हृष्ट पुष्ट था आंखे बड़ी बडी थी नासिका उठी हुई थी । कद में वह अच्छी थी कद में कान ,नाक , आँख, चेहरे से उसकी आकृति बहुत कुछ रानी से मिलती थी । केवल रानी श्वेत वर्ण की थी लेकिन झलकारी श्याम वर्ण की थी । झलकारी का चेहरा प्रभावशाली था उसकी आँखो से तेज चमकता था । [101]

पूरन के साथ झलकारी का विवाह होन के पश्चात वह प्रत्येक कार्य एक गृहस्थ नारी की तरह करने लगी ।

" मैं चकिया रोंटी पीसत हौं दो तीन तीन मटकन में पानी भर कें आउत कातत हौ" । [102] यह सब बातें झलकारी के लिये के लिये खेल थी।झलकारी कीं सूझबूझ तथा समझने की शक्ति अच्छी थी । अभिमान न होते हुये भी वह स्वाभिमानी थी । बात की बड़ी हटीली थी जो कह देती थी उसे पूरा करती थी । उसके घर के सामने गनेश बाबा का घर था जिनको वह बहुत मानती थी ।

पूरन – पूरन दिन भर अपना पुरिया पाई बिनने का काम करता था और संध्या के समय दंड बैठक और मलखम्भ करता था । पूरन पटे बाजी में इतना लवलीन हो गया था ,कि वह अपने घर के कार्य में भी रूचि नहीं लेता था उसका अधूरा कार्य झलकारी को ही करना पडता था।उधर रानी लक्ष्मी बाई की जबसे गंगाधर राव से शादी हुई तभी से उनकी विलासिता के कारण महारानी को चिन्ता सताती थी कि झाँसी के भविष्य का क्या होगा ? रानी चाहती थी कि उसका परिचय झाँसी नगर की प्रत्येक नारी से हो जाये ।

हल्दी कूं कूं उत्सव

बसन्त पंचमी में चैत्र की नवरात्र में रानी ने एक विशाल गौर की प्रतिमा स्थापित की तथा झाँसी की प्रत्येक नारियो के लिये हल्दी कू कू त्योहार में शामिल होने के लिये द्वार खोल दिये । [103]

रानी के कक्ष में चमार भंगी बसोर की स्त्रियां नही जा सकती थी परन्तु कारियों व कुम्हारों की स्त्रियाँ जा सकती थी ।[104]

झलकारी को भी हल्दी कूं कूं उत्सव में सम्मिलित होन का बुलावा मिला । झलकारी हल्दी कूं कूं उत्सव में शामिल होने तैयार होकर महल गई महल में जाकर वह स्तन्ध रह गई । गौर की प्रतिमा हार फूलों से लद गई थी । सभी स्त्रियां एक एक करके रानी को हार पहनारही थी । रानी फूलों की मालाओं से ढक गई थी । झलकारी यह देखकर अचम्भे में पड़ गई । वह भी रानी को हार पहिनाने की प्रतिक्षा करने लगी । [105]

झलकारी मन में सोचने लगी कितनी सुन्दर, कितनी हँसमुख, क्या रूप पाया है रानी ने साक्षात् रानी देवी है ? क्या वह हमारे हाथ से माला पहिन लेंगी । फिर मन ने ढांढस बंधाया, कि इतनी हंसमुख इतनी सरल स्वभाव वाली रानी तेरी ही माला को पहिनने

से क्यों इन्कार करेंगीं । वह अपनी कल्पना में डूबी ही थी कि अचानक कुछ स्त्रियों की आँख उस ओर कोने में खड़ी नव वधू पर पड़ी । उसके चेहरे की आकृति को देखकर सहेलियों में कौतुहल जागा । स्त्रियों के इस कौतुहल को देख रानी ताड़ गई । रानी ने देखा कि एक नव वधू लज्जा शर्म से अपनी कुछ ग्रीवा झुकाये दोनो हाथों में हार लिये मौन खड़ी है। रानी ने झलकारी को ऊपर से नीचे तक देखा और देखते देखते उसके चेहरे पर अपनी आँख गड़ा दी । वही चेहरा वही नासिका , वही कजरारे नैन वही शील स्वभाव । रानी अपने चेहरे को उसके चेहरे में ढाल कर देखने लगी ।

झलकारी ने भी टकटकी बांध ली रानी ने उसकी आंखो में स्वतत्रंता की लहर देखी , सफलता के जलते दीप देखे । दोनो ओर से पलक सध गये । झलकारी व रानी को मौन देखकर स्त्रियों का कौतूहल चला गया भनभनाहट कम हुई, और हाल में सन्नाटा खिच गया ।[106]

रानी की आंखो में खुशी के आसू आ गये वह टकटकी बांधे धीरे धीरे आगे बढ़ी । झलकारी में भी मुस्कराहट जागी । वह भी पोले पोले आगे बढी रानी झपट कर आगे बढ़ी । ऐसा प्रतीत हुआ जैसे उनको उनकी खोई वस्तु मिल गई हो रानी ने मुस्करा कर पूछा "तुम कौन हो?" मै तों कोरिन हूँ सरकार "।
"तूम्हारा नाम "।
"झलकारी दुलइया "।
"तुम कँहा रहती हो "।
"सरकार मैं तो नये पुरा में रहती हूँ "।

"तुम्हारे पिता का नाम वे क्या करते हैं"? "सरकार वे तो मलखम्भ कुश्ती करते हैं" ।
"यह तो बहुत अच्छी बात है हम सभी को कुश्ती मलखंभ घुड़सवारी तलवार योजना इत्यादि सीखना चाहिये" ।"का कहत हो सरकार" झलकारी विस्मित हो गई । रानी ने उत्तर दिया "हमें शत्रुओं से अपनी फासी बचाने के लिये सब कुछ सीखना चाहिये । और वह हम तुम्हें सिखायेगें" । तुम कल से हमारे पास आया करों अच्छी बात है । झलकारी ने उत्तर दिया ।[107] झलकारी रानी से आक्षा लेकर घर चली गई और अपने पति पूरन को महल की सारी घटना

सुनाई । उसकी सास ने भी इस बात को सुना उसने आर्शीबाद दिया कि तुम दोनो संसार में अपना नाम कमाओं । दूसरे दिन चुपके से झलकारी रानी के कक्ष में आने लगी । इधर एलिस ने 20 नवम्बर 1053 को खरीवा पालिटिकल एजेन्ट भेजा उधर महाराज गंगाधर राव का 21 नवम्बर 1853 देहान्त हो गया । रानी शोक में डूब गई झलकारी ने आकर रानी को ढांढस बंधाया । रानी ने दुःख की घड़िया भुलाकर झाँसी की बागडोर संभाल ली और अपना शासन द्धढ़ करने में लग गई । झलकारी ने अपना अभ्यास पुनः आरम्भ कर दिया ।[108] झलकारी ने बहुत थोड़े ही समय में रानी से बहुत कुछ सीख लिया ।

झलकारी बहुत ही भुरारे उठती और अपने कंधे पर बंदूक लादकर अंजनी टोरिया चली जाती । अंजनी टौरिया पर वह बन्दूक का अभ्यास करती थी । जिस कैथे को वह अपना निशाना बनाती एक क्षण में वह उसके सामने लोटने लगता था । एक दिन रानी ने कहा कि अंग्रेजो की आँख हमारी झाँसी पर लगी हुई है अब वह दिन दूर नही जब हम सबको एकसाथ मैदान ए जंग में उतरना पड़े । कैसी बात करत होरानी साहिबा झलकारी तेज होकर बोली । जहॉ आपका पसीना गिरेगा वहँा हम खून बहा देंगे । झलकारी अपने समाज और बिरादरी की चिन्ता न करके अपनी मातृभूमि अपनी प्रिय झाँसी के भविष्य की चिन्ता न करने लगी । वह उसके स्वप्न में डूब गई थीरानी की कही हुई बाते उसको दिन प्रतिदिन खटकने लगी थी। उसका पुनः महल में जाना आना आरम्भ हो गया था। सुन्दर मुन्दर जूही काशी आदि की संगत में रहने के कारण उसकी बोली भाषा में भी परिवर्तन होन लगा था और कुछ समय बाद वह सम्थ लोगों की तरह खड़ी भाषा में बोलने लगी थी ।[109]

रानी की गोद खाली हो जाने कारण रानी ने दत्तक पुत्र दामोदर राव को गोद ले लिया था । अंग्रेज सरकार को इस बात का पता चल गया और उन्होने गोद लेने की प्रथा को गैर कानूनी घोषित किया । परन्तु रानी ने इसकी तनिक भी परवाह न की क्रोध में आकर विट्रिश सरकार न सन 1854 में झाँसी को अंग्रेजी इलाके में मिला लेने का एलान किया । [110]

एलिस मालकम घोषणा पत्र लेकर रानी के महल में आया

रानी पर्दे में थी मुन्दर पहले ही वहाँ थी देव योग से झलकारी भी वहाँ पहुँच गई । जेब में हाथ डालकर एलिस ने मालकम वाली घोषणा निकालकर सुनाई । झलकारी की रोष के मारे आँखे लाल हो गई । रानी का खून खौल उठा वह पर्दे के पीछे से क्रुद्व स्वर में बोली "मै इस शर्त को मानने के लिये तैयार नही हूँ मैं अपनी झाँसी किसी शर्त पर नही दूंगी"। इसी बीच झलकारी बोल उठी । "मैं अपनी जान की बाजी लगा देहों पर गोरन को झाँसी नही दैहों" । झलकारी घर आ गई । उसने पूरन से कहा कि"हम पर रानी को अहसान है हमने उनको नमक खायो है हम दिखा दैहें कि झलकारी के होत भये रानी पर कोई उँगली नही उठा सकता।"

रानी ने स्त्रियों की जो विशाल सेना बनाई थीं उसमें उसने झलकारी को एक मुख्य स्थान दिया । पूरन भी रानी की सेना में भर्ती हो गया । पूरन को सेना का सिपहसालार बना दिया गया ।रानी झलकारी को अपने साथ रहने का आदेश दे सभी स्थानों का निरीक्षण करने लगी । 3 सितम्बर को नन्हे खाँ ने चढ़ाई कर दी । एक बड़े जोर का धमाका हुआ । सूरमा की वेश भूषा में रानी झलकारी तथा अन्य सहेलियों को लेकर घोड़े पर सवार होकर ओर्छा दरवाजे पर पहुँची । रानी का संकेत पाते ही गौस ने ग्यारह तोपों में एक एक करके पलीता देना आरम्भ कर दिया भवानी शंकर तोप भीषण आग उगलने लगी । सभी दिशाओं से भयंकर मार देखकर नन्हे खाँ के पैर उखाड़ गये । वह भाग गया ।[111]इसी समय रानी को यह खबर लगी कि रोज दक्षिण की ओर से आ रहा है । रानी ने झलकारी को उनाव फाटक पर उसके पति पूरन के साथ नियूक्त किया और स्वयं बुर्ज पर निगरानी करने लगी 28 मार्च को रोज ने झाँसी पर चढाई कर दी अंग्रेजो ने गोलाबारी की जबाब में किले से भी विकट गोलाबारी की । रोज की सेना घबरा गई । उसने इस समय लड़ाई लड़ना उचित नही समझा । और उसने अपनी फौजें पीछें हटा लीं ।

जार पहाड़—इधर पीर अली ने गददारी की वह रातों रात जनरल रोज से जाकर मिल गया । रानी को पता न चल सका । लालच में पड़कर पीरअली ने सभी फाटकों काराज खोल दिया । राज तो इस चिन्ता मै था ही उसने रातों रात जार पहाड़ी के ऊपर तोपें चढाने का हुक्म दे दिया । नगर में धुंआधार हो गया ।

चिन्गारियाँ छुटने लगी । हाहाकार मच गया । बाज़ार बन्द रहा लोग दुकानों पर नही गये। जनता त्राहि त्राहि चिल्लाकर इधर उधर भागने लगीं ।उत्तर में उन्नाव फाटक से झलकारी पूरन न डटकर मुकाबला किया । पूरन तोप चलाता झलकारी झलकारी पलीता देती, पूरन पैंतरा बदलता झलकारी मोर्चा सम्भाल लेती थी । रानी उन दोनों के उत्साह को देखकर बडी प्रसन्न हुई । उसने झलकारी की पीठ पर हाथ फेरा बोली "झलकारी तुमने बड़ी मेहनत उठाई" । [112]

दूसरे दिन एक जोर का धमाका हुआ । झलकारी घर पर काम कर रही थी उसने अपनी धोती कमर में कस लिया और भागती हुई अपने बुर्ज पर पहुँची । और झलकारी ने पूरन की तोप सम्भाल ली । उनाव फाटक पर विकट मोर्चा देख गोरों के पैर उखडने लगे झलकारी ने गोरों के सर कोऊपर न उठने दिया। वह भीषण मार कर रही थी । झलकरी सामने से आगे बढ़ने वालों को भून कर रख देती थी । अंग्रेजो में खलभली मच गई । बहुत से अंग्रेज मरे तथा अनेंकों घायल हो गयें ।

झलकारी ने सभी जाति की स्त्रियों को इकटठा करके जोशीला भाषण दिया । उसके भाषण से नारियों का रक्त खौल उठा । जिन स्त्रियों के पास बन्दूके थी । उन्होने ओट लेकर निशाना बाँधा बाकी ने ईट पत्थर ठोना शरू किया। जो अंग्रेज सीढी लेकर बढता था झलकारी उसे चित्त कर देती थी झलकारी पूरन ने दुश्मनों की लाशों के ढेर लगा दिये । [113]

भीषण हत्या काण्ड – परन्तु झाँसी के बुरे दिन आ गये । उसने जयचन्द को पुनः जन्म दे दिया । दीवान दूल्हाजू सरदार ने भी जय चन्द की तरह गददारी की । वहलालच में पडकर शत्रुओं से मिल गया और जनरल को उसने ओरछा फाटक खोलने का बचन दे दिया । दूल्हा जू की बात मानकर रोज ने एक विशाल सेना ओरछा फाटक पर निश्चित दिन पर लगा दी और फाटक खुलने के समय ही प्रतीक्षा करने लगा । मौका अच्छा देखकर दूल्हा जू ने ओरछा फाटक खोल दिया । रोज ने नगर के एक बुर्ज पर अपना अधिकार करना आरम्भ किया । [114] गोरों द्वारा घरों में आग लगाने से नगर में हा हा कार मच गया रानी ने जब हाल देखा तो उसे क्रोध आ गया । उसने तुरन्त रघुनाथ सिंह , गूलाम

गौस, भाऊ बख्शी , गुलमुहमम्द व पूरन इत्यादि सरदारों को बुलाया और सभी को लडने का आदेश दिया । भीषण युद्ध छिड गया बच्चों से लेकर बूढों तक को अंग्रेजो ने जान से मार दिया । स्त्रियां भय से कुएँ में कूद गई गोरो ने अब घरों में घुसना आरम्भ किया ।

झलकारी जैसा समय देखाती वैसा ही करती । वह भीषण आग उगल रही थी जो पास आने की चेष्टा करता उसे अपनी बन्दूक की गोली से उठा देती थी । वह गोरों के खून की प्यासी हो रही थी उसे अपने प्राणों का इतना मोह नही था जितना रानी का ।

झाँसी का पतन नजदीक आ रहा था मुन्दर वीरगति को प्राप्त हो चुकी थी । रानी ने अपनी आंखो से अपनी झाँसी की दुर्दशा देखी उससे न रहा गया और उसने अपने अन्त करने का विचार किया । भोपटकर नें रानी को झाँसी छोडने की सलाह दी । 4 अप्रेल 1858 की रात को रानी ने दामोदर राव को चादर से पीठ पर कस कर बांधा कर अपनी झांसी को प्रणाम किया उन्होने एड़ लगाई और किले के उत्तरी भाग से निकल पड़ी सिपाहियों को लेकर रानी आगें बढी झलकारी को भय था कि अंग्रेजो को शीघ्र ही पता चल जायेगा और रानी का झांसी से बाहर पहुंचना असम्भव हो जायेगा । इसी सोच विचार में वह पड गई एकाएक उसके मस्तिष्क ने वह काम किया जो की बडे बडे विद्वान भी नही कर सकते । [115]

झलकारी अपने घर के भीतर थी उसे अचानक ऐसा लगा कि एक सजा सजाया घोडा उसकी ओर चला आ रहा है । उसने झांक कर बाहर देखा घोडा दरवाजे के बाहर खडा था । झलकारी ने 5 अप्रेल 1858 को रानी का बेष बनाने के उद्देश्य से अपना श्रंगार आरम्भ किया।तैयार होने के पश्चात उसने एक बार ऊपर से नीचे तक अपना हुलिया देखा उसका स्वरूप तो महारानी से मिलता ही था। वह बिल्कुल रानी लक्ष्मी बाई झांसी की रानी दिखाई देने लगी वह घर से घोडे पर बैठने के लिये निकली ही थी कि गनेशबाबा ने उसे देख लिया बाबा ने टोंक कर पूछाँ "**कहाँ जा रही हो**"? "**अंग्रेज छावनी को**" । "**पर किस लिये**" ? "**छावनी की पलटन को रोकने के लिये**" । "**आखिर क्यों**"? "**इस लिये कि**

महारनी कालपी की ओर गई है मै चाहती हूं की अपने को रानी बताकर तब तक उस पलटन को रोके रहूं जब तक कि रानी चैन से कालपी न पहुंच जायें गोरे मेरा स्वरूप देखकर भृमित हो जायेंगे" ।

बाबा ने उसे आर्शीवाद दिया "जाओ बेटा अब देरी न करों। तुम अपने कार्य में पूर्ण रूप से सफल होकर लौटो यही हमारा आर्शीवाद है "। झलकारी लगाम पकडतें ही घोडे पर कूद कर सवार हुई वह सीधे दतिया गेट से गोरों को रौदती हुई छावनी के पास पहुंची । जनरल रोज कैम्प में था छावनी के पास पहुंचते ही झलकारीने घोड़े की एकदम लगाम खींची । रास खीचतें ही घोड़ें की दोनो टापें उठ गई उसनें भंयकर गर्जना की और रूक गया । भयंकर गर्जना सुनकर गोरें चौक उठें देखा की सवार है ।

एक गोंरे ने पूँछा"तुम कौन हाय "?

उत्तर मिला"रानी" ।

"ऐ रानी कौन रानी"?

"रानी झांसी की रानी, महारानी लक्ष्मी बाई"। "बुलाओं तुम्हारा साहब किधर है आज उसका घमंड चूर चूर कर देंगे"।

एक सिपाही हिन्दी जानता था उसने कुछ संकेत किया झलकारी ने क्रोध भरी आंखो से चारो ओर घूर कर देखा और बोली खबर दार जो किसी ने मेरे पास आने की हिम्मत की हम उसको जान से मार देगा । रोज को तुरन्त खबर दी गई वह अपने सिपाहियों के साथ भांगता हुआ आया ।उसने पूछां "कौन उत्तर मिला" "महारानी झांसी की रानी जिसका तुमको तलाश थी"। इधर नगर के गोंरों की खुशी का ठिकाना न रहा , वह झूम उठे पर उससे ज्यादा खुशी झलकारी को थी कि उसने सबको मूर्ख बना दिया । 116

इसी बीच दूल्हाजू का रानी के पकड़े जाने और कैम्प मे होने की खबर मिली वह तुरन्त रोज के कैम्प में पहुंचा और आड़ में खड़ा हो कनखियों से देखने लगा । उसने तो झलकारी को कई बार लडतें हुये देखा था इसी कारण पहचानता था । दूल्हाजू इस अवसर पर भी अपनी बेईमानी से बाज नही आया । उसने रोज से कहा कि "सरकार यह रानी नही है" ।" फिर कौन हाय "? "झलकारी कोरिन सरकार" "कौन झलकारी "? "पूरन सिपहसालार की पत्नी" । "तुमको कैसे मालम हाय" ?" सरकार इसको मैंने रानी के पास

कई बार देखा , इसका पति हमारा साथी था "। 117

झलकारी उसी ओर टकटकी बाधें थी । झलकारी ने उसकी बोली पहचान ली । उसका खून खौल उठा , उसने पैनी आवाज में कहां "अरे पापी तूने ठाकुर हो के यह का करी , तू पैदा ही होते क्यो न मर गया तूने महरानी का नमक खाके गद्दारी की" ।

दूल्हाजू की शर्म के मारे आंखो गड़ गई रोज ने क्रोध में आकर कहां " तूम रानी नही हाय तुम पूरन की बीबी झलकारी हाय हम तुमको गोली मार देगा । झलकारी निर्भय होकर तड़पी "मार दे गोली मै मौत से नही डरती जहां इतने खप गये वहां एक मै भी सही "। पास बैठे स्टूअर्ट ने भापां और कहां "यह पागल हाय । "नो" रोज ने सर हिलाकर उत्तर दिया यह" सब को पागल बनाने आई हाय । अगर इसकी तरह से और भी स्त्रियां हो जाय तो हमको हिन्दुस्तान एक दिन में छोड़ देना पड़ेगा हमकों इसकी बातों में नही आना है रोज झलकारी से बोला तुमको मौत से डर नही लगता "?" नहीं नहीं झलकारी ने तेज पैनी निगाह से कहां"। 118 इसी बीच पास खड़े भारतीय सिपाही ने कहां कि" सरकार बुन्देलखण्ड भूमि की यही पहचान है बात आ जाये तो मुँह नही रूकेगा , गर्दन कट जायें पर शीश न झुकेगा यहां कि मिट्टी व पानी ही ऐसा है" रोज उसकी वीरता से प्रसन्न हुआ उसने स्त्री समझकर उसे छोड़ दिया ।

घार आतें ही झलकारी ने बाबा को प्रणाम किया बोली" मै सकुशल वापस आ गई "और छावनी की सारी घटना कह सुनाई अगल बगल की सब स्त्रियों में शोर हो गया । वे झलकारी को देखने घरो से दौड़तें आई सभी ने उसका फूल मालाओं से स्वागत किया बाबा ने झलकारी से कहां "**दुलैया आज तुमने झांसी की आन बुन्देलखण्ड की शान रखा लीं । जब तक संसार में झांसी की रान ीका इतिहास रहेगा तब तक तुम्हारा नाम उसमें सदैव चमकता रहेंगा तुम धन्य हो ।** "

आदर्श व कर्तव्य के रूप में –

झलकारी निःसन्तान थी उसने जो कुछ भी किया आने वाली पीढ़ियों के लिये. समाज के लिये, देंश के लिये, राष्ट्र के लिये, तथा भारत वर्ष की एक एक नारी व नागरिक को सजक करने के लिये किया । एक नारी का एक नारी के प्रति क्या कर्तव्य है, इसका उसने जीता

जागता उदाहरण दे दिया । उसने 1857 की महान क्रान्ति का नेतृत्व करने वाली महारानी को एक बार पुनः स्वर्ण अवसर प्रदान किया। जिन नारियों का घूँघट में रहकर जीवन समाप्त हो गया, जिन्होने ग्रहस्थी को ही सब कुछ मानकर स्वदेश प्रेम, देश भक्ति, समान अधिकार, कर्तव्य आदि की ओर कभी सोचा ही नही, आंख उठाकर देखा भी नही । उनका वीरांगना ने आज के युग में घूँघट समाप्त कर दिया, उन्हे कर्तव्य की ओर बढा दिया तथा नर नारी को कंधे से कधां मिलाने का एक अनूठा पाठ पढ़ाया । [119]

सन्दर्भ सूची

1 – डा0 भवानीदीन, "शाहजहाँपुर जनपद का भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में योगदान "1992 पृष्ठ सं0 1

2 – वह पृष्ठ सं0 1

3 – पण्डित जवाहर लाल नेहरू,"विश्व इतिहास की झलक"द्वितीय खण्ड नई दिल्ली,राजधानी ग्रन्थागार 1987 पृष्ठ सं0 15

4– आशारानी व्होरां,"महिला और स्वाराज्य" सूचना एवं प्रसार मत्रांलय भारत सरकार पृष्ठ सं0 28

5– आशारानी व्होरा,"महिला और स्वराज्य पृष्ठ सं0 3

6– सर सुन्दर लाल –"भारत में अंग्रेजी राज्य"प्रथम खण्ड नई दिल्ली, प्रकाशन एवं सूचना प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार, पृष्ठ सं0 116

7– वही पृष्ठ 116

8– विपिनचन्द्र अमलेश त्रिपाठी वरूण दे,"स्वतंत्रता संग्राम"नेशनल बुक डिपों दिल्ली पृष्ठ सं0 3

9– सर सुन्दर लाल भारत में अंग्रेजी राज्य प्रथम खण्ड,नई दिल्ली प्रकाशन एंव सूचना प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ सं0 151,152

10– बेनी प्रसाद बाजपेई,"1857 का विप्लव"इलाहाबाद आदर्श हिन्दी पुस्तकालय मालवीय नगर, 1967 पृष्ठ सं0 11

11– वही पृष्ठ सं0 236

12– सुरेन्दृनाथ सेन," 1857 का स्वतंत्रता संग्राम " पृष्ठ सं0 55

13– बेनी प्रसाद, पृष्ठ सं0 236

14– सुधीर सक्सेना," मध्य प्रदेश में आजादी की लडाई और आदिवासी" पृष्ठ सं0 59

15– एस0 एन0 सेन," 1857 का स्वतंत्रता संग्राम" पृष्ठ सं0 1

16– वही पृष्ठ सं0 1

17– पी0 ई0 रावर्टस," विट्रिश कालीन भारत का इतिहास" लखनऊ उ0 प्र0 हिन्दी ग्रन्थ आकादमी, 1971 पृष्ठ सं0 271

18 – डा0 ईश्वरी प्रसाद," अर्वाचीन भारत का इतिहास" इण्डियन

19– T.S.U.P खण्ड III रिवोल्ट इन द सेन्ट्रल इण्डिया, पृष्ठ 35,36

20– एस0 एन0 सेन,''1857 का स्वतंत्रता संग्राम'' पृष्ठ सं0 8,9

21– ताप्ती राय,'' पालिटिक्स आफ ए पापुलर राइजिंग बुन्देलखण्ड इन'' 1857

22– टेलर,'' ए कम्पेनियन'' पृष्ठ 164

23– आर0 सी0 मजुमदार,'' स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास'' भाग 1 कलकत्ता गांगुली स्ट्रीट, पृष्ठ सं0 236

24– सेन, पृष्ठ सं0 29

25– डा0 भवानी दीन,'' प्राचीरें बोलती है'' 2001 पृष्ठ सं0 34

26– भवानी शंकर विशारद,''आलोक प्रेस झलकारी बाई'' झाँसी पृष्ठ सं0 59

27– डा0 वृन्दावन लाल वर्मा,'' झाँसी की रानी लक्ष्मी बाई'' 1979 झाँसी पृष्ठ सं0 31

28– वही पृष्ठ सं0 32

29– डा0 भरत मिश्र,'' 1857 की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी पृष्ठ सं0 49

30– डा0 भरत मिश्र 1857 की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी'' राधा पब्लिकेसन्स अन्सारी रोड दरियागंज नई दिल्ली पृष्ठ 50

32– डा0 वृन्दावन लाल वर्मा,'' झाँसी की रानी'' झाँसी 1979 पृष्ठ 117

33– डा0 भरत मिश्र,'' 1857 की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी राधा पब्लिकेसन अन्सारी रोड दरियागंज नई दिल्ली प्रष्ठ 50

34– आशारानी व्होरा महिला और स्वराज्य सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार नई दिल्ली पृष्ठ सं0 53

35– वही पृष्ठ सं0 53

36– डा0 भरत मिश्र,'' 1857 की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी राधा पब्लिकेसन्स अन्सारी रोड दरियागंज नई दिल्ली पृष्ठ सं0 53

37– वही पृष्ठ सं0 53

38– डा0 भरत मिश्र''1857 की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी'' राधा पब्लिकेशन्स अन्सारी रोड दरियागंज नई

दिल्ली पृष्ठ 54

39– सर सुन्दर लाल भारत में अंग्रेजी राज्य,''सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ सं0 937

40– डा0 भरत मिश्र 1857 का विद्धोह और प्रमुख क्रान्तिकारी राधा पब्लिकेसन्स अन्सारी रोडदरिया गंज नई दिल्ली पृष्ठ सं0 55

41– सर सुन्दर लाल भारत में अंग्रेजी राज्य सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ सं0 937

42– डी0 बी परसनीस,द लाइफ ऑफ लक्ष्मी बाई'' पेज 183–193

43– सर सुन्दर लाल,'' भारत में अंग्रेजी राज्य सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ सं0 939

44– सर सुन्दर लाल,'' भारत में अंग्रेजी राज्य''सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ सं0 939

45– डा0 भरत मिश्र,'' 1857 की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी
राधा पब्लिकेसन्स अन्सारी रोड दरियागंज नई दिल्ली

46– सर सुन्दर लाल भारत में अंग्रेजी राज्य सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ 940

47– सर सुन्दर लाल,'' झाँसी की रानी''झाँसी पृष्ठ 941

48– सर सुन्दर लाल,'' झाँसी की रानी''झाँसी पृष्ठ 941

49– सर सुन्दर लाल भारत में अंग्रेजी राज्य,सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ सं0 941

50– मालेसन,'' इण्डियन म्यूनिटी'' वाल्यूम 5 पेज 140–141

51– सर सुन्दर लाल,सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ सं0 942

52– मालेसन इण्डियन म्यूनिटी वाल्यूम 5 पेज 124

53– सर सुन्दर लाल,'' भारत में अंग्रेजी राज्य''सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ 943

54– सर सुन्दर लाल,'' भारत में अंग्रेजी राज्य''सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ 62–63

55- डा० भरत मिश्र पृष्ठ 62-63

56– वही पृष्ठ 63

57– सर सुन्दर लाल,'' भारत में अंग्रेजी राज्य''सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ 946

58–डा0 भरत मिश्र ,1857 की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी राधा पब्लिकेशन्स अन्सारी रोड दरिया गंज, नई दिल्ली पृष्ठ सं0 81

59– मध्यप्रदेश संदेश, 15 अगस्त 1987 अ 8

60 –डा0 भरत मिश्र 1857 की क्रन्ति और क्रान्तिकारी पृष्ठ सं0 81

61– धाम्मन सिंह सरस वीरांगना अवन्ती बाई सरस पृष्ठ सं0 27

62– पम्भनसिंह सरस, अवन्ती बाई पृष्ठ सं0 28–29

63– वही पृष्ठ 29–30

64– बिन्द्रावन लाल वर्मा,'' रामगढ़ की रानी''झाँसी पृष्ठ सं0 105

65– भरत मिश्र 1857 की कृान्ति उसके प्रमुख क्रान्तिकारी,राधा पब्लिकेसन्स अन्सारी रोड दरियागंज नई दिल्ली, पृष्ठ सं0 81

66– वही पृष्ठ सं0 79

67– वृन्दालाल वर्मा ,''रामगढ़ की रानी''झाँसी पृष्ठ सं0 162

68– मध्यप्रदेश सन्देश,'' स्वाधीनताआन्दोलन विशेषांक'' 1987 पृष्ठ9

69– डा0 भरत मिश्र," 1857 की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी"राधा पब्लिकेसन रोड दरियागंज नई दिल्ली, पृष्ठ 79

70– डा0 भरत मिश्र," 1857 की क्रान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी"राधा पब्लिकेसन रोड दरियागंज नई दिल्ली, पृष्ठसं079

71– आशारानी व्होरा महिलायें और स्वाराज्य,सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ 64

72– वही पृष्ठ 64

73– वृन्दावन लाल वर्मा," रामगढ़ की रानी"झाँसी पृष्ठ 184

74– मध्यप्रेदश सन्देश," स्वाधीनता आन्दोलन 1980 विशेषांक पृष्ठ अ 9

75– भगवानदास श्रीवास्तव," दिमान देशपत बुन्देला बुन्देलखाण्ड महान क्रान्तिकारी" पृष्ठ 6

76– 1857 की कृान्ति और उसके प्रमुख क्रान्तिकारी, डा0 भरत मिश्र राधा पब्लिकेशन्स अन्सारी रोड दरिया गंल नई दिल्ली पृष्ठ 76

77– वही पृष्ठ 76

78– डा0 श्याम नारायण सिन्हा," बुन्देलखाण्ड में 1857 का विद्घोह "पृष्ठ 52

79– भगवानदास श्रीवास्तव," दिमानदेश पत बुन्देला" पृष्ठ 35

80– मनमहोन कौर," रर्टलिंग पब्लिकेशन्स दिल्ली, पृष्ठ 56

81– भगवानदास श्रीवास्तव," दिमान देशपत बुन्देला" पृष्ठ 36

82– राष्ट्रीय अभिलेखागार कन्सलटेशन नं0 169–181 दिनांक 15अक्टूबर 1858 फारेन पाली0 पत्र सं0 310 दिनाँक 14 जुलाई 1858 गर्वनर जनरल के एजेन्ट की ओर भारत सरकार के सेक्रेट्री को ।

83– एस0 एन0 सिन्हा," 1857 का बुन्देलखण्ड में विद्रोह" पृष्ठ सं0 29

84– पी0 जे0 व्हाइट फाइनल सेटेलमेंट रिपोर्ट आफ परगना कालपी पृष्ठ 45

85– ब्रोकमेन पृष्ठ 136

86– ब्रोकमेन पृष्ठ 136

87– आनन्दस्वरूप मिश्र, पृष्ठ 217

88– डिर्पाटमेन्ट नं0 XXI जालौन फाइल नं0 25 पेपर रिर्वाडिंग ट्रांसपेरिशन फार लाइफ मडराव विश्वास राव प्राइमिनिस्टर आफ ताईबाई क्षेत्रीय अभिलेखागार इलाहाबाद।

89– पिंकने, कमिश्नर झाँसी डिवीजन नरेटिव आफ ईवेन्टस अटेण्डिग द आउट बेक आफ अथारिटी इन द डिवीनज आफ झाँसी, पृष्ठ 15

90– श्याम नारायण सिन्हा," 1857 का बुन्देलखण्ड में विद्रोह" पृष्ठ 81

91– एम0 एस0 रिजवी ,"द रिवोल्ट पृष्ठ 256–370–71

92– वही पृष्ठ 371

93– डिर्पाटमेन्ट नं XXI फाइल नं0 25 जिला जालौन क्षेत्रीय अभिलेखागार, इलाहाबाद

94– जबलपुर डिस्ट्रिक गजेटियर पृष्ठ 66

95– डा0 प्रताप भानुराय, "जंग ए आजादी में जबलपुर" स्वराज्य संस्थान संचालनालय संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश शासन पृष्ठ 22

96– वही पृष्ठ 28

97– डा0 प्रताप भानुराय, जंग आजादी में जबलपुर" स्वराज्य संस्थान भोपाल पृष्ठ 36

98– वही पृष्ठ सं0 41

99– डा0 प्रताप भानुराय,'' जंगे आजादी में जबलपुर ''स्वराज्य संस्थान भोपाल म0प्र0 पृष्ठ 42
100– भवानी शंकर विशारद, आलोक प्रेस झाँसी, पृष्ठ सं0 1
101– वही पृष्ठ सं0 2
102– डा0 वृन्दावन लाल वर्मा ,''झाँसी की रानी'' पृष्ठ 98
103– भवानी शंकर विशारद,आलोक प्रेस झाँसी '' झलकारी बाई ''पृष्ठ सं0 4
104– वृन्दावन लाल वर्मा ,झाँसी की रानी पृष्ठ –95
105– भवानी शंकर विशारद,''आलोक प्रेस झाँसी ''झलकारी बाई'' पृष्ठ 5–6
106– भवानी शंकर विशारद,''आलोक प्रेस झाँसी'' झलकारी बाई पृष्ठ 7
107– वही पृष्ठ 9
108– भवानी शंकर विशारद,आलोक प्रेस झाँसी ''झलकारी बाई'' पृष्ठ सं0 11
109– वही पृष्ठ सं0 28
110– डा0 वृन्दावन लाल वर्मा,'' झाँसी की रानी'' पृष्ठ सं0 158
111– भवानी शंकर विशारद,आलोक प्रेस झाँसी'' झलकारी बाई ''पृष्ठ सं0 33
112– भवानी शंकर विशारद,आलोक प्रेस झाँसी''झलकारी बाई ''पृष्ठ सं0 35
113– वही पृष्ठ सं0 35
114– वही पृष्ठ सं0 41
115– वही पृष्ठ सं0 47
116– वही पृष्ठ सं0 52
117– वही पृष्ठ सं0 55
118– वही पृष्ठ सं0 57
119– भवानी शंकर विशारद ,आलोक प्रेस झाँसी ''झलकारी बाई'' पृष्ठ सं0 57–58

स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने वाली वीरांगनाओं के जीवन को प्रभावित करने वाली विभिन्न संस्थाओं का योगदान– (ब)

1857 के विद्रोह के बाद भारत में अंग्रेजी राज्य पूरी तरह से बिट्रिश महारानी के हाथ में चला गया । इसके बाद भारत में एक सुव्यवस्थिति कानून व्यवस्था लागू हुई। सम्पूर्ण देश में एक कानून का राज्य स्थापित हुआ हालांकि उस समय भी कुछ राज्य स्थानीय राजाओं के आधीन थे । इस कानून व्यवस्था के बाद लोगों में विशेषकर महिलाओं में पश्चिमी सभ्यता कें प्रति झुकाव पैदा हुआ और वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हुईं। पश्चिमी शिक्षा के विस्तार से पुरूषों एवं महिलाओं में दुनिया के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त हुई । संसार के अन्य भांगो में लोग किस तरह से अपने अधिकारों के प्रति जागरूक है,यह विचार यहां के लोगों में भी उपजे । 1

पश्चिमी शिक्षा एंव वहाँ के लोकतान्त्रिक समाज से प्रभावित होकर भारत में अनेक समाज सुधार आन्दोलन हुये। इनमें सभी आन्दोलन पूर्णरूप से महिलाओं की शिक्षा अन्धविश्वास एंव महिलाओं में प्रचलित कुप्रथाओं को समाप्त करने हेतु थे । इसके अतिरिक्त महिलाओं को सामाजिक आजादी दिलाने एंव उन्हे शिक्षित करने का कार्य बड़े जोर शोर से किया गया । इसके अतिरिक्त अंग्रेजों द्धारा भी समाज में व्याप्त कुप्रथाओं का अन्त करने के लिये कई कानून बनायें गये। जैसे कि रेगुलेशन एक्ट आँफ 1795 और रेगुलेशन एक्ट आँफ 1804 । महिलाओं कों सामाजिक आजादी दिलाने एवं उन्हें शिक्षित करने का कार्य बडें जोर शोर से किया गया । सर्वप्रथम राजा राममोहन राय ने इस कार्य के लिये ब्रम्ह समाज की स्थापना की और इस आन्दोलन के द्धारा उन्होंने समाज मे व्याप्त कुप्राथाओं जैसे सती प्रथा, बाल विवाह , एंव स्त्रियों के प्रति हो रहे भेदभाव को समाप्त करने के लियें व्यापक अभियान चलाया । ब्रम्ह समाज में महिलाओं के लियें अलग से शाखायें खोली गई और इसके लिये साप्ताहिक बैठक का आयोजन किया गया । ब्रम्ह समाज ने लड़कियों की शिक्षा एंव विवाह का जोर शोर से समर्थन किया । राममोहन राय के प्रयत्नों के परिणाम स्वरूप पूरे देश में विशेषकर बंगाल में लडकियों की शिक्षा के लिये कई विद्यालय खोलें गये । 2

आर्य समाज – दूसरा सबसे बडा आन्दोलन जिसके कारण महिलाओं में सामाजिक एवं राजनीतिक जागरूकता आई वह आर्य समाज था। इसकी स्थापना 1875 में स्वामी दयानन्द सरस्वती ने की। एनीबेसेन्ट जो कि भारतीय महिलाओं की समस्याओं के प्रति पूरी तरह से गम्भीर थी ने आर्य समाज के द्वारा प्रारम्भ किये गये आन्दोलन को अपना पूरा समर्थन दिया । आर्य समाज के द्वारा दी गई शिक्षाओं से महिलाओं में स्वतंन्त्रता के प्रति चाहत उत्पन्न हुई । और वें गुलामी से छुटकारा प्राप्त करने की कोशिश में लग गई । समाज के अथक प्रयास से अशिक्षा, बाल विवाह और अपना साथी चुनने की स्वतंत्रता जैसी बाते महिलाओंके मन को प्रभावित करने लगीं।

आर्य समाज ने लडकों और लडकियों के भेदभाव को मिटाने के लिये ऐसे विद्यालयों की स्थापना की जिसमे सह शिक्षा प्रणाली थी । लडकियों के लियें गुरूकुल विद्यालयों की स्थापना की गई । शिक्षा सत्र के दौरान ऐसे धार्मिक क्रिया कलाप आयोजित किये गये जिसमें पुरूषों एवं महिलाओं की समान सहभागिता रही । इससे महिलाओं ने सार्वजनिक कार्यो के प्रति साहस पैदा हुआ और पुरूष वर्चस्व के प्रति भय कम हुआ । [3]

आर्य समाज के अनुसार वेदों का अध्ययन किसी विशेष जाति के लिये नहीं अपितु यह सभी यह सभी जाति वर्ग पुरूषों एवं महिलाओं के लिये है ।[4] यद्यपि आर्य एक राजनीतिक पार्टी नही थी लेकिन इसने समाज में समान रूप से अंग्रेजी शब्द के विरूद्ध भी लोगों को जागरूक बनाया ।

थियोसोफिकल सोसाइटी – इस संस्था की सबसे प्रभावशाली नेता श्रीमती एनीबेसेन्ट थी ।उन्होने हिन्दू धर्म की अच्छाइयों का खुलें आम समर्थन किया और लोगों से यह अपील की कि वे अपने आपकों हिन्दू आदर्शो के प्रति समर्पित करें । यह संस्था पूरी तरह से महिलाओं एवं पूरूषों की समानता की पक्षधर थी । इस संस्था नें लड़कियों की शिक्षा के लिये एवं उन्हें उच्च नागरिक बनाने के लिये बड़ी संख्या में विद्यालयों की स्थापना की ।[5]

एनीबेसेन्ट ने बाल विवाह एवं सती प्रथा कर जमकर विरोध किया और पुरूष तथा महिलाओं के प्रति होरहे भेद भाव की उन्होने जमकर आलोचना की ।उनके अनुसार महिलाओं के भारत

वर्ष की उन्नति के लिये काम करने के लिये खुला हुआ क्षेत्र होना चाहिये उनमें किसी प्रकार का बन्धान नही होना चाहिये । संस्था अनुसार समाज में महिलाओं पुरूष दोनों में से कोई एक ऊँचा या नीचा नहीं है । और दोनों का जीवन की उन्नति में समान योगदान है । और वह जीवन को तभी सुखमय बना सकते हैं जबकि वे अपने क्षमतानुसार कार्य करने के लिये स्वतंत्र हो । संस्था के अनुसार भारत की एकता एवं स्थिरता एवं भारत की स्वतंत्रता तभी सुनिश्चित हो सकती है जबकि पुरूष एवं महिलाओं का मातृभूमि के लिये बराबर योगदान हो।[6]

नामधारी आन्दोलन – समाज सुधार में नामधारी आन्दोलन का भी महत्वपूर्ण योगदान है। राम सिंह जो कि कूका आन्दोलन के एक प्रभावशाली नेता थे ने समाज ने लोगों की एकता पर बल दिया और सभी प्रकार के भेदभाव चाहें वह ऊँच नीच के हो या महिलाओं के प्रति का विरोध किया ।

इस तरह से इस नव जागरण काल में इन संस्थाओं ने और प्रसिद्ध समाज सुधारकों ने सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय चेतना के विकास का जो संयूक्त आन्दोलन चलाया , उसमें महिलाओं की प्रारम्भिक भूमिका अधिकतर राजा राममोहन राय ,स्वामी दयानन्द, विवेकानन्द महात्मा फूले माहर्षि कर्बे मालाबारी भंडारकर आदि पुरूषों की प्रेरणा से स्थानीय शाखाओं में भागीदारी तक ही सीमित रही थी फिर भी उसने स्थानीय प्रादेशिक और राष्ट्रीय स्तरों पर अगले नेतृत्व को राह दी।[7] और बुन्देलखण्ड भी इससे अछूता नहीं रहा।

प्रमुख नेत्रियाँ –उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि नव जागरण काल में भारतीय स्त्री नेतृत्व के धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक स्वरूप को अलग अलग करके नहीं देखा जा सकता। कुछ अपवाद छोडकर प्रायः सभी नेत्रियों ने इन दिशाओं में साथ साथ काम लिया । वातावरण निर्माण में स्त्री संस्थाओं और स्त्री पत्रिकाओं की भी प्रायः यही शैक्षणिक भूमिका रही जिसने आगे चलकर राजनीति समाज सुधार शिक्षा के क्षेत्रों को अनेक नेत्रियाँ प्रदान कीं । [8]इस अवधि में उभरी प्रमुख नेत्रियों के नाम है माँ शारदा देवी , पंडिता रमाबाई ,रमाबाई रानाड़े ,और भगिनी निवेदिता के अलावा लेडी हसाम सिंह, बाई अमन, अंबतिका बाई सावरकर , सावित्री बाई फुले, शांतातिलक , सत्यभामा तिलक, वाया कर्वे ,

पूनम लुकोज ,मुतु लक्ष्मी रेडडी , सरला नायक, श्रीमती रंगम्या, चन्द्रशेखार अय्यर , धानवंती रामाराव बेगम शाह, नवाज, विद्या बहन नीलकांत स्वर्ण कुमारी देवी , बेंगम माँ गोपाल , चारूकता मुखार्जी ,सरलादेवी चौधरी लेडी अब्दुल कादिर, मारग्रेट कजिन्स आदि। इनमें से कुछ केवल समाज सुधार का कार्य कर रही थी कुछ केवल शैक्षणिक जागृति लाने में लगी थीं और कुछ समाज व राजनीति दोनों क्षेत्रों में एक साथ सक्रिय थीं ।

<u>नारी मुक्ति आन्दोलन –</u> भारत में नारी मुक्ति और देश में गुलामी से मुक्ति ये दो बातें प्रथक कभी नही रहीं । इस अर्थ में भारत का नारी मुक्ति आन्दोलन पश्चिम के वूमेन लिव से सर्वथा भिन्न है वहाँ स्त्रियों को लम्बी अवधि तक पुरूषों के खिलाफ मोर्चाबाँधाकर लड़ना पडा था और इस लड़ाई में बहुत अपमान व कष्ट सहना पड़ा था । भारत में नारी जागृति और प्रगति के लिये प्रारम्भिक कदम इस सुधार युग में भारतीय मनीषियों और सुधारकों द्वारा ही किये गये थे । उन्होने ही स्त्रियोको आगे किया । इन नेताओं के आव्हान सें ही देश की आजादी में भारतीय स्त्री पुरूष कधों से कंधा लड़ाकर लड़े । समाज सुधार और देश की आजादी के सयुंक्त लक्ष्य में कहीं भी स्त्री पुरूष भेदभाव आड़ें नही आया दोनो परस्पर सहयोंगी और पूरक भूमिका निभाते रहें ।

आगें चलकर महात्मा गाँधी के आव्हान पर तो हजारों की संख्या में अमीर गरीब , पढी बेपढी स्त्रियाँ देश के कामों के लिये घरों से बाहर आई। भी काजी कामा, एनीबेसेन्ट , सरोजनी नायडू , राजकुमारी अमृतकौर , विजय लक्ष्मी पण्डित , दुर्गाबाई देशमुख आदि मध्यकाल में और अरूणा आसफ अली , सुचेताकृपलानी , कैप्टन लक्ष्मी जैसे नाम उतरार्धकाल में अग्रणी नाम है जिनके नेतृत्व व निर्देशन में न जाने कितनी उत्साही युवतियाँ आगे आई और जिनसे प्रेरणा लेकर आज भी न जाने कितनी विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत है । [9]

<u>1885 भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस तथा महिलाओं में चेतना का अभिभाव</u>

1876 में सुरेन्द्र नाथ बार्जी ने इण्डियन एशोसिएशन नामक संगठन की स्थापना की इस संगठन का मूल उद्देश्य समाज सुधार के साथ साथ अंग्रेजी हुकूमत से शिक्षा के लिये समाज के लिये

एवं अन्य अधिकारों के लिये छूट प्राप्त करने का था यह संगठन आशिंक रूप से सरकारी संस्थाओं में भारतीय स्त्री एवं पूरूषों की सहभागिता चाहता था । इस संगठन के प्रभाव से भारत के कई क्षेत्रों में समाज के प्रत्येक वर्ग में जबरजस्त राजनीतिक जागृति आई । और यह संगठन लगभग प्रत्येक बड़े शहर में अपना अस्तित्व कायम कर सका । [10]

1884 में लार्ड डफरिन भारत के वायसराय बनकर आये और एक रिटायर्ड आई0 सी0 एस0 अफसर श्री ए0 ओ0 हृयूम की पहल पर वायसराय की अनुमति से इण्डियन नेशनल यूनियन नाम की संस्था संगठित की । [11] यह भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का आदि रूप था। इसकी स्थापना बम्बई मे 1885 में की गई और इसके सबसे पहले अध्यक्ष डब्लयू सी0 बनर्जी थें । [12]

कांग्रेस स्थापना के प्रारम्भिक दस साल तक यह बिट्रिश सरकार के रूप में कार्य करती रही, तथा इस पर बिट्रिश सामाज्य की कृपा दृष्टि रखाती रही, परन्तु धीरे धीरे इसमें अनेक राष्ट्रवादी नेता एवं उच्च कोटि के विद्वानों का प्रवेश प्रारम्भ हुआ, तथा विट्रिश सरकार के अनेक गलत कार्य जैसे बंगाल विभाजन, मार्ले भिन्टो सुधार आदि से यह दल बिट्रिश सरकार की आलोचना का मुख्य केन्द्र बन गया । प्रथम विश्व युद्ध के बाद तथा महात्मा गाँधी का राजनीति में प्रवेश से इसका रूप ही बदल गया अतः 1920 ई0 के नागपुर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपना ध्येय खुलकर उजागर किया वह ध्येय था सभी उचित तथा शान्तिपूर्ण उपायों से पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति । [13]

निष्कर्षः— अंग्रेजी हुकूमत से स्वतन्त्रता पाने के लिये प्रथम प्रयास 1857 के विद्रोह के माध्यम से किया गया था । इस विद्रोह की नायिका महारानी लक्ष्मी बाई थी जिनकी वीरता ने अंग्रेजो के मन मेंभय की भावना व्याप्त कर दी थी । इसके अतिरिक्त झलकारी बाई , ताइबाई , तेजबाई ,वीरानयनी जैसी वीरांगनाओं ने भी अपने प्राणों की बाजी लगाकर भारत वर्ष के सम्मुख एक आदर्श उदाहरण प्रस्तुत किया जिसका अनुकरण करके न जाने कितनी महिलाओं ने अपने प्राणों की बाजी लगा दी अनेक यातनायें सहीं उनके कितने लाल भारत माता की गोद में सो गये , कितनों के

मस्तक का सिन्दूर मिट गया न जाने कितनी महिलायें बेघरबार हो गई ।

एक एक इंच भूमि खून के एक कतरे की एक एक बूँद से सिच गई । स्वतन्त्रता के स्वप्न पूरे हुये आजादी का महल तैयार हो गया । इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं कि आज हम जिस स्वतन्त्रता के महल में सांस ले रहें है उसकी जड़1857 की असंख्य नर नारियों ने अपने लहू से सींच कर इतनी मजबूत कर दी है कि उसका हिलना तक असम्भव है । इसकी उपमा विश्व इतिहास में मिलना दुर्लभ है ।

सन्दर्भ सूची(ब)

1– मनमोहन कौर,' भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में महिलाये''स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स नई दिल्ली पृष्ठ सं071

2– वही पृष्ठ सं0 72

3– मनमोहन कोर स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स ,दरियागंज प्राईवेट नई दिल्ली पृष्ठ सं0 74

4– सेन्सस ऑफ पजांब 1891 पार्ट 1 पृष्ठ 176

5– मनमोहन कौर स्टर्लिंग पब्लिकेसन्स दरियागजं प्राईवेट नई दिल्ली पृष्ठ 75

6– वही पृष्ठ सं 75

7– आशारानी व्होरा महिला और स्वराज्य,प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ सं0 89

8– वही पृष्ठ संख्या 90

9– आशारानी व्होरा,'' महिलाएँ और स्वराज्य,''प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार पृष्ठ 90 प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसार मंत्रालय भारत सरकार

10– मनमहोन कौर स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स, दरियागंज नई दिल्ली

11– दशरथजैन,'' भारत का स्वाधीनता आन्दोलन एक नजर में ''मध्यप्रदेश उप्सर्ग में प्रकाशित, पृष्ठ सं0 50

12– श्री सच्चिदानन्द भट्टाचार्य ,भारतीय इतिहास कोष श्री सच्चिदानन्द भटटाचार्य पृष्ठ सं0 330

13– वही पृष्ठ सं0331–332

तृतीय अध्याय

असहयोग आन्दोलन में बुन्देलखण्ड की महिलाओं का योगदान

गाँधी जी का भारतीय राजनीति मे प्रवेश और असहयोग आन्दोलन

राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में एक नये अध्याय का प्रारंभ महात्मा गाँधी के राजनीति मे प्रवेश से होता है। प्रथम विश्वयुद्ध तक देश का नेतृत्व ऐसे राजनीतिज्ञों के हाथ मे रहा जो राजनैतिक समस्याओं का संबैधानिक निराकरण ढूंढ रहे थे। महात्मा गाँधी के आगमन से आन्दोलन का स्वरुप बदल गया तथा आन्दोलन एक बर्ग तक सीमित न रहकर जन आन्दोलन मे परिवर्तित हो गया और राजनीतिक रंगमंच सजीव हो उठा।

सन् 1914 में यूरोप में प्रथम विश्वयुद्ध शुरु हुआ इंग्लैंड की ओर से भारत भी युद्ध मे शामिल हुआ।भारतवासियों ने तन मन और धन से युद्ध में अग्रेंजों की सहायता की ।प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त हो गया और इंगलैंड विजयी रहा किन्तु भरतीयों ने जिन बायदों के आधार पर अग्रेंजो का साथ दिया था उसकी ओर अग्रेंजो ने कोई मामूली ध्यान भी नही दिया । अग्रेंजो द्वारा की हुई बायदाखिलाफी से गाँधी जी का विश्वास उठ गया । ऊपर से सन् 1919 ई. में रोलेट एक्ट लागू कर दिया गया इस एक्ट के अनुसार किसी भी भारतीय को केवल शक के आधार पर गिरफतार किया जा सकता था जिससे भारतीयों की स्वतंत्रता को गहरा धक्का पहुंचा।

1915 से मार्च 1919 तक गाँधी जी ने अपने आपको राजनीतिक आन्दोलन से लगभग अलग ही रखा था किन्तु रोलेट एक्ट कानून बन जाने के बाद गाँधी जी स्वयं को देशव्यापी समस्याओं से अलग नही रख पाये और उन्होने उस दमनकारी रोलेट कानून को हटवाने के लिये सत्याग्रह का निश्चय किया।तथा इसके लिये तारीख 6 अप्रैल 1919 निश्चित की गई इसमें यह अपील की गई कि सभी राष्ट्रवासी एक निश्चित दिन 6 अप्रैल को हड़ताल उपवास एवं प्रार्थनाएं करें। [1] सही जानकारी न मिलने के कारण दिल्ली में सत्याग्रह 30 मार्च को ही प्रारंभ हो गया किन्तु गाँधी जी की अपील के अनुसार देश के सभी नगरों मे और गाँवो में कार्य हुआ सर्वत्र शांतिपूर्ण प्रदर्शन जूलूस और जनसभायें हुईं। [2] जिस तरह

से राष्ट्र ने प्रर्दशन किया उससे बिट्रिश सरकार हतप्रभ रह गई और उसने यह दृढ़ निश्चय कर लिया कि आन्दोलन को आतंक केजरिये कुचल दिया जाये। [3] दिल्ली पंजाब और अहमदाबाद आदि स्थानो पर जहा सरकार द्वारा आतंक का सहारा लिया गया था जनता भड़क उठी गाँधी जी तुरंत उन स्थानो पर पहुचें जहा जनता ने अहिंसा त्याग दी थी।गाँधी जी ने इन स्थानों पर आन्दोलन समाप्ति की घोषणा कर दी। [4]

जलियाँ वाला बाग त्रासदी– पंजाब मे बिग्रेडियर जनरल डायर बदला लेने के लिये अवसर की तलाश मे था। 13 अप्रैल को बैशाखी के दिन अमृतसर मे जलिँया बाला बाग मे एक सार्वजनिक सभा मे जनरल डायर ने गोलीबारी शुरू कर दी जबकि यह बाग तीनों और से मकानो से धिरा हुआ था और निकलने का केवल एक ही रास्ता था।अचानक हुई इस गोली चलने की घटना से 20000 एकत्रित लागो मे भगदड़ मच गई निकलने का कोई रास्ता नही था। करीब 1600 राउंड गोली चलाई गई और गोली चलाना तब तक बन्द नही किया गया जब तक कि गोली समाप्त नही हो गई। सैकड़ों स्त्री पुरुष और बच्चे मारे गये तथा अनेक घायल बिना चिकित्सा और पानी के वहीं तड़प तड़प कर मर गये। 5 इस घटना ने राष्ट्र की सोई हुई आत्मा को झकझोर कर रख दिया और राष्ट्रीय आन्दोलन की दिशा ही बदल गई। देश के प्रत्येक प्रान्त पर इसका प्रभाव पड़ा। सन् 1919 मे इस घटना की जाँच के लिये हण्टर कमेटी की नियुक्ति की गई। गाँधी जी को यह विश्वास था कि सरकार द्वारा गठित कमेटी निष्पक्ष न्याय करेगी। लेकिन इस कमेटी की रिपोर्ट ने हत्याकाण्ड पर लीपापोती के सिवाय कुछ नहीं किया था। भारतीयों की कोई मॉग इस कमेटी ने पूरी नहीं की थी।6अतः इन सब घटनाओं ने महात्मा गाँधी को सहयोगी से असहयोगी बना दिया और सदैव राजनैतिक आन्दोलन से दूर रहने बाले महात्मा गाँधी परिस्थितियों से विवश होकर सक्रिय राजनीति मे पर्दापण कर गये।

बुन्देलखण्ड मे असहयोग आन्दोलन

सन्1919 ई. मे विजय राधवाचार्य की अध्यक्षता मे नागपुर कांग्रेस मे गाँधी जी ने असहयोग का प्रस्ताव स्वीकृत कराया और

सन् 1920 ई. मे लाला लाजपत राय की अध्यक्षाता मे कलकत्ता कांग्रेस मे उसे परिणित कराने को कहा। देश की आँखें गाँधी जी की ओर जा लगीं। देश के सुशिक्षित नवयुवक तक उनके साथ चलने को तैयार हो गये । बुन्देलखण्ड मे भी लहर आई।झाँसी के आत्माराम गोबिन्द खेर ,रघुनाथ विनायक धुलेकर, उरई के मन्नीलाल पाण्डे और बेनीमाधव तिवारी कोंच के कृष्ण गोपाल शर्मा, बाँदा के कुँवर हर प्रसाद, महोबा के चुन्नीलाल जैन ,लक्ष्मण राव , मुहम्मद बख्श आदि कांग्रेस में शामिल हो गये। दीवान शत्रुघ्न सिंह का परिचय बेनी माधव तिवारी तथा मन्नीलाल पाण्डेय से हुआ ये सभी गाँधी जी की कार्य प्रणाली से प्रभावित थे। अन्त में मगरौढ मे एक क्रान्तिकारी सम्मेलन हुआ और सभी ने कांग्रेस में सम्मिलित होने की सहमति जताई। [7] बुन्देलखण्ड मे स्वतंत्रता आन्दोलन के 1920से 1930 ई.तक दस साल अत्यन्त महत्वपूर्ण रहे थे।1920 ई. मे महात्मा गाँधी ने झाँसी नगर का दौरा किया उनके आने से समस्त बुन्देलखण्ड मे एक नई राजनीतिक चेतना की लहर दौड़ गई थी। इन्ही दस बर्षों मे उरई झाँसी, हमीरपुर जिले में काग्रेंस की स्थापना हुई अनेक नगर कस्बों एवं गाँवों में काग्रेंस कमेटी कार्यालय बनाये गये। झाँसी नगर के अतिरिक्त मऊरानीपुर नवम्बर 1924 ई.[8] एवं कुलपहाड़ नवम्बर 1929 में [9] भी आये थे।झाँसी के अतिरिक्त काग्रेंस पार्टी के अन्य राष्ट्रीय नेता भी बुन्देलखण्ड आये थे। इनमे खिलाफत आन्दोलन के अली बन्धु [10] मौलाना शौकत अली [11] लियाकत अली[12] 1924ई. में पण्डित जवाहर लाल नेहरु 1922, 1928 [13]ई. मे। 1924 ई. में खान अब्दुल गफ्फार खान सीमान्त गाँधी [14]पं.मदन मोहन मालवीयएवं पुरुषोत्तम दास टण्डन आदि थे।

सन् 1921 में पण्डित मोती लाल नेहरु ने वालंटियर कोर में भर्ती होने की घोषणा की और बाल बृद्ध नारी सभी से यह अपील की गई कि प्रत्येक भारतीय को चाहिये कि वह कांग्रेस का वालंटियर बने।घोषणा के साथ ही सरकार ने वालंटियर कोर को गैर कानूनी घोषित कर दिया। उत्तर प्रदेश में वालंटियर बनने बालों की धड़ाधड़ गिरफ्तारी होने लगी। हमीरपुर में दीवान शत्रुघ्न सिंह के वालंटियर कोर में भर्ती होने का समाचार सुनकर गिरफ्तार कर लिया गया।[15] अंग्रेज सरकार ने कांग्रेस को अवैध संस्था घोषित

कर पूरे देश मे धारा 144 लगा दी कि जो कोई भी कांग्रेस के नाम कुछ करेगा वह गिरफ्तार कर लिया जायेगा। उक्त घोषंणा के विरोध मे गाँधी जी ने कांग्रेस द्वारा भारतवासियों सेअनुरोध किया कि धारा 144 को देश भर मे भंग करने के लिये सभायें की जायें।

इन सब राष्ट्रीय नेताओं ने बुन्देलखण्ड जनता ने स्वराज्य के प्रति एवं कांग्रेस के भावी कार्यक्रमों के प्रति ध्यान आकर्षित किया जिससे समस्त बुन्देलखण्ड मे राष्ट्रीय आन्दोलन प्रबल वेग से चल निकला।बिदेशी बस्तुओं का बहिष्कार, प्रर्दशन खादी एवं चरखो का प्रचार हुआ। असहयोग आन्दोलन के बाद अनेक गिरफ्तारी हुईं। इन सब घटनाओं से बिट्रिश सरकार का ध्यान बुन्देलखण्ड की ओर आकर्षित हुआ।

गाँधी जी का बुन्देलखण्ड आगमन

1920,21 के तूफानी दिनों में एसा लगता था मानो सदियों से सोया हुआ राष्ट्र एकाएक जाग उठा था।गाँधी जी समस्त देश में त्याग बलिदान और अहिंसात्मक आन्दोलन का प्रचार करते घूम रहे थे। अक्टूबर 1920 ई. में गाँधी जी ने सयुंक्त प्रान्त के मुरादाबाद अलीगढ़ ,कानपुर, लखनऊ और बरेली आदि नगरों का दौरा किया। नवम्बर 1920 ई.में वह पुनः सयुंक्त प्रान्त मेआये। [16]

1919 ई. का असहयोग आन्दोलन तथा बुन्देलखण्ड

बुन्देलखण्ड मे सर्वप्रथम झाँसी में एक संयुक्त प्रान्त राजनीतिक कान्फ्रेन्स का आयोजन किया गया जिसके स्वागताध्यक्ष सी. वाई. चिन्तामणि बनाये गये थे। [17]

इसमे झाँसी के आत्माराम, गोबिन्द खेर, रघुनाथ बिनायक धुलेकर, लक्ष्मण रावकदम , कामरेड अयोध्या प्रसाद, कुन्ज बिहारी लाल शिवानी कृष्ण गोपाल शर्मा, रामेश्वर प्रसाद आदि ने भाग लिया।[18] इसके अतिरिक्त श्यामा चरण घोष ने 1919 ई. के अमृतसर मे कांग्रेस अधिवेशन में भी भाग लिया था। [19]

इस समस्त काग्रेसी बिचारधारा के लोगों ने 1917,18 ई. के कांग्रेस द्वारा चलाये गये होमरूल आन्दोलन में भी भाग लिया तथा उसकी एक शाखा की भी स्थापना की गई थी।[20]

दिसम्बर 1919 ई.मे गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन के आव्हान पर समस्त बुन्देलखण्ड में इसकी प्रतिक्रिया आरम्भ हो गई थी।

इसमें बुन्देलखाण्ड के समस्त जिले प्रभावित हुए। इस आन्दोलन मे जनता का राष्ट्रीय प्रेम उमड़ पड़ा था। झाँसी नगर के कपड़ा व्यापारियों ने लाखों रुपये का कपड़ा कांग्रेस के आदेशानुसार बेचना बन्द कर दिया और कांग्रेस की शील लगाकर कमरों मे बन्द करके रखा दिया। [21]

झाँसी मे असहयोग आन्दोलन – झाँसी नगर एवं जिले की जनता में असहयोग आन्दोलन की तीब्र प्रतिक्रिया हुई इस आन्दोलन मे पुरुष सत्याग्रहियों के अलावा स्त्रियों में **पिस्ता देवी** तथा **चन्द्रमुखी देवी** की प्रमुख भूमिका रही [22] झाँसी में प्रातः नाश्ता करके स्वयंसेवक बिशेष जत्थों मे राष्ट्रीय गीत गाते हुए शराब और ताड़ी की दुकानो पर धरना देने के लिए जाते थे, वहीं शराब पीने को आये हुए व्यक्तियों को समझाकर रोकते, यदि कोई नही मानता तो स्वयंसेवक लेट जाते और कहते कि हमारे सीने पर पैर रखाकर शराब पीने जा सकते हो। इससे पीने बाला लेट जाता। [23] नगर मे उस समय प्रमुख शिक्षण संस्था मेकडोनल्ड हाईस्कूल था अनेक विद्यार्थियों ने इस संस्था से अपना अध्ययन समाप्त कर दिया। संयोग से इस समय कुछ प्रमुख गाँधीवादी अध्यापकों ने एक विद्यालय की स्थापना की इस विद्यालय का नाम सरस्वती विद्यालय रखा।[24]उधार अनेक वकीलों ने अदालतों का बहिष्कार किया उनमे प्रमुख थे कालिका प्रसाद अग्रवाल।

जब देश की स्वतंत्रता के लिये महात्मा गाँधी के नेतृत्व में असहयोग आन्दोलन का सूत्रपात हुआ तो उसमे यहँा की महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर स्वतंत्रता संग्राम में भाग लिया।जबकि बुन्देलखाण्डमे परदा प्रथा चरम सीमा पर थी।और निम्न वर्ग को थोड़ा छोड़कर क्योंकि निम्न वर्ग की स्त्रियां मजदूरी करने के लिये बाहर निकलतीं थी लेकिन उच्च वर्ग मे यह सर्वथा सर्वत्र विद्यमान थीं। उस समय यह नारी समाज जो कि परदे के अंदर बंद रहता था वह लोक लज्जा को तिलांजलि देकर मैदान में कूद पड़ी। इस जनपद मे स्त्रियों ने पुरुषों के साथ कंधे से कंध ाा मिलाकर राष्ट्रध्वज उठाकर जुलूस निकाला। लड़कियों ने अग्रेंजी शिक्षा संस्थाओं का लड़कों के साथ मिलाकर बहिष्कार किया [25] नारियों ने भी पुरुषों के साथ मिलकर शराब एवं बिदेशी बस्तुएं बेंची जाने वाली दुकानो पर धरना दिया।झाँसी नगर मे विदेशी

कपड़ो की होली सरस्वती पाठशाला के प्रांगण मे जलाई गई।[26] इस आन्दोलन मे आत्माराम, गोबिन्द खेर, लक्ष्मण कदम के अतिरिक्त सैकड़ों की संख्याओं मे महिलाओं ने भाग लिया।

पिस्ता देवी तथा चन्द्रमुखी देवी— इन महिलाओं में पिस्तादेवी ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई इन्होने अपनी दोनो पुत्रियों सहित आन्दोलन में भाग लिया और मोती लाल पुस्तकालय के सामने विदेशी वस्त्रों की होली जलाई। इस आंदोलन में मजदूर नेता रुस्तम सैटिन ने पिस्ता देवी के साथ महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पिस्ता देवी ने जालिम शासकों के डण्डों की मार सही। और बाद मे इस आंदोलन में पिस्ता देवी अपनी पुत्रियों सहित पुलिस द्वारा बंदी बना ली गईं। [27]

उधार पिस्ता देवी के साथ असहयोग आंदोलन में चन्द्रमुखी देवी ने भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उन्होने भी पिस्ता देवी के साथ विदेशी वस्त्रों की होली जलाई तथा शराब एंव विदेशी वस्तुएं बेची जाने वाली दुकानों पर धारना दिया। [28]

पिस्ता देवी भगवान दास गोयल की र्धमपत्नी थीं और उस समय झाँसी के सिटी मजिस्ट्रेट भी चिमन लाल जी की बहिन थीं, के नेतृत्व में इनके पूरे परिवार की स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण सहभागिता रही। यह वह समय था जब कि महिलायें जिनको प्रमुख आर्कषण तथा स्वर्णं जेवरात तथा महगीं साड़ियों के प्रति होता है उस समय धानी वर्ग की महिला पिस्ता देवी गोयल ने न केवल स्वयं अपितु अपनी देवरानी को भी स्वतंत्रता सग्ंाम में कूदने का आव्हान किया और पिस्ता देवी की ही प्रेरणा से इनकी देवरानी भी स्वतंत्रता संग्राम मे कूद पड़ी। पिस्ता देवी ने स्वदेशी आन्दोलन मे विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार करने के अलावा झाँसी मे सावित्री देवी भागवत के साथ कलेक्ट्रेट मे धारना दिया। तो सरकार ने इन्हे सन् 1932 ई. में कृष्णभूमि (जेल कारावास) में डाल दिया और एक वर्ष की सश्रम कारावास की सजा सुनाई।[29]

श्रीमती लक्ष्मण कुमारी शर्मा—श्रीमती लक्ष्मण कुमारी शर्मा का जन्म 1899 मे रानी लक्ष्मी बाई की कर्म भूमि झाँसी में हुआ। ये झाँसी के सीपरी बाजार नामक मोहल्ले की थीं। बचपन से ही लक्ष्मण कुमारी ने अपनी आँखो से अंग्रेज सरकार द्वारा झाँसी के नागरिकों के साथ हो रहे अत्याचार और अन्याय को होते

देखा था। अतः बाल्यकाल से ही इनके मन मे स्वतंत्रता आंदोलन मे भाग लेने की तीब्र इच्छा थी। संयोग से इनका विवाह पण्डित रामेश्वर प्रसाद शर्मा से हो गया। पं. रामेश्वर प्रसाद शर्मा प्रखार वक्ता सक्रिय कार्यकर्ता एवं दृढ़ गाँधी विचारक थे अतः जब 1915,16 में रामेश्वर प्रसाद शर्मा स्व0 गणेश शंकर विद्यार्थी के सम्पर्क में आये और उनके साथ उन्होने प्रकाशन और सम्पादन का कार्य शुरु किया तथा महावीर प्रसाद द्विवेदी के साथ सम्पर्क में आने से सरस्वती नामक पत्रिका का उपसम्पादन करना प्रारंभ किया तो लक्ष्मण कुमारी शर्मा ने भी पं. रामेश्वर प्रसाद जी के साथ सहभागिता की। [30]

समय आने पर लक्ष्मण कुमारी जी ने एक पुत्री कमला भार्गव को जन्म दिया।उन्होने अपनी पुत्री की परवरिश के साथ देश को स्वतंत्र कराने का दृढ़ संकल्प भी मन में रखा।

सन् 1920 मे महात्मा गाँधी जी के आव्हान पर प्रारंभ किये गये असहयोग आंदोलन में पं. रामेश्वर प्रसाद शर्मा को कांग्रेस का प्रचार करते हुए क्रिमिनल अमेण्डमेन्ट एक्ट में डेढ़ वर्ष की सजा सुनाई गई। और उन्हे आगरा जेल में रखा गया। लक्ष्मण कुमारी ने भी असहयोग आन्दोलन में भाग लिया।उस समय वे बहुत गम्भीर बीमारी तपेदिक से पीड़ित थी फिर भी उन्होने अपनी बीमारी की परवाह न करते हुए सरकार के बिरुद्ध नारेबाजी की और बिदेशी बस्तुओं के बहिस्कार में भाग लिया। 6 महीने की सजा काटने के बाद श्रीमती शर्मा जेल से बाहर आंई और जेल से बाहर आने के बाद श्रीमती शर्मा की मृत्यु 1934 ई. मे हो गई [31]

नागपुर का झण्डा सत्याग्रह और महिलायें

1919 से 1921तक गाँधी जी का असहयोग आंदोलन चला और सम्पूर्ण देश के द्वारा इस असहयोग आंदोलन को अपनाया गया इसी बीच अप्रत्याशित घटना 5 फरवरी 1922 को चौरा चौरी नामक स्थान पर एक हिंसक घटना घटी जिसमे पुलिस द्वारा अधाध ुंधा गोली चलाने के बिरोध में जनसमूह ने पुलिस थाने में आग लगा दी उस अग्नि काण्ड मे 22 पुलिस के सिपाहियों की मृत्यु हो गई जिसके फलस्वरुप गाँधी जी ने 12 फरवरी 1922 को असहयोग आंदोलन स्थगित कर दिया । गाँधी जी के इस कदम की राष्ट्रीय स्तर पर आलोचना हुई किन्तु वे अपने निर्णय पर अडिग रहे। [32]

असहयोग आंदोलन के स्थगन के बाद गाँधी जी द्वारा असहयोग आंदोलन दो भागों में बिभक्त कर दिया गया, पहला निषेधात्मक और दूसरा रचनात्मक। रचनात्मक नीति मे कांग्रेस के झण्डा तले राष्ट्रीय संगठन का बिन्दु भी था। इसी कार्यक्रम के तहत कांग्रेस ने झण्डा सत्याग्रह की अनुमति प्रदान की थी।झण्डा सत्याग्रह के अर्न्तगत जगह जगह ध्वज संचालन एवं ध्वजारोहण एवं वस्त्रादि में ध्वज प्रयोग शामिल था। ध्वजान्दोलन के अंर्तगत नागपुर मे एक बड़े झण्डा सत्याग्रह का आयोजन किया गया था जिसमें देश के अनेक हिस्सों से सत्याग्रह हेतु सेवक आये।

नागपुर मे कांग्रेसियों ने तिरंगे झण्डे का एक जुलूस निकाला। वह जुलूस नागपुर शहर में घूमता हुआ सिविल लाईन जा पहुचा। शहर और सिविल लाईन के बीच रेलवे लाईन थी रेलवे के उस पार सिविल लाईन थी जंहा पर सत्याग्रही झण्डे को फहराना चाहते थे सिविल लाईन मे अंग्रेज रहते थे वँहा पर भारतीयों की बस्ती नही थी ध्वज जुलूस को देखते ही अंग्रेजो ने बिरोध किया कि हमारे यँहा से भारतीय तिरंगे का जुलूस नही निकल सकता यँहा पर केवल अंग्रेज का युनियन जैक ही फहर सकता है क्योंकि भारतीय झण्डे के निकलने से अंग्रेज झण्डे का अपमान होगा पुलिस बालो ने भारतीय ध्वज संचालन को रोक दिया।[33]

इस तरह के विवाद के बाद भारतीय झण्डे के अपमान का प्रश्न भी जोर पकड़ गया सत्याग्रही इस बात पर अड़ गये कि सिविल लाईन भारत में है। जब सिपाही आगे बढ़ने लगे तो गोरे सिपाही बन्दूक की बट से उन्हे पीटने लगे जिससे उनके शरीर से रक्त की धारा बहने लगी पुलिस ने उन सभी को ट्रक में लादकर ठूस दिया।पुलिस ने उन पर धारा 144 लगाकर छः महीने कारावास का दण्ड भी दिया।[34]

उक्त घटना के बाद यह बात सम्पूर्ण भारत मे फैल गई। सेठ जमना लाल बजाज, माखन लाल चतुर्वेदी और डा. हार्डीकर जैसे राष्ट्रसेवी झण्डा लेकर सिविल लाईन में झण्डा जुलूस की तरफ चल दिये। गोरों ने उन्हे भी घायल कर दिया। इधर भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इसे अपने प्रस्ताव मे लेकर ध्वजारोहण की अनुमति प्रदान कर दी। नागपुर उस समय मध्यप्रदेश मे था पूरे मध्यप्रदेश से नागपुर झण्डा सत्याग्रह के लिये स्वयंसेवको के जत्थे आने

लगे। इससे मध्यप्रदेश की सभी जेलें स्वयं सेवकों से भर गई। सत्याग्रहियों का नागपुर मे ताँता लग गया।[35]

झण्डा सत्याग्रह बराबर चलता रहा कांग्रेस की अपील का देश के सम्पन्न वर्ग पर असर हुआ। कांग्रेस ने राष्ट्रीय जनता से सत्याग्रहियों की मदद हेतु अपीलकी।सेठ साहूकारों ने उदार होकर इतनी प्रचुर खाद्य सामग्री दी कि कांग्रेस के भण्डार भर गये।

उत्तरप्रदेश से स्वयं सेवक भेजने के लिये भारतीय कांग्रेस ने पं. नेहरु को अधिनायक नियुक्त किया था उत्तर प्रदेश के अनेक जिलों से स्वयं सेवी नागपुर झण्डा सत्याग्रह के लिए रवाना हुए लेकिन झाँसी मण्डल से कोई नही गया इस पर पण्डित नेहरु ने दीवान शत्रुघ्न सिंह को इलाहाबाद भिजवाया । वे पण्डित नेहरु से मिले पण्डित ने परेशानी की मुद्रा में कहा कि "आपके बुन्देलखाण्ड से एक भी सत्याग्रही नागपुर झण्डा सत्याग्रह के लिये नही गया जबकि सभी जिलों से कार्यकर्ता गये हुए हैं आप अपने यंहा से सत्याग्रही भेजिये"।दीवान साहब ने झाँसी मण्डल के नेताओं से सम्पर्क किया किन्तु किसी भी स्वयं सेवक ने हामी नही भरी।[36]

नागपुर सत्याग्रह और जराखार

अन्त में नागपुर झण्डा सत्याग्रह के लिये पाँच सत्याग्रही स्वयं सेवक तैयार हुए इनमे श्रीपति सहाय रावत,कीरत सिंह, इन्द्रजीत,पंचम और कुंजबिहारी। इन सभी लोगों ने अनेक अमानवीय कष्ट सहते हुए नागपुर पहुँचने का साहसिक कार्य किया।इन लोगों ने नागपुर से पहले गोंदिया जो कि नागपुर से अस्सी किलो मीटर दूर था और मार्ग में पहाड़ और ऊँचे ऊँचे घाट पड़ते थे जंगली मार्ग था अतः इन सत्याग्रहियों ने यह तय किया कि हम लोगों को गिरफ्तार किया जा सकता है तो इन लोगो ने ट्रेन में ही फहराने का बिचार किया। उत्तर प्रदेश से 150 सत्याग्रही नागपुर झण्डा सत्याग्रह में भाग लेने के लिये गये थे ये लोग रेलगाड़ी के एक तरफ हैंडिल जिनको पकड़कर ट्रेन मे चढ़ना होता हैं उसमे बॉस के झण्डे को बाँधा दिया और यह घोषणा की कि जब तक एक भी सत्याग्रही जीबित रहेगा ये लोग बंधे रहेंगे। रेलगाड़ी अपने समय पर गोंदिया जंक्सन से नागपुर के लिये चली। गाड़ी के तीब्र गति से चलने पर झण्डा लहराने लगा। रेलगाड़ी के गार्ड ने कहा कि **"तुम लोग पैदल जाना मॉगता है"** लेकिन सत्याग्रहियों ने कहा कि जब तक

एक भी सत्याग्रही जीबित रहेगा ट्रेन से झण्डा नही हटेगा अन्त मे ये लोग अपनी जिद पर अड़े रहे और गोरे सिपाहियों ने इन्हे इतना मारा कि कईयों की हड्डी टूट गई और सभी लहूलुहान हो गये।[37]

मुकदमा और सजा

दूसरे दिन न्यायाधीश ने सत्याग्रहियों पर धारा 109 लगा दी। कांग्रेस का लक्ष्य यह रहता था कि सत्याग्रही मैदान पर झण्डा फहराते हुए पकड़े जायें ताकि सत्याग्रह जनता के सामने परिलक्षित हो। उत्तर प्रदेश के 150 सत्याग्रहियों पर न्यायधीश ने धारा 109 के अनुसार एक एक वर्ष की सजा सुनाई। नागपुर जेल में इन सत्याग्रहियों के साथ अमानवीय व्यवहार किया जाने लगा जो कि मानवता के परे है। खाने मे साग के नाम पर घास,सड़ी दाल,सड़ी ज्वार के आंटे की रोटी दी जाती थी। शौच करने पर मेहतर पीछे से झाड़ू मारता था सभी को एक साथ शौच करना पड़ता था। हथकड़ी बाली सजा में सत्याग्रही के दोनो हाथ हथकड़ी मे फंसा दिये जाते थे और वह आदमी दीवाल की ठुकी हुई हथकड़ी मे लटका दिया जाता था केवल पैर के अंगूठे जमीन पर छूते थे। आदमी घण्टो इसी तरह लटका रहता था। न वह टट्टी कर पाता था और न पेशाब।[38]

सिविल लाइन पर ध्वजारोहण

नागपुर झण्डा सत्याग्रह से सरकार परेशान हो गई थी उसको इस बात का अनुमान नहीं था कि नागपुर का झण्डा सत्याग्रह समूचे भारत का झण्डा सत्याग्रह हो जायेगा केवल नागपुर ही नही वरन पूरे मध्यप्रदेश की जेलें सत्याग्रहियों से भर चुकी थी। मामला बढ़ता ही जा रहा था। म0प्र0 की कोसिंल को काग्रेस का पूर्ण बहुमत था मध्य प्रदेश की कौंसिल की बैठक हुई उसने अपना प्रस्ताव पूर्ण बहुमत से पारित कर दिया कि कांग्रेस का झण्डा राष्ट्रीय झण्डा है उसे प्रत्येक प्रान्त तथा स्थान से फहराया जा सकता है।भारत के राष्ट्रीय झण्डे का फहराना कानूनी है।म0प्र0 कांग्रेस कौसिंल के इस प्रस्ताव के सर्व सम्मति से पास होने पर नागपुर मे सिविल लाइन पर झण्डा फहरा दिया गया।माखन लाल चतुर्वेदी के नेतृत्व मे काग्रेस का बहुत बड़ा जुलूस निकाला गया अंग्रेज सरकार ने सब सत्याग्रहियो को एक साथ छोड़ दिया।

नागपुर शहर ने जेल से मुक्त हुये सत्याग्रहियों का बड़ी धूमधाम से स्वागत किया। सम्पूर्ण शहर में राष्ट्रीय झण्डे की जय महात्मा गाँधी की जय एवं भारतमाता की जय की धूम थी।सभी पांचो सत्याग्रही कुलपहाड़ लौट आये । इस तरह इन सत्याग्रहियों ने नागपुर झण्डा सत्याग्रह में भाग लेकर बुन्देली धरा को गौरवान्वित कर दिया।[39]

झण्डा सत्याग्रह मे झाँसी की महिलायें–

झांसी जनपद मे भी रानी राजेन्द्र कुमारी से प्रेरणा लेकर झाँसी जनपद की महिलाओं मे से श्रीमती काशी बाई माता बाबू मंगली प्रसाद और श्रीमती काशी बाई माता लक्ष्मी बाई माता स्व. रामचरण कंचन का नाम बिशेष रूप से उल्लेखनीय है जिन्होने झण्डा सत्याग्रह मे बिशेष रूप से भाग लिया।[40] इन महिलाओं ने घर द्वार की चिन्ता न करते हुए गाँधी जी के असहयोग आन्दोलन से प्रेरणा प्राप्त करके **विजयी विश्व तिरंगा प्यारा झण्डा ऊँचा रहे हमारा** जो कि भारत के सम्मान का प्रतीक था उस झण्डा आन्दोलन मे झाँसी जनपद तथा आसपास के जनपदों के पुरुष जिनमे स्वामी स्वराज्या नन्द, भगवत नारायण र्भागव, श्री रामेश्वर प्रसाद शर्मा के साथ सैकड़ों झण्डे झाँसी मे गड़े। इनके साथ दुर्जन लाल रावत,राजाराम शास्त्री,राम प्रसाद, बाबू लाल दर्जी, राम लाल रावत इत्यादि स्वतंत्रता संग्राम सेनानी सहयोगी की भूमिका मे रहे।झाँसी मे झण्डा आन्दोलन व्यापक रूप से फैला उस समय राष्ट्रीय तिरंगा देश की आन बान तथा शान का प्रतीक समझा जाता था। गोरी सरकार भारतीय राष्ट्रीय तिरंगे के प्रचार प्रसार तथा आरोहण को फूटी ऑखो से भी देखना नही चाहती थी तब बुन्देल खाण्ड के पुरुषों ही नही अपितु महिलाओं ने भी खुले दिल और मन से झण्डा सत्याग्रह मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

बिट्रिश सरकार राष्ट्रीय तिरंगे झण्डे को फहराना अपराध मानती थी झण्डा फहराने बाले के पीछे पुलिस का पहरा रहता था सरकार उन पर चोर डाकू की तरह निगरानी रखाती थी जब झाँसी मे कांग्रेसी स्वयं सेवक अपनी टोपियो, कुर्तों एवं मकानो पर झण्डे लगाते थे तो कोई भी कार्यकर्ता बिना झण्डे एवं बैच के बाहर नही निकलता था। जिस समय श्रीमती काशी बाई, श्रीमती लक्ष्मी बाई, पिस्ता देवी के साथ अन्य महिलायें झण्डा संचालन कर रंही थी तो

उन पर पुलिसिया प्रकोप कहर बनकर टूट पड़ता था। किन्तु यह महिला दल डरता नहीं था।

बुन्देलखण्ड मे सत्याग्रह एवं आंदोलन (अ)

इस प्रकार 1919,20 ई मे गाँधी जी के नेतृत्व मे परन्तु अहिंसात्मक असहयोग आन्दोलन समस्त भारत के साथ बुन्देलखण्ड मे भी प्रारंभ हो गया। इस आन्दोलन मे शांतिपूर्ण प्रर्दशन किये गये। न्यायालयों का बायकाट किया गया शिक्षा संस्थाओं का बहिष्कार किया गया शराब एवं बिदेशी बस्तुओं को बेचने बाली दुकानो पर धरना दिया गया। बिदेशी बस्तुओं की होली जलाई गई।हिन्दुओं और मुसलमानो ने कंधे से कंधा मिलाकर इस आंदोलन मे भाग लिया। यह आंदोलन बुंदेलखण्ड के गॉव गॉव मे फैल गया मऊरानीपुर झाँसी मे रामनाथ त्रिवेदी, ठाकुर दास,झाँसी मे कालका प्रसाद अग्रवाल पिस्ता देवी और चन्द्रमुखी देवी, आत्माराम गोबिन्द खेर ,कुन्ज बिहारी लाल शिवानी,अयोध्या प्रसाद कामरेड। हमीरपुर मे रानी राजेन्द्र कुमारी दीवान शत्रुघ्न सिंह,किशोरी देवी बालेन्द्र अरजरिया तथा बॉदा मे कुँअर हर प्रसाद आदि ने सत्याग्रह मे भाग लिया।[41]

हमीरपुर का झण्डा सत्याग्रह तथा उसमे भागलेने बाली महिलायें

जिस समय सन् 1923 ई. मे तिरंगे का प्रचार प्रारंभ हुआ जगह जगह ध्वज संचालन हुआ उस समय हमीरपुर जनपद की सैकड़ो महिलाओं ने झण्डा जुलूस मे भाग लिया। उन्होने महोबा के कांग्रेस र्कायालय मे झण्डा लेकर झण्डागान करते हुए जुलूस निकाला।

ये महिलायें जब तिरंगा हाथ मे लेकर समवेत गान करती हुई तहसील के सामने से गुजरती थीं तो सिपाही महिलाओं पर टूट पड़ते थे महिलाओं के हाथ से झण्डा छीनने लगते थे किन्तु महिलायें झण्डे से चिपट जाती थी। जब पुलिस बाले महिलाओं से झण्डा छीन नही पाते तो उन पर लाठी और डण्डा से प्रहार करते थे। महिला सेनानी जब तक कि घायल नही हो जातीं थीं तो उनके सिर पर रक्त की धार बहने लगती थी। तब तक उनका जुलूस बन्द नही होता था। उसके बाद पुलिस का एक बड़ा दल आकर सभी महिलाओं को गिरफ्तार कर लेता था। [42] अब यँहा

उन महिला सेनानियों का उल्लेख प्रासंगिक होगा जिन्होने हमीरपुर जनपद के झण्डा आन्दोलन मे भाग लिया।

हमीरपुर मे सत्याग्रह और रानी राजेन्द्र कुमारी

हमीरपुर जिले मे असहयोग आन्दोलन की प्रमुख लहर कुलपहाड़ एवं _महोबा तहसीलों मे तीब्र गति से चली। हमीरपुर जिले मे असहयोग आन्दोलन मे प्रमुख कार्यकर्ता दीवान शत्रुघ्न सिंह एवं उनकी **पत्नी राजेन्द्र कुमारी** कुँअर हर प्रसाद सिंह महोबा के पं. बैजनाथ तिवारी एवं बालेन्दु अरजरिया आदि थे। इस आन्दोलन का प्रमुख केन्द्र कुलपहाड़ था बाद मे यह आंदोलन महोबा राठ आदि तहसीलों मे फैल गया। [43]

हमीरपुर जनपद की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी रानी राजेन्द्र कुमारी

रानी राजेन्द्र कुमारी दीवान शत्रुघ्न सिंह की पत्नी थी।दीवान शत्रुघ्न सिंह को पण्डित परमानन्द का सानिध्य प्राप्त हुआ था जँहा इनके हृदय के ऑगन मे कुँअर मनोहर सिंह ने बारूदी बीज बोया था तो वंही पण्डित परमानन्द ने उसे अपने सामीप्य सलिल का सिंचन प्रदान कर अंकुरित किया। [44] दीवान शत्रुघ्न साहब 1919 ई. मे कांग्रेस मे शमिल हो गये। जिले मे दीवान शत्रुघ्न सिंह के साथ श्री भाई के भी शामिल हो जाने के कारण कांग्रेस के कार्यक्रम बिधिवत चलाये जाने लगे।

दीवान साहब ने कांग्रेस मे शामिल हो जाने के बाद अपनेको पूरी तरह से कांग्रेसी बना लिया था। दीवान शत्रुघ्न सिंह के कांग्रेसीकरण को उनकी माँ राव रानी दुलैया तथा बहिन ने प्रोत्साहित किया। दीवान साहब तथा उनके साथियों ने खद्दर बेषभूषा को अपनाया। खादी के पर्चे छपवाकर उन्हे ग्रामीणो में बॉटा।[45] छुआछूत के उस घनघोर काल में दीवान साहब ने एक महिला जो कि हरिजन थीउसके बच्चे को लोटा में जल देकर अश्प्रश्यता हटाओ का तत्कालीन एक पहला उदहारण भी पेश किया। [46]

रानी राजेन्द्र कुमारी और पर्दा प्रथा–

1920 में दीवान साहब ने मगरौढ़ में स्थित अपने आबास के बगल बाले मकान में यज्ञ का आयोजन किया और इसमे ठा. लाल सिंह, श्रीपति सहाय रावत,पं. भागीरथ, पं. बैजनाथ जैसे प्रतिष्ठित लोगों

को बुलाया। इस यज्ञ में मगरौढ़ की बहुत सी महिलायें भी आईं। यज्ञ के प्रारंभमे जब आहुतियॉ दी जाने लगी, दीबान साहब तथा राजेन्द्र कुमारी ने आहुतियॉ दीं। यज्ञ के बाद रानी राजेन्द्र कुमारी ने पर्दा प्रथा दूर करते हुए सबके सामने भाषण दिया।[47]

रानी राजेन्द्र कुमारी का प्रथम उद्‌बोधन— रानी ने कहा कि आदरणीय दीवान साहब की अनुमति और इच्छा के बाद ही मैने अपने अपने परिवार की पर्दे बाली पुरानी प्रथा को तोड़ा है। आज का जो बाताबरण है और आज की जो पुकार है उसके सामने यह पर्दा प्रथा एक दीबार बनकर सामने खड़ी है। इसी कारणं मैने पर्दा प्रथा का परित्याग किया है । आज समय की मॉग है कि महिलायें अपने को पुरातन प्राचीर से परे कर वर्तमान की नब्ज टटोलें और समय के साथ कदमताल करें। मैं जब अपने अतीत को निहारती हूॅ तो मुझे आर्दश के रूप में सीता,अनुसुइया, सावित्री, सारन्धा,दुर्गावती और लक्ष्मीबाई दृष्टिगत होती है।[48] ये महिलारत्न भारत के आर्दश हैं यदि इसे भारतीय इतिहास से अलग कर दिया जाये तो यह विवेचन महिला जौहरहीन हो जायेगा और साथ ही नारी सहभागिता के अभाव में सुखद भविष्य का निर्माण नही हो पायेगा।[49]

दीवान साहब के पर्दा प्रथा पर बिचार—दीवान साहब की सम्मति और सहमति पर रानी साहिबा द्वारा पर्दा प्रथा त्यागने के बाद दीवान साहब शत्रुघ्न सिंह ने मगरौढ़वासियों के सामने अपने बिचार व्यक्त करते हुए कहाकि रानी द्वारा आज जिस रूढ़ीवादी प्रथा को खत्म किया गया है उसके पीछे मेरी इच्छा है।रानीका यह कदम आज के समय की प्रबलतम आवश्यकता के अनुकूल है। इसे आप स्वयं अनुभव कर सकते हैं। वर्तमान परिवर्तन की मॉग कर रहा था हमे उन सभी परम्पराओं का त्याग कर देना चाहिये जो आज के विकास में अवरोधक हैं। महात्मा गाँधी जैसे राष्ट्रीय नेता भी महिलाओं की आजादी के पक्षधर हैं वे महिलाओं को पुरुषों की अर्धागिनी कहते हैं। उनकी दृष्टि में आधा अंग बिकसित हो और आधा कुंठित हो वह पक्षघात कहलाता है।[50]

ऐसा पुरुष जीवन के समर में कुछ नही कर सकता स्त्री पुरुष की सहयोगिनी है उसके सहयोग के बिना पुरुष अपाहिज हो जाता है। स्त्री पुरुष के बहुआयामी विकास का प्रमुख आधार होती है।

रानी राजेन्द्र कुमारी का स्वाधीनता आंदोलन में प्रवेश और तत्कालीन परिवेश–

जिस समय रानी राजेन्द्र कुमारी ने अपने पति दीवान शत्रुघ्न सिंह के मिशन स्वातन्त्र्य संघर्ष में सहधर्मिणी होने के नाते संघर्ष क्षेत्र में प्रवेश किया उस समय का परिवेश दबाव और दमन के दौर का था। दीवान साहब ने राठ के शाही दरबार में जिलाधीश के समक्ष चन्दा न देने की घोषणा कर आंग्ल बिरोधी पहली परीक्षा दी थी। दीवान साहब के इस कदम की पूरे राठ क्षेत्र के निवासियों ने प्रंशसा की। अंग्रेजों की इस चन्दा नीति के बिरोध के बाद दीवान साहब सारे जिले के नेता हो गये। उनकाराठ में अभूतपूर्व स्वागत किया गया।उन्होने कहा कि मैं आजन्म राष्ट्र के हित के लिये काम करूंगा इसके साथ उन्होने यह भी कहा कि मैं अपने पूर्वजों की ब्रिट्रिश प्रदत्त समस्त उपाधियां बापस करता हूँ। 51

1 जुलाई 1921 को राठ तहसील के सामने धारा 144 को तोड़ने के लिये एक सभा बुलाई गई जिसमे दीवान साहब ,रावत,पं. हरीदास बाबू बैजनाथ,मातादीन बुधौलिया, मूलचन्द्र शर्मा तथा सेठ ग्यासी लाल सहयोगी हुए।इन सत्याग्रहियों ने उस सभा में उपस्थित हजारों की भीड़ का उत्साहवर्धन किया।गोरी सरकार ने कांग्रेस को अबैध घोषित कर हर स्थान पर धारा 144 लगा दी। सत्याग्रह करते समय दीवान साहब सहित अनेक कांग्रेसियों को गिरफ्तार कर लिया गया। दीवान साहब को उनके साथियों सहित हमीरपुर जेल में बन्द कर दिया गया। दीवान साहब से भेट करने के लिये हमीरपुर में जनसैलाब उमड़ पड़ा।कचहरी मैदान में जनता ठसाठस भरी थी। इस तरह से रानी राजेन्द्र कुमारी जिस समय स्वतंत्रता समर में कूदी, उस समय राजनीतिक वातावरण में गोरों के दखल और दमन को स्पष्ट देखा जा सकता था।

रानी राजेन्द्र कुमारी की जेल में दीवान साहब से भेंट–

रानी राजेन्द्र कुमारी श्रीपति सहाय रावत के साथ दीवान साहब से जेल में मुलाकात करने गईं। दीवान साहब ने रानी साहिबा से भेंट के दौरान कहा कि मेरे जेल का समय अनिश्चित है पता नही मुझे कब तक जेल में रहना पड़े इसलियेमेरी अनुपस्थिति में तुम कांग्रेस के बैनर तले स्वतंत्रता संघर्ष का संचालन करना 52

तुम्हारे इस कार्य में श्रीपति सहाय रावत तथा अन्य साथी तुम्हारा सहयोग करेंगे। इस तरह से रानी राजेन्द्र कुमारी अपने पति की अनुमति पाकर आंदोलन में कूद पड़ी।

राजेन्द्र कुमारी द्वारा धारा 144 का उल्लघंन– रानी राजेन्द्र कुमारी ने अपने समस्त जेवर कांग्रेस को दान दे दिये। जब दीवान साहब को जेल से न्यायालय ले जाया जा रहा था तो उनके स्वागत के लिये जेल के फाटक से लेकर न्यायालय तक महिलायें कतारबद्ध खड़ी थी।[53] दीवान साहब तथा शर्मा जी को आगरा जेल स्थानांतरित कर दिया गया। उसी जेल में पं० जवाहर लाल नेहरु भी बन्द थे।

जिस दिन दीवान साहब को सजा सुनाई गई उसी दिन सांयकाल सात बजे रमेड़ी में एक अपार भीड़ जुटी। रानी राजेन्द्र कुमारी धारा 144 के खिलाफ जमकर बोलीं। उन्होने कहा कि कांग्रेस आजादी के संर्घष की एक अग्रणी संस्था है इसलिये यह हर भारतीय का परम धर्म है कि वह कांग्रेस का सदस्य बनकर उसके मिशन में सहभागी हो। तथा सफलता अर्जित करे रानी ने धारा 144 को धता बताकर गोरी सरकार को चुनौती दी कि मुझे कैद कर जेल भेज दिया जाये। मैं धारा 144 को जानबूझ कर तोड़ती हूँ।[54]

राजेन्द्र कुमारी द्वारा जिले का भ्रमण– रानी साहिबा द्वारा उठाये गये इस कदम की न केवल पुरुष स्वतंत्रता सेनानियों ने सराहना की अपितु अनेक महिलाओं ने भी प्रशंसा की। अनेक महिलाओं ने धारा 144 को तोड़ने में उनके साथ शिरकत की।[55]

रानी ने श्रीपति सहाय रावत, लालसिंह तथा पण्डित हरीदास के साथ कांग्रेस के संगठन तथा आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। उन्होने पूरे हमीरपुर जनपद में असहयोग आंदोलन के जनाधार हेतु सघन भ्रमण किया। उन्होने कुछेछा,कुरौड़ा,भरुआसुमेरपुर, इंगहोटा, पाटनपुर, मकरॉव तथा विदोखरमे जनसभांए की। रानी के इस आंदोलन में जगह जगह महिलाओं ने अपूर्व सहयोग दिया।[56]इसके बाद रानी राजेन्द्र कुमारी ने मौदहा में एक मुसलमान के यँहा रात्रि बिश्राम कर भोजनादि

ग्रहण किया। यहाँ पर उनके आगमन को सुनकर अपार भीड़ इकट्ठा हो गई। इसके बाद उनके सहयोगियों ने बाद में कांग्रेस का प्रचार करते हुए साथर,न्यूरिया, बिहूनी, मुस्करा, धनौरी और इमिलिया होते हुए राठ की राह पकड़ी।

उस समय महोबा में जिला समिति का प्रधान कार्यालय था। महोबा में कांग्रेस समिति की बैठक हुई जिसमे रानी को सर्वसम्मति से जिला कांग्रेस समिति का अध्यक्ष चुन लिया गया। रानी जिला कांग्रेस समिति की अध्यक्ष होने के बाद राजनीति में और अधिक सक्रिय हो गईं।[57]

साहस की साक्षी राजेन्द्र कुमारी–

रानी एक श्रेष्ठ सेनापति की भूमिका निभाती थी। रानी साहिबा का भाषण जँहा कही भी होता था वहॉ पुलिस अवश्य रहती थी। वे अपने हर भाषण में आंग्ल शासन की पुलिस द्वारा किये गये अत्याचारों को अपना लक्ष्य बनातीं थी। उनका भाषण इतना तेजस्वी होता था कि जनता में अंग्रेजी शासन के प्रति तीव्र घृणा की भावना जाग्रत हो उठती थी।रानी के भाषणों को सुनकर अंग्रेज अधिकारी आश्चर्यचकित हो जाते थे।[58]

जिस समय दीवान शत्रुघ्न सिंह जेल में थे उस समय रानी जिले के स्वातन्त्रय संघर्ष का संचालन कर रहीं थी।उसी समय रानी की गोद का एकमात्र दुलारा पुत्र नही रहा।उस समय दीवान साहब की मॉ भी मौजूद थी। वे दोहरी मार झेल गईं एक तो उनका पुत्र जेल में बन्द और दूसरी ओर ईश्वर ने उनके पौत्र को भी बुला लिया।एसे कठिन समय में रानी ने उनको सहारा दिया। यद्यपि वे स्वयं भी बहुत दुखी थीं। पुत्र शोक का समाचार सुनकर दीवान साहब के बहुत से शुभ चिन्तक रानी साहिबा को धैर्य दिलाने उनके आवास पर पहुॅचे जँहा पर रानी की बीरता को देखकर वे आश्चर्य चकित रह गये।[59] वे सचमुच दृढ़ता का प्रतीक थीं।

महोबा में रानी का भाषण–उस समय महोबा में कजली उत्सव था।इस कजली उत्सव में रानी भी शामिल हुई उन्होने अपने भाषण में कहा कि मैने **देवल देवी तथा मल्हना** रानी की पीड़ाओं को पढ़ा है उन्ही का सन्दर्भ देकर मैं आपसे कहती हूॅ कि आप भारत मॉ की रक्षा हेतु आगे आयें गुलाम देशों का मूल्य

पशुओं के चारागाह के मूल्य के बराबर भी नही होता है। आज भारत की सड़कें भारतीयों के लिये न होकर गोरों की होकर रह गई है। आंग्ल अधिकारी अपनी पत्नियों के साथ कारों पर कुत्तों को बैठाकर यात्रा करते हैं उन्हे कुत्ते प्रिय हैं किन्तु भारतीय नही।उन्होने हमारी सभ्यता और संस्कृति को नष्ट किया है। मैं आल्हा उदल के के पराकम की याद दिलाकर आप लोगों का आव्हान करती हूँ कि आप स्वतंत्रता समर में कूदें और देश को मुक्त करायें, स्वाधीनता के मिशन में देश का सहयोग करें।[60]

मौदहा में रानी का भाषंण– मौदहा में भादों की पूर्णिमा को 1921 ई. में रानी राजेन्द्र कुमारी ने मौदहा के कंस मेला में जनता के सामने अपने बिचारों को रखाते हुए कहा कि ज्ञात है कि कंस एक निरंकुश एवं अत्याचारी शासक था।उसका लोक लगाव से दूर दूर का रिश्ता नही था। अत्याचार एवं दमन ही उसका धर्म था। उसने अपनी बहिन तथा बहिनोई को बन्दी बनाकर रखा था उसके बिरुद्ध बिशद जनाकोश था । उसका शासन जनता को पसन्द नही था।

ब्रजवासी अवसर की खोज में थे। उसके बिरुद्ध बगावत की बागडोर सम्हालने बाला कोई बीर शिरोमणि नही मिल रहा था कि तभी बृज के लोगों की चिर प्रतिक्षित साध पूरी हुई।कृष्ण ने जन्म लिया कृष्ण शोषण के शत्रु थे वे जीवन पर्यन्त मानवतावादी रहे कंस कृष्ण विरोधी था। कंस ने कृष्ण के विरुद्ध कई षडयन्त्र रचे किन्तु सफल नही रहा। अन्ततः कंस को कृष्ण ने मारकर जनता को मुक्ति दिलाई। आज यहॅा आग्ल शासन कंस का ही प्रतिरुप है आप लोग इस कूर शासन का अन्त करने के लिये गाँधी जी का सहयोग करें। 61

राठ में रानी का भाषण–रानी राजेन्द्र कुमारी ने राठ की रामलीला के शुभ अवसर पर एक महिला सभा का आयोजन किया। रानी ने इसमे कहा कि भाइयों और बहिनों हमे अपने कर्तब्यों पर बिचार करना है नारी का संसार में एक अलग स्थान है उसके सहयोग के विना संसार चल नही सकता है।[62] नारी ही नर कीखान है उसने अनेक पुरोधाओं को जन्म दिया है इसलिये आज हम सभी भाई बहिनो का यह कर्तब्य बनता है कि अंग्रेजों ने हमारे देश पर अधिकार कर लिया है। हमारी सभ्यता संस्कृति इतिहास,

कला, उद्योग कृषि और शिक्षा जो कि निरन्तर पतन के गर्त मे गिरती जा रही है। इसको बचाने के लिये हमे राजनैतिक चेतना का बिकास करना होगा।[63] यदि आवश्यकता पड़े तो हम सब बहिनो को आजादी के लिये बड़ी से बड़ी कुर्बानी देने के लिये तैयार रहना चाहिये। तथा हमे जेल जाने, लाठी डण्डों से मार खाने और यहाँ तक कि गोली खाने को तैयार रहना चाहिये।[64]

इस तरह रानी ने महोबा, मौदहा तथा राठ के अपने दौरों में जन आह्वान का एक शानदार अभियान छेड़ा जिसका प्रभाव हमीरपुर जिले के अतरिक्त अन्य जिलो में एक जुटता के रूप में दिखाई दिया।

गंगा देवी लोधी और स्वाधीनता आन्दोलन

राठ से लगभग 6से बारह कि0 मी0 की दूरी पर स्थित गोहाण्ड एक एसा गाँव है जहाँ के अनेक स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों ने आजादी के आन्दोलन में अग्रणी भूमिका निभाई। इसी गाँव की उदयभान लोधी की पत्नी गंगादेवी की भी सामाजिक सहयोगिता भी कम महत्वपूर्ण नहीं रही 1895 में जन्मी गंगा देवीलोधी को पारिवारिक परिवंश में पुरोधत्व की शिक्षा नही मिली थी किन्तु गोहाण्ड में उदयभान लोधी से परिणय सूत्र में बंधाने के बाद उनमे स्वतंत्रता की प्रेरणा तब जागृत हुई जब गोहाण्ड के नबादा मोहल्लों से छपकर एक अखवार निकला , उस पत्र के समीप्य ने गंगा देवी की स्वतंत्र भावना को उद्वेलित कर दिया उन्हे हमीरपुर जनपद की रानी राजेन्द्र कुमारी का सामीप्य मिला।

गंगा देवी को अपने पति की आजादी के लिये सर्मथन प्राप्त था ।घार बाले गंगा देवी को जेल जाने की अनुमति नही दे रहे थे किन्तु उन्होने इस की परवाह नही की वे बराबर आजादी के लिये संघार्ष करते रहे । राठ के महिला ध्वज संचालन में गंगा देवी की सराहनीय भूमिका रही । अंग्रेज इनके हाथ से तिरंगा झण्डा नही खीच पाये थे। गोहाण्ड के अथाई स्थान पर झण्डे को बाधा गया था इन्हे 17(1) (2)सी एल0 ए0तथा 18(1)प्रेस एक्ट के अंतर्गत छः छः महीने अर्थात एक वर्ष कड़ी कैद की सजा मिली साथ ही गंगा देवी को दस दस रुपये का जुर्माना हुआ। जुर्माना अदा न करने पर एक माह की सख्त कैद की सजा की व्यवस्था थी।

गंगा देवी को राजा बेटी, गोमतीदेवी तथा भरत पुत्री सहित

अनेक जुझारू महिलाओं का सामीप्य प्राप्त रहा इनके साथ जेल में इनकी छः माह की पुत्री भी थी गंगा देवी ने फतेहगढ़ जेल में जेल व्यबस्था के बिरोध में आठ दिनो का आमरण अनशन भी किया था।[65]

गुलाब देवी और स्वातंत्रय समर –

राठ के पास वीरा एक एसा गॉव है जिसे सचमुच यदि वीर गॉव कहा जाये तो उसमे कोई अतिश्योक्ति नही होगी। इस गॉव के लगभग 20 जुझारु एसे जवान रहे हैं जिनकी आजादी में सकृिय सहभागिता रही ।इसी गावॅ के बैजनाथ लोधी की सहधर्मिणी गुलाब देवी का भी स्वाधीनता आंदोलन में अच्छा योगदान रहा। 1911 में जन्मी गुलाब देवी बैजनाथ लोधी से वैवाहिक रिश्ते में जुड़ने के बाद धीरे धीरे आजादी की ओर मुखातिब हुईं। उन्हे राजेन्द्र कुमारी, भगवती शुक्ला,तथा गंगा देवी जैसी महिलाओं का सम्पर्क प्राप्त हुआ जिसके फलस्वरुप गुलाब देवी भी आन्दोलन से जुड़ गईं।

गुलाब देवी को उनके पति ने भी संघर्षों सहभागिता के लिये प्रोत्साहित किया राठ तहसील में निकला तो उसमे गुलाब देवी भी शमिल हुईं। साथ ही बीरा गॉव में जगह जगह ध्वज लगाने में गुलाब देवी की अच्छी भूमिका रही। अंग्रेजों को जब इसकी भनक लगी कि बीरा गॉव में कई स्थानों पर झण्डे लगे हुए हैं।तो पुलिस दल गॉव पहुच गया । गॉव बालों ने अंग्रेजों को पानी तक पीने को नही दिया। गॉव की महिलाओं ने गुलाब देवी के नेतृत्व में पुलिस बालों पर खपरैल फेककर मारे तथा झण्डे उतारने नही दिये। इस तरह बीरा की इस बीर महिला का स्वाधीनता समर में शानदार योगदान रहा।[66]

सरस्वती देवी और स्वतंत्रता संग्राम–

महोबा से लौड़ी मार्ग के मध्य स्थित इटवा गॉव में रघुनाथ प्रसाद कायस्थ के घर सरस्वती देवी का 1886 ई0 में जन्म हुआ था। इनके पिता के चार पुत्रियां थीं। सरस्वती देवी ने इटवा में प्रारंभिक शिक्षा प्राप्त की तत्पश्चात इनका जैतपुर निवासी मण्टीलाल सक्सैना से 1907 में विवाह हो गया। सरस्वती देवी ने जैतपुर आकर अपनी शिक्षा पर ध्यान दिया। मण्टी लाल सक्सेना स्वतंत्रता के घोर पुजारी थे अतः उन्ही से प्रेरणा लेकर सरस्वती देवी ने

रानी राजेन्द्र कुमारी और किशोरी देवी अरजरिया के साथ आजादी के संर्घष में कूॅद पड़ी। सरस्वती देवी ने भी झण्डा सत्याग्रह में खुलकर भाग लिया। जब कुलपहाड़ से जुलूस निकला तो इनकी सराहनीय सहभागिता रही। सरस्वती देवी को सी0 एल0 ए0 की धारा 17(1) के अंर्तगत1932 में तीन माह की सजा मिली। सरस्वती देवी की सरयू देवी, मुन्नी देवी तथा गोमती देवी नाम की तीन पुत्रियां हैं तथा परमेश्वरी दयाल नाम के एक पुत्र हैं। देश की आजादी में सरस्वती देवी के योगदान को भुलाया नही जा सकता। देश के आजाद होने के बाद सरस्वती देवी 1942 से 1947 तक जैतपुर की प्रधान रहीं। इसके बाद मण्टी लाल सक्सैना जैतपुर के 27 वर्षों तक र्निविरोध प्रधान रहे। मण्टीलाल सक्सैनाके प्रयासोसे ही जैतपुर में सरकारी अस्पताल, गाँधी आश्रम,ब्लाक तथा राजकीय इण्टर कालेज स्थापित हुये।

सरस्वती देवी आजादी के बाद जैतपुर के विकास के लिये निरन्तर प्रयत्नशील रहीं। उनके दिल में जैतपुर जैसे पिछड़े कस्वे के विकास के लिये एक दर्द था एक कसक थीजिसे वे जीवन पर्यन्त प्रकट करती रहीं वे एक वीर महिला थीं।उनके योगदान को बुन्देलखाण्ड की धरती कभी नही भुला सकती। सरस्वती देवी का निधन 1986 में हो गया।[67]

बॉदा में असहयोग आन्दोलन

बांदा जनपद में असहयोग आन्दोलन के छिड़ते ही युवको व छात्रों ने स्वतंत्रता संग्राम के यज्ञ में अपनी आहूतियां देना प्रारंभ कर दिया।गांधी जी के आव्हान पर यँहा के लोगों ने सरकारी नौकरियों को छोड़ा, वकीलों ने वकालत छोड़ी, छात्रों ने विद्यालय छोड़े और अपनी मातृभूमि की सेवा के लिये तत्पर हो गये। पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री ने राजकीय विद्‌यालय में अध्ययन कार्य छोड़ा।ठाकुर युगल सिंह ने इन्जीनियरी छोड़ी और श्री सुकवासी लाल ने उपसहायक विद्यालय निरीक्षक पद छोड़ा।[68]

श्रीमती अनुसुइया देवी —इनका जन्म बबेरु बॉदा में 1890मे हुआ जिस समय गाँधी का सत्याग्रह आन्दोलन चरम सीमा पर था और जनता सरकारी कार्यों का बहिष्कार कर रही थी। श्रीमती अनुसुइया देवी भी असहयोग आंदोलन में रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में झण्डा सत्याग्रह में शामिल हों गईं। वे यहॉ

के मिथला भाई और महादेव भाई के साथ मिलकर क्रांति की ज्वाला को प्रज्जवलित करने लगी जिसके परिणाम स्वरुप सरकार ने उन्हे कारावास में बन्द कर दिया और छः माह की कैद की सजा सुनाई।वे निरन्तर सरकार के बिरुद्ध जन आंदोलन करती रहीं इनके साथ बाँदा की अनेक नारियां भी रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में आंदोलन में शामिल हुईं आन्दोलन के लिये घर द्वार की चिन्ता न करते हुये श्रीमती अनुसुईया देवी ने सन् 1930 में अपने प्राणों का परित्याग कर दिया।[69]

इसके अतरिक्त बरूआ सागर में पं0 रामसहाय जी शर्मा, श्री झगड़ू लाल जी, त्रिपाठी,श्री मगन लाल चौरसिया, श्री बालचन्द्र जी गुप्ता, श्री सीताराम जी कानूनगो, श्री बालकृष्ण द्विवेदी, श्री देवी प्रसाद जी साहू इत्यादि ने अपनी सर्विस और ग्राहस्थ जीवन का मोह त्यागकर स्वतंत्रता संग्राम में स्वतंत्रताकी अलख जगाई।[70]

ललितपुर जिले में नन्द किशोर किलेदार शादीलाल दुबे तथा उरई जालौन में चन्द्रभान विद्यार्थी मोतीलाल वर्मा आदि गाँधी वादी विचार धारा के व्यक्तियों ने इस आन्दोलन की बागडोर संभाली।[71]

बुन्देलखण्ड में कांग्रेस की स्थापना

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई। इसका प्रथम अधिवेशन बम्बई में हुआ। कांग्रेस स्थापना के प्रांरभिक दस साल तक ब्रिटिश सरकार के रूप में कार्य करती रही तथा इस पर विट्रिश साम्राज्य की कृपा दृष्टि बनी रही परन्तु धीरे धीरे इसमें अनेक राष्ट्रवादी नेता तथा उच्चकोटि के विद्वानों का प्रवेश प्रारम्भ हो गया तथा विट्रिश सरकार के अनेक कार्य जैसे बंगाल का विभाजन, मार्ले मिन्टो सुधार आदि से यह दल विट्रिश सरकार की आलोचना का केन्द्र बन गया। प्रथम विश्व युद्ध के बाद तथा महात्मा गाँधी का राजनीति में प्रवेश से इसका रूप ही बदल गया। अतः1920 के नागपुर के अधिवेशन मेंभारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने अपना ध्येय खुलकर उजागर कर दिया।वह ध्येय थासभी उचित तथा शान्तिपूर्ण उपायो से पूर्ण स्वराज्य की प्राप्ति।[72]

बुन्देलखण्ड के सेनानियों का कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेना

बुन्देलखाण्ड में सर्वप्रथम कांग्रेस की स्थापना झांसी नगर में हुई इसका मुख्य केन्द्र सरस्वती पाठशाला था।झांसी नगर के प्रसिद्ध कांग्रेसी नेता जिनमे हरनारायण गौर, मास्टर रूद्रनारायण,रघुनाथ विनायक घुलेकर, आत्माराम गोविन्द खेर तथा लक्ष्मण राव कदम और अयोध्या प्रसाद आदि प्रमुख थे।[73] 1916 में झाँसी में (संयुक्त प्रान्त) राजनैतिक कान्फ्रेन्स का आयोजन सरस्वती पाठशाला में किया गया। और यही पर 1916 में कांग्रेस कमेटी की स्थापना की गई।[74]1916 में कांग्रेस का जो अधिवेशन लखनऊ में हुआ में हुआ उसमे बुन्देलखण्ड के सी0 वाई0 चिन्तामणि प्रतिनिधि बनकर गये।[75] 1920 में झांसी नगर में गाँधी जी द्वारा काग्रेस कमेटी का उदघाटन किया गया था।

1920–21 में भी कांग्रेस कमेटी की स्थापना श्री घासीराम व्यास, रामनाथ त्रिवेदी, रामनाथ राव, छाया पण्डा, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल के द्वारा की गई।

हमीरपुर जिले में कांग्रेस की स्थाना कुलपहाड़ में हुई इसके बाद गहरोली, मौदहा, महोबा, राठ आदि में भी कांग्रेस कमेटी के कार्यालय खोले गयें।परन्तु इनमें मुख्य केन्द्र कुलपहाड़ ही रहता था। यहा के दीवान शत्रुघ्न सिंह तथा कुलपहाड़ के भगवान दास बालेन्दु ने मिलकर कुलपहाड़में कांग्रेस की स्थापना कीं 1920 ई0 में यहां पर ही सर्वप्रथम समस्त बुन्देलखाण्ड में प्रथम खादी भंडार की स्थापना की गई आज भी देश भर में सबसे उत्तम खादी इसी स्थान पर बनती है।[76]

उरई जनपद सें कंग्रेस के प्रतिनिधि के रूप में श्री बेनी माधव तिवारी तथा मन्नी लाल पाण्डेय तथा बॉदा से कुंवर हर प्रसाद सिंह कांग्रेस अधिवेशन में भाग लेते रहे।

1925 ई0 में कांग्रेस का अधिवेशन जो कि कानपुर में श्रीमती सरोजनी नायडू की अध्यक्षता में हुआ था।[77] उसमें बुन्देलखण्ड की ओर से झांसी जनपद के अतिरिक्त हमीरपुर जिले के प्रतिनिधि । भी शामिल हुये इस अधिवेशन में झांसी जनपद से रघुनाथ विनायक घुलेकर तथा हमीरपुर सें भगवान दास बालेन्दु प्रतिनिधि बनकर शमिल हुये।[78]

1928 में कलकत्ता अधिवेशन में झांसी की ओर से मणिराम कंचन तथा हमीरपुर जनपद से दीवान शत्रुघ्न सिंह प्रतिनिधि बनकर गये इस अधिवेशन की अध्यक्ष पं० मोती लाल नेहरू ने की।[79]

1929 ई0 में लाहौर में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ इसकी अध यक्षाता पं0 जवाहर लाल नेहरू ने की इस अधिवेशन में भगवान दास बालेन्दु तथा दीवान शत्रुघ्न सिंह महोबा के मिथिला शरण कांग्रेस के प्रतिनिधि बनकर शामिल हुये।[80]

कांग्रेस के उपर्युक्त अधिवेशनों में तो पुरूस स्वतंत्रता सेनानियों ने अपनी सहभागिता की लेकिन कांग्रेस के 1921 ई0 में गया कांग्रेस अधिवेशन में यहाँ की महिला सेनानियों ने भी अपनी प्रभावी उपस्थिति अंकित कराई।

गया कांग्रेस अधिवेशन और रानी राजेन्द्र कुमारी

दिसम्बर 1921 ई0 में बिहार में अखिल भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन आयोजित होना था इस आन्दोलन की अध्यक्षाता का दायित्व चितरंजन दास को सौंपा गया गाँधी जी उस समय जेल में बन्द थें। उस समय कांग्रेस में दो प्रकार की विचार धारायें थीं एक परिवर्तनवादी और दूसरी अपरिवर्तनवादी।

गया कांग्रेस में परिवर्तन वादी दल के नेता थें चितरंजन दास और मोती लाल नेहरू अपरिवर्तनवादी दल के नेता थे राज गोपालाचारी एंव पं0 सुन्दर लाल परिवर्तन वादियो का मत था कि सरकारी तथा अर्धसरकारी संस्थाओं में घुसकर ही अड़ंगे की नीति अपनाई जायें,साथ ही कौंसिलो के चुनाव में विजयी होकर विट्रिश सरकार का विरोंध किया जायें उसे पूरी तरह से पंगु बना दिया जायें जिससे कि गोरी सरकार सोचने के लियें विवश हो जाये।और हम अपने देश को आजाद करा सकेंगें इसलिये कांग्रेस चुनावमें अपने प्रत्याशियों कों खाड़ा करके विट्रिश सरकार को पराजित करेगें।[81]

अपरिवर्तन वादियों का परिवर्तन वादियों से से भिन्न मत था उनका विचार था कि स्वाधीनता के संघर्ष का साधन सत्याग्रह आन्दोलन ही होगा चाहे उसके लिये कितने भी कष्ट क्यों न उठाने पडें।स्वतंत्रता संघर्ष के साधन असहयोग,सविनय अवज्ञा और व्यक्तिगत सत्याग्रह ही होंगें उनमें कोई परिवर्तन नही होगा।[82]

अपरिवर्तन वादियों ने अपनी नीति को प्रासगिक बताते हुये कहा कि गाँधी जी अपनी इसी स्वातन्त्रय संघर्ष की विचाारधारा पर आगे चलते हुये जेल में बन्द हुये हैं हमे गाँधी मार्ग से मुह`

नही मोड़ना चाहिये।गया कांग्रेस में इसका निर्णय होना था कि कांग्रेस किस मार्ग को बहुमत से स्वीकार करती है।

दीवान शत्रुध्न सिंह उस समय जेल में बंद थे उस समय कांग्रेस के संचालन का सारा दायित्व रानी राजेन्द्र कुमारी के ऊपर था। दीवान साहब की अनुपस्थिति में उनके परिवार का कोई भी सदस्य उनका स्थान नही ले पाया यद्यपि उनकी प्रबल इच्छा थी कि उनका कार्यभार परिवार का कोई पुरुष ग्रहण करे। उन्होने जेल में मुलाकात के समय रानी राजेन्द्र कुमारी से यह कहा कि मेरे विचारों से वे परिवार के सदस्यों को अवगत करा दें। श्रीपति सहाय रावत ने दीवान साहब का संदेश उनके परिवार के सदस्यों को सुनाया था दीवान साहब के परिवारी जन बिट्रिश आतंक से इतने आतंकित थे कि उन्होने श्री भाई द्वारा प्रेषित दीवान साहब के संदेश को सुनना तक गवारा नही समझा। श्रीपति सहाय (श्री भाई) रावत ने यह सारा प्रकरण रानी साहिबा के समक्ष रखा जिसे उन्होने गंभीरता से लेते हुये कांग्रेस के संचालन का सारा दायित्व अपने ऊपर ले लिया। उन्होने गया कांग्रेस में जाने की तैयारी कर ली।

रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ चौका सौरा गॉव के बुन्देला ठाकुर अजीत सिंह, करगॅवा निवासी जगन्नाथ नाई तथा श्रीपति सहाय रावत गया कांग्रेस अधिवेशन में गये थे।येसभा प्रतिनिधि महोबा, बॉदा, इलाहाबाद, मुगलसराय होते हुये गया स्टेशन पंहुचें वँहा से यह लोग तांगे से कैम्प पहुंचे। गया में फालगू नदी के किनारे के मैदान पर कांग्रेस का विशाल पण्डाल बनाया गया था, जिलेवार रुकने की व्यवस्था की गई थी। अधिवेशन में हर तरह की सावधानी बरती गई।[83]

गया कांग्रेस अधिवेशन में जनसैलाब उमड़ पड़ा था इस अधिवेशन में बिहार प्रान्त का दिग्दर्शन होता था। अधिवेशन में बिहार के स्वरुप को चित्रित करने वाले फलफूल, औषधियां, हस्तकला एवं वस्त्र बुनाई की साफ झलक दिखाई पड़ती थी। वँहा की हस्तकला के वैविध्य से प्रर्दशनी को सौंदर्य से निखारा गया था। गया कांग्रेस अधिवेशन में कांग्रेसियों में मतभेद स्पष्ट दिखाई दे रहा था जँहा अपरिवर्तनवादी नेताओं में डा0 राजेन्द्र प्रसाद राय, गोपालाचार्य, कस्तूरीबाई, बल्लभ भाई पटेल इत्यादि थे वही

पं0 मोती लाल नेहरु और चितरंजन दास परिवर्तनवादी नेता थे। जो कौंसिल में चुनाव के माध्यम से प्रवेश कर अंग्रेजी नीति के समर्थक थे । दोनो विचारधाराओं को अधिवेशन में रखा गया किन्तु मतदान होने पर अपरिवर्तनवादी दल की भारी मतों से जीत हुई इस पर परिवर्तनवादी नेताओं ने अपना एक दल बना लिया जिसका नाम स्वराज्य दल रखा गया। इस पार्टी के नेता पं0 मोती लाल नेहरु और चितरंजन दास थे। इन्होनं चुनाव के जरिये कौंसिल में प्रवेश प्रवेश नीति अपनाई इन्हे चुनाव में सफलता भी मिली।[84]

बिट्रिश सरकार चुनाव में बुरी तरह हार गई। बिट्ठल भाई पटेल असेम्बली के अध्यक्ष बने केन्द्र में गोरी सरकार आये दिन पराजित होने लगी।

गया कांग्रेस खत्म होने के बाद सारे सारे प्रतिनिधि निज निवासों की तरफ चल दये। हमीरपुर जनपद से गये सारे प्रतिनिधि भी बापिस आ गये । गया कांग्रेस में रानी राजेन्द्र कुमारी को भारत वर्ष की प्रमुख महिला नेत्रियों के दर्शन हुये थे रानी साहिबा को वँहा पर कस्तूरी बाई, सरोजनी नायडू तथा कमला नेहरु जैसी प्रखर नेत्रियों के दर्शन हुये थे। इसके अतिरिक्त उन्हे वँहा पर बहुत सी महिला कार्य कवियों के भी दर्शन हुये थे।गया कांग्रेस में अखिल भारतीय महिला सम्मेलन भी हुआ था इसमे बंगाल, बिहार, असम, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात,पंजाब एवं तमिलनाडु प्रान्त की अनेक महिलायें सहभागी हुईं थी।इस महिला सम्मेलन में महिलाओं को स्वातन्त्रय संर्घष में भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया गया था। उन्होने सम्मेलन में अपने अनुभवों को भी सार्वजनिक किया था। इस तरह रानी राजेन्द्र कुमारी को उस गया कांग्रेस से राजनीति का परिपक्व ज्ञान प्राप्त हुआ था। वँहा से लौटने के बाद उन्होने पूरे जनपद का सघान दौरा किया था।[85]

श्रीमती किशोरी देवी

इनका जन्म काशी के सप्तसागर मोहल्ले में प0 वंशीधर वाजपईके घर 1908 में हुआकिशोरी जी पॉच भाईयों के बीच अकेली बहिन थीं। किशोरी जी बचपन से ही बड़ी चपल एवं शरारती थीं और इनका मन पढ़ाईकी अपेक्षा खेलकूँद में अधिक लगता था। लेकिन प0 वंशीधर वाजपई ने किशोरी की पढ़ाई का

पूरा बंदोबस्त किया और किशोरी देवी कक्षा 8 तक की पूरी पढ़ाई कर सकीं। वंशीधर वाजपई कर्मकाण्डी होने के साथ साथ पाण्डित्य में भी कम नहीं थे अतःकिशोरी जी ने अपने पिता से भाषण तथा कर्मठता का मूल मंत्र सीखा और इसे अपने जीवन में उतारा।[86]

1926 में किशोरी देवी का विवाह भगवान दास बालेन्दु से हुआ। उन्हे काशी तथा कुलपहाड़ के वातावरण में जमीन आसमान का अंतर दिखाई पड़ा कहॅा वाराणसी और कहॅा कुलपहाड़ दोनो में इतना अधिक अन्तर होते हुये भी किशोरी देवी ने अदभुत सामंजस्य निभाया। उनकी अदभुत सामजस्यता का एक उदाहरण इस प्रकार हैं।सन् 1930 में महात्मा गाँधी जी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाया।उसमे नमक कानून तोड़ने और कर बन्दी के अतिरिक्त बिदेशी वस्तुओं का बहिष्कार भी शामिल था। भगवान दास बालेन्दु विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के कट्टर सर्मथक थे। उन्होने किशोरी देवी जो कि अपने मायके बनारस से अनेकों कीमती साड़ियां अपने साथ लाईं थी उन साड़ियों के लिये कि ये साड़िया विदेशी हैं यह कहकर इनको जलाना चाहा। किशोरी देवी ने यह कहकर कि आप इन्हे जलाइये नही आप इन्हे गरीबों में बाँट दीजिये क्योंकि उन्हे इनकी अत्यधिक आवश्यकता है। इतना कहकर वे शान्त हो गईं।[87]

इस प्रकार किशोरी देवी ने न केवल अच्छे संस्कारों से अपने घर को निखारा अपितु अपने पति भगवान दास बालेन्दु जिनको कि धूम्रपान की लत थी उस लत से भी भगवान दास जी को मुक्त कराया।

किशोरी देवी जी के तीन पुत्र हुये श्री भुवनेन्दु अरजरिया जो कि ख्याति प्राप्त एडवोकेट हैं, श्री भारतेन्दु अरजरिया जो कि कवि तथा समाज सेवक हैं और तीसरे अखिलेन्दु अरजरिया जो कि झाँसी में कमिश्नर है।

1919मे एक लोमहर्षक घटना जलियावाला बाग हत्याकाण्ड हुईं। उसमे सैकड़ो व्यक्ति जनरल डायर के द्वारा गोलियों से भून दिये गये थे इस घटना से दुखी होकर महात्मा गाँधी ने 7 अप्रैल से 13 अप्रैल के बीच राष्ट्रीय सप्ताह मनाने की घोषणा की इसी कम में 1932 में भी देश में इसे पूरी निष्ठा के साथ मनाने की

योजना बनी। इस समय भगवान दास बालेन्दु फरारी हालत में चल रहे थे वे कुलपहाड में अपने आवास के बगल वाले मकान में छिपे हुये थे उन्होने अपनी पत्नि किशोरी देवी से कहा कि तुम भी राष्ट्रीस सप्ताह में निश्चिंतता पूर्वक भाग लो। किशोरी देवी मन में सोचने लगीं कि अपनी सास माँ से अनुमति प्राप्त कैसे की जाये अन्त में उन्होने अपनी अजिया सास से कहा कि मैं पड़ोसी के यँहा जा रही हूँ और वे संर्घष राह के लिये निकलीं। उन्होने घर में अपने समस्त आभूषणं उतारकर पूजा के एक डिब्बे में रख दिये और घर से निकल गईं।[88]

राष्ट्रीय सप्ताह और किशोरी देवी

किशोरी देवी जी जब कुयें के पास सड़क पर पहुंची तो उन्हे उनकी अन्य सहेलियां मिल गईं।वे सभी किशोरी देवी को पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुईं किशोरी देवी ने ऊँचे श्वर में कहा कि झण्डा ऊँचा रहे हमारा।उनकी सखियों ने भी एक स्वर में घोषणा की झण्डा ऊँचा रहे हमारा सर्म्पूण वातावरण गुंजायमान हो गया। इस उद्घोष को सुनकर घरों की सभी महिलायें बाहर आ गईं और यह देखकर उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि किशोरी देवी जो कि बनारस की हैं वे भी राष्ट्रीय सप्ताह मनाने में पीछे नही हैं।[89]

झाँसी सम्मेलन और पिस्ता देवी के साथ किशोरी देवी

1930ई0 में झाँसी में प्रदेशीय सम्मेलन हुआ बालेन्दु जी वँहा पर नही थे।किशोरी जी ने घर पर इस संबंध में कोई चर्चा नही की क्योंकि ससुराल बाले खासतौर से उनके ससुर उन्हे आन्दोलन में जाने के लिये मना करते थे। उन्होने अपनी खादी की धोती गाँधी आश्रम में रह रही रिश्ते की बुआ के यँहा भिजवा दी उसके बाद खादी आश्रम के र्कमचारी सुदर्शन की पत्नी सुविधा के साथ कुलपहाड़ स्टेशन गईं वे वँहा से गाड़ी द्वारा झाँसी पहुंची खेर साहब धुलेकर जी एवं पिस्ता देवी जो कि झाँसी में कांग्रेस की सकिय कार्यकर्ता थीं। इनसे आकर क़िशोरी देवी मिलीं और उन्होने झाँसी सम्मेलन में भाग लिया।

लौट कर किशोरी देवी कुलपहाड़ पहुंची उनके चचिया ससुर बहुत नाराज हुये। उन्होने किशोरी देवी जी को घर में घुसने से मना कर दिया सुविधा देवी जी ने कहा कि जब बालेन्दु

जी जेल में हैं तो यह भी जायेंगी। तो चचिया ससुर बोले कि तुम्हे लड़ाई का शौक है तो तुम जाओ लेकिन हमारी बहु बेटियों को बर्बाद मत करो।इस प्रकार किशोरी देवी को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा।90

हमीरपुर जेल और किशोरी देवी

हमीरपुर जेल में किशोरी देवी के साथ जमुना, मनोरमा, ज्ञानदेवी तथा रानी बहिन जैसी कई महिलायें रहीं और जेल में इन्हे अनेक यातनायें दी जाती थींकिन ये सभी महिलायें जेल में ही रहकर भजन व कीर्तन किया करती थीं।[91]

किशोरी देवी ने जेल में गॉधीवादी तकनीक को अपनाया उनमे त्याग और तपस्या कूट कूट कर भरी हुई थी। बिट्रिश सरकार द्वारा उन्हे दो माह तक जेल में रखा गया और इसके बाद उन्हे सेन्ट्रल जेल बनारस भिजवा दिया गयाउन्हे वँहा जेल में बी क्लास का र्दजा प्राप्त हुआ बनारस जेल में उनका परिचय प्रमुख महिला स्वतंत्रता सेनानियों से हुआ।[92]

बालेन्दु जी की अस्वस्थता और किशोरी देवी

सन्1932 ई0 में बालेन्दु जी फैजाबाद जेल में बंद थे। वे बहुत बीमार थे उस समय किशोरी देवी जी सारा संकोच छोड़कर अपने भाई गोबिन्द वैद्य के साथ उन्हे देखने फैजाबाद जा पँहुची। बालेन्दु को जेल से फैजाबाद के जिला अस्पताल भेज दिया गया था। उन्होने जब अस्पताल में बालेन्दु जी को देखा तो उन्हे बड़ा दुख हुआ बे अत्यन्त दुर्बल काया के हो गये थे। किशोरी देवी ने बालेन्दु जी से उनके स्वास्थ्य का हालचाल पूँछा किशोरी देवी के आंदोलन में भाग लेने पर उनके परिवार (मायके) का बड़ा योगदान रहा।किशोरी देवी ने अपने परिवार वालों से बालेन्दुजी का स्वास्थ्य लाभ (इलाज) बनारस में कराने के लिये कहा। कुछ दिन बाद बालेन्दु जी स्वस्थ्य हो गये।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारतीय स्वतंत्रता को आजाद कराने में हमीरपुर जनपद की महिलाओं ने तन मन धन तीनों ही प्रकार से देश की सेवा की। उन्होने रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ मिलकर सभी सम्मेलनो में प्रमुख भागीदारी निभाई थी। किशोरी देवी ने अपने पति बालेन्दु जी के साथ कंधे से कंधा मिलाकर देश

को स्वतंत्र कराने का प्रयत्न किया। उन्हे देश की अनेक महिलाओं का भी सामीप्य प्राप्त रहा ।वे अरुणा आसफ अली, पूर्णिमा बर्नजी, विद्यावती राठौर एवं पार्वती देवी जैसी शीर्ष महिलाओंके साथ जेल में रहीं।93

सत्याग्रह आंदोलन और उर्मिला देवी

उर्मिला देवी का जन्म धीरज कोष्ठा के घर राजा बेटी की कोख से हुआ था। इनके पति लक्ष्मी नारायण कोष्ठा दीवान शत्रुध न सिंह के सम्पर्क में आने के बाद स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ गये। ये राठ के गाँधी आश्रम से भी जुड़े हुये थे ये स्वतंत्रता संग्राम में भूमिगत रहकर अपना सहयोग प्रदान करते रहे उर्मिला देवी भी अपने पति से प्रभावित हुईं और गाँधी जी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आंदोलन में कूँद पड़ी।

उर्मिला देवी ने 1930 में रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में नमक कानून का उल्लंघन किया। नमक आंदोलन में इन्होने अपनी टुकड़ी की महिला सेनानियों का नेतृत्व किया जो अपने आप में एक अविस्मरणीय सहयोग था। उर्मिला देवी ने कांग्रेस की सभाओं में सहभागी होकर बिदेशी वस्त्रों का बहिष्कार किया।उर्मिला देवी हमीरपुर जनपद की महिलाओं को धरना प्रदर्शन एवं विदेशी वस्त्रों को जलाने हेतु प्रोत्साहित करती थीं। इनकी सभाओं में अच्छी खासी भीड़ रहती थी। वे हमीरपुर जनपद में अपनी टुकड़ी के साथ धरने पर भी निडर भाव से बैठी। 94

इन्हाने विदेशी वस्त्रो के बहिष्कार और स्वदेशी वस्त्रों के प्रचार में जमकर भाग लिया।उर्मिला देवी राठ, महोबा,मौदहा तथा कुलपहाड़ सहित नगरों एवं गावों में भ्रमण कर वहॉ की महिलाओं को प्रोत्साहित करतीं थी।इन्हे मार्गमे अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए पुलिस तथा दलालों का उत्पीड़न सहन करना पड़ता था। जब 1930 में कुलपहाड़ में सत्याग्रह हुआ तो पुलिस के भय से जनता इनको पानी नही पिला सकी। उर्मिला देवी भी साहसी महिला थी इन्होने अपनी साथी महिलाओं की धोतियों को जोड़कर रस्सी बनाई और पीने के लिये पानी कुंये से बाहर निकाला। इनकी दया का उदाहरणं देखिये कि इन्होने पुलिस बालों से भी कहा कि आओ भाइयों आप लोग भी पानी पी लीजिये।95

एक बार उर्मिला देवी अपने पति के साथ मगरौढ़ से लौट

रहीं थी पुलिस इनके पीछे पड़ी थी। ये दोनो शीघ्रता से एक खेत पार करने लगे तभी उर्मिला देवी के पैर में एक कॉटा तेजी से घुसा और खून की धार बह निकली।उर्मिला देवी ने अपनी धोती फाड़कर पैर बॉध लिया और निरन्तर चलती रहीं। लेकिन पुलिस के हाथ नही लगी।[96]

उर्मिला देवी पूर्ण रुप से गाँधी वादी विचारधारा से प्रभावित थीं और गाँधीवादी विचारधारा का प्रचार करते हुये सन् 1932 ई0 में 188 के आई पी सी के अंर्तगत इन्हे तीन माह की कैद तथा 25 रुपये जुर्माना दिया गया। उर्मिला देवी ने जुर्माना अदा नही किया अतः इन्हे छः सप्ताह की कैद भी सुनाई गई।

उर्मिला देवी को पहले तो हमीरपुर जेल में रखा गया इसके पश्चात इन्हे फतेहगढ़ जेल भेज दिया गया। उर्मिला देवी जेल में मनोरमा शर्मा कांति देवी श्रीमती सुविधा देवी, जमुना देवी तथा रुक्मिणी देवी इत्यादि महिला सेनानियों के साथ रहीं।[97]

उर्मिला देवी के पति गाँधी विचारधारा के सक्रिय सेनानी रहे वे राठ के खादी भण्डार में कार्य करते रहे इनका निधन 1937 ई0 में हो गया। पति के निधन के बाद भी उर्मिला देवी ने अपना धैर्य नही छोड़ा। इन्होने 1937 ई0 से पढ़ना प्रारंभ किया और राठ के राजकीय विद्यालय से मिडिल तक की परीक्षा पास की तथा 1947 ई0 में प्राथमिक पाठशाला सैदपुर में अध्यापिका हो गईं। उर्मिला देवी अनवरत शिक्षा सेवा करते हुये 1973 में सेवा निवृत हो गईं। उनकी मृत्यु 1976 ई0 में हुई।[98]

स्वाधीनता आन्दोलन और कान्ति देवी

कान्ति देवी प्रसिद्ध साहित्यकार तथा स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वृन्दावन लाल वर्मा की पत्नी थीं। श्री वृन्दावन लाल वर्मा दीवान साहब से सम्पर्क में आने के बाद स्वतंत्रता समर में सक्रिय रुप से कूँद पड़े थे।ये रानी राजेन्द्र कुमारी के सम्पर्क में आने के वाद राजनीतिक आन्दोलन में सक्रिय हो गईं।

जब सत्याग्रह आंदोलन शुरु हुआ तो श्री वृन्दावन लाल वर्मा ने आंदोलन में प्रभावी भूमिका निभाई। कान्ति देवी ने भी रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ आन्दोलन में पूरी सक्रियता के साथ भागीदारी की। व्यक्तिगत सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेते हुये इन्हे एक वर्ष की सजा हुई।[99]

शान्ति देवी और सत्याग्रह आन्दोलन

शान्ति देवी प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्रीपति सहाय की पत्नी थी। इनका जन्म 1901 में हुआ था।श्रीपति सहाय ने दीवान शत्रुध्न सिंह के साथ हमीरपुर जनपद के स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। जब दीवान साहब की पत्नी रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ शान्ती देवी का सम्पर्क हुआ तो यह भी स्वतंत्रता संग्राम में कूँद पड़ी । शान्ती देवी को स्वतंत्रता संर्घष में भाग लेने के कारण ढ़ाई वर्ष की सजा हुई। ये हमीरपुर तथा फतेहगढ़ जेल में बन्द रहीं।[100]

सरयू देवी पटैरिया और स्वतंत्रता आंदोलन

सरयू देवी पटैरिया सेनानी विश्वेश्वर दयाल पटैरिया की पत्नी थी। विश्वेश्वर दयाल पटैरिया का जन्म 1906 में नौगॉव में हुआ था। ये जुझौतिया ब्राम्हण परिवार में पैदा हुये थे। विश्वेश्वर दयाल जब हाईस्कूल के विद्यार्थी थे तो उसी समय सन् 1924 में उनके पिता श्री द्वारका प्रसाद पटैरिया का निधन हो गया।विश्वेश्र दयाल के ऊपर परिवार का पूरा दायित्व आ पड़ा। अतः वे 1924 ई0 में अध्यापन कार्य में आ गये । ये छतरपुर रियासत के महाराजा हाईस्कूल में अध्यापक थे।[101]

विश्वेश्वर दयाल 1928 ई0 में महोबा आये और यहीं आकर उन्होने राजनीतिक जीवन में प्रवेश किया।सन् 1929 ई0 में गाँधी जी महोबा पधारे। विश्वेश्वर दयाल पटैरिया और सरयू पटैरिया दोनो ही गाँधी जी की सभा में पंहुचे वे दोनो गाँधी जी से वहुत प्रभावित हुये और पटैरिया दम्पति ने जीवन पर्यन्त खादी पहनने की शपथ ली गाँधी जी के दर्शन के बाद पटैरिया दम्पति के जीवन में एक नया अध्याय आरंभ हुआ। विश्वेश्वर पटैरिया ने कांग्रेस के जनगणना बहिष्कार में सक्रिय रुप से भाग लिया।वे राजनीतिक जीवन में पूरी तरह उतर आये।[102]

सत्याग्रह आंदोलन और सरयू देवी पटैरिया

सरयू देवी पटैरिया को स्वाधीनता संग्राम में उतरने कीप्रेरणा उनके पति विश्वेश्वर दयाल पटैरिया ने दी थी। असहयोग आंदोलन के बाद गाँधी जी का सविनय अवज्ञा आंदोलन भी प्रारंभ हुआ। गाँधी जी के इस सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं का एक जत्था जेल जाने को तैयार हुआ इसका नेतृत्व रानी राजेन्द्र कुमारी

महोबा में 26 जनवरी 1932 को स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिये सरयू देवी ने घर की दहलीज से पहली बार पैर निकाला और आयोजन स्थल पर पहुंचकर महिला जुलूस का नेतृत्व किया। इसके आरोप में सरकार ने उन्हे गिरफ्तार किया। जिस समय उन्होनें जुलूस का नेतृत्व किया उनका एकमात्र पुत्र शान्ति कुमार पटैरिया उनके साथ था।

जिस काल में सरयू देवी ने स्वतंत्रता के रणक्षेत्र में कदम रखा उस समय परिवार दकियानूसी परम्पराओं में में जकड़ा हुआ था।जबकि उस समय किसी की बहू बेटी घर से बाहर नही निकलती थी उस समय सरयू देवी ने स्वतंत्रता के आवेश में आकर आजादी की लड़ाई लड़नेपुलिस का सत्याग्रह काल में सरयू देवी के साथ मानवीय व्यवहार नही था।जब वों जेल गईं तो उनके पुत्र को जेल के फाटक से बाहर कर दिया गया। एक मॉं को उसके बच्चे से अलग कर देना कितना दुखादायी है इसको तो केवल एक मॉं ही समझ सकती थी।

सरयू देवी को सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारणएक माह की जेल तथा सौ रुपये जुर्माना हुआ अर्थदण्ड न देने पर एक माह की और सजा की व्यवस्था थी। अब मजिस्ट्रेट ने सरयू देवी को अपने पुत्र को भी साथ रखाने की आज्ञा दे दी थी। अतः सरयू देवी अपने पुत्र शांति कुमार के साथ दो माह जेल में रहीं।[104]

सरयू देवी के जेल से छूटने के बाद सत्याग्रह आंदोलन में भाग लेने के कारण विश्वेश्वर दयाल पटैरिया को गिरफ्तार कर फैजावाद जेल भेज दिया गया वहाँ पर उन्हे एक वर्ष की सजा मिली।

सरयू देवी पुनः जेल में–

विश्वेश्वर दयाल के फैजाबाद जेल में रहने के उपरान्त ही सरयू देवी पुनः आंदोलन में शामिल हुईं इस बार उन्हे छः माह की सजा हुई किन्तु सरयू देवी गर्भवती थी अतः उन्हे प्रसव के कुछ दिन पूर्व

ही जेल से मुक्त कर दिया गया।प्रसवोपरान्त उन्हे पुनः अपने एक माह के पुत्र कांति कुमार पटैरिया के साथ जेल में बन्द कर दिया गया।105

जब सरयू देवी का पुत्र एक माह का था तो उस समय सरयू देवी को वनारस जेल भेज दिया गया। उस समय जेल में कमला नेहरु भी थी कमला नेहरु ने इस पुत्र का नाम कान्ति कुमार रख दिया।

सरयू देवी जब वनारस जेल में थीं तो एक काला सॉप जबकि वे शौच इत्यादि के लिये अपने पुत्र को छोड़कर गई थी।आकर के बच्चे की छाती पर खेलने लगा। सरयू देवी जब लौटकर आईं तो यह दृश्य देखकर भयभीत होकर चिल्लाने लगीं जेल के अन्य कर्मचारी भी दौड़े आये पर किसी की भी समझ में नही आ रहा थाकि बच्चे को कैसे बचाया जाये तभी ईश्वर की कृपा से वह काला साप बच्चे को छोड़कर चला गया। तब सभी की जान में जान आई।

इस प्रकार अनेक कठिनाईयों के आने पर भी सरयू देवी ने अपने पति विश्वेश्वरदयाल पटैरिया के साथ देश को स्वतंत्र कराने के लिये तन मन धन से सहयोग दिया।जब वे लौटकर आईं तो मकान मालिक ने उन्हे घर से बाहर निकाल दिया। वे दूसरे मकान में रहने लगींजब विश्वेश्वर दयाल जी लौट कर आये तो उन्होने देखा कि सरयू देवी बच्चों को फट्टियों में लपेटे पड़ी हुई हैं। यह सरयू देवी के धैर्य की पराकाष्ठा थी। उन्होने अनेक मुसीबतों से लोहा लेते हुये भी अपने बच्चों को पाला पोसा।धन्य है ऐसी माँ।

असहयोग आन्दोलन में जबलपुर का योगदान

सितम्बर 1920 में कोलकाता में गाँधी जी का असहयोग का प्रस्ताव पेश किया गया था। दिसम्बर 1920कांग्रेस का पैतीसवां अधिवेशन नागपुर में हुआ उसके अध्यक्ष चक्रवर्ती विजय राघवाचार्य और सेठ जमनालाल बजाज स्वागताध्यक्ष थे। इसमे 14582 प्रतिनिधि। पधारे थे और उपस्थिति 22 हजार से ऊपर चली गई थी। इस अधिवेशन में पं0 मदन मोहन मालवीय,लाला लाजपत राय, जिन्ना, महात्मा गाँधी,आजाद, पाल, सी आर दारन इत्यादि थे। जबलपुर जिले के पं0 विष्णुदत्त शुक्ल, सुंदर लाल तपस्वी, माखन लाल चतुर्वेदी व्योहार रघवीर सिंह ठाकुर लक्ष्मण सिंह चौहान, श्रीमती समुद्रा कुमारी, सेठ गोविन्द दास, पं0 द्वारका प्रसाद मिश्र, काशी प्रसाद पाण्डेय,सूरज प्रसाद शर्मा, कल्लू लाल कंदेले आदि अनेक कार्यकर्ता थे।इस अधिवेशन में अहिंसा और असहयोग की व्यापक चर्चा की गई। पं0 शुक्ल ने कांग्रेस की ओर से सब भारतीयों से उपाधि, सरकारी स्कूल, कालेज, और अदालत त्याग की मॉग तथा देश के वकीलों, सरकारी नौकरों के नाम असहयोग की अपील की तो सैकड़ो वकीलों ने वकालत एवं सरकारी नौकरी छोड़ दी।[106]

सन 1921 में गाँधी जी ने देश का ऐतिहासिक दौरा किया था। 5मार्च 1921 में गाँधी जी के पावन चरण जबलपुर की धरती में पहली बार पड़े। साथ में कस्तूरबा और शौकत अली भी थे मोल बाजार के मैदान में गाँधी जी का भाषणं हुआ।जिसे सुनने हजारों लोग एकत्रित हुये। गाँधी जी के असहयोग आंदोलन में विदेशी वस्त्रों का वहिष्कार,राष्ट्रीय शिक्षा, खादी प्रचार,अछूतोद्धार तथा हिन्दू मुस्लिम एकता कार्यक्रम का जोरदार प्रर्दशन हुआ।विदेशी कपड़ों के गट्ठों को गधे पर लादकर जुलूस निकाला गया तथा अन्त में होली जलाकर उन्हे नष्ट कर दिया गया। इसी समय *अछूतों को गाँधी जी ने **हरिजन** कहकर पुकारा।*[107]

स्त्रियों की सभा में भी गाँधी जी का भाषणं हुआ। जबलपुर में कभी इतनी बड़ी संख्या में स्त्रियों की सभा एकत्रित न हुई थी। इस सभा में जब गाँधी जी ने तिलक स्वराज्य फण्ड के लिये यथा शक्ति दान की मॉग की तो महिलाओं ने उनकी झोली स्वर्ण आभूषणों से भर दी इस सभा में उन्हे लगभग बीस हजार

रुपया मिला। राजा गोकुलदास परिवार में से कोई दस हजार रुपयों की राशि गाँधी जी को मिली।[108]

महाकौशल में असहयोग आंदोलन का सबसे अधिक जोर रहा जबलपुर जिले में महात्मा गाँधी के शिक्षा संस्थाओ के बहिष्कार के आव्हान से देश के सभी भागों में राष्ट्रीय स्कूलों की स्थापना हुई। कटनी में तिलक राष्ट्रीय स्कूल की स्थापना हुई। जबलपुर की सबसे बड़ी संस्था हाईस्कूल हितकारिणीं राष्ट्रीय शाला में परिणत हुई गैर सरकारी शिक्षंण संस्थाओं में महाकौशल में इसका प्रधान स्थान था।गॉव गॉव के वीर सत्याग्रही सर पर कफन बॉधकर स्वतंत्रता संग्राम में कूँद पड़े। हजारों की संख्या में लोगों ने गिरफ्तारी दी जिसमे जबलपुर में पं० माखनलाल चतुर्वेदी पं० सुंदरलाल तपस्वी, महात्मा भगवानदीन, लक्ष्मीचन्द्र जैन, फकीर सिंह, बारे लाल शुक्ल आदि थे। पं० नाथूराम व्यास ने झाँसी में भाषण देते हुये अपनी गिरफ्तारी दी।[109]

इन क्षेत्रों में जँहा पुरुष प्रधान वर्गका उल्लेखनीय योगदान रहा वहीं इस क्षेत्र की महिलाओं ने इतिहास को भी अपने से रिक्त नही रखने दिया। स्व० श्रीमती समुद्रा कुमारी चौहान ने इस असहयोग आंदोलन में भले ही प्रत्यक्ष भाग नही लिया था किन्तु अपनी ओजस्वी कविताओं के माध्यम से राष्ट्रीयता जाग्रत करने में आपका उल्लेखनीय योगदान रहा।*"खूब लड़ी मरदानी वह तो झाँसी वाली रानी थी"* की कवियत्री श्रीमती समुद्रा कुमारी चौहान ने इस कविता के माध्यम से पूरे देश में लोकप्रियता हासिल की साथ ही इनकी इस ओजस्वी कविता ने महिलाओं में एक नई चेतना का विकास भी किया।[110]

श्रीमती गुजरिया बाई एवं असहयोग आन्दोलन

श्रीमती गुजरिया बाई का जन्म 1894 में सतना के मरजूबा नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम श्री बाबादीन उमराव था तथा इनकी शिक्षा प्राथमिक तक भी पूरी न हो सकी थी। किन्तु श्रीमती गुजरिया बाई के ह्रदय में बचपन से ही स्वतंत्रता की तीब्र भावना विघमान थी। मध्यप्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सैनिक जबलपुर संभाग के अनुसार तो श्रीमती गुजरिया बाई ने भारत छोड़ो आंदोलन में ही भाग लिया लेकिन जबलपुर के क्षेत्रीय नागरिकों से पत्राचार

के माध्यम से यह ज्ञात हुआ कि श्रीमती गुजरिया बाई ने श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान से प्रेरणा पाकर असहयोग आंदोलन में भाग लिया। और सप्तसूत्रीय कार्यक्रम के अनुसार शराब की दुकान पर धारने दिये विदेशी वस्त्रों की होली जलाई तथा जुलूसों में भाग लेते हुये पुलिस की लाठियां भी खाईं थी। इस तरह असहयोग आंदोलन में इन्होने अपना सहयोग दिया।[111]

श्रीमती तुलसा बाई और असहयोग आंदोलन

श्रीमती तुलसाबाई गाँधी गंज कटनी की निवासी थीं इनका जन्म 1890 में हुआ था। इनका विवाह श्री रामकृष्ण दुवे के साथ हुआ। श्री राम कृष्ण दुवे एक प्रसिद्ध स्वतंत्रता संग्राम सेनानी थे। इन्होने श्रीमती तुलसी बाई को आंदोलन में भाग लेने के लिये प्रेरित किया। महात्मा गाँधी जब 1921 में कटनी जबलपुर पधारे तो उनको देखाने के लिये भारी संख्या में लोग उपस्थित हुये। श्रीमती तुलसा बाई भी भाषणं सुनने आईं। इनके ऊपर महात्मा गाँधी के भाषणों का इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होने अन्य महिलाओं के साथ अपने जेवर महात्मा गाँधी को दे दिये।उन्होने जबलपुर कटनी की अन्य महिलाओं के साथ शराब की दुकानो पर धारना दिया। विदेशी वस्त्रो की होलियां जलाईं तथा जुलूसों में भाग लेते हुये पुलिस की लाठियां भी खाईं। इस तरह से असहयोग असन्दोलन में श्रीमती तुलसा बाई का अविस्मरणीयं योगदान रहा है। [112] जँहा एक ओर पूरा हिन्दुस्तान के इस प्रयास में पूर्णरुप से संलग्न था वही पिछड़ा क्षेत्र कहा जाने वाला मध्यप्रान्त का उत्साह भी कम नही था स्वतंत्रता के इस आंदोलन में मध्य प्रान्त की महिलायें भी यह दिखा चुकीं थीं कि नारी केवल लज्जाशील पत्नी, प्रेमिका, बेटी य बहू मात्र नही है अपितु आवश्यकता पड़ने पर वह रणं क्षेत्र में चण्डी की तरह से लक्ष्य प्राप्त करना भी जानती हैं। जँहा एक ओर मध्य प्रान्त की महिलायें स्वतंत्रता के आंदोलन में सक्रिय रहीं वहीं अगर ये कहा जाये कि मध्य प्रान्त की महिलाओं की प्रेरणा से ही उ० प्र० की महिलाओं को प्रेरणा मिली तो कुछ गलत नही होगा। भारत की महिलाओं में जागृति हो तो कोई भी शक्ति देश को स्वतंत्र होने से नही रोक सकती और संभवतः वापू के आव्हान पर उसने एक बार पुनः अपनी मात्रभूमिको स्वतंत्र कराने के लिये अंग्रेजी शासन के विरुद्ध हाथ में शस्त्र थाम लिये और शत प्रतिशत

जबलपुर का झण्डा सत्याग्रह और महिलायें

18 वीं सदी में औद्योगिक क्रान्ति के बाद जब मध्यम वर्ग का उदय हुआ और भारतीय समाज पर राजा राममोहन राय, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर स्वामी दयानन्द सरस्वती जैसी बुद्वजीवियों का प्रभाव पडा तो भारतीयों में एक नई चेतना का विकास हुआ। भारतीय गुलामी की इन जंजीरो से मुक्त होने के लिये छटपटाने लगें। उसका परिणाम यह हुआ कि 1857 की क्रांन्ति और इस क्रांन्ति के बाद भारतीयों को इस बात के लिये विश्वास हो गया कि अब उन्हे अपना स्वातन्त्रय युद्व जारी रखना ही होगा।

उसी का परिणाम था कि विखरे हुये नेताओं को 1885 में कांग्रेस की स्थापना कर ए0 ओ0 हयूम एक माला में पिरो दिया और उसके बाद प्रारम्भ हुआ भारत में चरण – चरण पर एक नया आन्दोलन। 1930 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन और 1942 में भारत छोडो आन्दोलन । इन कुछ प्रमुख सफल आन्दोलनों के बीच की ही एक कड़ी थी झण्डा सत्याग्रह जिसका उदय मध्य प्रान्त के नागपुर से हुआ।[113]

राष्ट्रीय ध्वज किसी राष्ट्र की सम्प्रभुता, अस्मिता और गौरव का प्रतीक होता है। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के दिनों में चरखा युक्त तिरंगें झण्डें को यह दरजा प्राप्त था।[114]

1923 में इस ध्वज की आन बान व शान को लेकर एक ऐसा प्रंसग उपस्थित हो गया जिसमें न केवल राष्ट्रीय ध्वज के प्रति सम्पूर्ण राष्ट्र की श्रद्धा और निष्ठा की मुखर अभिव्यक्ति हुई बल्कि विट्रिश हुकूमत तक को उसे मान्य करने पर विवश होना पडा। इतिहास के उन स्वर्णिम अध्याय को झण्डा सत्याग्रह के नाम से जाना जाता है। मध्य प्रदेश में लडे गये स्वाधीनता संग्राम के इतिहास में जबलपुर का झण्डा सत्याग्रह अपना विशिष्ट स्थान रखता है। 18 मार्च 1923 को गांधी दिवस को जबलपुर नगरपालिका भवन पर राष्ट्रीय झण्डा फहराया गया।[115]

सन् 1923 में झण्डा सत्याग्रह की शुरूवात जबलपुर में एक छोटी सी एक घटना को लेकर हुई जिसने कुछ समय बाद ही राष्ट्रीय स्वरूप ग्रहण कर लिया। 8 मार्च 1923 को जबलपुर नगर पालिका ने जिसमें कांग्रेस का प्रभुत्व था। नगरपालिका भवन में तिरंगा झण्डा फहराया तब तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर इस घटना से इतना क्षुब्धा हुआ की उसने पुलिस से झण्डें को नीचे उतरवाया ही

नही वरन् पैरो तले कुचला भी। इससे जनता में रोष की लहर फैल गई। उस समय पं0 सुन्दर लाल तपस्वी भी इसी क्षेत्र में कार्यकर रहे थे और उन्होने जबलपुर जिले के सभी क्षेत्रो में जागृति फैलाने का उल्लेखनीय कार्य किया।अंग्रेज सराकार ने झंण्डा फहराने पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

स्वाधीनता सेनानियो ने घोषणा की जबलपुर के टाउनहाल पर तिरंगा झण्डा फहराया जायें। इसी समय सत्याग्रह जांच कमेटी के छः सदस्य पं0 मोतीलाल नेहरू तथा अन्य जबलपुर आयें और गोविन्द भवन में ठहरें यह जांच कमेटी अखिल भारतीय कांग्रेस केजून 1922 में एक लखनऊ में हुये अधिवेशन के निर्णय के अनुसार स्थापित की गई थी। 18मार्च 1923 को एक मजेदार घटना घटी यह उस समय हुई जब जबलपुर म्यूनिस पिलटी ने हकीम जी को मान पत्र दिया। इस आयोजन पर तिरंगा झण्डा लेकर एक बडा जुलूस निकला जिसका नेतृत्व पं0 सुन्दर लाल तपस्वी कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान कर रहे थे।[116]

जब सेनानियों द्वारा टाउनहाल में झण्डा फहराया गया

सेनानियों द्वारा टाउनहाल पर झण्डा फहराने के दृढ निश्चय से अंग्रेज सरकार परिचित थी इसिलिये उसने टाउनहाल की जब्र्दस्त घेरा बन्दी कर दी चारो ओर पुलिस का पहरा और उस पर लोहे के बन्द फाटक लेकिन करीब 4 बजे शाम को एक बडा जुलूस लोगो ने देखा कि प्रेमचन्द्र उस्ताद तिरंगा झण्डा हाथ में लिये बन्देमातरम् और भारत माता की जय बोलते हुये विक्टोरिया टाउन हाल के पास पहुंचे पं0 बद्रीनाथ दुबें, प्रेमचन्द्र उस्ताद ,सीताराम, ओंकार प्रसाद, लहरी यादव, और हीरालाल पटेल ये पांचों वीर सेनानी परकोटे की दीवालों और कंगूरों के सहारे टाउनहाल में प्रवेश कर गये। तथा 19 वर्षीय युवक प्रेमचन्द्र उस्ताद द्वारा सबके देखते देखते गोल गुम्बज को शिखर पर लगी लोहे की छड पर कांग्रेस का तिरंगा झण्डा फहराते हुये गगन मोदी नारे लगायें। इस घटना ने जबलपुर में सत्याग्रह आन्दोलन का रूप ले लिया और रोज पांच पांच स्वयं सेवको का जत्था सत्याग्रह कर अपनी गिरफ्तारी देता था।

जब सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा झंण्डा जुलूस निकाला गया

झण्डा सत्याग्रह ने जहां पुरूषों ने अपना उत्साह तथा वीरता का प्रर्दशन कर इस आन्दोलन को आगें बढ़ाया वही जबलपुर की

महिलाओं का इस आन्दोलन में कम योगदान नही था। सरोजनी नायडू ने सत्याग्रही को प्रोत्साहित किया कि सत्याग्रह ने अब राष्ट्रीय स्वरूप धारण कर लिया है सरोजनी जी के साथ सुभद्रा जी ने इस सत्याग्रह में भाग लेकर समस्त राष्ट्र के सम्मुख अपना एक प्रत्यक्ष वीरता व उत्साह का उदाहरण दिया ।[117]

18 मई सन् 1923 को सारे देश में झण्डा दिवस मनाया गया जबलपुर में पं0 सुन्दरलाल तपस्वी श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान और अब्दुल रहीम के नेतृत्व में एक बडा जुलूस निकाला गया। ये गा रहे थे–

''चले देश के दीवाने घर बार सभी को त्याग
झण्डा लिये कफन सिर बांधे गाते बलि का राग''

झण्डे की शान जाने न पाये चाहें जान भले ही जाये। गीत गाते हुये जब रेलवे पुल के पास पहुंचें तो वहां आगें बढने से पुलिस ने रोका और पण्डित सुन्दर लाल तपस्वी, ठाकुर लक्ष्मण सिंह श्रीमती सुभद्रा कुमा री चौहान , मुरलीधर शुक्ल और दुर्गाप्रसाद मालवीय को गिरफ्तार की लिया गया।[118]

सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ उत्साहित होकर अनेक महिलाओं ने इससें पहले ही प्रत्येक राष्ट्रीय आन्दोलन में खुल कर भाग लिया।[119]

महिलाओं के उत्साह का अनुमान इससे लगाया जा सकता हैं कि स्वतन्त्रता के इस संघर्ष में प्रथम बार महिलाओं ने मोर्चे का अग्रभाग संभाला झण्डा सत्याग्रह में गिरफ्तार होने वाली देश की प्रथम महिला सुभिद्रा कुमारी चौहान थी सुभद्रा जी ने अपने पति लक्ष्मण सिंह के साथ पहले ही प्रत्येक राष्ट्रीय आन्दोलन में खुलकर भाग लिया ।सुभद्रा जी को बन्दी बनाये जाने से सम्पूर्ण देश में एक आश्चर्य जनक उत्साह का संचार हुआ और इनकी गिरफतारी के बाद कई महिलाओं ने अपने अद्वितीय साहस का परिचय दिया।[120]

कस्तूरबा गांधी ने भी महिलाओं का मार्ग दर्शन किया उन्होने नागपुर पहुंचकर सरदार पटेल से सत्याग्रह में स्त्रियों के जत्थों को भी शामिल होनें को कहा सुभद्रा जी के इस कार्य को देखकर राजगोपाल चारी ने कहा कि सुभद्रा जी का यह वीरता पूर्ण कार्य भारत के प्रत्येक घर में सुना और सराहा जायेंगा।[121]

वास्तव मेें सुभद्रा जी का यह कार्य सम्पूर्ण भारत में सराहा

गया था क्योकि जिस समय महिलायें घर की चारदीवारी से भी बाहर नही निकलती थी उस समय सुभद्रा जी ने आगें बढकर महिलाओं के लिये एक आदर्श प्रस्तुत कर दिया था।

जबलपुर स्वतन्त्रता आन्दोलन में राष्ट्रभक्त एवं ओजस्वी कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान

देश प्रेम एवं राष्ट्रभक्त की भावना से परिलुत परम साहसी राष्ट्र के गौरव के प्रतीक। मुखर कवियत्री सुभद्रा कुमारी चौहान का व्यक्तित्व एवं कृतित्व भारतीय इतिहास की एक अमूल धरोहर है। सन् 1904 में इलाहाबाद में निहालपुर मौहल्ले में ठाकुररामनाथ सिंह के घर में आर्विभूत सुभद्रा कुमारी चौहान नामक कन्या रत्न ही वह बालिका थी जिसने स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपनी दूरदर्शी एवं प्रखर लेखनी से देश वासियों के मन में गुलामी की श्रखंला को तोड़ डालने की दृढ़ इच्छा शाक्ति पैदा की। सुभद्रा कुमारी चौहान स्वतः प्रेरण से बचपन से ही कविता लिखने लगी थी जो आगे चलकर महान कवियत्री बनी उनका विवाह 16 वर्ष की अवस्था में डा0 लक्ष्मण सिंह चौहान से हो गया। श्री लक्ष्मण सिंह साहित्य सेवी एवं राष्ट्रीय भावनाओं वाले सच्चे भारतीय थे। सुभद्रा कुमारी मानवीय कोमल भावनाओं से परिपूर्ण कवितायें लिखने के साथ ही राष्ट्र युक्त एवं वीररस प्रधान रचनाओं में भी प्रवीण थी। उनका शब्दचयन अत्यन्त सार्थक एवं प्रभावोत्पादक होता था।

1922 में जबलपुर में प्रारम्भ झण्डा सत्याग्रह में सुभद्रा कुमारी ने गिरफ्तारी दी थी तथा उनके साथ उनके पति भी गिरफ्तार हुयें थें।यह देश के प्रति उनकी सच्ची निष्ठा का एक उदाहरण है। सुभद्रा जी ने नमक सत्याग्रह एवं भारत छोडो आन्दोलन के समय भी घर में छोटे छोटे बच्चो को छोडकर देश के प्रति अपना कर्तव्य पथ चुना और जेल गयी। जेल में काफी अस्वस्थ्य रहने के कारण लगभग 11 माह बाद वे जेल से रिहा हुई परन्तु उनके पति जबलपुर नागपुर सिवनी आदि जेलो में लगभग तीन वर्षो तक कैद रहें। सुभद्रा जी उन दिनों परतन्त्रता के दौर में राष्ट्रीयता उच्च विचार धारा के फलस्वरूप कांगेस की साधारण सदस्यता से उठकर प्रान्तीय कांग्रेस की सदस्य बनी।[122]

सुभद्रा कुमारी पद लेखन के साथ ही गद्य लेखन में भी सिद्वहस्त थी उनके द्वारा प्रमाणित गद्य साहित्य कहानिया एवं बाल साहित्य के रूप में मात्र 44 वर्ष की आयु में सिवनी के निकट

दुर्घटना में 15 फरवरी 1948 को उनका आकिस्मक निधन हो गया। सडक पर दौड रहे मुर्गी के बच्चो को बचाने के प्रयास में उनकी कार असुन्तलित होकर दुर्घटना ग्रस्त हो गई थी। उस महान जननेत्री की अन्तिम यात्रा भी अविस्मरणीय एवं चिरस्मरणीय है जिसमें प्रत्येक वर्ग के असंख्य नागरिको का जन समूह अश्रूपूर्ण नेत्रो से उमण पडा था। 123

झांसी की रानी सुभद्रा कुमारी चौहान की प्रसिद्व देश भक्ति से परिपूर्ण एक महान क्रान्ति है। झांसी की रानी सुभद्रा जी के लिये प्रेरणा श्रोत थी तथा वे उन्हे अपना आदर्श एवं महान नेत्री मानती थी। आपकी झांसी की रानी कविता जो कोटि कोटि जनमानस का कंठहार है तथा जिसकी पक्तिया बाल युवा बृद्व सभी के होठो पर मंत्रों की तरह रहती है। मात्र कुछ पदों एवं पक्तियों एवं पदों में निबद्व होते हुयें भी इतनी स्फूर्ति एवं सशक्त है सुप्त एवं अचेतन में भी वीरता एवं शौर्य एवं ओज का संचार करने की क्षमता रखाती है। देश प्रेम के प्रति इतना महान सन्देश कोई विशालकाय ग्रन्था लिखाकर भी किया जा सकना कदाचिंत सम्भव नही होता। **बुन्देलों हर बोलें के मुंह से हमने सुनी कहानी थी** ''वस्तुतः इस कविता का प्रत्येंक पद अपने आप में समूचा इतिहास छिपायें हुये है और भविष्य के प्रति हमें सावधान रहने का हमें सन्देश भी देता हैं।

'' दिखा गई पथ सिखा गई जो हमको सीखा सिखानी थी ''
सुभद्रा कुमारी चौहान की यह कविता काल से भी ज्यादा अजेय वीरांगना रानी की कीर्ति की तरह सदैव अमर रहेगी और हमें स्वतन्त्रता प्राप्ति के कण्टकाकीर्ण मार्ग पर चलनें को प्रेरित करती रहेगी।

लक्ष्मी थी या दुर्गा थी यह स्वंय वीरता की अवतार ,
देख मराठें पुलकित होते उसकी तलवारों के बार।
घायल होकर गिरी सिंहनी उसे वीरगति पानी थी।
बुन्देलें हरबोलों के मुंह से हमने सुनी कहानी थी।।

सुभद्रा कुमारी ने अपने जीवन में महारानी लक्ष्मी बाई के आदर्श अपनाया उन्ही के पग चिन्हों का अनुकरण किया और पत्थर में रानी के शौर्य का निनाद भर दिया वें कहती है–

'' हर पत्थर पर लिखा जहां बलिदान लक्ष्मी बाई का ।
कौन्य मूल्य है यहां सुभद्रा की कविता चतुराई का।।''

इस झण्डा सत्याग्रह से एक बात पूर्ण रूप से स्पष्ट हो गई थी कि महिलाओं में अब नई चेतना उत्साह तथा राष्ट्रीयता की भावना के साथ राष्ट्रहित की पूर्ण समझ ही पनप चुकी है और महिलायें भी पुरूषों के साथ साथ स्वतन्त्रता के इस महायज्ञ में अपनी आहुति देने के लियें तैयार है। तथा इसका दूर गामीं परिणाम सन् 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा 1942 के भारत छोड़ों आन्दोलन में स्पष्ट रूप से सामनें आया। जबकि आशा से अधिक महिलाओं ने इस आन्दोलन में भाग लेकर वीरता का एक नया इतिहास रच डाला। 124

26 जनवरी 1930 को सारे देश की तरह जबलपुर जिले के अनेक ग्रामों में प्रथम स्वाधीनता दिवस बडे ही उत्साह के साथ मनाया गया ।जबलपुर नगर में एक विशाल जुलूस निकाला गया जों नगर के विभिन्न मार्गों से गुजरता हुआ ''तिलक भूमि तलैया''पर जाकर आम सभा में परिणत हो गया जो कि पास में पं0 बद्रीनाथ दुबें की
अध्यक्षता में बडे जैन मन्दिर के सामने मनाया गया। कटनी, सिहोरा, सिलौडी, उमरियापान,मझौली आदि स्थानों में तिंरगा फहराकर जनता ने पूर्ण स्वराज्य लेने की प्रतिज्ञा की औरबापू के नेतृत्व में सत्याग्रह करने का निश्चय किया गया ।जनता सत्याग्रह का विगुल बजने की प्रतीक्षा करने लगी थी। 125

स्वतन्त्रता के इस असहयोग आन्दोलन में इसी तरह सागर ,दमोह, पन्ना,छतरपुर, तथा टीकमगढ़ का तो योगदान रहा किन्तु 1920 के आन्दोलन के दौरान महिलाओं के नाम उन क्षेत्रों से उपलब्ध नही हो सके। 126

जहां एक और पूरा हिन्दुस्तानी स्वतन्त्रता के इस प्रयास में पूर्ण रूप से संलग्न था वही पिछड़ा क्षेत्र कहा जाने वाला बुन्देलखण्ड का उत्साह भी कुछ कम नही था स्वतन्त्रता के इस आन्दोलन मे बुन्देलखण्ड की महिलायें भी यह दिखा चुकी थी। कि नारी केवल लज्जाशील पत्नी, प्रेमिका वेटी या बहू मात्र नही है। अपितु आवश्यकता पड़ने पर वह रणक्षेत्र में चण्डी की तरह लक्ष्य प्राप्त करना भी जानती है। भारत की महिलाओं में जाग्रति हो तो कोई भी शक्ति देश को स्वतन्त्र होने से नही रोक सकती और सम्भवतः इसीलिये बापू के आव्हान पर उसने एक बार पुनः अपनी मात्र भूमि को स्वतन्त्र कराने के लिये अंग्रेजी शासन के विरूद्व हाथ में शस्त्र

थाम लियें और शत प्रतिशत अपना सहयोग देकर एक नवीन अध्याय की सृष्टि की। 127

इस असहयोग को सहयोग के चरणों में अगला योगदान था ग्वालियर संम्भाग के मुरैना, भिण्ड,दतिया, शिवपुरी तथा गुना का महात्मा गांधी के ''**करो या मरो** ''के बारे में मुरैनी जिले में एक नई चेतना का विकास किया था और यहां के लोगो ने यथाशक्ति अपना योगदान दिया किन्तु 1923 के आन्दोलन के समय यहां अधिक चेतना व्याप्त नही थी और न ही किसी महिला का नाम इस आन्दोलन में सामने आया है फिर भी यह क्षेत्र इस आन्दोलन में सामने आया है फिर भी यह क्षेत्र इस आन्दोलन से पूरी तरह अछूता नहीं रहा था। 128

स्वदेशी आन्दोलन तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार

असहयोग आन्दोलन के प्रस्ताव की एक प्रमुख शर्त स्वदेशी वस्तुओं को अपनाना तथा विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार था इस आन्दोलन में मोतीलाल नेहरू तथा सी0 आर0 दास ने वकालत के अपने राजसी व्यवसाय को तिलांजली दे दी। राष्ट्रीय नेता स्वदेशी कताई,शासकीय पदों के बहिष्कार तथा मध्य निषेध का सन्देश देते हुये प्रान्तों – प्रान्तों में घूमें विद्याथियों ने विदेशी कपडों के ढेर के ढेर इकट्ठे किये कुछ व्यक्तियो ने अपने अंगो पर से कपड़े उतार कर तोपों, टाईयों, और पतलूनों को ढेर में फेंक दिया और तत्पश्चात समारोह पूवर्क उस ढेर में आग लगा दी। इस प्रकार सन् 1921 के महीनें में राष्ट्रीय आन्दोलन का जोर सम्पूर्ण देश में द्रुतगति से बढ़ा और स्वराज्य स्वदेशी और गांधी शब्दों का जादू दूर दूर तक के गांवों में फैल गया। स्कूल के बालको ने जो कभी अपने गांव से बाहर नही गयें थें या जिन्होंने रेलगाड़ी नही देखी थी इन शब्दों का उच्चारण किया और झण्डा फहराया। 129

प्रिन्स ऑफ वेल्स का बहिष्कार तथा सरकारी दमन

17 नवम्बर सन् 1921 को प्रिंस ऑफ वेल्स भारत की यात्रा पर आयें। जिस दिन वें बम्बई में आयें पूरें भारत में हडताल हुई। गांधी जी ने मजदूरों की सभा में भाषण दियें विदेशी कपडों की होली जलायी गई लेकिन इसी दिन बम्बई की सड़को पर खून खराबा हो गया। तीन दिन तक हिंसात्मक बारदातें होती रही

अहिंसा और पुलिस द्वारा गोली चलायें जानें से 58 व्यक्ति मारें गयें। गांधी जी इस हिंसात्मक वारदात से बहुत दुखी हुयें। 130 प्रिन्स ऑफ वेल्स जहां भी गयें उनका वीरान सड़को और बन्द दरबाजों ने स्वागत किया। शासन ने जुलूस प्रर्दशन आदि से घबड़ाकर बड़ी संख्या में नेताओं तथा कांग्रेसी स्वंय सेवकों को बन्दी बनाना शुरू कर दिया। दिसम्बर 1921 तक 20 हजार से अधिक कांग्रेसी कारागारों में बन्द कर दियें कलकत्तें के कसाई घर में हड़ताल हुई और शासकीय भृत्यों को भोज की टेबल सजानें के लियें मांस तक प्राप्त करने में कठिनाई हुई। 131

चौरा चौरी काण्ड तथा आन्दोलन का अन्त:

गांधी जी का असहयोंग पूरे जोर शोर पर था बहुत से लोग जेल में ठूसे जा रहे थे उसी समय 12 फरवरी 1922 को गोरखपुर के निकट चौरा चौरी नामक स्थान पर एक भीड़ ने थाने पर आग लगा दी जिसके फलस्वरूप 21 सिपाही जलकर मर गये। महात्मा गांधी ने इस पर लोंगों में अहिंसा के भाव की कमी देखकर इस आन्दोलन को स्थगित कर दिया। 13 मार्च को महात्मा जी को गिरफ्तार कर लिया गया। असहयोग आन्दोलन समाप्त हो गया। 132

निष्कर्ष– गांधी जी द्वारा चलायें गयें असहयोग आन्दोलन को स्थगित कर देने से देशव्यापी तीव्र प्रतिक्रिया हुई लेकिन इस आन्दोलन में अंग्रेजी हुकूमत के खिलाफ देशव्यापी जन संघर्ष का प्रथम प्रयास किया गया। इस आन्दोलन में प्रथम बार सम्पूर्ण भारत वर्ष के किसान मजदूर, दस्तकार व्यपारी, व्यवसायी कर्मचारी, तथा स्त्री पुरूष महिलायें बच्चे बूढें सभी शामिल हुयें। इस आन्दोलन के स्थगन के पश्चात 1923 में जब झण्डा सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ तों उसमें सारे देश की सहभागिता रही। बुन्देलखाण्ड़ के पुरूषों ने ही नही अपितु महिलाओं ने खुले दिल से और मन से झण्ड़ा सत्याग्रह में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सम्पूर्ण बुन्देलखाण्ड की महिलायें इस झण्डा जुलूस में शामिल हुई। हमीरपुर, झांसी, बांदा,जबलपुर जनपद की महिलायें हाथ में झण्ड़ा गायन करती हुई जुलूस निकालती थीं। हमीरपुर जनपद में महिलायें रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में जबलपुर में सुभद्रा कुमारी चौहान के नेतृत्व में जब जुलूस बनाकर निकलती तो उनमें पुलिसिया प्रकोप कहर बनकर टूट पडता था लेकिन बुन्देलखाण्ड की महिला सेनानी डरी नहीं)

सन्दर्भ सूची

1– श्री बी0 आर0 नंदा, महात्मा गांधी एक जीवनी ''पृष्ठ 134

2– वही पृष्ठ 134

3– श्री बी0 आर नंदा, महात्मा गांधी एक जीवनी पृष्ठ 134

4– श्री जीवन्तराय भगवानदास कृपलानी'' महात्मा गांधी जीवन और चिन्तन''पृष्ठ 84

5– श्री शान्ता कुमार, '' धरती है बलिदान की '' श्री शान्ता कुमार नटराज पुस्तक माला नई दिल्ली पृष्ठ 35

6– महात्मा गांधी एक जीवनी, बी0 आर0 नंदा, पृष्ठ 140

7– दीवान शत्रुधान सिंह अभिनन्दन ग्रन्थ, 1960 पृष्ठ सं0 36

8– वही पृष्ठ 37

9– झांसी गजेटियर, 1965 ई0 बी0 जोशी, पृष्ठ 72

10– अनासक्त मनस्वी, पृष्ठ 57

11– 12.13.14.15. झांसी गजेटियर, 1965 ई0 बी0 जोशी, पृष्ठ 72–73

16– रामनाथ सुमन, उत्तर प्रदेश में गांधी जी, पृष्ठ 73

17– सरस्वती पाठशाला इण्डिस्टियल इण्टर कालेज अंक, 1991 पृष्ठ 5

18– व्यक्तिगत साक्षात्कार पं0 दुर्गाप्रसाद व्यास से

19– ई0 बी0 जोशी, झांसी गजेटियर, पृष्ठ 72

20– वही पृष्ठ 72

21– श्री अवधविहारी नायक, स्वतन्त्रता सेनानी की कलम से

22– व्यक्तिगत साक्षात्कार पं0 दुर्गाप्रसाद व्यास

23– पं0 सीताराम भास्कर भागवत स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी की कलम से

24– सरस्वती पाठशाला हीरक जयन्ती विशेषांक पृष्ठ 5

25– स्वतन्त्रता सेनानी कालका प्रसाद के पुत्र श्री रामप्रकाश अग्रवाल एडवोकेट से व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर

26– सरस्वती पाठशाला हीरक जयन्ती विशेषांक

27– श्री ''दुर्गाप्रसाद व्यास के व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर

28– वही

29– स्व0 रामेश्वर प्रसाद शर्मा की पुत्री श्रीमती कमला भार्गव से लिये साक्षात्कार के आधार पर

30— वही

31— वही

32— विपिन चन्द्र ''भारत का स्वतन्त्रता संघार्ष '' दिल्ली विश्वविधालय 1996 पृष्ठ 140

33— डा0 भवानीदीन, संपादक समरगाथा महोबा वसन्त प्रकाशन, 1994 पृष्ठ47

34— डा0 भवानीदीन ,संपादक समरगाथा महोबा वसन्त प्रकाशन ,1994 पृष्ठ47

35— वही पृष्ठ 47

36— वही पृष्ठ 48

37— वही पृष्ठ 49—50

38— वही पृष्ठ 51

39— वही पृष्ठ 52

40— बाबू कालिका प्रसाद के पुत्र रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर

41— अनासक्त मनस्वी पृष्ठ 56

42— डा0 भवानीदीन, सम्पादक समरगाथा महोबा बसन्त प्रकाशन ,1995 पृष्ठ 56—57

43— अनासक्त मनस्वी, बालेन्दु अभिनन्दन ग्रन्था पृष्ठ 56—57

44— श्याम सुन्दर बादल, सम्पादक दीवान शत्रुघान सिंह अभिनन्दन ग्रन्था रा0 1969 पृष्ठ 11

45— डा0 भवानीदीन, सम्पादक समरगाथा महोबा बसन्त प्रकाशन ,1965 पृष्ठ सं0 24

46— स्वतन्त्रता सेनानी श्याम विहारी चौबे की पत्नी श्रीमती सावित्री देवी से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर

47— डा0 भवानीदीन, सम्पादक समरगाथा, पृष्ठ सं0 35 1995

48— रानी राजेन्द्र कुमारी की पुत्री वधू से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर

49— रानी राजेन्द्र कुमारी के पुत्र कर्नल प्रेम प्रताप से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर

50— डा0 भवानीदीन, समरगाथा महोबा बसन्त प्रकाशन, 1995 पृष्ठ 36

51— डा0 भवानीदीन, समरगाथा महोबा बसन्त प्रकाशन, 1995 पृष्ठ 9

52– दीवान शत्रुघ्न सिंह के भानजे कुंवर रणवीर सिंह साक्षात्कार के आधार पर

53– स्वतन्त्रता सेनानी श्री पति सहाय रावत के पुत्र डॉ0 श्री कान्त से लिये गये साक्षत्कार के आधार पर

54– डा0 भवानीदीन, समरगाथा महोबा बसन्त प्रकाशन,

55– स्वतन्त्रता सेनानी रामानुज चन्देल से लिया गया साक्षात्कार

56– श्री लक्ष्मीनारायण आनन्द से लियेगयेसाक्षात्कारके आधार पर

57– कु0 रणविजय सिंह से लिया गया साक्षात्कार के आधारपर

58– डा0 भवानीदीन, सम्पादक समरगाथा महोबा बसन्त प्रकाशन ,1995 पृष्ठ 43

59– क्रान्तिकरिणी किशोरी देवी से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर

60– स्वतनत्रता सेनानी रामगोपाल के छोटे भाई आनन्द जी से लिये गयेसाक्षात्कार के आधार पर

61– डा0 भवानीदीन, समरगाथा महोबा बसन्त प्रकाशन, पृष्ठ 44

62– स्वतन्त्रता सेनानी हरनाथ यादव रा0 से लिये गये साक्षात्कार के आधार 63– वही

64– डा0 भवानीदीन समरगाथा पृष्ठ सं0 45

65– गंगा देवी के पुत्र रामकिशुन से लिये गया साक्षात्कार

66– महिला सेनानी गुलाब देवी के पुत्र केशव सिंह से लिया गया साक्षात्कार

67– महिला सेनानी सरस्वती देवी के पुत्र परमेश्वरी देवी से लिया गया साक्षात्कार

68– अनासक्त मनस्वी बालेन्दु अभिनन्दन ग्रन्थ पृष्ठ 56–57

69– डा0 रामगोपाल गुप्ता स्वतन्त्रता संग्राम झलक विशेषांक पृष्ठ 32

70– श्री रामसेवक नायक संस्थापक श्री लक्ष्मी व्यायाम मन्दिर बरूवा सागर स्वतन्त्रता संग्राम झलक विशेषांक पृष्ठ 26

71– कंचन प्रभा, मासिक पत्रिका अप्रेल 1975 अंक

72– भारतीय इतिहास कोष सचिदानन्द भट्टाचार्य पृष्ठ 331–332

73– पं0 दुर्गा प्रसाद व्यास से लिया गया साक्षात्कार

74– सरस्वती पाठशाला हीरक जयन्ती अंक पृष्ठ 5

75– झांसी गजेटियर 1965

76– अनासक्त मनस्वी पृष्ठ 11
77– सच्चिदानन्द भट्टाचार्य भारतीय इतिहरास कोष पृष्ठ 334
78– अनासक्त मनस्वी पृष्ठ 4
79– भारतीय इतिहास कोष पृष्ठ 334
80– अनासक्त मनस्वी पृष्ठ 192–193
81– महान स्वतन्त्रता सेनानी श्री पति सहाय रावत से प्राप्त हस्तलिखित अभिलेखा के आधार पर
82– वही
83– वही
84– वही
85– महान क्रान्तिकारी किशोरी देवी से लिये गये साक्षात्कार
86– अनासक्त मनस्वी भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन पृष्ठ 75
87– किशोरी देवी जी कुलपहाड़ से लिया गया साक्षात्कार
88– वही
89– वही
90– वही
91– वही
92– वही
93– वही
94– उर्मिला देवी के पुत्र ज्वाहर लाल से लिया गया साक्षात्कार
95– वही
96– वही
97– वही
98– वही
99– एस0 पी0 भट्टाचार्य सम्पादक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी सैनिक सूचना विभाग लखनऊ उ0 प्र0 पृष्ठ 134
100– शान्ती देवी के पुत्र डा0 श्रीकान्त से लिया गया साक्षात्कार
101– स्वतन्त्रता सेननी विश्वेश्वर दयाल पटेरिया द्वारा हस्तलिखित अभिलेखान के आधार पर।
102– वही
103– वही
104– वही
105– श्रीक्रन्ति कुमार पटेरिया से लिया गया साक्षात्कार
106– कटनी का स्वतन्त्रता संग्राम 1978

107– स्वतन्त्रता संग्राम और हमारे सेनानी, लेखक ठाकुर भूपत सिंह।

108– वही।

109– कटनी का स्वतन्त्रता संग्राम 1978, पृष्ठ 55

110– मध्यप्रदेशकेस्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, खण्ड 4, भाषा संचालनालय म0प्र0 भोपाल

111– वही खण्ड 5

112– श्रीमती शालिनी सक्सेना, स्वतन्त्रता आन्दोलन में मध्य प्रान्त की महिलायें ।

113– नोट्स आन द सिविल डिसओविडियन्स मूवमेन्ट इन द सी0 पी0 एण्ड बरार 30 दिसम्बर 1930 पृष्ठ सं0 26

114– डा0 शालिनी सक्सेना, स्वतन्त्रता आन्दोलन में म0 प्र0 की महिलाओं का योगदान, स्वराज्य प्रकाशन म0 प्र0 पृष्ठ 56

115– म0प्र0 और गांधी जी, सूचना और प्रकाशन भोपाल पृष्ठ सं0 56

116– डा0 प्रताप भानुराय, जंगे आजादी में जबलपुर, स्वराज्य प्रकाशन म0प्र0 भोपाल पृष्ठ सं0 81

117– श्रीमती शालिनी सक्सेना, स्वाधीनता आन्दोलन में मध्य प्रान्त की महिलायें, स्वराज्य प्रकाशन भोपाल पृष्ठ 60

118– स्वाधीनता संग्राम और हमारे सैनिक लेखक ठाकुर भूपत सिंह पृष्ठ 44

119– श्रीमती शालिनी सक्सेना, स्वाधीनता आन्दोलन में मध्य प्रान्त की महिलायें स्वराज्य प्रकाशन भोपाल पृष्ठ 60

120– म0 प्र0 के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, सूचना और प्रकाशन विभाग जबलपुर ।

121– भारत की महिला स्वतन्त्रता सेनानी, डा0 ऊषाबाला, पृष्ठ 153

122– मध्यप्रदेश में स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास, द्वारिका प्रसाद मिश्र ,स्वराज्य प्रकाशन भोपाल पृष्ठ 151

123– श्री राकेश कुवंर द्वारा झांसी महोत्सव 1993 पत्रिका में प्रकाशित लेख केआधार पर।

124– डा0 शालिनी सक्सेना, स्वतन्त्रता आन्दोलन में मध्य प्रान्त की महिलायें, स्वराज्य प्रकाशन भोपाल पृष्ठ 65

125– डा0 प्रताप मानुराय, जंगे आजादी में जबलपुर स्वराज्य

126– म0 प्र0 के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, भाग–2 भाषा संचालनालय म0 प्र0 भोपाल

127– डा0 शालिनी सक्सेना, स्वाधीनता आन्दोलन में मध्य प्रान्त की महिलायें, भाषा संचालनालय भोपाल म0 प्र0 पृष्ठ 47

128– म0 प्र0 स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, भाषा संचालनालय खण्ड 4 पृष्ठ 260

129– द्वारिका प्रसाद मिश्र, म0 प्र0 में स्वाधीनता आन्दोलन का इतिहास ''स्वराज्य संस्थान प्रकाशन भोपाल म0 प्र0'' पृष्ठ 324

130– विपिन चन्द्र, भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष, हिन्दी माध्यम कार्यान्वयन निदेशालय दिल्ली पृष्ठ 138

131– द्वारिका प्रसाद मिश्र ,मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास,स्वराज्य संस्थान प्रकाशन म0 प्र0 भोपाल पृष्ठ 329

132– मन्मथ नाथ गुप्त, भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, पृष्ठ 190

चतुर्थ अध्याय
सविनय अवज्ञा आन्दोलन और बुन्देलखण्ड की महिलायें

1930 का ऐतिहासिक सविनय अवज्ञा आन्दोलन–

पंडित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में 1929 को 31 दिसम्बर में अर्धरात्रि में कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में रावी के तट पर पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित किया गया । उसी प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणति करने के लिए कांग्रेस ने 29 जनवरी 1930ई0 में कांग्रेस की कार्यकारिणी ने निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किया ।

''भारत की बिट्रिश सरकार ने भारत में भारतीय जनता को स्वतंत्रता से ही वंचित नही किया है, अपितु उसका आधार ही जनसाधारण का शोषण है उसने भारत को आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक सभीरूप से अत्यधिक हानि पहुँचाई है इसलिए हमारा विश्वास है कि भारत का ब्रिटेन से सम्बन्ध विच्छेद करके पूर्ण स्वराज्य प्राप्त करना चाहिए। जिस शासन व्यवस्था ने हमारे देश की उर्पयुक्त चारो प्रकार से महान अति की है उसको स्वीकार करना अब हम मनुष्य मात्र और ईश्वर दोनो के प्रति अपराध समझते हैं। स्वतंत्रता प्राप्ति का श्रेष्ठ ढंग अहिंसात्मक आन्दोलन ही है इसलिए हम अपने को सविनय अवज्ञा आन्दोलन के लिए तैयार करेंगे जिसमें करों का न देना भी शामिल है।

गांधी जी ने जब सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने का जनाहान किया तो उसके पूर्व उन्होने वायसराय को एक पत्र लिखकर अपना एक ग्यारह सूत्री माँग पत्र उनके सामने रखा था जो पूरी तरह उचित था किन्तु वायसराय ने उनके पत्र का कोई जवाब नहीं दिया तो उन्होंने प्रतिकिया व्यक्त करते हुए कहा कि मैंने '' मांगी थी रोटी और मिला पत्थर''[3] । गांधी जी ने अपने चुने हुए 68 शिष्यों के साथ दाण्डी यात्रा तय कर समुद्रतट पर 06 अप्रैल 1930 को थोड़ा सा नमक बनाकर कानून का खुला उल्लंघन किया ।4 उन्होने कहा कि बहिनों को शराब की दुकानों अफीम के अड्डों और विदेशी कपड़ा बेचने वाली दुकानों पर धारना देना चाहिए । विदेशी कपड़ों की होली जलाई जाये । विद्यार्थियों कों सरकारी स्कूलों और कालेजों में अध्ययन समाप्त कर देना चाहिए और सरकारी कर्मचारियों को अपनी नौकरी छोड़ देनी चाहिए । इस सबका

परिणाम यह होगा कि शीघ्र ही स्वराज्य स्वयं हमारे पास आ जायेगा'' । 5

जैसे ही सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया गया गांधी जी को 5 मई को गिरफ्तारकर लिया गया । उनके साथ जवाहरलाल नेहरू और सरोजनी नायडू भी गिरफ्तार कर ली गयी फिर तो हफ्तों तक सत्याग्रह टोलियां धरणासा पर धावें बोलती रहीं। घुड़सवार पुलिस उन्हे कुचलती व उन पर डण्डों की बरसात करती थी। 6जनवरी 1931 में गांधी जी और कुछ अन्य नेताओं को कारावास से मुक्त कर दिया गया एक मार्च को गांधी जी और इरविन में समझौता हुआ जिसके अर्न्तगत आन्दोलन समाप्त कर दिया गया। सरकार ने हिंसात्मक कार्य करने वाले व्यक्तियों को छोड़कर सभी राजनीतिक सम्बन्धियों को कारावास से मुक्त करने का आश्वासन दिया। अन्त में कांग्रेस दल दूसरी गोलमेज सम्मेलन में भाग लेने के लिए तैयार हो गया यह सम्मेलन भारत के लिए नया संविधान बनाने के लिए बुलाया गया था । 7

1931 में कांग्रेस का अधिवेशन करांची में हुआ इस अधिवेशन में गांधी इरविन समझौते का अनुमोदन किया। इस अधिवेशन में महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किया गया। इसका सम्बन्ध जनता के मौलिक अधिकारों और भारत की आर्थिक नीति से था। इस प्रस्ताव में भारत की स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् भारतीय समाज के पुनर्गठन की रेखा तय की गयी थी। भारतीय संविधान में अनेक तत्व इस प्रस्ताव से लिए गये और आगे चलकर गणतंत्र भारत की सामाजिक और आर्थिक नीति का आधार पर यह प्रस्ताव बना 8 ।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और देश की महिला सत्याग्रही

''गांधी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन से पूर्व महिलाओं को आन्दोलन में भाग लेने के लिए आमंत्रित नही किया था पर सविनय अवज्ञा आन्दोलन में प्रमुख महिलाओं और महिला संस्थाओं द्वारा माँगे उठाने व जिद करने पर गांधी जी ने अनुमति दे दी और बड़ी संख्या में महिलाएं आन्दोलन में कूद पड़ीं ।''[9]

आजादी की लड़ाई में पहली बार इतनी बड़ी संख्या में महिलाएं घरों से निकली उन्होंने प्रभात फेरियाँ निकालीं, जुलूस निकाले, सभायें आयोजित की, नमक कानून भंग किया, विदेशी

कपड़ों व शराब की दुकानों पर धरने दिए। हर प्रान्त में इन सभाओं, जुलूसों, धरनों के लिए हजारों की संख्या में महिलाऐं घरों से बाहर आ गईं और छात्राऐं स्कूल से बाहर नेताओं के जेल में जाने के बाद देश में सभी शहरों में केवल स्त्रियों के ही भारी भरकम जुलूस निकाले गये महिलाओं ने पुरूषों से भी अधिक दृढ़ता का परिचय दिया।''[10]

इन महिलाओं का नेतृत्व राष्ट्रीय स्तर पर श्रीमती सरोजनी नायडू ने किया। उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद, लखनऊ और बुन्देलखण्ड का क्षेत्र तो जैसे स्वराज्य आन्दोलन का कैंप बना हुआ था यहाँ पर लेडी अब्दुर कादिर , स्वरूप रानी नेहरू, उमा नेहरू,सरला भदौरिया, कृष्णा नेहरू, विजय लक्ष्मी पंडित , श्याम कुमारी नेहरू आदि आन्दोलन में अग्रणी नाम हैं ।

पूरे मध्य प्रान्त में अनुसुइया बाई काले नेतृत्व सम्भाल रही थीं। नागपुर क्षेत्र में सुमन केसकर और बरार क्षेत्र में दुर्गा जोशी थीं इनके निर्देशन परजगह-जगह महिलाएं आन्दोलनरत् थीं वर्धा में जानकी देवी बजाज और केशरबाई पोद्दार ने महिला टोलियों और स्वयं सेवकों को संगठित किया खंडवा में माखनलाल चतुर्वेदी सुप्रसिद्व कवित्री सुभद्रा कुमारी चौहान ने जबलपुर में नेतृत्व किया जबकि हमीरपुर में रानी राजेन्द्र कुमारी ने इस आन्दोलन में गांव की महिलाएं भी पीछे नही थीं विन्ध क्षेत्र मैं जंगल कानून में असहयोग आन्दोलन में भाग लेने वाली क्रान्तिकारी महिलायें पुलिस की गोली की शिकार हुईं उसमें अनेक मजदूर स्त्रियाँ और किसान थीं ।[11]

<u>**सत्रह हजार स्त्रियाँ जेल में**</u> इस प्रकार से उत्तर से लेकर दक्षिण तक सभी जगह महिलाओं के इन कार्यों ने विदेशी शासकों को आश्चर्य चकित कर दिया। 1930-31 के इस आन्दोलन में लगभग 1लाख व्यक्ति जेल गये थे जिनमें से महिलाओं की संख्या 17 हजार आंकी गई थी। समस्त जेलें भर गईं तो स्त्रियों को पकड़-पकड़ कर बाहर जंगलों में छोड़ दिया गया और उन्हे तरह-तरह से डराया धमकाया गया जेल में तकलीफें दी गयीं, पर उन्होने हर तरह के कष्टों का हँसकर सामना किया। छोटे बच्चौं वाली मातायें भी माफी मागने को तैयार नही हुईं। जेलों के बाहर भी स्वतंत्रता संग्राम के मोर्चे जगह-जगह खुले हुए थे और हर मोर्चे पर स्त्रियाँ तैनात थीं। उन्होंने गैर कानूनी साहित्य

वितरित किया जंगल कानून तोड़ कर वन सत्याग्रह में हिस्सा लिया धरना देना, शराब व विदेशी कपड़ों की दुकाने बन्द करवाना तो रोज का हिस्सा बन गया था महात्मा गांधी के आवाहन पर महिलाओं ने कड़ी धूप में भूख प्यास सही व लाठियाँ गोलियाँ खायीं। महिलाओं के जुलूस उन महिलाओं के लिए ईर्ष्या का विषय बन गया जो किसी कारण वश नही जा पाई ।[12]

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और बुन्देलखण्ड की महिलायें

लाहौर अधिवेशन और बुन्देलखण्ड

पंडित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में 1929ई0 को 31 दिसम्बर की अर्धरात्रि को कांग्रेस के लाहौर अधिवेशन में रावी नदी के तट पर पूर्ण स्वतंत्रता का प्रस्ताव पारित हो चुका था। इस प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणित करने के लिए कांग्रेस ने 26 जनवरी 1930ई0 को प्रथम स्वाधीनता दिवस सारे देश में मनाया था। प्रस्ताव में जनता के लिए मौलिक अधिकारों की घोषणा एवं बिट्रिश सरकार को अल्टीमेटम दिया गया कि यदि कांग्रेस की पूर्ण स्वतंत्रता की मांग को स्वीकार नही किया गया तो सविनय अवज्ञा एवं सत्याग्रह आरम्भ कर दिया जायेगा। इस अधिवेशन में गांधी जी की ओर से झाँसी एवं हमीरपुर के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। लाहौर से लौटकर लौटे डेलीगेशन में गये लोगों नें ब्रिट्रिश सरकार के विरूद्व सत्याग्रह की तैयारियाँ अपने-अपने क्षेत्रों में प्रारम्भ कर दीं। उधर कांग्रेस ने अपनी समस्त समितियों एवं शाखाओं को स्थगित किया तथा महात्मा गांधी को सर्वे सर्वा बनाकर अपने समस्त अधिकार स्थानान्तरित कर दिए गये थे गांधी जी को यह भी अधिकार दिया गया कि वे गिरफ्तार होने के बाद अपने इच्छानुसार अपना उत्तराधिकारी मनोनीत कर सकते हैं । प्रान्तीय संचालकों को भी यह अधिकार दे दिया गया था, कि प्रत्येक जिले में एक-एक संचालक नियुक्त करें ।संयुक्त प्रान्त के लिए गांधी जी ने गणेशशंकर विद्यार्थी को चुना था ।[13]

झाँसी जिले में सविनय अवज्ञा आन्दोलन

बुन्देलखण्ड के झाँसी जिले का सविनय अवज्ञा आन्दोलन के पूर्व ही झाँसी में 1928 में जनाना अस्पताल प्रांगण में पंडित जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेंटी का अधिवेशन हुआ था और इस अधिवेशन में स्व0 कृष्ण दत्त

पालीवाल, स्व0 गणेशशंकर विद्यार्थी और पुरूषोत्तम दास टण्डन शामिल हुए थे। सन् 1929 में गांधी जी चिरगाँव पधारे थे। 1930 में नमक कानून तोड़ने के बाद सम्पूर्ण झाँसी में नमक सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया था जिसमें पुरूषों में श्री आत्माराम,गोविन्द खेर, र0 वि0 धुलेकर और कृष्णाचन्द्र गिरफ्तार कर लिए गये थे [14]
नमक कानून तोड़ने वाले जत्थे में लगभग 150 कार्यकर्ता शामिल हुए थे और इस जत्थे में औपारा नामक स्थान पर 29 अप्रैल को हजारों लोगों की उपस्थिति में नमक कानून तोड़ा। पुलिस ने देहात–देहात से आने वाले हजारों ग्राम वासियों को बलपूर्वक रोका अन्यथा लाखों की उपस्थिति हो जाती। 1930 के नमक सत्यागृह में श्री रामशरण कंचन, मास्टर, रूद्र नारायण सिंह, श्री कृष्णाचन्द्र पंगोरिया, श्री सुकुमारी शरण, श्री आत्माराम, गोविन्द खेर, पंडित रामेश्वर प्रसाद शर्मा झाँसी से शामिल हुए ।[15]
26 जनवरी 1930 को एक गोला कुआँ से एक जुलूस तिरंगा झण्डा लिए हुए प्रारम्भ किया गया था परन्तु उस जुलूस को बिसाती बाजार से आते–आते ही पुलिस ने तित– बितर कर दिया था तथा हल्का लाठी चार्ज किया था लेकिन किसी को भी बन्दी नहीं बनाया गया था ।16

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और झॉसी जिले की महिलाएं

– झाँसी जिले में सविनय अवज्ञा आन्दोलन मैं महिलाओं ने बढ़कर हिस्सा लिया। इस आन्दोलन
का नेतृत्व श्रीमती पिस्ता गोयल ने किया। उनके साथ श्रीमती सावित्री भागवत धर्मपत्नी सीताराम भागवत, श्रीमती क्रान्ति देवी पंगोरिया धर्मपत्नी श्री कृष्ण चन्द्र पंगोरिया, श्रीमती हल्की बाई,सावित्री देवी चाची स्व0 कुंज बिहारी लाल, शिवानीं धर्मपत्नी श्री कृष्णगोपाल शर्मा इत्यादि ने बढ़ चढ कर विदेशी वस्तुओं के बहिस्कार, पिकेटिंग धरने अदि में हिस्सा लिया। अब उन क्रान्तिकारी महिलाओं की सूची पेश की जा रही है जिन्होनें सविनय अवज्ञा आन्दोलन में झाँसी जनपद में भाग लिया।[17]

श्रीमती हल्कीबाई

श्रीमती हल्कीबाई गौसियन पुरा झांसी के श्री राम नाथ की पत्नी थी। उन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में श्रीमती पिस्ता गोयल के साथ आन्दोलन में बढ़चढ़कर

हिस्सा लिया और 1921 के असहयोग आन्दोलन में श्रीमती हल्कीबाई गिरफ्तार हो गईं। लेकिन श्री रामनाथ खात्री उस समय पुलिस विभाग में सरकारी नौकरी पदपर थे। जब सरकार को यह मालूम हुआ तो उन्होंने हल्कीबाई के पति की नौकरी जाने की धामकी दी। हल्कीबाई का घार बहुत सम्पन्न नहीं था अतः हल्कीबाई ने पुलिस से माँफी माँग ली और इस प्रकार उन्होंने उनके मन में स्वतंत्रता की भावना प्रारम्भ से ही थी।[18]

लेकिन स्वतंत्रता की भावना जो सम्पूर्ण शरीर में व्याप्त थी वह दबी कैसे रह सकती थी। हल्की बाई ने जब 1930 ई0 में महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया तो उन्होंने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बढ़ चढ़ कर हिस्सा लिया। उनके साथ आन्दोलन में श्रीमती पिस्तादेवी प्रमुख कार्यकत्री थीं। आन्दोलन में भाग लेने के दौरान श्रीमती हल्कीबाई पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर ली गई और उन्हें 1932 में सिविल डिसओविडियेन्स कानून के तहत 6 माह की सश्रम कारावास की सजा सुनाई गई। जेल में उनके साथ बहुत कठोरता का व्यवहार किया गया लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी इनपर पुलिस द्वारा 150 रू0 का जुमार्ना भी कर दिया गया।[19]

कांन्तिदेवी पंगोरिया और सत्याग्रह

क्रांति देवी झांसी जिले के प्रसिद्ध सत्याग्रही भी कृष्ण चन्द्र पंगोरिया की पत्नी थी। श्री कृष्ण चन्द्र पंगोरिया आगरा के निवासी थे। कृष्ण चन्द्र जी सरस्वती पाठशाला स्कूल तथा कारपेट्रीं स्कूल की देखरेख करते थे।श्री पंगोरिया ने हर आन्दोलन में खुलकर भाग लिया। जिसका प्रभाव श्रीमती क्रांन्ति देवी पर भी पड़ा। कांग्रेस कमेटी के सदस्य होने के नाते श्रीमती पंगोरिया के घार में स्वतंत्रता सेनानियों का आना जाना लगा रहता था अतः श्रीमती पंगोरिया के मस्तिष्क पर भी स्वतंत्रता आन्दोलन में भागलेने का विचार हुआ। सन् 1930 में जबकि गांधीजी ने सविनय अवज्ञा आनदोलन चलाया तो श्रीमती पंगोरिया ने इस आन्दोलन में खुलकर भाग लिया जिसके कारण कानून अवज्ञा के तहत अंग्रेजों ने इन्हें कई महीनों की सजा सुनाई। जब सन् 1942 ई0 में वयक्तिगत सत्याग्रह गांधीजी ने शुरू किया तो श्रीमती पंगोरिया ने पुनः उसमें भाग लिया और श्रीमती कृष्ण चन्द्र जी के साथ जेल यात्रा की सन् 1950 में श्रीमती पंगोरिया का देहावसान हो गया।[21]

श्रीमती सावित्री देवी और स्वतंत्रता आन्दोलन

ये श्रीकृष्ण गोपाल शर्मा की पत्नी थीं इनका भी स्वतंत्रता धर्म अनुदाय कम महत्वपूर्ण नहीं रहा श्रीकृष्ण गोपाल शर्मा प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। अतः श्रीमती सावित्री देवी को अपने पति से पुरोधात्व की प्रेरणा प्राप्त हुई साथ ही यह वह समय था जबकि हर भारतीय के मन में स्वतंत्रता की बलवती भावना जाग्रत थी भला सावित्री देवी इसमें कैसे पीछे रहती।

1930 में सत्याग्रह के समय श्रीकृष्ण गोपाल शर्मा भी नमक आन्दोलन में कूद पड़े झांसी में चौपारा नामक स्थान नमक कानून ताडनैं के लिये नियुक्त किया गया। इसके लिये तीन व्यक्ति नियुक्त किये गये थे चौपारा में 29 अप्रैल को नमक कानून हजारों लोगों की उपस्थिति में तोडा गया श्रीमती सावित्री देवी भी इस नमक कानून विरोधी आन्दोलन में शामिल हुई इसके अतिरिक्त उन्होनें विदेशी वस्तुओं के बहिस्कार को अपने जीवन में उतारा और जीवनपर्यन्त खादीको धारण करती रहीं यह वह समय था जबकि महिलाओं का घर से बाहर निकलना दुर्लभ में था। उस समय झांसी की सैकडों महिलाओं के साथ श्रीमती सावित्री देवी भी सविनय अवज्ञा आन्दोलन में कूद पड़ी। झांसी में स्त्रियों ने मादक पदार्थों की दुकानों पर धरना दिया उसमें सावित्री देवी भी थीं। 22, आन्दोलन में भाग लेने के कारण ये गिरफ्तार कर ली गईं और इन्हें तीन माह की सजा सुनाई गई। इस आन्दोलन में सावित्री देवी अपने पुत्र व पति के साथ एक साथ जेल गई। श्रीमती सावित्री देवी के आजादी में योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

यह वह समय था जबकि पुरूष महिलाओं के साथ दुर्व्यवहार करते थे प्रायः महिलाओं को आन्दोलन के समय भद्दी गालियों के साथ पकड़कर ले जाया जाता और आधी रात को असुरक्षित जगहों पर छोड़ दिया जाता था। जिससे कि वे डर जायें और दूसरी स्त्रियों को भी इससे सबक मिल सके लेकिन हमारे भारतवर्ष की ललनाओं ने अपार कष्ट सहते हुये भी देश को स्वतंत्र कराने में अपना अपूर्व योगदान दिया।[23]

सावित्री देवी भागवत और स्वतंत्रता आन्दोलन

सावित्री देवी भागवत कालपी के मूल निवासी पं० सीताराम भास्कर भागवत की पत्नी थी सीताराम भास्कर भागवत ने 1921

ई0 से ही छात्र कालमें खद्दर धारण का व्रत ले लिया था। सन् 1930 में जब गांधी जी ने असहयोग आन्दोलन चलाया तो उसमें भास्कर दम्पत्ति ने भाग लिया व सावित्री देवी ने पिस्ता देवी गोयल के साथ कलेक्टरी पर धरना दिया।पुलिस के सिपाही इनको उठाने का हर सम्भव प्रयत्न करते रहे परन्तु ये डिगी नहीं और गिरफ्तार हो गयी। श्रीमती सावित्री देवी जब धरने पर बैठीं थीं तो उस समय उनकी गोद में दे डेढ़ माह की बच्ची कुसुम थी। धरने पर बैठने के कारण सावित्री देवी पर मुकदमा चला जो कि जेल में ही हुआ। सम्बन्धियों को जेल में ही मुकदमा देखने की अनुमति मिल गई थी। श्रीमती सावित्री देवी व श्रीमती पिस्ता देवी को तीन माह की सजा व पचास,पचास, रूपया आर्थिक दण्ड सुनाया गया। जब सावित्री बाई ने अपनी बच्ची को दूसरी महिला की गोद में दे दिया तो जिला मजिस्ट्रेट श्री चिम्मन लाल जी ने इस धटना को देख लिया और सावित्री की सजा तीन महीने कर दी जब कि उन दिनों जुर्माना देने की सजा नहीं थी फिर भी मजिस्ट्रेट ने बाइस रूपये जुमार्ना कर दिया जब सावित्री देवी ने बाइस रूपये अदाकर दिये तो उन्होनें सावित्री देवी को छोड़ दिया। [24]

इस प्रकार से स्वतंत्रता आन्दोलन में सावित्री भास्कर भागवत के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। वह अपने पति के साथ प्रत्येक आन्दोलन में उपस्थिति रही। इनके पति ने सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भी भाग लिया और ग्यारह मास का कारावास भोगा।

हमीरपुर जिले में सविनय अवज्ञा आन्दोलनः–

मार्च 1930 में गणेश शंकर विद्यार्थी जो कि संयुक्त प्रान्त के आन्दोलन के संचालक थे उन्होंने हमीरपुर जिले के सत्याग्रह के संचालन की बागडोर भगवानदास अरजरिया बालेन्दु के हाथ में सौंप दी।[25] बलेन्दु अरजरिया की अध्यक्षता में एक गुप्त सभा कुलपहाड़ कस्बें में की गई जिसमें सत्याग्रह के विभिन्न पहलुओं पर बातचीत की गई। अन्त में हमीरपुर जिले में सर्वप्रथम 13 अप्रैल सन् 1930 ई0 को नमक कानून तोडने की योजना बनाई गई क्योकिं राष्ट्रीय सप्ताह से समस्त देश में नमक बनाया जाने लगा था और स्थान स्थान पर नमक कानून तोडने वाले हजारों व्यक्तियों को जेल में बन्द किया जाने लगा था। इसी समय नमक कानून तोडने के लिये ऐतिहासिक दाण्डी यात्रा प्रारम्भ हुई थी।

कुलपहाड़ में 13 अप्रैल 1930 को नमक कानून तोड़ने की योजना बनाई गई सत्याग्रहियों का एक जत्था पैदल महोबा एवं राठ तहसीलों के लिये रवाना हुआ। इस जत्थे ने कुलपहाड़ राठ एवं महोबा में नमक कानून भंग किया लेकिन पुलिस ने किसी को भी गिरफ्तार नहीं किया– 26 गिरफ्तारियां होने पर सत्याग्रहियों को निराशा हुई क्योकिं समस्त देश में हजारों व्यक्ति गिरफ्तार किये जा चुके थे। अन्त में बालेन्दु जी द्वारा कुलपहाड़ पर जब्त साहित्य भारत में अंग्रेजी राज्य,काकोरी के शहीद, चांद का फांसी अंक आदि पुस्तकों को पढ़कर सुनाया और यह ऐलान किया गया कि यह पुस्तकें गैर कानूनी हैं परन्तु इतना कहने पर भी पुलिस ने किसी को गिरफ्तार नहीं किया।[27]

हमीरपुर जिले में बिट्रिश सरकार द्वारा आन्दोलन का मुकाबला करने में शिथिलता बरतने तथा जनता में राष्ट्र के प्रति उत्साह देखकर बालेन्दु ने समानान्तर सरकार बनाने का निश्चय किया। कुलपहाड़ में एक शिविर कायम किया गया। जिसमें जनता की सुरक्षा, आपसी विवादों का निपटारा लगान बन्दी शराब बन्दी, खादी प्रचार और सत्याग्रहियों की भर्ती का काम होना था।[28] 27मई 1930 को गांधी जी नमक कानून बनाते हुये गिरफ्तार किया गया। जिससे कि संध्या को कुलपहाड़ में एक विराट सभा हुई जिसमें यह कहा गया कि विट्रिश सरकार द्वारा देश के सबसे महान नेता महात्मा गांधी की गिरफ्तारी के विरोध में प्रत्येक भारतीय सरकार का पूर्ण असहयोग करेंगें।[29]

दूसरे दिन से बाजार के दुकानों ने पुलिस के हाथ अपनी वस्तुयें बेचना प्रारम्भ कर दिया। नाई कहार धोबी मेहतर आदि ने भी पुलिस की सेवा समाप्त कर दी। उच्चधिकारियों ने आकर इस समस्या का निपटारा करना चाहा किन्तु जनता अपने संकल्प पर अडिग रही 14 मई 1930 को सबसे पहले बालेन्दु जी को गिरफ्तार किया गया। अतः उन्हानें रामदुलारे गौरहार को मुखिया बना दिया रामदुलारे को भी पुलिस द्वारा गिरफ्तार किया गया। फिर मुखिया रानी राजेन्द्र कुमारी को बनाया गया। रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ आन्दोलन में अनेक महिलायें भी कूद पडी। धारा 144 लागू की गई दुकानदारों से बात करना जुर्म करार दिया गया। लोगों ने बाजार मं आना जाना बन्द कर दिया। इन

सब कारणों से हमीरपुर जिलें में उत्तेजना फैल गई। इस प्रकार से कुलपहाड 1930 के स्वतंत्रता आन्दोलन में एक प्रमुख गढ था।[30] इस आन्दोलन के सम्बन्ध में आजतक लोग यह पक्तियां गुनगुनाते हैं।

बहिस्कार को भओ है, यही शान्त संग्राम।
बिट्रिश पुलिस मं दर्ज है कुलपहाड़ का नाम।।

1930 ई0 में महोबा में दीवानी रानी साहिबा ने आबकारी में धरना दिया उस समय हजारों की संख्या में भीड जमा हो गई पुलिस वाले रानी साहिबा को वहां से हटाकर भीड़ से बाहर कर आते थे और रानी साहिबा सिंहनी सी दहाड़ती हुई फिर आ धमती। उस समय कौन ऐसा कायर हृदय होगा जिसकी भुजाये नफडक उठी हो।[31]

हमीरपुर जिले की महिला स्वतंत्रता सेनानी–

रानी राजेन्द्र कुमारी हमीरपुर जिले में सन् 1930 में प्रारम्भकिये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन का सूतपात्र भगवानदास बालेन्दुके द्वारा किया गया था लेकिन बालेन्दु की गिरफतारी के बाद गौरहारी के रामदुलारे सत्याग्रही नियुक्त किये गये लेकिन वह भी गिरफतार कर लिये गये और रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में आन्दोलन हुआ।रानी राजेन्द्र कुमारी ने सत्याग्रह आन्दोलन के अर्न्तगत राठ में नमक सत्याग्रह आन्दोलन् का नेतृत्व किया। उनके साथ में पुरूष स्वयं सेवियों के साथ साथ बडी संख्या में महिला सहयोगी भी थी। राठ तथा आस पास के गांवों की महिला सत्याग्रहियों ने रानी के साथ कदम से कदम मिलाकर सहयोग प्रदान किया।उस समय रानी साहिबा विट्रिश सरकार के शराब घरो तथा विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना दे रही थीं राठ में सत्याग्रह कार्यक्रम अपने उत्कर्ष पर था।[32]

राठ की पुलिस भी सत्याग्रहियों पर कहर बरपा रही थी रानी राजेन्द्र कुमारी को जब यह पता लगा, कि कुलपहाड सत्याग्रह में स्वयं सेवकों का अभाव हो गया तो वे सत्याग्रह आन्दोलन की बागडोर अपने हाथ में लेकर अधिनायक का दायित्व निभाने लगी। पुलिस थाने पर पुलिस का आना जाना रूक गया। राठ तहसील से बडी संख्या में सत्याग्रही आकर पुलिस थाने पर धरना देने लगे। पुलिस उन्हें गिरफतार कर जेल भेजने लगी।

कुलपहाड के पुलिस बहिष्कार आन्दोलन के अर्न्तगत रानी राजेन्द्र कुमारी द्वारा वहाँ के थाने को अपने कब्जे में करने की सूचना सारे जनपद में बहुत तेजी के साथ फैल गई। थाने में पुलिस कर्मियों का आना जाना बन्द हो गया। इस पर पुलिस द्वारा सत्याग्रहियों के झुण्ड के झुण्ड गिरफ्तार कर हमीरपुर जेल भेजे जाने लगे। पुलिस के आलावा अधिकारियों सहित बाहर से पुलिस का एक बहुत बडा दल कुलपहाड आया और उसनें रानी राजेन्द्र कुमारी तथा उनके दुध मुहें बच्चे वीरप्रताप सिंह को गिरफ्तार कर जेल में बन्द कर दिया। अंग्रेज सरकार ने रानी साहिबा को 6 माह के कारावास की सजा । दी उन्हें हमीरपुर जेल से लखनऊ की केन्द्रीय जेल भेजा गया।[33]

रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ हमीरपुर जनपद की वीरागनाओं ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बढचढकर हिस्सा लिया। हमीरपुर जनपद की महिलायें जब स्वतन्त्र समर में हिस्सा लेने हेतु निकलती थी तो अधोलिखित गीतगाकर अपने मन का भाव प्रकट करती थी।

"जो कुछ पडेगी मुसीबत में उठाऊँगी।
खिदमत करूँगी मुल्क की और जेल जाऊँगी।
और इन विदेशी मुल्कों में माचिस लगाऊँगी।
चरखा चलाकर छीनूगीं उनकी मशीनगन।
उदुए मुल्को कौम को नीचा दिखाऊँगी।
मैं अपनी मुल्क की बहनों को ले लेकर अपने साथ।
शराब की दुकान पर धरना विठाँउगीं।
जाकर किसी जेल में बंटूगी रामबास।
अपनी सहेली के साथ चक्की चलाऊँगी।। "

इस प्रकार के गीत गाकर महिलायें स्वेच्छा से आन्दोलन में भाग लेती थी।[34]

नमक सत्याग्रह और महिलायें–

हमीरपुर जनपद की कांग्रेस ने दीवान शत्रुहन सिंह को स्वतंत्रता संग्राम के संचालन का पूर्ण अधिकार दे दिया उन्होने प्रत्येक तहसील से नमक बनाने वाले जत्थे तैयार करके राठ में नमक बनाने के लिये कम से भेजना प्रारम्भ कर दिया। पहला जत्था 4 बजे पं बेजनाथ तिवारी के नेतृत्व में राठ की ओर चला। पचपहरा

लाड़पुर, कुलपहाड, सुंगिरा, पनवाड़ी, और सैयद पुर में इस जत्थो का भारी स्वागत हुआ प्रत्येक दल तिरंगा लेकर अपने अपने गाँवो से गीत गाते हुये राठ आने लगे हजारों की संख्या में सत्याग्रही खड़ा हो गया। सरकारी पुलिस के सिपाही और थानेदार गांवों में घूमने लगे। जहां कहीं भी तिरंगा झण्डा लिये स्यवं सेवक मिलते, तो थानेदार हुक्म देता कि इनका झण्डा खींच लो और खूब पिटाई करों।सिपाही दरोगा के निर्देश पर स्वयं सेवकों के हाथ से झण्डा छीन लेते और खूब पिटाई करते।[35] पुलिस उन्हें पकड़कर जेल में बन्द कर देती थी उन पर मुकदमा चलाकर उन्हें सजायें दिलवाना सरकार का यह काम आन्दोलन मेघी का काम करता। सत्याग्रहियों के उत्साह में कोई कमी नहीं आती।[36]

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के नमक कानून में हमीरपुर जनपद की 51 (इक्यावन) महिलायें अपने पतियों तथा भाइयों के साथ स्वतंत्रता समर में कूद पडीं थी और आंग्ल आत्याचारों के जुल्म को सहनकर संघर्षी /सहभागिता की एक नई मिसाल कायम की। वे आन्दोलन में सदैव आगे रहीं।[37]

हमीरपुर जनपद के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महिलाओं की संख्या अनगिनत है। उनमें से प्रमुख महिलाओं के नाम तो उभरकर सामने आये है लेकिन तमाम ऐसी महिलायें है जिन्होनें किसी न किसी रूप में यथा संभव अपना अनुदान प्रदान किया किन्तु उन्हें कलम बन्द न किये जाने से वे इतिहास के पन्नों में अपना स्थान नहीं पा सकी । फिर भी हम उनके बलिदान को भुला नहीं सकते।

हमीरपुर जनपद में रानी राजेन्द्र कुमारी भुवनेश्वरी देवी, किशोरी देवी,सरयूदेवी उर्मिला देवी एवं रामप्यारी देवी जैसी वीर महिलाओं के अतिरिक्त यहां की अन्य अनेक महिलाओं ने स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी शानदार भूमिका निभाई। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने वाले कुछ प्रमुख महिला सेनानी इस प्रकार थी।

कस्तूरी देवी हमीरपुर जनपद के उरई (जालौन) के पवई नामक गांव मं कस्तूरी देवी का जन्म सन् 1905 ई0 में हुआ। इनके पिता का नाम घपलू था। कस्तूरी देवी ज्यादा पढ़ी लिखी नहीं थी। इनका विवाह हमीरपुर स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी प्रमुख भूमिका निभाने वाले प्रसिद्ध सेनानी जो कि सरीला के थे बाबू बिहारी

लाल विश्वकर्मा से सन् 1920 ई0 में हुआ। बिहारी लाल जी एक प्रसिद्ध सेनानी होने के साथ साथ गीतकार एवं साहित्यकार भी थे तथा गांधी जी से अत्याधिक प्रभावित थे। कस्तूरी देवी अधिक पढी लिखी नहीं थी वे जब ससुराल आईं तो उन्हें घर में राष्ट्र के प्रति त्याग की भावना देखने को मिली अतः इनके मन में भी राष्ट्र के प्रति अनुराग जागृत हो गया।[38] गाँधी आन्दोलन के दूसरे चरण सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जब पूरा हमीरपुर जनपद सम्मिलित था तब कस्तूरी देवी के पति सत्याग्रह आन्दोलन में कूद पडे। सन् 1932 में विश्वकर्मा जी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन के तहत गिरफ्तार कर लिया गया और उन्हें धारा 16 (1) तथा धारा 188 के अर्न्तगत 6 महीने की सजा सुनाकर हमीरपुर जेल भेज दिया गया।उस समय सत्याग्रह के अन्तर्गत जुलूस तथा सभाओं का आयोजन किया जाता था। कस्तूरी देवी ने भी झण्डा आन्दोलन में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई और झण्डा सत्याग्रह के अन्तर्गत कस्तूरी देवी को गिरफ्तार कर लिया गया। जिस समय यह गिरफ्तार हुई उस समय उनकी गोद में चार साल का बच्चा धर्मवीर था।[39] कस्तूरी देवी को 6 माह की सजा तथा पच्चीस रूपये का अर्थदण्ड हुआ। जेल में उनके साथ धर्मवीर भी रहा पहले कस्तूरी देवी को हमीरपुर जेल में रखा गया बाद में उनको फतेहगढ़ भेज दिया गया।

सरीला का ऐतिहासिक जुलूस तथा महिलायें–

सरीला उस समय एक रियासत थी। बाबू बिहारी लाल ने सरीला रियासत में प्रजा मण्डल की स्थापना की तथा उनके निर्देशन में मार्च 1939 में सरीला में एक सभा का आयोजन हुआ जिससे बेगार प्रजा पर करारी चोट की गई। तत्कालीन रियासत नरेश श्री महिपाल सिहं ने उस समय न केवल संगठन को समाप्त करने की योजना बनाई अपितु विश्वकर्मा जी को भी समाप्त करने की योजना बना डाली।

इसको समाप्त करने को लेकर राजा ने सत्याग्रहियों पर भीषण लाठी चार्ज करवायी। इस जुलूस में पचास सेनानी अधिकतम महिलायें थीं इस लाठी चार्ज में नन्हू देवी नामक सेनानी को भयंकर मार पडी। लेकिन जुलूस ने थमनेका नाम ही नहीं लिया लाठी चार्ज भी होता रहा और मातादीन नामक सत्याग्रही भी इस संघर्ष में बुरी तरह घायल हो गये।[40]

इस तरह से कस्तूरी देवी ने आजादी के संघर्ष में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई। वे रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ साथ वीरा, गोहाण्ड, खोडा, बंडवा छिबौली तथा पवई जैसे गावों में गई। कस्तूरी देवी जीवन पर्यन्त राष्ट्र सेवी रही। उनका देहान्त 1991 में हुआ।

हमीरपुर की भुवनेश्वरी देवी और स्वतंत्रता आन्दोलन–

भुवनेश्वरी देवी का जन्म 1912 में कुलपहाड़ में हुआ था। ये भगवानदास बालेन्दु की बहन थी। भगवान दास बालेन्दु और उनकी पत्नी किशोरी देवी एक प्रसिद्ध स्वातंत्रता सेनानी थे। भुवनेश्वरी देवी का विवाह नाथूराम तिवारी से हुआ। तिवारी जी भी एक सम्मानित स्वतंत्रता सेनानी थे।इस तरह से भुवनेश्वरी देवी को मातृ पक्ष तथा ससुराल दोनों से ही राष्ट्र धर्मा में परिवेश प्राप्त हुआ। इन्हे महान नत्री रानी राजेन्द्र कुमारी की निकटता भी प्राप्त हुई। जिससे ये स्वातंत्रय संघर्ष की ओर और भी उन्मुख हुई।[41]

भुवनेश्वरी देवी ने रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ कदम से कदम मिलाकर महिला सभाओं महिला अधिवेशनों में भाग लिया। वे रानी के साथ प्रत्येक आयोजन में शामिल होती थी। इस महान महिला का निधन 1948 में हो गया। श्रीमती भुवनेश्वरी देवी ने महोबा में शासकीय आदेश की खुली अवहेलना करके अपने को गिरफ्तार करवा लिया।[42]

राजाबेटी तथा स्वाधीनता आन्दोलन–

राजाबेटी प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्रीपति सहाय रावत की बहिन थी इनका विवाह आनन्दी प्रसाद लोधी के साथ हुआ था। इनका जन्म 1894 ई0 में हुआ राजाबेटी को ननिहाल से ही राष्ट्र प्रेम का माहौल मिला हुआ था। राजाबेटी अपनी भाभी श्रीमती शान्ती देवी के साथ आन्दोलन में कूद पडी थी इन्हें रानी राजेन्द्र कुमारी का जब सानिध्य प्राप्त हुआ तो वे इनके साथ स्वतंत्रता के लिये किये गये सभी आन्दोलनों मे साथ रही। राजाबेटी को सन् 1933 में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 16 (1), (2) किमिनल ला और 18 (2) किमिनल लातप्पा 143 आई0 पी0सी0 के अन्तर्गत 6,6 माह की कैद तथा दस रूपये जुमार्ना की सजा हुई।[43]

रमा देवी अवस्थी–रमा देवी का जन्म कबरई के निकट परसाहा नाम गाँव में 1902 में हुआ।

था। रमा देवी का बचपन अत्यन्त लाड़ प्यार से बीता इनका विवाह मौदहा निवासी द्वारिका प्रसाद अवस्थी से हुआ द्वारिका प्रसाद उस समय के एक प्रमुखस्वतंत्रता सेनानी थे। उन्होनें सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया। 1932 में उन्हे धारा 16 (ए) के अन्तर्गत सत्याग्रह करते हुये गिरफ्तार कर लिया गया उन्हें 6 माह की सजा दी गई। भी द्वारिका प्रसाद जी कितने जीवट थे इसका अन्दाज इससे लगाया जा सकता है कि ये आवश्यक डाक कानपुर पैदल जाते थे और शाम को वापस आते थे यह कार्य इनकी दिनचर्या में शामिल था।[44]

द्वारिका प्रसाद जेल से छूटने के बाद पुनः जेल यात्रा पर गये अंग्रेज इनके कट्टर शत्रु बन गये जब इन्हानें बार बार जेल यात्रा की तो इनकी पत्नी पर भी इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। वह भी स्वातत्रय समर में कूद पडी और अपने दोनों पुत्रों के साथ जेल गई।

द्वारिका प्रसाद जी का जेल जीवन बहुत ही कठोर एवं दुर्गम था जेल में इनके साथ बहुत ही अमानवीय व्यवहार किया गया। सरकार ने इनके मकान को जब्त कर लिया इनकों खाने को नहीं दिया गया जिसके कारण ये तपेदिक के शिकार हो गये अतः इनकी फतेहगढ जेल में मृत्यु हो गई। रमादेवी अवस्थी एक वीर महिला थी। मौदहा के पश्चिमी तरौस में कुएं के सामने इनका घर था। यहां पर आग्नेयास्त्रों का एक कारखाने के साथ सुरंग भी मकान में थी। इसी मकान में इनके पास दीवान शत्रुहन सिंह रानी राजेन्द्र कुमारी तथा मन्नी लाल गुरूदेव और स्वामी ब्रम्हानन्द आते थे।

रमादेवी के पुत्र और पुत्री भी स्वतंत्रता सेनानी थे। इनके बडे पुत्र काशी प्रसाद अवस्थी जो कि आजन्म अविवाहित रहे तथा राष्ट्रवादी भावना से आतेप्रोत रहे। काशी प्रसाद ने भी सत्याग्रह आन्दोलन के अन्तर्गत कई बार जेल यात्रा की । इन्होनें जेल के अन्दर कई बाद जेलरो और अधिकारियों को पीटा जिससे इन्हे हमेशा पुलिस का कोप भाजन बनना पड़ा। रमादेवी राष्ट्रीय आन्दोलन में सन् 1932 में भाग लेते हुये पकडी गई। और उन्हे फौजदारी कानूनी संशोधन अधिनियम की धारा 16 (2) और भारतीय दण्ड संहिता की धारा 148 के अन्तर्गत 5.4.1932 को 6 माह सख्त कैद और दस रूपये जुर्माने की सजा सुनाई गई।[45]

<u>सभ्यता अवस्थी–</u>

रमा देवी का पूरा परिवार ही राष्ट्र के प्रति समर्पित था इनके पति पुत्र तथा पुत्री ने देश के लिये सर्वस्व न्योछावर कर दिया। यह अवस्थी परिवार जब जेल भेजा गया तो सरकार ने इनकी सारी सम्पति को जब्त कर लिया। रमादेवी जी अपने पति पुत्र तथा पुत्री के साथ महीनों खुले आसमान के नीचे रही।

सभ्यता अवस्थी रमादेवी की इकलौती पुत्री थी। प्रसिद्ध सेनानी रामगोपाल गुप्त एवं उनके साथी क्रान्तिकारी मौदहा के पास सरकार विरोधी अभियान के अर्न्तगत रेल की पटरियां उखाड रहे थे तो इस दल के साथ सभ्यता अवस्थी भी थी। किसी भेदिये ने पुलिस को सूचना दे दी जिस पर पुलिस वहां पहुच गई इस पर क्रांतिकारी दल वहाँ से भाग गया। उस समय सभ्यता अवस्थी के पेट में आठ माह का गर्भ था। सभ्यता अवस्थी के पास जब तक अन्तिम कारतूस रहा वह पुलिस से निरन्तर टक्कर लेती रही।

पेट में आठ माह का गर्भ, दौडने में परेशानी अतः सभ्यता देवी पास में ही बह रहे श्याम नाले में कूद पडी। नाले के कूदने के बाद वहीं पर उनकी मृत्यु हो गई। सभ्यता देवी के योगदान को हमीरपुर जनपद का इतिहास भुला नहीं सकता। [46]धान्य है भारत की वीरांगनायें महात्मा गांधी ने लिखा था कि "भारतीय नारियों का यह साहस पूर्ण कार्य इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा"।

<u>जेल में नारियों के साथ किया गया व्यवहार–</u>

उस समय जब महिलाओं को जेल में रखा जाता था तो उनके साथ हुये व्यवहार का वर्णन कमला देवी चट्टोपाहयाय ने इस प्रकार किया था। जेल में केवल तीन माह के छोटे बच्चों को ही माता के साथ रहने दिया जाता था टैक्स न अदा करने पर इस नौनिहाल को भी माता से अलग कर दिया जाता था। इसलिये घार पर अनेकों बच्चे अनाथों की तरह रहते थे। इन बच्चों की मदद करने वालों को भी राजद्रोहियों का साथ देने वाले समझकर पुलिस उनपर कड़ी नजर रखाती थी। चूंकि महिलाओं के साथ उनके पति भी जेल में बन्द थे अतः इनके घारों का आर्थिक संतुलन भी बिगड गया था।[47]पर जेल जीवन में महिलाओं ने अनेक प्रकार की तकलीफे हंसते हंसते सही यहां तक कि घार में पति पुत्र व पुत्री के बीमारी की अवस्था में भी वे सरकार से माफी मांगने के लिये तैयार नहीं हुई।[48]

रूक्मिणी देवी–

रूक्मिणी देवी सुगिंरा के श्री मोतीलाल तिवारी की पत्नी थी। मोतीलाल तिवारी ने 1926 ई0 में सुंगिरा में अर्जुन पुस्तकालय की स्थापना की थी। उसके बाद सन् 1933 में सत्याग्रह आन्दोलन के अर्न्तगत 1 वर्ष के लिये जेल गये। रूक्मिणी देवी को भी अपने पति से प्रेरणा प्राप्त हुई और उस समय की प्रसिद्ध क्रान्तिकारी रानी राजेन्द्र कुमारी सम्पर्क में आने के बाद वे स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पडी। रूक्मिणी देवी का जन्म 1903 में राम चन्द्र पटेरिया के यहां हुआ भी श्रीपटेरिया हवलदार थे लेकिन उन्होनें रूक्मिणी देवी के मन में बचपन से ही राष्ट्रीयता की भावना भर दी।[49] रूक्मिणी देवी ने सन् 1932 ई0 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया इस सिल सिलें में 16 (2) सी0एल0ए में 12.5.1932 को 3 माह की कैद की सजा हुई इसके बाद 1933 ई0 में वे पुनः जेल गई और 6माह की इनको सजा हुई। अधिवेशन के बाद जितने भी अधिवेशन हुये उसमें रूक्मिणी देवी ने रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ सभी अधिवेशनों में भाग लिया। रूक्मिणी देवी निरन्तर संघार्षी महिला रहीं।

शान्ति देवी–

शान्तीदेवी थाना के ग्राम गरौखी में श्रीपाल शास्त्री की पत्नी थी। आपको भी रानी राजेन्द्र कुमारी से प्रेरणा प्राप्त हुई और जब गांधी जी द्वारा सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया गया तो ये 1932 में गिरफ्तार कर ली गई इन्हे भारतीय दण्ड संहिता की ध ारा 143/128 के अर्न्तगत 6 माह कैद और पचास रूपये जुर्माने की सजा हुई।[51]

भगवती देवी शुक्ला और स्वाधीनता आन्दोलन–

भगवती देवी श्री शंभूनाथ शुक्ल जो हमीरपुर के पनवाड़ी मार्ग पर स्थित सैद पुर के निवासी थे उनकी पत्नी थी। शम्भूनाथ शुक्ल बचपन से ही राष्ट्रप्रेमी थे इनका जन्म 1960 वि0 सं0 को वैशाख में हुआ था। हमीरपुर के कुलपहाड़ कस्बे के प्रथम जत्थो में ये सत्याग्रही थे। इन्हे सन् 19'30,32,33 और 1941 में कृमशः 3,6,6,6 मास की सजाये और 25 रू0 जुर्माना हुआ था।[52] 1941 में आप प्रान्तीय कांगेस के सदस्य रहे झांसी जेल में सम्पूर्णानन्द जी ने आपको अनन्य शघन नाटक पढाया था। पू0 दीवान शत्रुघ्न सिंह के शुक्ला जी के आप अनन्य भक्त थे।

भगवती देवी शुक्ला को अपने पति से ही देश सेवा की प्रेरणा मिली थी रानी राजेन्द्रकुमारी के सम्पर्क में आकर उनमें देश सेवा की भावना और जाग्रत हो गई थी। इन्होनें रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ तीन बार जेल की यात्रा की और जेल में यातनायें सहीं।[53] इन्हे सन् 1932 ई0 में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 16 (1) के अर्न्तगत 6 माह की कैद और पचीस रूपये जुर्माने की सजा हुई। सन् 1933 में भी उक्त धाराओं के अर्न्तगत 6 माह की कैद व बीस रूपया जुर्माने की सजा मिली।[54] रानी राजेन्द्र कुमारी के गया अधिवेशन को छोडकर इन्होने प्रत्येक अधिवेशन में भाग लिया।इनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता।

श्रीमती शिवदेवी–

श्रीमती शिवदेवी भी फकीरे की पुत्री थी इनका जन्म 1906 में हुआ था। इन्होनें महात्मा गांधी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और इसका कारण सन् 1932 में 6 माह की कैद तथा पच्चीस रूपये जुर्माना हुआ।

श्रीमती यमुना और स्वतंत्रता आन्दोलन–

श्रीमती यमुना प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी श्री हरि भाई की पत्नी थी। श्री हरि भाई वर्मा का जन्म 1जुलाई 1909 में हुआ था। ये सन् 1928 ई0 में गांधी आश्रम में आये सन् 1930 में लगान बन्दी के कारण आपको 3 वर्ष की सजा हुई इन्होनें 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया था। इसके पश्चात् सन् 1942 के भारत छोडो आन्दोलन में दो वर्ष की सजा जेल में श्री हरिभाई ने काटी।[56] श्रीमती यमुना को भी अपने पति से प्रेरणा प्राप्त हुई और जब सन् 1930 में गांधी जी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाया तो श्रीमती यमुना देवी भी सत्याग्रह में कूद पडी और इन्हे 1932 के कांग्रेस आन्दोलन के सिलसिले में फौजदारी कानून संशोधन
अधिनियम की धारा 17 (1) और भारतीय दण्ड संहिता की धारा 143 के अर्न्तगत चौदह माह कैद और पन्द्रह रूपये जुर्माने की सजा सुनाई गई।[57]

इस प्रकार से यमुना देवी ने अपने पति श्री हरिभाई से प्रेरणा प्राप्त कर एवं रानी राजेन्द्र कुमारी का सानिध्य पाकर स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई। जब श्री हरिभाई जेल में थे तथी यमुना देवी का देहान्त हो गया।[58]

सुविधा देवी–

बुन्देलखण्ड के झांसी के पास ककरबई गांव में सुविधा देवी का जन्म 1908 में हुआ था। इनके पिता का नाम अयोध्या प्रसाद खरे था। इनका विवाह 14 वर्ष की उम्र में चरवा निवासी सुर्दशन भाई से शादी हो गई थी। पति के सम्पर्क में आकर इन्हें भी शौर्य की शिक्षा मिली।

सुदर्शन भाई बचपन से बडे निडर और साहसी थे। इन्होनें कुलपहाड मेरठ दिल्ली तथा बनारस के गांधी आश्रमों में शानदार सहयोग प्रदर्शन किया। सुदर्शन भाई ने बुन्देलखण्ड के प्रमुख पत्र केशरी के संचालन में केन्द्रीय भूमिका निभाई। सन् 1930 में जब सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था सुदर्शन भाई ने उसमें प्रमुख सहभागिता निभाई ये 14 मार्च 1933 को करगवां के एक मन्दिर में गिरफ्तार कर लिये गये इनका भारत छोडो आन्दोलन में भी अच्छा सहयोग रहा। सुविधा देवी में अपने पति से ही स्वतंत्रता आन्दोलन में सहभागी होने का प्रोत्साहन मिला। अंग्रेज सरकार ने सुविधा देवी को झण्डा सत्याग्रह के अन्तर्गत 1932 में गिरफ्तार कर लिया। इन्हे फौजदारी कानून अधिनियम धारा 17 (1) के अर्न्तगत तीन माह की सजा तथा दस रूपये का अर्थ दण्ड मिला।
सुविधा देवी को जब जेल की सजा हुई उस समय 6 माह का सुबोध चन्द्र बालक इनकी गोद में था। तब भी ये सहर्ष जेल गई। सुविधा देवी को स्वातंत्रता संघर्ष काल में रानी राजेन्द्र कुमारी कान्ती देवी रानी देवी का तथा सरजू देवी का सानीत्यव सहयोग मिला। ये अपने पति सुदर्शन भाई की तरह निर्भीव एंव साहसी थी। इन्होनें सविनय अवज्ञा आन्दोलन तथा भारत छोडो आन्दोलन में भाग लिया। इस वीर महिला की 1944 में मृत्यु हो गई।[59]

गायत्री देवी–

गायत्री देवी राठ से लगभग पन्द्रह किमी0 की दूरी पर जराखर नामक गांव के से पोड़ी दूर टोला रावत नामक गॉवं की जुझारू महिला थीं। जराखर उस समय स्वतंत्रता संग्राम का प्रमुख केन्द्र था। यहां पर कांग्रेस का विशाल सम्मेलन हुआ जिसमें बड़े से बड़े नेताओं का आगमन हुआ तथा लगभग तीन लाख की जनता एकत्र हुई यह सब देखाकर जरारवर की राजा बेटी शान्ति देवी और मगरॉठ की रानी राजेन्द्र कुमारी से गायत्री देवी के मन में स्वतंत्रता की भावना जाग्रत हुई और वह भी राष्ट्र प्रेमी बन गई।

गायत्री देवी ने सन् 1933 ई0 में झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लिया गया। गायत्री देवी को धारा16 (1) सी0एल0ए0 18 (1) प्रेस एक्ट के तहत 6,6 माह की कडी कैद की सजा दी गई तथा दस दस रूपये का जुर्माना भी दिया गया। अर्थदण्ड न दे पाने पर इन्होनें एक महीने की अतिरिक्त सजा भोगी। इस तरह गायत्री देवी का भी स्वतंत्रता संग्राम में सराहनीय सहयोग रहा।[60]

राष्ट्रीय सप्ताह और महिलायें (हमीरपुर)

सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अर्न्तगत राष्ट्रीय सप्ताह मनाया जाने लगा था। राष्ट्रीय सप्ताह जलियावाला बाग काण्ड के बाद 1920 से गांधी जी के आव्हान परदेश में प्रतिवर्ष 6 अप्रेल से 13 अप्रेल के मध्य में मनाया जाने लगा था। जलियां वाला बाग में भारत की निहत्थी जनता पर मशीन गनों की बौछार जनरल दायरे के नेतृत्व में अप्रेल सन् 1919 में की गई थी। जिसमें सैकडों नर नारी तथा बालक मृत हुये थे इससे महात्मा गांधी सहित समस्त राष्ट्र नेताविचलित हो उठे थे और समस्त देश में विक्षोभ की ज्वाला भमक उठी थी तभी से राष्ट्रीय सप्ताह आरम्भ हआ। इस दिन युवक संकल्प लेते थे कि जब तक हम देश को आजाद न कर लेगें तब तक चैन से नहीं बैठेगें।[61]सन् 1930 ई0 में यह सप्ताह स्वतंत्रता संग्राम के रूप में मनाया जाने लगा। इसी सप्ताह से सारे देश में नमक सत्याग्रह शुरू हुआ। महात्मा गांधी की डांडी यात्रा आरम्भ हुई और लाखों नर नारी जेल भेजे गये।।[62]

1932 ई0 में राष्ट्रीय सप्ताह के समय प्रायः सभी पुरूष कार्यकर्ता जेलों में बन्द हो चुके थे जो बचे थे वह भूमि सात होकर काम कर रहे थे।कांग्रेस को गैर कानूनी घोषित कर दिया था। 1932 में राष्ट्रीय सप्ताह मनाना एक दुष्कर कार्य हो गया था। लेकिन राष्ट्र के आव्हान पर हमारे देश की वीर महिलायें स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़ीं। अरूणा आसफ अली, पार्वती देवी, विद्यावती राठौर, सत्यवती राठौर तथा पूर्णिमा बनर्जी आदि ने राष्ट्रीय सप्ताह में कानून तोड़कर स्वतंत्रता की ज्योति को जलाये रखा।[63]

हमीरपुर जनपद के कांग्रेस कार्यालय पर पुलिस ने कब्जा कर लिया था कांग्रेसी जन गिरफ्तार कर लिये गये। ऐसे में यहां राष्ट्रीय सप्ताह मनाना मुश्किल था।

लेकिन यहां की दो वीर महिलाओं किशोरी देवी अरजरिया एवं रानी द्विवेदी तथा राठ की अन्य महिलाओं ने झण्डा फहराकर 1932 में राष्ट्रीय सप्ताह को मनाया तथा इस सप्ताह के अन्तर्गत उन्होने गांधी सन्देश को अन्य लोगों के समक्ष रखा।[64]

राष्ट्रीय सप्ताह के कारण जनपद की अनेक वीर महिलायें तथा इनके साथी गिरफ्तार कर लिये गये सभी को एक वर्ष की सजा तथा अर्थ दण्ड भी दिया गया।

धरने प्रदर्शन और महिलायें

गांधी जी के आवाहन पर जब देश में सविनय अवज्ञा आन्दोलन आरम्भ हुआ तो उसमें सारे देश की सहभागिता रही। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महात्मा गांधी ने कुछ कार्यक्रम निर्धारित किये थे जो कि इस प्रकार थे।

1. लोग गांव में नमक के कानून को तोड़े तथा नमक बनाये।
2. महिलायें शराब अफीम तथा विदेशी वस्त्रों की दुकानों पर धरना दे।
3. विद्यार्थी सरकारी स्कूल तथा कालेज छोड़ दें।
4. राजकीय कर्मचारी दफ्तरों को त्याग दें।
5. विदेशी वस्त्रों की होली जलायी जाये।
6. लोग सरकार को कर न दें।
7. जनता को चाहियें कि चरखा कातें और सूत एकत्र करें।

गांधी जी के इस आव्हान पर 6 अप्रेल को नमक कानून तोडा गया। नमक कानून के विरोध में सैकडो महिलायें घायल हुई । घुड़सवार पुलिस महिलाओं को कुचलती व उन पर डंडे बरसाती रही। धरना कार्यक्रम में अन्र्तगत महिलाओं ने विदेशी कपडे की दुकानों पर धरने दिये प्रत्येक प्रान्त में इन सभाओं जूलूसों और धरनों के लिये हजारों की संख्या में महिलायें घरो से बाहर आ गई और छात्रायें स्कूलों से बाहर। उस समय देश भर में अनेक सेविका संघ स्थापित हुए। जब पुरूष जेल गये तो महिलाओं ने अपनी संगठन शक्ति का परिचय दिया। जगह जगह पिकेटिंग बोर्ड बनाये गये इण्डियन बूमेन्स ऐसोसियेशन आल इंडिया वूमेन कांग्रेस आदि शाखाओं ने बहिस्कार व धरना विभाग बनाकर बड़े पैमाने पर इस आन्दोलन में भाग लिया।[66] इन महिलाओं ने म0प्र0 में जंगल कानून के खिलाफ सत्याग्रह किया जिसमें महिलाओं पर फायरिंग की गई जिसमें महिलायें मारी गई। यह सब अनाचार

और अत्याचार भी महिलाओं को हतोत्साहित नहीं कर सका और भारतीयसत्याग्रही महिलाओं ने स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु अधिक भागीदारी की इच्छा प्रकट की और बलिदान की इच्छा जाहिर की।[67]

इन सब महिलओं में अग्रणी भूमिका सरोजनी नायडू की रही। उ0प्र0 में इलाहाबाद में सरला भदौरिया, कमला नेहरू, उमा नेहरू विजय लक्ष्मी, पडित, इत्यादि महिलाओं ने प्रमुख भूमिका निभाई।[68] इसी श्रंखला में हमीरपुर जिले में रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में जिले की पैतालिस महिलाओं ने भाग लिया और गिरफ्तार हुई।उस समय स्त्रियों की यह संख्या प्रान्त के सभी जिलों से बडी थी।[69] इस धरना प्रदर्शन बहिस्कार झण्डा सत्याग्रह में हमीरपुर की 34 लिखित महिलाओं के अतिरिक्त निम्न अन्य महिलाओं ने भी अपना योगदान दिया।

श्रीमती रामप्यारी देवी और स्वतंत्रता आन्दोलन–

श्रीमती रामप्यारी बहुत ही गरीब परिवार की महिला थी और इनका सम्पूर्ण जीवन रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ करगंवा गांव में बीता। इनके पति श्री सुखलाल भाई पर दीवान साहब की विशेष कृपा रहती थी। लोग इस दम्पत्ति को पू0 दीवान साहब के परिवार का ही समझते थे। इन्होने राजनीति में सकृिय भाग लिया और रानी राजेन्द्र कुमारी के साथ अपना जीवन राष्ट्रीय सेवा में लगा दिया।[70]

श्रीमती उमा देवी–

जिला हमीरपुर के थाना मुस्करा के ग्राम बिहूनी खुर्द की श्रीमती उमादेवी ने 1932 मं कांगेस आन्दोलन के सिलसिलें में 55 आर्डिनेन्स 17 (1) क्रि0 ला0 एमिण्डमेण्ड एक्ट व 143 आई0 पी0सी0 के अर्न्तगत 17.11.1932 से 6 माह सख्त कैद व दस रूपये जुर्माने की सजा पाई थी। व 18.12.1932 में हमीरपुर जेल से फतेहगढ़ जेल स्थानान्तरित हुई।[71]

श्रीमती उर्मिला देवी–

श्रीमती उर्मिला देवी श्री लक्ष्मण प्रसाद की पत्नी इन्होनें सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लियां। और आन्दोलन के सिलसिलें में सन् 1933में धारा 143 के अर्न्तगत 1 वर्ष की कैद और पचास रू0 जुर्माना की सजा पाई।

तथा सन् 1933 में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 161 के अर्न्तगत 6 महीने की कैद और दस रूपये जुर्माने की सजा पाई।[72]

श्री मती कांन्ति देवी–

श्रीमती कांन्ती देवी जिला महोबा के थाना पनवाड़ी के ग्राम गौरहारी के श्री सरल सिंह की पत्नी थीं इन्होनें झण्डा सत्याग्रह धारना प्रर्दशन वहिस्कार आदि में भाग लिया अतः इन्हें सन् 1933 में भारतीय कानून संशोधन अधिनियम की धारा 17 (1) 18 (1) के अर्न्तगत 6 माह की कैद व पच्चीस रूपये जुर्माना हुआ और इस प्रकर से इन्हानें स्वतंत्रता आन्दोलन में अपना अमूल्य योगदान दिया।[73]

श्रीमती गंगा देवी–

यह हमीरपुर जिले के ग्राम गोहाण्ड की रहने वाली थी इन्हानें सविनय अवज्ञा आन्दोलन के अर्न्तगत 16 (1) (2) सी0एल0ए0 तथा 18 (1) प्रेस एक्ट में सन् 1933 में 6 माह की सजा पाई तथा दस रूपये इनकों अर्थ दण्ड हुआ।[74] इनके पति का नाम श्री उदय भान था।

श्रीमती गिरजा देवी–

श्रीमती गिरजा देवी जिला हमीरपुर के थाना जरिया के ग्राम अतरौली के श्री नत्थू लोधी की पत्नी थी। इन्होनें सन् 1932 में 55 आर्डिनेन्स की धारा 17 (1) में इल्जाम संख्या 143 आई0पी0सी0 के अर्न्तगत दिनांक 1611.1932 को 6 माह की कैद व दस रूपये जुर्माने की सजा मिली।[75]

श्रीमती गिरिजा देवी–

श्रीमती गिरजा देवी थाना मझगंवा के ग्राम टोलारावत के श्री भवानीदीन लोधाी की पत्नी थी। भ्वानीदीन ने सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया अपने पति से प्रेरणा प्राप्त कर अधिनियम की धारा 17 (1) के अर्न्तगत सन् 1932 में तीन महीने की कैद और दस रूपये जुर्माने की सजा हुई।[76]

श्रीमती गोमती–

श्रीमती गोमती देवी जिला हमीरपुर के थाना मझगवां के श्री गेदाराम की पत्नी थीं। इन्हें भी सन् 1933 की कांग्रेस आन्दोलन में भाग लेने के कारण 6 माह की कैद की सजा हुई।[77]

कु0 गोमती देवी

कु0 गोमती देवी का जन्म जिला हमीरपुर के ग्राम खोड़ा शिलाजीत में हुआ। इन्हाने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और सन् 1932 के फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 17 (1) के अन्तर्गत 6 माह की कैद और दस रूपये जुर्माने की सजा हुई।[78]

श्रीमती गोमती देवी–

श्रीमती गोमती देवी जिला हमीरपुर के थाना जरिया के ग्राम इटैलिया की निवासिनी थी अपने सन् 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और आन्दोलन में भाग लेने के कारण फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 17 (1) और 143 आई0पी0सी0 के अर्न्तगत चौदह माह की सजा तथा पन्द्रह रूपये जुर्माना हुआ।[79]

श्रीमती जानकी–

यह जिला हमीरपुर के थाना मुस्करा के ग्राम वण्डवा की रहने वाली थी इन्हाने भी 1932 के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया और सन् 1932 के कांग्रेस आन्दोलन के सिलसिलें फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 17 (1) के अन्तर्गत 6 माह कैद व दस रूपये जुर्माने की सजा हुई।[80]

श्रीमती जैकुमारी

श्रीमती जैकुमारी थाना जरिया के श्री रामप्रसाद की पुत्री थी इन्होंनें 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और आन्दोलन में भाग लेने के कारण फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 16 (1) के अर्न्तगत तीन माह कैद और दस रूपये जुर्माने की सजा हुई।[81]

श्रीमती धौरी–

श्रीमती धौरी जिला हमीरपुर के थाना मझगवां के श्री मारवन लोधी की पत्नी थी। इन्होनें सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और 1932 में आन्दोलन में भाग लेने के कारण फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 16 (1) के अर्न्तगत तीन माह कैद और दस रूपये जुर्माने की सजा हुई।

श्रीमती मनोरमा देवी–

श्रीमती मनोरमा देवी जिला महोबा के थाना महोबकण्ठ के

ग्राम कनकुंआ की निवासिनी थी इनके पति का नाम श्री पुन्नदेव शर्मा था। श्रीमती मनोरमा देवी ने सन् 1932 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और आन्दोलन में भाग लेने के कारण सन् 1932 में भारतीय दण्ड संहिता की धारा 188 (2) के अन्र्तगत तीन महीनें कैद और पच्चीस रूपये जुर्माने की सजा पाई। तथा सन् 1933 में 161 तथा 18 (1) व 143 आई0पी0सी0 में 1933 को 6 माह की कड़ी कैद व बीस रूपये जुर्माने की सजा श्रीमती मनोरमा देवी को हुई।[82]

श्रीमती मालती देवी–

श्रीमती मालती देवी श्री सूरज सिंह रवंगार की पत्नी थीं। श्री सूरज सिंह जिला महोबा के ग्राम गौरहारी के रहने वाले थे। श्रीमती मालिती देवी को सन् 1932 में फौजदारी कानून संशोधान अधिनियम की धारा 17 (1) के अन्र्तगत एक वर्ष की सजा सुनाई गई।[83]

श्रीमती रमानी देवी–

श्रीमती रमानी देवी थाना मुस्करा के श्री भीखा सिहं की पत्नी थीं। आपने सन् 1932 के सत्याग्रह में भाग लिया और भाग लेने के कारण 6 माह की कैद और दस रूपये जुर्माने की सजा हुई। इसके पश्चात् रमानी देवी ने पुनः सन् 1933 में कांग्रेस आन्दोलन में भाग लिया और आन्दोलन में भाग लेने के कारण श्रीमती रमानी देवी को एक वर्ष कैद और पच्चीस रूपये जुर्माना हुआ।[84]

श्रीमती राजा बेटी–

श्रीमती राजा बेटी जिला हमीरपरु के मझगंवा ग्राम की रहने वाली थीं। इनके पति श्री छोटे लाल थे इन्हें सन् 1932 में फौजदारी कानून संशोधान अधिनियम की धारा 17 (1) और भारतीय दण्ड संहिता की धारा 148 के अन्र्तगत 5.04.1932 को 6 माह सख्त कैद और दस रूपये जुर्माना किया गया।[85] कानून संशोधान अधिनियम की धारा 17 (1) औरभारतीय दण्ड संहित की धारा 143 के अन्र्तगत चौदह माह कैद और जुर्माने 15 रू की सजा हुई।[86]

श्रीमती भारत–

श्रीमती भारत श्री राम नाथ की पुत्री थीं। श्री राम नाथ जिला हमीरपुर के कुलपहाड के रहने वाले थे। कुलपहाड ने हमीरपुर

के स्वतंत्रता आन्दोलन में अपनी प्रमुख भूमिका निभाई। यहाँ पर देश के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानियों का जमावाडा रहा। श्रीमती भारत पर भी इन स्वतंत्रता सेनानियों का प्रभाव पडा। और वे भी स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़ी। जब गाँधीजी ने सत्याग्रह आन्दोलन चलाया तो श्रीमती भारत ने रानी राजेन्द्र कुमारी के सानिध्य में आकर सत्याग्रह में भाग लिया और सन् 1932 ई0 में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 16 (1) के अन्तर्गत तीन महीने कैद और दस रूपये जुर्माने की सजा पाई।[87]

श्रीमती भारती–

श्रीमती भारती उर्फ कसिया जिला महोबा के थाना पनवाडी के श्री मोतीलाल जी की पत्नी थी इन्होनं सन् 1933 के सत्याग्रह में भाग लिया और भारतीय दण्ड संहिता की धारा 143 के अन्तर्गत 6 माह कैद की सजा पाई।[88]

श्रीमती सैय्यद–

श्रीमती सैय्यद जिला हमीरपुर के राठ क्षेत्र के रहने वाले श्री मकबूल अहमद की पत्नी थी। आपने सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा 38 (4) के अन्तर्गत एक वर्ष की कैद और पचास रूपये जुर्माने की सजा पाई।[89]

श्रीमती रानी देवी–

श्रीमती रानी देवी थाना पनवाडी के ग्राम गौरहारी के श्री रामदुलारे की पत्नी थीं। इन्होनें सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और इस आन्दोलन के सिलसिलें में सन् 1932 में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 188 ताजीराते हिन्द व 16 किमिनल ला0 के अन्तर्गत 14.04.1932 को 6 माह कैद और पच्चीस रूपये इन्हें जुर्माना किया गया तथा उसी वर्ष भारतीय दण्ड संहिता की धारा 188/145 के अन्तर्गत 6 माह के लिये पुनः जेल भेज दिया गया।[90]

श्रीमती रानी देवी– श्रीमती रानी देवी महोबा के थाना पनवाडी ग्राम गौरहारी के श्री मातादीन की पत्नी थीं। रानी राजेन्द्रकुमारी के सानिध्य में आकर श्रीमती रानीदेवी ने सन् 1932 के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया।इस कारण 1932 में फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 188/145 16 (1) के अन्तर्गत इनको एक वर्ष की सजा हुई।[91]

उस समय इन महिलाओं के अतिरिक्त श्रीमती प्रेमवती, श्रीमती उमा देवी श्री मती शिवरानी, गंगादेवी, गोमती देवी, गौहाण्ड जै कुमारी मनोरमा, देवी, राजादेवी, रामादेवी, जयन्ती देवी अग्रवाल, सरला देवी पत्नी मण्टीलाल इत्यादि अनेक अन्य महिलाओं ने महात्मा गांधी के सविनय आन्दोलन मैं भाग लिया। गिरफ्तारी के लिये महिलाओं का स्वयं आगे आना भारतीय समाज जीवन की एक नई घटना थी। परम्परानुसार अभीतक स्त्रियां घर के अन्दर ही रहती थी और इक्का दुक्का शिक्षित व सम्पन्न घरों की महिलायें ही समाज कार्य के क्षेत्र में उतरती थी पर 1930 .31.32 34 के आन्दोलन में इतनी बडी संख्या में महिलाओं का बाहर आकर पुरूषों के साथ कंधे से कंधा भिडाते हुये कार्य करना, आन्दोलन में भाग लेना व जेल जाना सचमुच नई घटना थी। 1930,31 के आन्दोलन से अधिक 1932–34 के आन्दोलन में महिलायें बाहर दिखाई दी।[92] इन महिलाओं ने देश की आजादी के लिये क्या क्या नहीं झेला। इन्हें आर्थिक कष्ट झेलना पड़ा, अपने प्रियजनों का विद्रोह सहना पडा, इनकी अस्मिता पर हमले हुये, इनकों कितना शरीरिक और मानसिक कष्ट हुआ लेकिन उन महिलाओं ने उफ भी नहीं की। इसी प्रकार महिला बंदियों को भी कुछ अपवाद छोडकर प्रायः पतित स्त्रियोंऔर अपराधी स्त्रियों के साथ गंदी व भयावनी जगह में कैद कर दिया जाता था। श्री जवाहर लाल नेहरू ने लिखा"कि एक बार मुझे एक बैरक ने रखा गया जिसकी बगल में महिलाओं की बैरक थी और बीच में केवल एक दीवाल वह दीवार ऊँची होने के वाबजूद मुझे वे गंदी गंदी बातें और गालियां साफ सुनाई पडती थी। जो कैदी नम्बरदारिनी के मुंह से हमारी बहनों को सुननी पडती थी। यह स्थिति पूरे भारत में वर्ष के प्रत्येक जिले की थी"।[93]

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और बाँदा जनपद–

सन् 1929 ई0 में रावी नदी के तट पर लाहौर कांग्रेस में नेहरू की घोषणा कि पूर्ण स्वराज्य हमारा लक्ष्य है के लिये यह जनपद पं0 लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री , कुंवर हरप्रसाद सिंह तथा चौधरी चन्द्रभूषण सिहं के नेत्रत्व में आन्दोलन के लिये यह जनपद पूर्ण तत्पर हो चुका था । नमक सत्यसग्रह की तैयारियां 1930 ई0 के जनवरी माह से ही हो रही थी । इन तैयारियों में लाला रामचन्द्र , मिथला शरण , मास्टर नारायण प्रसाद , कु0 हरप्रसाद सिंह , बद्री प्रसाद गुप्त नरैनी , जगन्नाथ , करवरिया , रामबहोरी करवरिया, दुर्गाप्रसाद, हीरालाल , पं0

लक्ष्मी नारायण अग्निहोत्री के नेतृत्व में बाँदा जनपद के गाँव गाँव को नमक सत्याग्रह , विदेशी वस्त्र बहिस्कार , शराब बन्दी और विदेशी शक्कर के बहिस्कार का प्रचार कर रहें थे इन दिनों के प्रमाणिक विवरण सत्याग्रही पत्र की प्रतियों में और गुप्तचर विभाग के निजी डायरियों में उपलब्ध है । 94

गाँधी के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में न केवल भारतीय महिला कों नई जिन्दगी मिली बल्कि दुनिया के अन्य कई देशों की महिलाओं को अपने जीवन में एक नया अर्थ ढूंढने का अवसर प्राप्त हुआ । इस सविनय अवज्ञा आन्दोलन में एक करोड़ पति घर की अति शिक्षित महिला भी थी तो दूसरी ओर गरीब अभावग्रस्त , अनपढ् मजदूर और किसानों की औरतें भी थी । इस सविनय अवज्ञा आन्दोलन में महिलायें लाखों की संख्या में शामिल हुई । लाठी गोली झेंलने के लिये व लालायित हो उठी । 95 इसी क्रम में बाँदा जनपद की महिलाओं ने भी सविनय अवज्ञा आन्दोलन में खुलकर भाग लिया यहाँ पर जिन महिलाओं ने भाग लिया वे निम्नलिखित है

श्रीमती अनुसुइया–

श्रीमती अनुसूइया का जन्म 1980 ई0 मं बबेरू बांदा में हुआ। जब सन् 1920 ई0 मं महात्मा गांधी द्वारा असहयोग आन्दोलन शुरू किया गया तो उसमें श्रीमती अनुसुइया ने भी भाग लिया और इस आन्दोलन में भाग लेने के कारण श्रीमती अनुसुइया को 6 महीने की सजा हुई। वे सारे जीवन राष्ट्रीय सेवा में रही। इस महान महिला का निधन सन् 1930 ई0 में हो गया।

श्रीमती गोदिन शर्मा और स्वतंत्रता आन्दोलन

श्रीमती गोदिन शर्मा बांदा के कर्वी जनपद की रहने वाली थी। इन्होनें बांदा जनपद में जब नमक सत्याग्रह हुआ तो यह भी नमक सत्याग्रह में शामिल हुई इन्होनें बांदा की श्रीमती गुलमारी के साथ मिलकर विदेशी कपडों की दुकानों पर धरना दिया व शराब बन्दी का मौन संकेत दिया। इस संदर्भ में इनकों गिरफ्तार कर लिया गया और 100 रू0 जुर्माना कर दिया गया। 1932 में जब व्यक्तिगत आन्दोलन सत्याग्रह चला। तो श्रीमती शर्मा ने भी उसमें बढ़चढ़कर भाग लिया और भाग लेने के कारण 13 फरवरी 1932 को फौजदारी कानून संशोधन अधिनियम की धारा 17 (1) के अनर्तगत 6 माह की कैद और 50 रू0 जुर्माना हुआ। सन् 1942

में जब व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन चला तो श्रीमती गोदिन शर्माने पुनः इसमें भाग लिया और उन्हं व माह की कैद तथा 7 जनवरी 1941 को आई0 पीस0 में 38 (अ) 05 के अर्न्तगत 15 माह की कैद हुई।[96]

इस प्रकार से हम देखते है कि श्रीमती गोदिन शर्मा पूर्णतया राष्ट्र के प्रति सर्मपित रहीं और उन्होनें अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र की सेवा में लगा दिया।

श्रीमती कमला देवी और स्वातंत्रता समर–

श्रीमती कमला देवी श्री महादेव प्रसाद की पत्नी थी इनका जन्म 1916 ई0 में बांदा में हुआ। ये पूर्णतया देश के लिये समर्पित महिला थी। तथा 19'16 में चलायें होमरूल आन्दोलन से प्रभाविात हुई इन्हानें महात्मा गांधी के द्वारा चलाये गये सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया और भाग लिये जाने के कारण इन्हे विट्रश सरकार ने गिरफ्तार कर जेल भेज दिया विट्रिश सरकार ने श्रीमती कमला देवी पर तीन माह की सजा तथा 50 रू0 जुर्माना हुआ। इस प्रकार से श्रीमती कमला देवी का सम्पूर्ण जीवन देश से वा में बीता। इनके पति श्री महादेव प्रसाद भी एक प्रसिद्ध क्रान्तिकर्मी थें और उन्हानें सन् 1930 से 1932 तक महात्मा गांधी जी के आदेषो पर कांग्रेस में आन्दोलन चल रहे थे इसमें ये क्रांतिकारी योजनाओं को आगे बढाते रहे।[97]

श्रीमती गुलयारी–

श्रीमती गुलयारी बांदा जनपद की निवासिनी थी। इनके हृदय में बचपन से ही राष्ट्रनुराग प्रवाहित था। यद्यपि ये अधिक पढी लिखी नहीं थी। फिर भी उनके मन में देश को स्वतंत्र कराने की तीव्र इच्छा थी इन्हानें गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया भाग लेने के कारण श्रीमती गुलयारी को छः माह की कैद हुई। आजीवन स्वतंत्रता संघार्ष में अपना योगदान प्रस्तुत करते हुये सन् 1930 में श्रीमती गुलयारी पंचत्व को सिधार गई।[98]

श्रीमती पार्वती देवी–

श्रीमती पार्वती देवी बांदा के बन्योटा माहल्ले के रहने वाले श्री जगन्नाथ प्रसाद की पत्नी थी। बांदा जनपद की स्वतंत्रता आन्दोलन में प्रमुख भूमिका रही। यहां पर पुरूषो के साथ महिलाआं ने भी स्वतंत्रता आन्दोलन में कंधे से कंधा लडाकर संघार्ष किया।

सन् 1930 में महात्मा गाँधी द्वारा चलाये गये सत्याग्रह अभियान में पार्वती देवी ने वहिष्कार झण्डा सत्याग्रह में प्रमुख भूमिका निभाई इनके साथ इनके पति जगन्नाथ भी जेल गयें। 22 मार्च 1932 को जाब्ता फौजदारी कानून की धारा 188 के अन्र्तगत 3 माह की कैद तथा 30 रू0 जुर्माने की सजा हुई। श्रीमती पार्वती देवी को जुर्माना अदा करने के बाद रिहाकर दिया गया।[99]इस प्रकार से इस सविनय अवज्ञा आन्दोलन में बांदा जनपद की महिलाओं ने बढचढ कर आन्दोलन में हिस्सा लिया। स्वभाव से कोमल महिलाओं को इस भीषण संग्राम से दूर रखने का काफी प्रयास हुआ लेकिन सब तरह की यन्त्रणायें सहने के लिये सिद्ध हस्त थीं।[100] बडी सुबह से जूलूस निकाल कर सूरज की पहली किरण के साथ आजादी का संदेश इन महिलाअें ने घर घर पहुंचाया। गुप्त रूप से परचे छापना और बांटना आदि सब काम इन महिलाओं के द्वारा किया गया। इन महिलाओं नें लाठी गोली के साथ साथ जेल का भी सामना किया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और जबलपुर–

26 जनवरी 1930 में जबलपुर ये जंगल सत्याग्रह और नमक सत्याग्रह की धूम रही 26 जनवरी 1930 के दिन पूर्ण स्वतंत्रता दिवस मनाने के बाद सारे देश ने महात्मा गांधी को सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने के सम्पूर्ण अधिकार सौंपा। 2 मार्च को वायसराय के नाम एक ऐतिहासिक पत्र लिखा जिसमें नमक कानून भंग करने के अपने भावी कार्यक्रम की जानकारी देते हुये सत्याग्रह न करने के लिये सरकार के समक्ष ग्यारह शर्ते भी रखी थी। सरकार ने इन शर्तो को मानने से इन्कार कर दिया और उल्टे इसी समय शासन ने नमक पर टैक्स बढा दिया। गांधी जी ने इस टैक्स के विरोध के माध्यम से आन्दोलन करने का निष्चय किया। यह तय किया गया कि देशवासी स्वयं नमक बनाकर कानून तोडे तथा शासन का विरोध करें। तब गांधी जी ने कानून तोडना तय किया और इसके लिये दांडी नामक ग्राम को चुना।

12 मार्च 1930 को गांधी जी ने आश्रम के 78 सदस्यों को साथ लेकर साबर मती से दांडी तक की ऐतिहासिक यात्रा प्रारम्भ की और 24 दिन तक पैदल सडकों गांवों और कस्बों में से होकर ये जहां कहीं भी गये लोगों ने झण्डों फूलों और मालाओं से उनका अभिवादन किया।[101]

6 अप्रेल 1930 को गांधी जी ने नमक कानून तोडकर सविनय अवज्ञा आन्दोलन कोप्रारम्भ किया 14 मई 1930 को अर्धरात्रि में गांधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया और पूना की यवर्दा जेल में भेज दिया। इस नमक कनून में करीब साठ हजार सत्याग्रही पकडकर जेल भेज दिये गये। [102] 6 अप्रेल 1930 को जबलपुर से सेठ गोविन्दास तथा पं0 द्वारका प्रसाद मिश्र के नेतृत्व में 25 किलोमीटर पर स्थित वीरांगना महारानी दुर्गावती की समाधि पर शपथ लेने एक विशाल जूलूस के साथ गये ये गीत गा रहे थे–

''रण मेरी बस चुकी वीर वर पहिनों केसरिया वाना।''

इसे गाते हुये दुर्गावती की समाधि पर पहुंचे। इस जूलूस में जबकि जबलपुर के सर्वश्री सेठ गोविन्दास पं0 द्वारिका प्रसाद मिश्र पं0 माखन लाल चर्तुवेदी विष्णुदयाल भार्गव ब्योहार राजेन्द्र सिहं कटनी के श्री गोविन्द प्रसाद खम्बरिया, चौधरी वनवारी लाल राम सूरज प्रसाद शर्मा इत्यादि अपने अपने क्षेत्र के डिक्टेटरों सहित हजारों की संख्या में थे।[103]

8 अप्रेल 1930 को तिलक भूमि तलैया जबलपुर में सेठ गोविन्दास ने एक तोला नमक बना कानून तोडकर महाकौशल में आन्दोलन का भी गणेश किया। यह नमक वावन रूपये में सभा स्थल पर ही नालाम कर दिया गया तथा अन्य बनाये नमक के एक एक पेकेट लोगों ने पांच पांच रूपये में खरीदा।[104]

20 अप्रेल 1930 को जबलपुर में एक विराट सभा का आयोजन हुआ जिसमें पं0 रविशंकर शुक्ल ने भी भाग लिया 29 अप्रेल को जबलपुर में सेठ गोविन्ददास पं0 रविशंकर शुक्ल पं0 द्वारिका प्रसाद मिश्र, श्रीमती सुमद्रा कुमारी चौहान पं0 माखन लाल चर्तुवेदी ने अपनी गिरफ्तारियां दी।

नमक कानून और महिला स्वतंत्रता सेनानी–

मध्य प्रान्त में जहां पुरूषों ने उठकर मोर्चा संभाल रखा था, वहीं समाज के प्रमुख आधार शिला परिवार की प्रथम आवश्यकता, देवी के रूप में पूजी जाने वाली महिलायें भी इस आन्दोलन मैं पीछे नहीं रही। सर्व प्रथम 21 अप्रेल को दुर्गावाई जोशी के नेतृत्व में महिला स्वयं से विकाओं ने नमक कानून की अवहेलना की । इन्होनें न केवल नमक कानून भंग किये अपितु वन विद्यानों को तोडते हुये सैकडों महिलायें स्वतंत्रता के पथ पर निकल पडी और

गली गली में प्रभत फेरियां जुलूस निकालकर स्कूलों कालेजों विधान परिषदों में छात्रों एवं आम सदस्यों को जाने से रोकने के लिये धरना देने लगी।[105]महिलाओं का अदम्भ उत्साह वीरता व सक्रियता देखाकर तो गांधी जी ने यहां तक कहा **''कि जब तक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास लिखा जायेगा। तब निःसन्देह भारतीय महिलाओं द्वारा किये गये त्याग को उच्चतम स्थान प्राप्त होगा''।**

श्रीमती प्यारी बाई ठकुराइन और जंगल सत्याग्रह—

श्रीमती प्यारीबाई ठकुराइन अगासौद जबलपुर के पाटन तहसील के अगासौद नामक स्थान की रहने वाली थी। सन् 1930 में जबकि महात्मा गांधी के नेतृत्व में नमक सत्याग्रह और जंगल सत्याग्रह की धूम मची थी। पाटन शहपुरा और कटंगी में सरे आम भट्ठियो पर नमक मिश्रित घोल चढ़ा कर नमक बनाने का जंगल का उपकम चल पडा था। श्रीमती प्यारी बाई ठकुराइन ने भी जंगल सत्याग्रह में भाग लिया और राष्ट्रीय तिरंगा झंडा लेकर तथा गांधी जी की जय के नारे लगाते हुये कुल्हाडियां लेकर जंगल की ओर चल दी इन्हाने पाटन के श्री बद्रीप्रसाद पाठक फूलचन्द जैन रामगोपाल दुबे के साथ जंगल कानून मंगकर सरकार के नियमों की अवहेलना की विट्रिश पुलिस द्वारा इन्हे गिरफ्तार कर लिया गया और 1 वर्ष 4 माह के कारावास की सजा सुनाई गई। सन् 1942 ई0 में जब भारत छोडो आन्दोलन छिडा तो प्यारीबाई ने पुनः भारत छोडो आन्दोलन में भाग लिया और विट्रिश सरकार द्वारा गिरफ्तार की गई। श्रीमती प्यारीबाई ने स्वयं अनेक कष्टो को सहते हुये जबलपुर क्षेत्र के महिला वर्ग में राष्ट्रीय चेतना जाग्रत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथ एक नई प्रेरण दी।[106]

श्रीमती कमला देवी और सविनय अवज्ञा आन्दोलन—

श्रीमती कमला देवी गुप्ता जबलपुर के कटनी क्षेत्र की निवासिनी थी इनका जन्म सन् 1916 ई0 में हुआ ये कटनी के सावरकर वार्ड के निवासी श्री छदामी लाल की पत्नी थी। जब सन 1930 ई0 में कटनी में जंगल सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया तब उसमें छदामी लाल जी भी शामिल हुये। उन्होनें रात्रि में गैस बत्ती जलाकर जंगल कानून तोडा पुलिस ने इनकी कुल्हाडी जब्त कर ली। श्री छदामी लाल की प्रेरणा से श्रीमती कमला देवी भी स्वतंत्रता आन्दोलन

में कूद पडीं और इन्होनें सन 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेते हुये लगान बन्दी आन्दोलन में अपने पति के साथ गिरफ्तार कर ली गई और इन्हें 15.04.1932 से 11.12.1932 कुल 6 मास की कारावास की सजा सुनाई गई ।107

श्रीमती केतकी बाई और सविनय अवज्ञा आन्दोलन–

श्रीमती केतकी बाई जबलपुर के एक छोटेसे गांव रिछई की रहने वाली थी। आपने सन् 1930 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लिया और शासन द्वारा गिरफ्तार कर ली गई इन्हे नमक आन्दोलन में भाग लेने के कारण 9 दिन के कारावास की सजा सुनाई गई ।108

श्रीमती प्रभावती नामदेव और सविनय अवज्ञा आन्दोलन–

श्रीमती प्रभावती नामदेव जबलपुर की रहने वाली थी। इन्होनें सन् 1932 के लगान बन्दी आन्दोलन में जबकि गांधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा जनता अनेक प्रकार से सरकार के कानून का उल्लंघन कर रही थी। वह भी अहिंसात्मक साधन द्वारा, जबलपुर में यह आन्दोलन सेठ गोविन्दास पं0 द्वारिका प्रसाद मिश्र और ठाकुर लक्ष्मण सिंह द्वारा 1932 में तिलक भूमि तलैया पर मौन किन्तु अहिंसक एक ऐतिहासिक सभा का आयोजन किया गया था। [109]तब भी श्रीमती प्रभावती नामदेव को आपत्तिजनक भाषण देने तथा महिलाओं को भाग लेने के लिये प्रेरित करने के कारण 2 अप्रेल 1932 को पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया जिससे इन्हें कारावास की सजा सुनाई गई। जेल में अकथनीय कष्ट सहने के बावजूद भी इनका उत्साह कम नहीं हुआ वह बढ़ता ही गया। इस प्रकार से प्रभावती नामदेवी ने अपना अमूल्य योगदान दिया।[110]

श्रीमती सुन्दरबाई और सविनय अवज्ञा आन्दोलन–

श्रीमती सुन्दर बाई जिला जबलपुर के सिहोरा तहसील के जुनवानी नामक ग्राम की निवासी थी इनके पति का नाम श्री कांद्दा प्रसाद था। जब सन् 1930 में सिहोरा तहसील में जंगल सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ तब जंगल सत्याग्रह की घोषणा ने गांव गांव में प्रत्येक नागरिक के घर में स्वतंत्रता की अलख जगा दी। और उन्होनें कुल्हाडी हाथ में लेकर बनों की कटाई करके तथा जंगल कानून भंगकर सत्याग्रह में शामिल हाने की घोषणा की। तब

श्रीमती सुन्दर बाई ने भी सत्याग्रह में शामिल होकर अपनी गिरफ्तारी दी इन्हें 16.08.30 तक की जेल की सजा सुनाई गई और 25 रू0 जुर्माना कर दिया गया।[111]

इसके अतिरिक्त जबलपुर की अन्य महिला स्वतंत्रता सेनापतियों में रिवझा की श्रीमती गोपीबाई कनैजिया ,केदारिन बाई, श्रीमती सत्यवती अवस्थी, श्रीमती मिसाराइन इत्यादि ने भाग लिया और सिलौडी की महिला स्वतंत्रता सेनानियों का तो। उत्साह देखाते ही बनता था जबकि सिलौडी में मार्शल ला लगा दिया था और पुलिस अधिकारी ठाकुर छतरसिंह जब सिलाडी से सिहोरावापस लौटते समय सरौली मझगंवा में जाकर भूरेपाल पाठक के घरजाकर मारपीट करने लगे तब प्रतिकार स्वरूप उनकी नौकरानी (गुबरहारी) लेची बाई उर्फ पंखी बाई कौलिन बांस लेकर ठाकुर छतरसिंह पर झपट पडी और उसे चोटिल कर दिया।[112] जब त्रिपुरी में कांग्रेस का अधिवेशन नर्मदा के तट पर हुआ तो उसमें तीन हजार पुरूषों के साथ दो सौ पचपन महिलायें शामिल हुई।[113]श्रीमती गोपीबाई लाल सिहं कनौजिया की पत्नी थी इनका जन्म 1908 में हुआ था जब 1930 में सिहोरा में जंगल सत्याग्रह तथा सविनय अवज्ञा आन्दोलन हुआ तो श्रीमती गोपीबाई ने उसमें भाग लिया तथा पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर ली गई। उन्हें 16.08.30 से 3.12.30 तक का 4 महीने के कारावास की सजा सुनाई गई।[114]

श्रीमती नीलीबाई और सविनय अवज्ञा आन्दोलन–

श्रीमती नीलीबाई मिश्रा श्री गौरीशंकर मिश्रा की पुत्री थीं। इन्हानें सन् 1918उई0 में जबलपुर में जन्म लिया। इन्होंने सन् 1932 के लगान विरोधी आन्दोलन में भाग लिया जिसके कारण विट्रिश सरकार द्वारा उन्हे गिरफ्तार कर लिया गया।सन् 1932 में इन्हें 6 माह के कारावास की सजा सुनाई गयी।[115]

सन् 1942 में जब भारत छोडो आन्दोलन प्रारम्भ किया गया और महात्मा गांधी द्वारा करो या मरो का नारा दिया गया तब नीलीबाई ने अपनी वीरता का परिचय देते हुये भारत छोडो आन्दोलन में भाग लिया और जिला कार्यालय जबलपुर में झण्डा फहराया जिसके लिये उन्हे धारा 129 (1) अ डी0आर0आई0के अर्न्तगत 1.09.43 से 19.02.43तक जेल की सजा सुनाई गई। फिर भी जेल से रिहा होने के पश्चात भी ये स्वतंत्रता आन्दोलन में निरन्तर योगदान देती रहीं।[116]

सागर जनपद का स्वतंत्रता आन्दोलन में योगदान–

सागर जनपद में सामूहिक सविनय अवज्ञा की तैयारी की दृष्टि से सन् 1929 महत्वपूर्ण वर्ष था। इसका उदगम 6 अप्रेल को नमक कानून भंग करने के लिये महात्मा गांधी जी की ऐतिहासिक डांडी यात्रा से हुआ था सामूहिक बैठकों में नमक कानून भंग करने के अलावा मध्य प्रान्त में जंगल सत्याग्रह नामक एक नया आन्दोलन प्रारम्भ किया गया। जंगल सत्याग्रह सागर जिले में शीघ्र ही गतिशील हो गया। इस आन्दोलन के अन्तर्गत जंगल सम्बन्धी कानूनों का जिन्हें अन्याय पूर्ण समझा गया था, संगठित रूप से भंग किया जाना शामिल था इस आन्दोलन को सागर जिले में विशेष रूप से रमना, राहतगढ और खुरई में बहुत शक्तिशाली रूप में चलाया गया। शासन ने भी दमन कार्य और सामूहिक रूप से गिरफ्तारियां प्रारम्भ कर दी। इस आन्दोलन में विद्यार्थियों को भाग लेने से रोकने के लिये अभित्रास निरोध अध्यादेश लागू किया गया। वहां के जंगल सत्याग्रह में महिलाओं ने भी बडी संख्या में भाग लिया।[117] जंगल सत्याग्र में जिन महिलाओं ने भाग लिया वे निम्नलिखित थीं।

श्रीमती यमुना बाई और जंगल सत्याग्रह सविनय अवज्ञा आन्दोलन–

यमुना बाई ने अपने स्नेहमय वात्सल्य से सागर नाम की इस नन्ही सी गागर को सचमुच शौर्य का सागर बना दिया था। वह निश्चित ही शौर्य के सूरज की बेटी थीं। उनका कर्मठ और शौर्यमय जीवन पुकार पुकार कर कहता था कि मैं सूर्य पुत्री हूँ।[118]यमुना बाई का जन्म 1914 में सागर में हुआ। उस समय जबकि स्त्रियों का बाहर निकलना भी दुष्कर कार्य समझा जाता था श्रीमती यमुना बाई ने शिक्षा मैट्रिक तक सागर में ही ग्रहण की। समय आने पर आपका विवाह भी राम किशन राव से कर दिया गया। लेकिन विधि को उनका हंसी खुशी जीवन जीना भी मंजूर नहीं हुआ।वे अल्पकाल में ही बाल विधवा हो गयी। लेकिन बालविधवा के रूप में वे देश की उन अग्रगण्य शौर्यमयी नारियों में एक पूज्य देवी तुल्य हुई जिन्होनें नारी जागरण शिक्षा प्रचार और देश सेवा का व्रत लेकर केवल सागर ही नहीं अपितु सारे प्रदेश में और देश में

गौरवमय स्थान अर्जित किया। जिस समय इन्होनें आन्दोलन में भाग लिया उस समय सागर जनपद में श्री रज्जब, श्री रघुनाथ प्रसाद श्री बल्देव तथा तपस्वी खाडेंकर जैसे देश सेवक प्रमुख रूप से आन्दोलन में भाग ले रहे थे।श्रीमती यमुना बाई ने भी इन्ही लोगों की प्रमुख सहयोगी बनकर देश सेवा का व्रत लिया और सागर जनपद को गौरवान्वित किया।[119]

श्रीमती यमुना बाई ने सर्वप्रथम जब महात्मा गांधी के द्वारा 1921 ई0 में असहयोग आन्दोलन चलाया गया तो उसमें सागर जनपद की अन्य महिलाअं के साथ असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। सन् 1931–32 में चलायें गये जंगल सत्याग्रह मं इन्होने बहिष्कार तथा प्रर्दशन के द्वारा सत्याग्रह को आगे बढाया सरकार द्वारा ताई को गिरफ्तार कर लिया गया। फिर भी यमुना बाई का जन्म तो देश सेवा के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर करने के लिये हुआ था।उन्होनें सन् 1942 में चलायें गये भारत छोडो आन्दोलन मैं भाग लिया।[120] पुलिस द्वारा इन महिलाओं पर अनेक प्रकार से दुव्यर्वहार किया गया। और यमुनाबाई को छः मास का कारावास दे दिया। जेल से छूटने के बाद भी यमुनाबई ने अपना संघार्ष जारी रखा। और महिला विकास समाज सेवा के क्षेत्र में भी अग्रणी भूमिका निभाई उन्हानें महिला महाविद्यालय सागर की स्थापना की । सागर महाविद्यालय सागर नगर के शैक्षणिक और सांस्कृतिक अभ्युत्थान की साधनामयी यज्ञस्थली है। इस संस्था ने नारी जागरण का मंत्र जगाया। और सहस्त्रों वालकाआं को देश सेवा के मंत्र से दीक्षित कर शौर्यमयी बनाया। 1942 के आन्दोलन में इस विद्यालय की समस्त छात्राओं और बालिकाओं ने तथा अध्यापकों ने समस्त जिले के जागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया। और यमुनाबाई के नेतृत्व में विद्यालय की समस्त छात्राओं ने समस्त जिले के जागरण मे महत्वपूर्ण योगदान दिया।सम्पूर्ण नेताओं की गिरफ्तारी के बाद यमुनाबाई सागर जिले की डिक्टेटर नियुक्त की गई उन्होनें नौ अगस्त के बाद जिले की क्रांन्ति का नेतृत्व संभाला और गिरफ्तार हो गई। जेल में अनेक बार गिरफ्तारी देते हुये वे कैंसर जैसी असाध्य बीमारी का शिकार हो गई और लगभग एक वर्ष बाद रिहा की गई। उनका शरीर अत्यन्त जर्जर हो गया था। मुक्त होने के दस बारह दिन के पश्चात ही उनका शरीरान्त हो गया।

उनकी शहादत सागर के स्वाधीनता संग्राम की गौरवमयी घटना है। उनकी स्मृति के चरणों में शत्‌शत्‌ प्रणाम।[121]

श्रीमती कमलाबई और सविनय अवज्ञा आन्दोलन–

श्रीमती कमलाबई सागर जनपद में गुजराती बाजार में रहनेवाले भ्रीमगन भाई की पत्नी थी। सन्‌ 1932 ई0 में जब कि सविनय अवज्ञा आन्दोलन महात्मा गांधी जी के नेतृत्व में चलाया गया तो श्रीमती कमला बाई ने भी जिले के लोगो के साथ आन्दोलन में उत्साह पूर्वक भाग लिया। उस समय स्थान स्थान पर पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया । सरकार द्वारा आन्दोलन के दबाने की जी तोड कोशिश की गई और कमलाबाई को गिरफ्तार कर कारावास में डाल दिया गया। वे सन्‌ 1932 में 29 फरवरी से 24 मई तक कारावास में रहीं लेकिन इसके बाबजूद भी कमला बाई का उस्तसाह कम नहीं हुआ उनका स्वतंत्रता आन्दोलनमें महत्वपूर्ण योगदान को भुलाया नहीं जा सकता ।[122]

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में सागर जनपद–

सन्‌ 1932 के सविनय अवज्ञा आन्दोलन में जिले के लोगो ने भारी संख्या में उत्साह पूर्वक भाग लिया स्थान स्थान पर पुलिस ने लाठी चार्ज किया ।आन्दोलन को दबाने की कोशिश की तथा अनेक लोगों की कारावास में डाल दिया। सन्‌ 1934 के प्रसिद्ध हरिजन दौरे के सिलसिले में गाधी जी ने 1 दिसम्बर से सागर जिले का दौरा किया। सबसे पहले वे देवारी पधारे जहां आस पास की जनता ने पहुंचकर उनका स्वागत किया। गांधी जी ने नगर के सुप्रसिद्ध मुरलीधर मन्दिर के कपाट खोलें तथा महती सभा को संबोधित कर रात्रि विश्राम किया। महात्मा गांधी जी की इस यात्रा ने सागर जिले के हृदय में स्वतंत्रता प्राप्ति के लिये नया जोश भर दिया जिसका परिणाम हम 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह और 1942 के भारत छोडो आन्दोलन में देखते है। यहँासविनय अवज्ञा आन्दोलन में भाग लेने वाले लोगों में स्वामी कृष्णानन्द हरगोविन्द हरीसिंह गणेश प्रसाद, दुर्गाप्रसाद सेन इत्यादि प्रमुख सत्याग्रही थे। [123]

महात्मा गांधी की गिरफ्तारी तथा बुन्देलखण्डी जनता की प्रतिक्रिया–

4 मई 1930 को गांधी जी गिरफ्तार कर लिये गये इसके

विरोध में समस्त भारत में हडताल हुई। सत्याग्रह चलता रहा समस्त देश के साथ साथ बुन्देलखण्ड में भी गांधी जी की गिरफ्तारी पर व्यापक प्रतिकिया हुई हडतालें की गई तथा बाजार आदि व्यापारिक प्रतिष्ठान बन्द एवं सर्वजनिक हडताल की गई यह हडताल इतनी अभूतपूर्व थी कि लोग एवं विशेष रूप से पुलिस एवं सरकारी अमला दैनिक उपभोग की वस्तुओं के लिये तरस गया। तत्काल अनेक अध्यापको एवं मुखियाओं ने इस्तीफा देने की घोषणा की।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन की समाप्तिः-

सन् 1930 में कांग्रेस आक्रामक स्थिति में थी अब उसे सुरक्षात्मक स्थिति अपनानी पड रही थी। 1932-33 में दमनकारी आन्दोलन चलाया गया जो कि 1930-32 के स्तर से भी आगे बढ गया था। पहले चार महीनों में 80,000 लोगों को गिरफ्तार किया गया। पन्द्रह महीने बाद अर्थात मार्च 1933 तक कुल 120,000 लोग गिरफ्तार किये जा चुके थे। सरकार आन्दोलन को दबा देना चाहती थी लेकिन आन्दोलन इतना मजबूत था कि 19 महीने तक चला। लडाई बहुत कठिन थी अवैद्यता और हिंसापूर्ण दमन की स्थिति नेतृत्व के लिये अत्यन्त कठिन थी गांधी जी के कुछ कार्यो से उनकी कठिनाई और भी बढ गई।[124]

सन् 1932 में गांधी जी ने राष्ट्रीय आन्दोलन का परित्याग कर दिया और समाज सुधार के कार्यो में संलग्न हो गये। उन्होने सितम्बर में आमरण अनशन किया जो कि दलित वर्गों को प्रथक प्रति निधित्व दिये जाने की योजना को रोकने के लिये किया गया था। आन्दोलन की समाप्ति पूना समझौते के रूप में हुई। 1933 में गांधी जी ने फिर अनशन किया यह अनशन सरकार के विरूद्ध न होकर जनता का हृदय परिवर्तन करने के लिये था। सरकार ने उन्हें रिहा कर दिया। जुलाई 1933 में गांधी जी ने वासराय से भेट की प्रार्थना इस आधार पर न मंजूर कर दी गई कि जब तक सविनय अवज्ञा आन्दोलन बन्द नहीं किया जाता तब तक मुलाकात मंजूर नही होगी अतः आन्दोलन नेताओं द्वारा बन्द कर दिया गया।[125]इसके पश्चात् गांधी जी ने राजनीतिक गतिविधियों से सन्यास ले लिया और हरिजन कल्याण यात्रा पर निकल पडे। मई 1934 में संघर्ष बन्द हो गया।

निष्कर्ष–

गांधी काल का आजादी हेतु अगला संघर्षो चरण सविनय अवज्ञा आन्दोलन था जो 1930–34 तक चला। सारा देश गांधी जी से अनुप्राणित हो उठा। ऐसे में भला वीर प्रसूता धरती के रूप में विख्यात बुन्देलखण्ड उस पुण्य धर्मो आचरण के क्षेत्र में कैसे चुप रहता। आजादी के संघर्ष मं यहा के पुरूष सेनानी ही नहीं अपितु महिला योद्धाओं की भी पहल कम प्रभावी नहीं रही। इस सत्याग्रह आन्दोलन में बुन्देलखण्ड के जनपदों की महिलाओं ने अपने पतियों तथा भाइयों के साथ स्वातंत्रता संग्राम में कूदकर और क्रूर अंग्रेज अत्याचारों के जुल्म को सहन कर संघर्षो सहभागिता की एक नई मिशाल कायम की। दमन की दीवारें भी उनके स्वातन्त्रय संघर्ष के कदमों को नहीं रोक सकी। वे महिलायें जो कि कभी भी देहरी से बाहर नहीं निकली और जो पर्दे में रहती थी। युवा मातायें और विधवायें शराब की दुकानों के सामने तथा विदेशी कपडों की दुकानों और नशीले पदार्थो की दुकानों के आगे धरना दिये नजर आती थी। महात्मा गांधी ने इन भारतीय नारियों के लिये कहा कि निरक्षर पिछड़ी हुई आन्दोलन के लिये अप्रशिक्षित भारतीय नारी का सहंसा यह साहसी रूप विट्रिश सरकार को चौंका गया........ यह साहसपूर्ण कार्य इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायेगा।

सन्दर्भ सूची

1. अनासक्त मनस्वी, द्वारिकेश मिश्र, श्री राम प्रेस झांसी पृष्ठ सं0 195
2. पटाटाभि सीतारमैया ''कांग्रेस का इतिहास'' संस्था साहित्य संस्थान दिल्ली
   भाग 2 पृष्ठ 272
3. प्रभांतकुमार ''स्वतंत्रता संग्राम और गांधीजी का सत्याग्रह'' दिल्ली 2000
   पृष्ठ 62
4. वही पृष्ठ 62
5. श्री रामनाथ सुमन, उत्तर प्रदेश में गांधी जी, पृष्ठ 149–50
6. आशारानी व्होरा ''महिला और स्वराज्य''नेशनल पब्लिशिंग हाउस नई
   दिल्ली पृष्ठ 192
7. पर्सीवल स्पीयर ''एहिस्ट्री ऑफ इण्डिया''पृष्ठ 209
8. रामनाथ सुमन ,उत्तर प्रदेश में गांधीजी, पृष्ठ सं0 151
9. महिला और स्वराज्य ,आशारानी व्होरा, पृष्ठ 193
10. वही 194
11. महिलाये और स्वराज्य ,आशारानी व्होरा ,पृष्ठ सं0 199
12. वही पृष्ठ सं0 200
13. अनासक्त मनस्वी
14. झांसी जनपद का स्वतन्त्रता संग्राम, लेखक अवध बिहारी नायक स्वतन्त्रता सेनानी झाँसी
15. सीताराम भास्कर भागवत स्वतन्त्रता सेनानी झाँसीं
16. झांसी गजेटियर 1965 ई0 बी0 जोशी झांसी प्रष्ठ 72–73
17. बाबू कालिका प्रसाद के पुत्र राम प्रकाश अग्रवाल से लिये गयें साक्षात्कार के आधार पर।
18. वहीं।
19. एस0पी0 भट्टाचार्य ,स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक।
20. बाबू कालिका प्रसाद अभिनन्दन ग्रंथ पृष्ठ 150।
21. एस0पी0 भट्टाचार्य ,स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक।
22. भगवानदास बालेन्दु के पुत्र भुवनेन्दु अरजरिया ,से किये गये साक्षात्कार के आधार पर।

२३- आशारानी व्होरा, महिला और स्वराज्य
२४- सीताराम भास्कर भागवत के लेखक श्री भुम्मान सिंह चौहान की कलम से
२५- अनासक्त मनस्वी
२६- वही
२७- दैनिक जागरण दिनांक 26.1.1978 के अंक से
२८- अनासक्त मनस्वी
२९- दैनिक जागरण दिनांक 26.1.1978 के अंक से
३०- अनासक्त मनस्वी
३१- दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनन्दन समीति
३२- समरगाथा

33. रानी राजेन्द्र कुमारी के नाती धर्मेन्द्र सिंह से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।
34. डा0 भवानीदीन, (संपादक) समरगाथा महोबा बसन्त प्रकाशन पृष्ठ 73।
35. वही 73।
36. क्रांन्ति धर्मा किशोरी देवी के पुत्र भारतेन्दु अरजरिया से लिया गया साक्षात्कार।
37. वही।
38. दरयाब सिंह बाबू बिहारी लाल विश्वकर्मा का जीवन परिचय हमीरपुर 1967 पृष्ठ 0 स0 4।
39. समरगाथा महोबा वसन्त प्रकाशन, पृष्ठ सं0 143।
40. कस्तूरी देवी के पुत्र धर्मवीर विश्वकर्मा से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।
41. रमादेवी के नत दामाद उमाशंकर त्रिपाठी से लिये गये साक्षात्कार के दामाद उमाशंकर त्रिपाठी से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर। ४२. अनासक्त मनस्वी पृष्ठ १५
४३. एस० पी० भट्टाचार्य, स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक
44. महिला और स्वराज्य, आशारानी व्होरा, पृष्ठ 201।
45. आशारानी व्होरा, महिला और स्वराज्य, पृष्ठ सं0 201।
46. रूक्मणी देवी के पुत्र भूपेन्द्र मोहन तिवारी सुंगिरा के लिये गये साक्षात्कार के आधार पर। ४२ - अनासक्त मनस्वी पृष्ठ १४
47. दीवान शत्रुहन सिंह अभिनन्दन ग्रन्था (श्याम सुन्दर बादल सम्पादक 1969 पृष्ठ 171।
48. एस0पी0 भट्टाचार्य, स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक।
49. दीवान शत्रुहन सिंह अभिनन्दन ग्रन्था ,जी0आ0वी0 ई0का0रा0 1961 पृष्ठ 202।
50. वही पृष्ठ सं0 202।
51. एस0पी0 भट्टाचार्य–स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक सूचना विभाग लखनऊ।
52. वही।
53. दीवान शत्रुहन सिंह अभिनन्दन ग्रन्था प्रष्ठ 197।
54. एस0पी0 भट्टाचार्य–स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक।
55. एस0पी0 भट्टाचार्य–स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक।
56. भुवनेश्वरी देवी के पुत्र दाऊ तिवारी से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।

57. अनासक्त मनस्वी पृष्ठ 14।
58. एस0पी0 भट्टाचार्य, स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक।
59. क्रांतिकारिणी किशोरी देवी से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर।
60. एस0पी0 भट्टाचार्य, सम्पादक स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक लखनऊ सूचना विभाग (उ0प्र0)।
61. पं द्वारिकेश, अनासक्त मनस्वी, झाँसी भगवान दास बालेन्दु अभिनन्दन ग्रन्थ समिति 1983 पृष्ठ203।
62. वही पृष्ठ 203।
63. वही पृष्ठ 203।
64. किशोरी देवी अरजरिया के पुत्र भारतेन्दु अरजरिया महोबा से लिये गये साक्षात्कार पर।
65. प्रभात कुमार, स्वतंत्रता संग्राम और गांधी जी का सत्याग्रह, पृष्ठ 61–62।
66. आशारानी व्होरा, महिला और स्वराज्य पृष्ठ 193–194
67. मन मोहन कौर, स्टर्लिंग पब्लिकेशन्स नई दिल्ली प्रष्ठ 157।
68. आशारानी व्होरा, महिला और स्वराज्य प्रष्ठ 194।
69. दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनन्दन ग्रन्था गांधी विद्यालय राठ पृष्ठ 117।
70. वही पृष्ठ 198–199।
71. एस0पी0 भट्टाचार्य, स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक।
72. एस0पी0 भट्टाचार्य, स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक।
73. वही
74. वही
75. वही
76. वही
77. श्री एस0 पी0 भट्टाचार्य, स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक सूचना विभाग लखनऊ।
78. वहीं।
79. वहीं।
80. वहीं।
81. वहीं।
82. श्री एस0पी0 भट्टाचार्य स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक उ0प्र0 सूचना विभाग लखनऊ।

83. वही।
84. वहीं।
85. वहीं।
86. एस0पी0 भट्टाचार्य, स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, उ0प्र0 सूचना विभाग लखनऊ।
87. वहीं।
88. वही।
89. वही।
90. एस0पी0 भट्टाचार्य ,स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, उ0प्र0 सूचना विभाग लखनऊ।
91. वही।
92. समरगाथा, डा0 भवानीदीन, महोबा बसन्त प्रकाशन 156–159।
93. आशारानी व्होरा, महिला और स्वराज्य पृष्ठ 209–210।
94. बाबू कालिका प्रसाद अभिनन्दन ग्रन्थ भारती पृष्ठ 118।
95. चंपा लिमिये, नारी तेज और तपस्या, जी0आर0शर्मा आर्क्योलाजिकल सोसाइटी प्रकाशन इलाहाबाद पृष्ठ 42–43।
96. बांदा जेल रिकार्ड से प्राप्त सूचनाओं के आधार पर
97 वही
98 बाँदा जेल से लिए गये रिकार्ड के आधार पर
99 वही
100 वही पृष्ठ 45
101 महात्मा गांधी जीवन विकास और चिन्तन, श्री जीवन्त राम भगवानदास कृपलानी पृष्ठ 132
102 महात्मा गांधी एक जीवनी, श्री बी0आर0 नन्दा पृष्ठ 214
103 310 प्रताप भानुराय, जंग ए आजादी में जबलपुर, स्वराज्य प्रकाशन भोपाल म0प्र0 पृष्ट 379
104 वही पृष्ठ 89
105 स्वतंत्रता संग्राम की महान वीरांगनायें, डा0 श्री रामायण प्रसाद पृष्ठ सं0 379
106 मध्य प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम सैनिक, जबलपुर नरसिंहपुर सम्भाग सूचना एवं प्रकाशन म0प्र0 शासन भोपाल पृष्ट 33
107 मध्य प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम सैनिक, जबलपुर नरसिंहपुर सम्भाग सूचना प्रसार विभाग भोपाल म0प्र0

108 वही पृष्ठ 42

109 डा0 प्रतापभानुराय, जंगे आजादी में जबलपुर, पृष्ठ 106

110 मध्य प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक, जबलपुर नरसिंहपुर संभाग पृष्ठ 36

111 म0प्र0 स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, जबलपुर संभाग सूचना और प्रकाशन म0प्र0 भोपाल

112 डा0 प्रतापभानुराय ,जंगे आजादी में जबलपुर स्वराज्य संस्थान प्रकाशन भोपाल म0प्र0
पृष्ठ 102

113 वही पृष्ट 116

114 मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, सूचना और प्रकाशन विभाग म0प्र0 भोपाल

115 जिला जबलपुर कलेक्ट्रेट से प्राप्त सूची के आधार पर महिला स्वतंत्रता सेनानी

116 जिला जबलपुर कलेक्ट्रेट से प्राप्त महिला स्वतंत्रता सेना की सूची के आधार पर

117 सागर संभाग गजेटियर ऑफ इण्डिया मध्य प्रदेश सागर 1966 पृष्ट 76

118 पं0 ज्वाला प्रसाद ज्योतिषी पूर्व विधायक सागर द्वारा लिखित संस्मरण के आधार पर

119 पं0 ज्वाला प्रसाद ज्योतिषी पूर्व विधायक सागर द्वारा लिखित संस्मरण के आधार पर

120 मध्य प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम सैनिक भाग दो पृष्ठ 56

121 पं0ज्वाला प्रसाद ज्योतिषी पूर्व विधायक सागर कटरा द्वारा लिखित संस्मरण के आधार पर

122 मध्य प्रदेश स्वतंत्रता संग्राम के सैनिक पृष्ठ 9

123 डा0 सिद्धनाथ शर्मा, स्वतंत्रता आन्दोलन में मध्य प्रदेश, भाषा संचालनालय भोपाल पृष्ठ106

124 मध्य प्रदेश के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, भाग 5 रीवा भोपाल संभाग भाषा संचालनालय पृष्ठ106

125 आधुनिक भारत का इतिहास, श्री आर0एल0शुक्ल पृष्ठ 674

पंचम अध्याय
अगस्त क्रान्ति और बुन्देलखण्ड की महिलायें

भारत छोड़ो आन्दोलन

सविनय अवज्ञा आन्दोलन की समाप्ति के बाद सरकार द्वारा 1935 के अधिनियम पारित किये गये। 1935 के अधिनियम से पूर्व भारतीयों द्वारा मांग की गई थी कि भारतीयों को 1935 के अधिनियम के अन्तर्गत एक अधिकार पत्र दिया जाये। किन्तु जो घटनायें घटित हो रही थी और भारतवासियों को जो अनुभव हो रहा था उससे कांग्रेसी कार्यकर्ताओं की यह धारणा पुष्ट होती जा रही थी कि भारत में बिट्रिश शासन का अन्त शीघ्र अतिशीघ्र हो जाना चाहिए। क्योंकि भारत की स्वतन्त्रता न केवल भारत के हित में आवश्यक है अपितु संसार की सुरक्षा के लिये नाजीवाद, सैन्यवाद और अन्य प्रकार के साम्राज्यवादों एवं एक राज्य का दूसरे राज्य पर आक्रमण का अन्त करने के लिये आवश्यक है। 1

सितम्बर 1939 को बिट्रेन और जर्मनी के बीच युद्व प्रारम्भ हुआ और दो दिनों में उनकी गड़गड़ाहट से सारा विश्व चौक उठा। अंग्रेजी सरकार ने कांग्रेस मंत्रीमण्डल से बिना सलाह लिये भारत को युद्व में शामिल कर दिया। लेकिन 1914 और 1939 के भारत में बड़ा परिवर्तन हो गया था, इस समय देश के जनमानस में भयकंर आक्रोश भरा हुआ था। इस अपमान जनक कार्य के विरोध में कांग्रेस मंत्रिमण्डल ने 1939 में सम्राज्यवादी युद्व में बिट्रेन के सहयोग न करने के आधार पर त्यागपत्र दे दिया। गांधी जी ने अंग्रेज सरकार को पत्र लिखकर अनुरोध किया कि उसे भारत की पूर्ण स्वतन्त्रता का आश्वासन देना चाहिए और लोकशासन की स्थापना करना चहिए तभी भारतीय जनता में युद्व के प्रति उत्साह उत्पन्न किया जा सकता है। जब इससे भी अंग्रेज सरकार का विवेक जाग्रत नहीं हुआ तब गांधी जी ने देशव्यापी व्यक्तिगत आन्दोलन छेड़ दिया। 2

सन् 1940 में गांधी जी के व्यक्तिगत सत्याग्रह में नारा था कि इस अंग्रेजी लड़ाई में मदद देना हराम है, उचित तो यह है कि न्यायोचित तरीकों से इस हुकुमत को उलट दिया जाये। फिरंगियों की युद्ध नीति का विरोध करते हुये 1940 में महात्मागांध ी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया जिसका नारा समस्त देश में प्रत्येक गांव गांव में तथा प्रत्येक घर घर में गूंज उठा। 6

मार्च 1942 को रंगून पर जापान का कब्जा हो गया तथा 7 मार्च को क्रिप्स मिशन की घोषणा हो गयी और एक मार्च को सर स्टेफर्ड क्रिप्स भारत वर्ष के सामने प्रस्तावों का विवरण लेकर उपस्थित हुये। इस प्रस्ताव का उद्देश्य जापान को हराने में भारत वर्ष की मदद करना था। गांधी जी ने इस प्रस्ताव को "दिवालिया बैंक" के बाद की तारीख की चैक कहा। अन्तिम समय में भी क्रिप्स ने रहस्यपूर्ण ढंग से हाथ बटोर लिये। इस प्रस्ताव की असफलता के बाद कांग्रेस के पास कोई न कोई कदम उठाना अनिवार्य था और यह कदम उठकर रहा। 3

करो या मरो का शंखनाद

अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी का ऐतिहासिक अधिवेशन 8 अगस्त को बम्बई में हुआ जवाहर लाल नेहरू ने 8 अगस्त को भारत छोड़ो प्रस्ताव की रूप रेखा रखी तथा बल्लभ भाई पटेल ने तुरन्त उसका अनुमोदन किया। प्रस्ताव बड़े ही धूमधाम से पारित हो गया जिसमें महात्मा गांधी ने देशी राजाओं, वहां की जनप्रतिनिधियों, संस्थान के नेताओं, और जनता से अपील की कि आजादी के इस महायज्ञ में किसी को पीछे नही रहना है। 4

गांधी जी ने 140 मिनट तक बोलकर अपना सबसे लम्बा प्रेरणादायक भाषण दिया। उन्हानें कहा कि "मैं फौरन आजादी चाहता हूँ, आज रात को ही कल सबेरे से पहले आजादी चाहता हूँ अगर यह प्राप्त हो सके। यदि यह एकता अभी प्राप्त हुई तो उसके लिये अब कितनी ही कुर्बानी करनी पड़ेगी। कांगेंस को आजादी हासिल करना है या उसे हासिल करने की कोशिश में मिट जाना है। और यह ना भूलो कि जिस आजादी को पाने के लिये कागेंस जूझ रही है वह सिर्फ कांगेस जनों के लिये नहीं वरन् भारत की 40 करोड़ जनता के लिये होगी"। 5

फिर उन्होने अपने जीवन के सबसे महान संघर्ष के लिये जनता को प्रोत्साहित किया। उन्होने कहा कि "अग्रेजों या तो खुद ही भारत का शासन भारत वासियों के हाथ में सौप कर यहां से चले जाओ अन्यथा सम्पूर्ण भारत की उमड़ती हुई शक्ति का सामना करना पड़ेगा"। उन्होने आगे कहां कि "यह एक छोटा सा मंत्र है जिसे मैं तुम भारत वासियों को देता हूँ जिसे तुम अपने हृदय में लिख लो ताकि तुम्हारी हर सांस में यह प्रकाशित हो– "हम करेंगे या मरेंगे"।

9 अगस्त को सरकार ने अचानक नेताओं को गिरफ्तार करके जनता की कुचली हुई आंकाक्षाओं के ज्वालामुखी में स्वयं ही चिंगारी बताकर विस्फोट हो जाने का शुभ अवसर प्रदान किया। जनता जोश में पागल हो चुकी थी। सरकार के इस वार को जनता ने अपने ऊपर आक्रमण समझा। जनता अपने होशोहवाश एक साथ ही खो बैठी और यह अदम्य जोश जिस रूप से जनता ने प्रकट किया वह एक जबरदस्त तूफान था। लाखों आदमी इस वेग में बह गये। करोड़ों ने किसी न किसी रूप में सहयोग दिया सरकार ने कांगेस, गांधी व जनता को हर तरह से दोषी बताया। गांधी जी ने सरकार को चुनौती दी कि वे कांग्रेस के ऊपर लगाये गये आरोपो को सिद्व करें। उस समय कांग्रेस के सब नेता जेल में थे, इसलिये जनता के पक्ष में सर्मथान करने वाला कोई नही था। 7

9 अगस्त के बाद देश में क्रान्ति प्रज्जवलित हुई। यह क्रान्ति आकार, विस्तार, त्याग, बलिदान, संगठन, शक्ति, उत्साह से स्वध्येय के प्रति अद्म्य लगन में पिछली भारतीय क्रान्तियों की तुलना में कहीं बड़–चढ कर रही। इस क्रान्ति में प्राय: 6–7 हजार आदमी मरे, 1 लाख से ज्यादा जेल गये। 1 करोड़ से भी ज्यादा सामूहिक जुर्माने हुये, पचासों गांव बीरान कर दिये गये, इस क्रान्ति में 4 करोड़ से भी ज्यादा लोगों ने खुले रूप से भी भाग लिया। इस क्रान्ति ने विश्व को जता दिया की कांग्रेस अभी भी करोड़ो की तदाद में गोलियों की बौछार के नीचे अपना सर्वस्त्र निछावर करने को तैयार है। इस प्रकार इस क्रान्ति नें दुनिया के सामने अपने आपको सर्वस्व स्वाहा कर देने को तैयार प्रकट किया। 8

जिस तरह विद्रोह के विस्फोट ने हिंसात्मक रूप लिया वह गांधी जी की अहिंसा के विपरीत था। अपने गिरफ्तारी के 5 दिन बाद 14 अगस्त 1942 ई0 को गांधी जी ने वाईसराय को एक पत्र लिखा कि इस हिंसा में मेरा कोई सम्बन्ध नहीं और 13 फरवरी 1943 को सुबह 10 बजे से बम्बई में आगा खां महल में गांधी जी ने उपवास शुरू कर दिया। इस प्रकार यह आन्दोलन समाप्त हुआ परन्तु भारत की आजादी का मार्ग अब सामने दिखायी देने लगा था। 9

भारत छोड़ो आन्दोलन तथा महिलाओं का योगदान

भारत के इतिहास में अगस्त क्रान्ति एक महान

चिरस्मरणीय घटना है। इस क्रान्ति में बिट्रिश सिंहासन ही डोलायमान हो गया ।

इस महान क्रान्ति की सबसे बड़ी विशेषता यह कि जिस प्रकार हमारी भारतीय महिलाओं और बहिनों ने गांधी जी की ऐतिहासिक डांडी यात्रा में अपना सर्वस्त्र बलिदान करके दिखाया उसी प्रकार इस महान क्रान्ति में भी हमारी माताओं और बहिनों ने भी अपूर्व शौर्य, धैर्य, वीरता, साहस और बलिदान का परिचय दिया। भारतीय महिलायें हमेशा पुरूषों से आगे रही। 10

इस बार महिलाओं की गतिविधियाँ जुलूसों, प्रदर्शनों और धरनों तक ही न सीमित थी वरन् जगह जगह प्रशिक्षण केन्द्र भी खुले थे जहां महिलाओं और बहिनों को घायलों की सेवा सुश्रुषा के लिये प्राथमिक चिकित्सा और नर्सिंग होम का प्रशिक्षण देने के साथ उन्हें आत्मरक्षा के लिये लाठी आदि गुप्त कार्यवहियों का संचालन करने और भूमिगत रहकर आन्दोलन में भाग लेने का प्रशिक्षण भी दिया जाता था। बंगाल की वालन्टियर सेना में महिलाओं तथा लड़कियों ने प्रशिक्षण लिया। बंगाल में एक 72 वर्षीय महिला मातंगिनी हाजरा ने एक लाख पुरूषों और स्त्रियों के साथ 29 सितम्बर 1942 को भाग लिया। तथा थाना कचहरी और दफ्तरों पर कब्जा कर लिया तथा हाथ में झण्डा लिये वह वयोवृद्ध नेत्री मारी गई थी पर गिरते हुये भी झण्डा उनके हाथ से नही छूटा था। 11

अकथनीय अत्याचार–: इस आन्दोलन मे महिलाओं पर अकथनीय अत्याचार हुये लेकिन उन्होंने हिम्मत नहीं हारी। अनगिनत महिलायें बलात्कार की शिकार हुई। लेकिन भारत की सभी महिलाओं ने सामूहिक विरोध में जुलूस निकाले। अपने संगठन को मजबूत किया और प्रत्येक महिला को आत्मरक्षा के लिये हथियार दिये। बिट्रिश सरकार ने बौरवलाहट के कारण सम्मानित हिन्दू घरों में महिलाओं को संगीनों की नोंक पर बाहर निकाला गया । उनमें से कुछ गर्भवस्था की अन्तिम अवस्था में तथा आसन्न प्रसवा भी थीं। उनके गहने जबरदस्ती उतरवा लिये गये। 12

लेकिन धन्य है वह भारत की महिला जिसने इतनेअत्याचारो के बाबजूद भी अपना धैर्य नही त्यागा। और 1942 के आन्दोलन में उसकी प्रधानता रही। भारतवर्ष की श्रीमती सुचेता कृपलानी तथा

अरूणा आसफ़ अली ने नेताओं की गिरफ्तारी के बाद कान्ति को संगठित करने के लिये कमेटी बनाई थीं। 13

इस प्रकार पुरूषों के साथ त्याग करने पर भी और कई क्षेत्रों में उनका त्याग अधिक नीरव होने पर भी स्त्रियों को एक त्याग पुरूषें से अधिक करना पड़ा। वह है फौजियों के तथा पुलिस वालों के हाथों उनकी लज्जा हानि तथा उनका सतीत्व का नारा। कई क्षेत्रों में लज्जा तथा अन्य कारणों से स्त्रियां तथा उनके पति आदि इस प्रकार की घटनाओं को दबा गये लेकिन फिर भी सैकड़ों घटनाऐं प्रेस में आईं उनसे यही समझा जा सकता है कि बिट्रिश साम्राज्यवाद को इस क्षेत्र में नाजीवाद के मुकाबले में झेंपने की कोई जरूरत नहीं। जिस प्रकार किराये के टट्टुओं ने हमारी माँओं तथा बहिनों को इज्जत को बात की बात में नष्ट करके धर दिया उसे पढ़कर कौन खून के आँसू नहीं रोयेगा।

सभी प्रकार की विपत्तियों का झेलने के बाद भी भारतीय वीरांगनाओं ने अगस्त आन्दोलन में जिस साहस और वीरता का परिचय दिया है उसे पढ़कर भारत तो क्या विश्व की महिलायें भी गर्व से मस्तक ऊँचा कर सकतीं हैं।

बुन्देलखण्ड की महिला कान्तिकारी तथा अगस्त कान्ति

बुन्देलखण्ड के झांसी डिवीजन से आन्दोलनकारी महिलाओं के 13 नाम ज्ञात हुये हैं। इनमें से झांसी की केसरबाई, और हमीरपुर की कान्ति देवी को एक एक वर्ष की सजाओं के साथ जुर्माने भी भरने पड़े थे। हमीरपुर जिले की सरस्वती जी को पुलिस की लाठी वर्षा से घायल होने पर भी जेल भेज दिया गया था। शेष सभी महिलाओं को एक से छः मास तक सादी या कड़ी कैद की सजा सुनाई गई थी। 15

भारत छोड़ो आन्दोलन और बुन्देखण्ड

1942 ई0 का भारत छोड़ो आन्दोलन बुन्देलखण्ड में पूरे जोश एवं उत्साह और वेग से चारों जिलो में चला। प्रदर्शन हुऐ, सरकारी इमारतों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराये गये तथा रेलगाड़ियां रोकी गईं और टेलीफोन के तार एवं खम्भे उखाड़े गये। समस्त बुन्देलखण्ड में इस आन्दोलन में लगभग 1500 सत्याग्रही गिरफ्तार किये गये एवं 4 व्यक्ति शहीद हुये। 16

झांसी ललितपुर में भारत छोड़ो आन्दोलन

सन् 1942 में अंग्रेजो भारत छोड़ो प्रस्ताव पारित हो जाने के बाद देश गांधी जी के नेतृत्व में स्वाधीनता के अन्तिम आन्दोलन में कूद पड़ा। सम्पूर्ण झांसी में जनता ने जगह जगह हड़ताल, प्रदर्शन और जूलूस का आयोजन किया। सुबह होते ही आत्माराम, गोविन्द खोर, कुँजबिहारी लाल शिवानी, लक्ष्मणराव कदम,रामेश्वर प्रसाद शर्मा, कृष्ण गोपाल शर्मा,मुरलीधर अग्रवाल आदि को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। 17

झांसी जिले के अतिरिक्त चिरगांव, मोठ, गुरसराय, मऊरानीपुर और समथर में रामायण संगठन के नाम से आन्दोलन को तीव्रता मिली0। यहां के स्व0 रामानन्द, दिव्यानन्द सरस्वती, शिवसम्पत्ति शर्मा ने सरकारी सम्पत्ति को अत्याधिक हानि पहुँचाई। मऊरानी पुर में घासीराम व्यास, बरूआसागर में बालचन्द्र गुप्ता, बच्चूलाल पटसरिया, ललित पुर के बृजनन्दन जिलेदार, श्रीमती केशर बाई, कमलाबाई, कमलदेवी ने तालबेहट में रामरतन गोस्वामी, सुदामाप्रसाद गोस्वामी, मथुराप्रसाद लिटौरिया तथा महरौनी से गोपीचन्द्र जैन गिरफ्तार कर लिये गये। 18

सूचना विभाग उत्तर प्रदेश के अनुसार लगभग 200 व्यक्ति बन्दी बनाये गये।

भारत छोड़ो आन्दोलन और झांसी जनपद

झांसी जनपद में स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही। यहाँ सन् 1942 के आन्दोलन में पिस्ता देवी, सावित्री देवी, कान्ति देवी पंगोरिया व शिवानी जी की चाची ने अत्यन्त साहस के साथ जेल यातनाऐं भोगीं। इन महिलाओं का वर्णन असहयोग आन्दोलन व सविनय अवज्ञा आन्दोलन में वर्णित है।

श्रीमती केशरबाई और भारत छोड़ो आन्दोलन

श्रीमती केसर बाई झांसी सम्भाग के ललितपुर जिले की निवासी थीं। उनका जन्म 1916 में हुआ था इनके पिता का नाम श्री मोतीलाल जैन था। श्रीमती केसरबाई ने स्वतन्त्रता आन्दोलन के महान एवं दुस्सट कार्य में जहां कि किशोरों एवं नौजावनों नअपने योगदान दिया वहीं नगर ललितपुर में श्रीमती केसरबाई नारी जाति के लिये गौरव हैं। ये गांधी जी की प्रेरणा पाकर सन् 1932 में आन्दोलन में कूद पड़ीं।

ऐसे समय में जबकि नारी केवल श्रृंगार और चाहरदीवारी तक ही सीमित रहती थी केसर बाई ने लोक लाज के बन्धान तोड़कर नारी जाति को जागृत करने में जुट गई। इस नवयौवना को स्वतन्त्रता की अलख जगाते देख नवजवानों को भी आजादी की लड़ाई लडने की प्रेरणा मिली। श्रीमती केसर बाई को 1942 में एक माह की कारावास की सजा सुनाई गई।[19]

कमला देवी जैन– कमला देवी जैन ललितपुर के स्वतन्त्रता सेनानी परमेश्वरी दयाल की पत्नी थीं। इनको देश प्रेम की प्रेरणा अपने पति से प्राप्त हुई थी इन्होने भी ललितपुर क्षेत्र की नारियों का गौरव बढ़ाया। इन्होनें 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में आपने धारा 144 को भंग करते हुये जुलूस का नेतृत्व किया तथा सभा बन्दी कानून को भंग करके सभा में भाषण देने के कारण आपको साबरमती जेल में रहना पड़ा था। देश के स्वतन्त्र हो जाने के बाद आप अपने पति के साथ ललितपुर वापस आ गई।[20]

डा0 सुशीला नैयर– श्री आर0 के नटवर की पत्नी थीं। ये केन्द्रीय स्वास्थ्य मंत्री रहीं। डा0 सुशीला नैयर का भी देश के स्वतन्त्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान है। इन्होंने सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई। इनको बिट्रिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया तथा भारतीय रक्षा कानून के (डी आई0 आर0) अर्न्तगत 29 महीनो की जेल की सजा सुनाई गई। डा0 सुशीला नैयर महात्मा गांधी के साथ पूना के आगा खाँ महल में 29 माह बन्दी बनाई गई थीं।[21]

जनपद जालौन का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

जालौन जिले में भारत छोड़ो आन्दोलन पर समस्त जिलें में प्रर्दशन हुये। जालौन जनपद में श्रीमती माया देवी, श्रीमती अनुपमा भदौरिया, हुलसी हरिजन, प्रेमबाई देवी इत्यादि महिलाओं ने स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। वहीं श्री मानिक तेली, श्री मुन्नी लाल अग्रवाल, पं0 मुन्नीलाल पाण्डे, मुन्नीलाल श्रीवास्तव, श्री मानसिंह, श्री मोतीलाल सक्सेना तथा श्री मोतीलाल वैश्य[22] द्वारा 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया गया। इन लोगों ने बहिष्कार, धरने इत्यादि के द्वारा बिट्रिश सरकार के प्रति अपना आक्रोश प्रकट किया गया। ये सभी कांग्रेसी नेता पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर जेल भेज दिये गये।

जनपद जालौन की प्रमुख महिला सत्याग्रही

श्रीमती अनुपमा देवी भदौरिया– श्रीमती अनुपमा देवी भदौरिया का जन्म 1845 में उमरी जालौन में हुआ था। इनके पिता का नाम कन्हई सिंह भदौरिया था। इन्होंने महात्मा गांधी द्वारा 1941 में छेड़े गये व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया। इन्हे डी0 आई0 आर0 की धारा 38(5)के अन्तर्गत सजा दी गई थी।[23]

श्रीमती हुलासी हरिजन– श्रीमती हुलासी हरिजन जिला जालौन के भदरखा गांव की निवासी थीं। इनके हृदय में बचपन से ही देश प्रेम की भावना प्रवाहित थी। श्रीमती हुलासी देवी ने 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया इन्हें पुलिस द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और स्वतन्त्रता आन्दोलन में भागीदारी के अपराध में एक वर्ष की सजा और 25 रू0 का जुर्माना किया गया।[24]

श्रीमती प्रेम माई देवी और व्यक्तिगत सत्याग्रह– श्रीमती प्रेममाई देवी उरई की निवासी थीं। इनके पति का नाम श्री रामशंकर सक्सेना था। श्रीमती प्रेममाई ने 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया। बिट्रिश सरकार द्वारा इनको तीन माह की सजा सुनाई गई, देश स्वतन्त्र हो जाने के पश्चात प्रेममाई द्वारा समाज सेवा तथा राजनीतिक सेवा जारी रखी गई और ये उरई जालौन की महिला कांग्रेस की अध्यक्ष चुन ली गईं। ये जिला कांग्रेस कमेटी की सदस्य भी रहीं, ये निरन्तर समाज सेवा में सलग्न रहीं।[25]

श्रीमती राधा देवी– श्रीमती राधा देवी जालौन जनपद के देवगांव ग्राम की निवासिनी थीं। उन्होंने भी महात्मा गांधी द्वारा संचलित 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन मे भागीदारी निभाई गई। भाग लेने के कारण अप्रैल 1941 में इन्हे गिरफ्तार कर लिया गया। बिट्रिश सरकार द्वारा इन्हे 50 रू0 अदा करने का आदेश दिया।[26]

श्रीमती माया देवी– श्रीमती माया देवी उरई जालौन की निवासी थीं। इन्होंने महात्मा गांधी द्वारा संचलित 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लेकर तथा सक्रिय भूमिका निभाकर अपनी भागीदारी निभाई। इनको पुलिस द्वारा गिरफ्तार करके 4 माह का कारावास तथा 400 रू0 का अर्थदण्ड दिया गया।[27]

श्रीमती रामेश्वरी देवी– श्रीमती रामेश्वरी देवी उरई जालौन की निवासनी थीं। यें प्रसिद्व स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री बनवारी लाल की पत्नी थीं। इनका जन्म सन् 1970 विक्रम सम्वत् में हुआ था। सन् 1941 में महात्मा गांधी द्वारा चलायें गये व्यक्तिगत स्वतन्त्रता आन्दोलन में 22 फरवरी 1941 को भाग लेने के कारण ये जेल भेज दी गईं। श्रीमती रामेश्वरी देवी 8 दिन का कारावास भोगकर मार्च 1941 में जेल से अवमुक्त कर दी गईं। श्रीमती रामेश्वरी देवी को सरकार द्वारा 25 रू का अर्थदण्ड दिया गया।[28]

हमीरपुर जनपद और भारत छोड़ो आन्दोलन

हमीरपुर जिले में भी भारत छोड़ो आन्दोलन पर समस्त जिले में प्रदर्शन एवं सभायें हुईं। कुलपहाड़ कस्बे में सर्वप्रथम रानी राजेन्द्र कुमारी ने एक महिलाओं का जुलूस निकाला एवं पुलिस थाने पर धरना दिया। महात्मा गांधी जिन्दाबाद के नारे लगाये, पुलिस ने प्रर्दशनकारियों को तितर बितर करने के लिये हवा में लाठियाँ घुमाई। उसमें श्रीमती किशोरी देवी, श्रीमती रूक्मणि देवी, सरस्वतीदेवी, सरजू देवी, यमुना देवी, उर्मिला बहिन, भगवती देवी, शान्ति देवी, मनोरमा देवी, ज्ञानो देवी तथा रानी देवी आदि महिलाओं ने अपनी गिरफ्तारी दी।[29]

उधार हमीरपुर जिले के राठ, महोबा आदि तहसीलों पर प्रदर्शन हुये तथा मुख्य बाजार के चौराहों पर राष्ट्रीय ध्वज तिरंगा फहराया गया। इन तहसीलों के अतिरिक्त जराखार, पनवाड़ी, गहरौली, सरीला, पहाड़िया आदि ग्रामों में भी प्रदर्शन हुये। समस्त हमीरपुर जिले में लगभग 200 से अधिक कांग्रेसी कार्यकर्ता बन्दी बनाये गये। बन्दी बनाये गये नेताओं एवं कार्यकताओं पर जेल में अमानवीय अत्याचार किये गये। हमीरपुर जिले के पहाड़िया गांव में भी पुलिस द्वारा भारी अत्याचार किया गया।[30]

श्रीमती शिवरानी देवी और भारत छोड़ो आन्दोलन

श्रीमती शिवरानी देवी जिला हमीरपुर के थाना मुस्करा के ग्राम वण्डवा की निवासिनीं थीं। इनका विवाह श्री अमरसिंह लोधी से हुआ। जब सन् 1941 में व्यक्तिगत सत्यग्रह आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो श्रीमती शिवरानी देवी ने भी हमीरपुर जनपद की महिलाओं के आन्दोलन से प्रभावित होकर रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया, और भाग

लेने के कारण इन्हे भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा 38 (4) के अर्न्तगत 28.1.1941 को 6 माह की कैद और 50 रू0 जुर्माना किया गया।[31] **श्रीमती राजा बाई**– श्रीमती राजा बाई हमीरपुर जिले के जरिया थाने के इटौलिया ग्राम की रहने वालीं थीं। इनके पति का नाम श्री फकीरा था। श्रीमती राजा बाई ने सन् 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया और इनको भी भारत प्रतिरक्षा कानून की धारा 38(5)121 के अर्न्तगत 5.4.1941 को 6 माह की कैद व 100 रू0 की जुर्माना की सजा सुनाई गई।[32]

भारत छोड़ो आन्दोलन और सागर जनपद की महिलायें

भारत छोड़ो आन्दोलन में 9 अगस्त 1942 के बाद से ही सागर जिले का राजनीतिक जीवन आन्दोलित हो उठा था। प्रायः प्रतिदिन ही हड़ताल, सभायें, जुलूस आदि का आयोजन होता था जिसमें सागर जनपद की महिलाओं का उत्साह देखाने योग्य होता था। इन सभा जुलूसों पर लाठी चार्ज होना प्रायः आम बात हो गई थी, किन्तु लोगो के उत्साह में कोई कमींनहीं हुई।[33] इस आन्दोलन में 22 अगस्त को गढ़ाकोटा में एक वृहत्सभा का आयोजन किया गया इस आयोजन में सर्वसम्मति से स्थानीय पुलिस स्टेशन पर तिरंगा फहराने का प्रस्ताव पारित किया गया। तत्काल सारी सभा ने जिसमें लगभग 61 हजार स्त्री पुरूष थे एक जुलूस का रूप धारण कर लिया। महिलाये हाथ में झण्डा लिये हुये, पहले झण्डा में चढाऊँ की उमंग लिये पुलिस स्टेशन की ओर चल पड़ीं। जुलूस स्टेशन के सामने जा पहुँचा युवकों तथा महिलाओं ने अपना उद्‌देश्य बताकर झण्डे को चढाने का प्रयत्न शुरू किया। पुलिस के सिपाही प्रतिरोध करने के लिये तैयार थे। रोकने पर भी आजादी के मतवाले नही माने। तब पुलिस ने लाठी चार्ज करना शुरू कर दिया। लठठ् खाकर भी वे आजादी के दीवाने अपने कर्तव्य से विमुख नही हुये और झण्डा लेकर आगे बढ़ने की कोशिश करने लगे, इसी समय पुलिस सब इन्सपेक्टर गयाप्रसाद खारे तथा अन्य सिपाहियों ने देशप्रेम पर उन्मत जनता पर गोलियांबरसाना प्रारम्भ कर दिया। कई लोग जिनमें महिला और पुरूष थे घायल हो गये और मुख्य नायक साबूलाल बंसखिया झण्डा लिये उसी स्थल पर ढेर हो गये। मातायें और बहिनें सिसकिंया लेकर रो उठीं। स्त्री और पुरूषों ने फूल बरसाये।[34]

भारत छोड़ो आन्दोलन में जिले के कुछ स्थानों पर जंगल सत्याग्रह भी हुआ, जिसे बल प्रयोग द्वारा दबा दिया गया। अनेक स्थानों पर पुलिस द्वारा आन्दोलनकारियो के साथ दुर्व्यवहार भी किया गया। डाकघर, पुलिस चौकियों को आग लगाई गई, रेल की पटरियां उखाड़ी गईं तथा टेलीफोन के तार काटे गये, जिले भर में भारी संख्या में लोगों ने गिरफ्तारियां दीं। इस आन्दोलन में सागर जनपद की महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता था। इस आन्दोलन में भाग लेने वालों में स्वामी कृष्ण नन्द, अब्दुल गनी, गौरीशंकर पाठक, ताराचन्द्र जैन, पदमनाथ, तैलंग, मौलवी चिरागउद्दीन इत्यादि पुरूष स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के अतिरिक्त अनेक महिला सत्याग्रही भी थीं। जिनमें प्रमुख महिला सत्याग्रही पार्वती बाई तथा श्रीमती इन्दिरा बाई इत्यादि थीं।[35]

श्रीमती सुभद्राराय और भारत छोड़ो आन्दोलन

श्रीमती सुभद्राराय सागर जिले के एक कृषक श्री नरेन्द्र सिंह की पुत्री थीं। आपका विवाह श्री मुरलीधर जी के साथ हुआ था। श्रीमती राय का बचपन से ही देश के प्रति अनुराग की भावना कूटकूट कर भरी हुई थी। सन् 1942 में जब गांधी जी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आन्दोलन हुआ तो उसमें भारत की असंख्य महिलाओं के साथ श्रीमती राय ने भी असाधारण साहस का परिचय देते हुये कर्रापुर पुलिस स्टेशन में आग लगा दी जबकि उस समय यह कार्य कितना कठिन था।[36]

इस कार्य के परिणामस्वरूप पुलिस द्वारा इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 6 माह की कारावास की सजा दे दी गई। महात्मा गांधी ने जब कलकत्ता और नौआखली की यात्रा की तो उस समय भी श्रीमती राय यात्रा पर गईं। सन् 1955 में गोवा मुक्ति संग्राम में अत्याधिक साहस का पुनः परिचय दिया और गोवा पुलिस द्वारा किये गये गोली चालन के परिणामस्वरूप सुभद्राराय गोली लगने से घायल हो गईं। गोवा आन्दोलन के दौरान उन्होने जिस आसाधारण वीरता तथा संकल्प शक्ति का परिचय दिया था, उसकी प्रशंसा तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू एवं पण्डित गोविन्द बल्लभ भाई पन्त द्वारा मुक्त कंठ से की गई थी। श्रीमती सुभद्रा राय जिला परिषद और जनपद सभा की सदस्य रहीं । इन्होंने लोकसभा में लम्बे समय तक सागर जिले का प्रतिनिधित्व किया

एवं सागर जिले के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका को निभाते हुये श्रीमती राय पंचलोक को सिधार गईं। हम श्रीमती राय के योगदान को कभी नहीं भुला सकते।[37]

श्रीमती कमला बाई–

श्रीमती कमला बाई सागर में रहने वाले दामोदर राव की पत्नी थीं। इनका जन्म सन् 1920 में हुआ था उस समय जब केवल महिलायें घर चूल्हे तक ही सीमित थी श्रीमती कमला बाई ने शिक्षा माध्यमिक तक ग्रहण की। जब महात्मागांधी के द्वारा सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन चलाया गया तो सागर जिले की महिलाओं के साथ श्रीमती कमलाबाई ने भी भाग लिया। उस समय सागर विद्रोह का प्रमुख केन्द्र था भारी संख्या में स्त्री और पुरूषों ने जगह जगह पर धरना प्रदर्शन किया, पिकेटिंग की तो कमला बाई ने भी उसमें उत्साह पूर्वक भूमिका अदा की। आन्दोलन के बाद श्रीमती कमला बाई को 6 मास की सजा सुनाई गई, जेल से निकलने के पश्चात आप आजीवन देश सेवा में लगी रहीं।[38]

श्रीमती कमला बाई बड़ोनिया–

सागर जनपद में स्वतन्त्रता आन्दोलन में हुये आन्दोलन में श्रीमती कमला बाई बड़ोनिया के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। श्रीमती कमलाबाई चमेली चौक, सागर में रहने वाले श्री गोविन्द प्रसाद बड़ोनिया की पत्नीं थीं। इनका जन्म सन् 1924 में सागर में हुआ। आपने प्राथमिक शिक्षा ग्रहण की। जब महात्मा गांधी के नेतृत्व मे भारत छोड़ो आन्दोलन 1942 ई में प्रारम्भ हुआ तो श्रीमती बड़ोनिया ने भी उसमें सक्रिय भूमिका निभाई। इन्हे बिट्रिश सरकार द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया और 6 माह की कारावास की सजा सुनाई गई।[39]

श्रीमती इन्दिरा ताई और भारत छोड़ो आन्दोलन

श्रीमती इन्दिरा ताई दत्तात्रय राव हतवर्णे की पत्नीं थीं। इनका जन्म सागर में हुआ था। श्रीमती ताई को बचपन से ही देश सेवा का भाव विधमान था। विवाह के पश्चात श्रीमती इन्दिरा ताई को देश सेवा की भावना से भरपूर परिवारिक वातावरण मिला। अतः श्रीमती इन्दिरा ताई ने आजीवन देश सेवा का व्रत ले लिया। सन् 1942 ई0 में महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये भारत छोड़ो आन्दोलन में सागर जनपद की महत्वपूर्ण भूमिका थी। उस समय भारत में छात्रों और महिलाओं का कार्य बहुत ही आकर्षित करने वाली बात हो गई थी प्रान्तीय शासन ने यह शिकायत की

कि सागर में महिलाओं का धरना और जुलूस रोज की बात हो गई है। सागर और दूसरे जिले में महिलाओं और छात्रों द्वारा निकाले गये जुलूस में 14 अगस्त तक लगभग रोज ही लाठी चार्ज किया जाता था। श्रीमती इन्दिरा ताई भी उसमें पीछें नहीं रहीं और उन्होनें भी आन्दोलन में सकिय भूमिका निभाई। सरकार के द्वारा उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और 6 मास की कारावास की सजा सुनाई गई।[40]

श्रीमती बड़ीबाई और भारत छोड़ो आन्दोलन

श्रीमती बाई शुकवारी टौरी, सागर के श्री अब्दुल गफूर की पत्नीं थीं। इनका जन्म सन् 1904 में हुआ। श्रीमती बाई ने प्रारम्भिक शिक्षा सागर में ही रहकर पूरी की। श्रीमती बड़ी बाई द्वारा महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन में अत्यन्त उत्साह के साथ भाग लिया और सन् 1942 में जबकि गांधी जी द्वारा करो या मरो का नारा लगाया जा रहा था तो गढ़ाकोटा नामक स्थान पर एक विशाल जुलूस निकाला गया इस जुलूस का नेतृत्व साबूलाल बैशाखिया द्वारा किया जा रहा था श्रीमती बड़ी बाई द्वारा भी इस जुलूस में भाग लिया गया। उन दिनों ऐसे जुलूस को देखाना या बाहर निकलना राजद्रोह माना जाता था और उन पर कठोर कार्यवाही होती थी।[41]

लेकिन श्रीमती बाई द्वारा जुलूस में अत्यन्त उत्याह पूर्वक भाग लिया गया और बिट्रिश सरकार द्वारा उन्हें कैद करके 6 मास के कारावास का दण्ड दिया गया। लेकिन श्रीमती बड़ी बाई ने हिम्मत नहीं हारी और कारावास से बाहर आने के पश्चात पुनः देश सेवा में अपने आपको समर्पित कर दिया।[42]

श्रीमती पार्वती बाई और भारत छोड़ो आन्दोलन

श्रीमती पार्वती बाई और भारत छोड़ो आन्दोलन भारत के स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी महत्वपूर्ण पहिचान बनाने वाले गढ़ाकोटा सागर में एक कन्या पार्वती बाई का जन्म 1903 में हुआ। यथा नाम तथा गुण वाली पार्वती बाई के हृदय में बचपन से ही देश के प्रति अनुराग था। किशोरावस्था में इनका विवाह श्री मंहत राम किशोरी दास के साथ हो गया। ससुराल आने के बाद पति केप्रोत्साहन के फलस्वरूप श्रीमती पार्वती बाई देश की स्वतन्त्रता के लिये किये जा रहे आन्दोलन में बढ़ चढ़कर हिस्सा लेने लगीं। सन् 1932 में महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन

में बहिष्कार और धरने जैसे कार्यक्रमों में भाग लिया। सन् 1942 में चलाये गये भारत छोड़ो आन्दोलन में पार्वती बाई के द्वारा जबकि गांधी जी की करो या मरो की गूँज से गढ़ाकोटा की तरूणााई भी व्याकुल हो रही थी। पार्वती बाई ने जुलूस में भाग लिया लगभग ढाई हजार स्त्री, छात्र इस जुलूस में शामिल हुये थे। इंकलाब जिन्दाबाद के नारे से पूरा गढ़ाकोट गुजांयमान हो रहा था। जो जिन्दादिली तथा जीवन्त इस जुलूस में थी वैसी सागर सम्भाग में निकाले गये किसी भी जुलूस में नहीं देखी गई थी। श्रीमती पार्वती बाई द्वारा सन् 1942 में गढ़ाकोटा में राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया उस समय राष्ट्रीय ध्वज और वह भी एक महिला के द्वारा, उस समय गढ़ाकोटा के थानेदार गयाप्रसाद थे उन्होने अपने सिपाहियों से श्रीमती पार्वती बाई के गिरफ्तार करने के आदेश दिये। पार्वती बाई गिरफ्तार कर ली गईं और उन्हें 9 मास का कारावास की सजा सुनाई गई। श्रीमती पार्वती बाई का तो जन्म ही देश सेवा के लिये हुआ था। वे जिला कांग्रेस कमेटी की सदस्य हो गईं। 20 वर्ष श्रीमती पार्वती बाई नगर परिषद की सदस्य रहीं, जब विनोबा भावे के द्वारा भूमिदान आन्दोलन चलाया गया तो श्रीमती पार्वती बाई द्वारा इस आन्दोलन में सक्रिय भूमिका निभाई गई। इस प्रकार से हम भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में श्रीमती पार्वती बाई के किये गये कार्य को भुलाया नही जा सकता।[43]

श्रीमती शकुन्तला हार्डीकर और भारत छोडो आन्दोलन

श्रीमती शकुन्तला हार्डीकर लक्ष्मीपुरा सागर के निवासी श्री चन्द्रशेखर जी की पत्नीं थीं। इनका जन्म सन् 1919 में हुआ। श्रीमती शकुन्तला हार्डीकर के मन में देशभक्ति की भावना कूट कूट कर भरी हुई थी। सन् 1942 ई0 में जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आन्दोलन हुआ तो श्रीमती हार्डीकर ने सागर जनपद से अन्य महिलाओं के साथ आन्दोलन में भाग लिया पुलिस द्वारा इनको गिरफ्तार कर लिया गया और 6 मास का कारावास दे दिया गया।[44]

श्रीमती अनुसुईया बाई और हार्डीकर और भारत छोड़ो आन्दोलन

श्रीमती अनुसुईया बाई हार्डीकर श्री सदाशिव राव की पुत्री थीं। इनका जन्म 1910 ई0 में सागर में हुआ। श्रीमती

अनुसुईया बाई ने सन 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और गढ़ाकोटा में हुये जुलूस में भाग लिया बिट्रिशशासन द्वारा इनको गिरफ्तार कर लिया गया और 6 महीने की कारावास की सजा दे दी गई।

साबूलाल बैशाखिया और भारत छोडो आन्दोलन

सन 1942 में सागर जनपद में महिला स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुये हम एक महान स्वतन्त्रता सेनानी साबूलाल बैशाखिया के प्रति भी अपनी लेखनी के द्वारा श्रद्धा सुमन अर्पित करते है क्योंकि इस गढ़ाकोटा में जो जुलूस निकाला गया और जिस जुलूस में ढाई हजार स्त्री पुरूषों और विद्यार्थियों ने भाग लिया इसमें साबूलाल बैशाखिया अपने प्राणो का मोह न करते हुये थाने पर झण्डा फहराने का वह अतुलनीय साहस किया जिस कृत्य को बहुत कम लोग कर सकते हैं।[45]

सन् 1942 की घटना है गांधी जी सम्पूर्ण भारत वर्ष में करो या मरो का नारा लगा रहे थे। 9 अगस्त को सारे देश में नेताओं को गिरफ्तार कर जेल में ठूँस दिया गया, जनता भडक उठी। उसने अंग्रेजों के गुलामी के जुअे को अपने कन्धों पर से उतार फेंकने का निर्णय लिया।

गढ़ाकोटा के युवकों ने भी जुलूस निकाला और इंकलाब जिन्दाबाद, अंग्रेजों भारत छोड़ो, भारत माता की जय के नारे लगाते हुये नदी के उस पार बने थाने का घेराव करने के लिये आगे बढ़ने लगे। इस जुलूस में भारी संख्या में विधार्थी और महिलायें थीं। इंक़लाब जिन्दाबाद के गगनमेदी नारे से सारा आकाश गुंजायमान हो रहा था, जुलूस पुल पार करके दूसरे ओर बने थाने के पास पंहुचा, थानेदार गयाप्रसाद हाथों में पिस्तौल लिये बरामदे में खाड़ा था तथा उसके चारों तरफ संगीन लगी बन्दूकें लिये दस पन्द्रह सिपाही आकमण की तैयारी में खाड़े थे। थाने के किनारे एक खाम्भें में लगा यूनियन जैक लहरा रहा था। जुलूस का तिरंगा झण्डा भी हवा में फड़फड़ा रहा था। जो युवक तिरंगा थामे था उसने जैसे ही यूनियन जैक को देखा वह पूरी ताकत के साथ हवा में तिरंगा उछालते हुये बोला ''इंकलाब–जिन्दाबाद'' तथा ''विजयी विश्व तिरंगा प्यारा '' सारा जुलूस चिल्ला पडा ''झण्डा ऊँचा रहे हमारा। इसकी शान न जाने पाये जुलूस ने उत्तर दिया चाहे जान

भले ही जाये तभी थानेदार ने कड़क कर कहा खबरदार कोई आगे बढ़ा, एक एक को भून कर रख दूँगा। पर वहां चीख सुनने वाला ही कौन था। जुलूस थाने के भीतर घुसती चली गयी। थानेदार चिल्लाया– फायर, पहले हवा में गोलियां चली तभी तक चौबीस पच्चीस साल का युवक तिरंगा लेकर थाने पर चढ़ने लगा। उसका इरादा था कि यूनियन जैक को उतार कर वहां पर तिरंगा फहरा देगा ।तभी असली फायरिंग होने लगी और हाय राम कहता हुआ तिरंगा चढाने वाला युवक धड़ाम से नीचे जा गिरा, यूनियन जैक उसने उतारकर फेंक दिया और उसके स्थान पर तिरंगा लहराने लगा था। तेरह राउन्ड गोलियां चलीं अनेक घायल हुये और तिरंगा चढ़ाने वाला वह युवक जिसका नाम साबूलाल था, वीरगति को प्राप्त हुआ। जुलूस अमर शहीद का शव लेकर थाने से बस्ती की ओर आ गया हजारों नम आखों ने साबू लाल को अन्तिम विदाई दी।[46]

भारत छोड़ो आन्दोलन और जबलपुर की महिलायें

सन् 1939 में प्रथम महायुद्व छिड़ा जिसमें बिट्रिश सरकार ने कांग्रेस मंत्रीमण्डलों से सलाह लिये बिना देश को विश्वयुद्व की आग में झोंक दिया था। इसके विरोधस्वरूप कांग्रेस मंत्रीमण्डल के सदस्यों ने त्याग पत्र दे दिया। सन् 1940 में गांधी जी ने व्यक्तिगत सत्याग्रह चलाया और इसी समय पं0 जवाहर लाल नेहरू और डा0 राजेन्द्र प्रसाद जबलपुर आये और इसके बाद ही जलपुर में सत्याग्रह आरम्भ हो गया।

जबलपुर जिले में जगह जगह आपत्तिजनक भाषण देने के आरोप में श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान को गिरफ्तार कर लिया गया। 5 जनवरी 1941 को व्यक्तिगत सत्याग्रह का तीसरा दौर प्रारम्भ हुआ। सन् 1942 में स्टेफर्ड क्रिप्स को भारत भेजा गया। सन 1941 में महात्मा गांधी जबलपुर आये, जबलपुर के लोगों ने गांधी जी से भाग लेने की अनुमति मांगी। और सन् 1942 में महात्मा गांधी पुनः जबलपुर आये। यहां पर उन्हें गाड़ी बदलनी थी लोगों की अपार भीड़ ने गांधी जी का जगह जगह स्वागत किया दोपहर को गांधी जी बनारस पंहुचे तो उन्हें महिलाओं ने हरिजन कोष के लिये अपने गहने स्वेच्छा से अर्पित किये। बापू आत्मविभोर हो उठे। सन् 1942 में महात्मा गांधी द्वारा करो या

मरो 8 अगस्त 1942 की रात मुम्बई से अपने देशवासियों को दिया। गांधी जी को पूना के आगा खाँ महल में गिरफ्तार कर लिया गया।[47]

सुभद्रा कुमारी चौहान और भारत छोड़ो आन्दोलन

9 अगस्त को जैसे ही महात्मा गांधी की गिरफ्तारी का समाचार जबलपुर में मिला तो सन्ध्या समय बुलेटिन के जरिये तिलक भवन पर सत्याग्रह करने की सूचना प्रसारित की गई। साथ ही सन्ध्या को ही त्रिपुरा कांग्रेस स्मारक पर तिरंगा फहराने की योजना बनाई गई। यह सम्भावना प्रबल थी कि पुलिस अब राष्ट्रीय आन्दोलन को कुचल डालने के लिये कुछ भी कसर न छोड़ेगी। सन्ध्या को तिलक भूमि तलैया पर जनता को एकत्रित होने म तनिक भी देर न लगी। उस समय वहां पुलिस और सेना के सत्तर अस्सी जवान बन्दूकें और लाठी लेकर सत्याग्रह के दमन के लिये खड़े थे। जिनके साथ पिस्तौल लटकाये गोरे सार्जेन्ट थे। इसी बीच खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी काव्य की प्रणेता श्रीमती चौहान भीड़ को चीरते हुईं मंच पर पंहुचीं। दो सत्याग्रही हाथ मे तिरंगा लिये मंच पर आये, नारे लगाना शुरू किये कि एक थानेदार और दो सिपाहियों ने मंच पर चढ़कर झण्डे छीन लिये। सुभद्रा कुमारी जी पुलिस के इस व्यवहार को देखकर आवेश में आ गईं और नारा लगाने लगी अंग्रेजों भारत छोड़ो'' भारत आजा द है बिट्रिश हुकुमत से असहयोग करो आश्रुगैस के गोले फेकना शुरू किये भीड तितर वितर होने लगी । किसी प्रकार ऑखो मलकर सुभद्रा कुमारी को बाहर निकालकर घार भेज दिया गया । रात को शहर में कर्फ्यू लगा दिया गया और 12 अगस्त को सुभद्रा कुमारी जी गिरफ्तार कर ली गई जिसकी खबर विजली के समान नगर में फैल गई इसकी प्रतिक्रिया भयानक हुई जहां तहा पुलिस और जनता की भिण्डन्त हो गई जनता पुलिस पर पत्थर बरसाती और पुलिस जनता पर लाठी चार्ज करती।[48]

भारत छोड़ो आन्दोलन और जबलपुर श्रीमती प्रभा देवी और भारत छोड़ो आन्दोलन-

श्रीमती प्रभा देवी का जन्म सन् 1922 में हुआ था ।इनके पति जबलपुर के निवासी श्री गोकुल प्रसाद सर्राफ थे । श्री गोकुल प्रसाद प्रसिद्व स्वतन्त्रता सेनानी थे सन् 1942 में गोकुल

प्रसाद सर्राफ के साथ प्रभा देवी सर्राफ ने सकिय भाग लिया तथा अदालत में झण्डा फहराने के कारण इन्हे जबलपुर जेल में 6 माह के कारावास की सजा सुनाई गई ये जेल में दिनाँक 10.12.42 से 9.6.42 तक रही।[49]

श्रीमती सवित्री देवी तिवारी–

श्रीमती सावित्री देवी करनी तहसील की निवासी थीं इनका जन्म 1913 में हुआ था इनका विवाह श्री नारायण प्रसाद तिवारी से हुआ सन् 1930 से ही यह स्वतन्त्रता संग्राम में सकिय रहीं। और 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में इन्हे 1 वर्ष से अधिक कारावास की सजा सुनाई गई किन्तु फिर भी यह महिला समाज सेवा में लगी रही।[50]

श्रीमती कुसुमवती सर्राफ–

श्रीमती कुसुमवती सर्राफ श्री गाँकुल प्रसाद सर्राफ की पत्नी थीं। ये जबलपुर के निवासी थे। इनका जन्म 1924 ई० में हुआ था। सन 1942 ई० में जब भारत छोड़ो आन्दोलन में श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा झण्डा रोहण का प्रयास तिलक तलैया भूमि पर किया गया था। तथा पुलिस द्वारा उन्हें बलपूर्वक हराया गया था। उस झण्डा जुलूस में श्रीमती के साथ कुसुमवती देवी ने भी भाग लिया। ये भी सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ गिरफ्तार कर ली गईं और सन् 1942 में इन्हे 6 माह की कारावास की सजा सुनाई गई। 1944 में इनका स्वर्गवास हो गया।[51]

श्रीमती ललती बाई सोनी

श्रीमती ललती बाई उपरैना गंज मोहल्ले की रहने वाली थीं। इनका जन्म 1904 ई० में जबलपुर में हुआ था इनके पति का नाम श्री रामचन्द्र सोनी था। श्रीमती ललती बाई ने 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया तथा पुलिस द्वारा गिरफ्तार किये जाने के कारण 6 माह का कारावास का दण्ड सुनाया गया।[52]

श्रीमती इन्दुमती राव–

श्रीमती इन्दुमती राव जबलपुर के खम्हरिया मोहल्ले के निवासी श्री यू०एस० भास्कर राव की पत्नी थी इन्होने भी सन् 1942 के भारत छोडो आन्दोलन में भाग लिया और इन्हे अपनी वीरता तथा साहस का प्रर्दशन करने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया तथा पूना यरवदा ठाठा जेल में विभिन्न स्थानों पर कुल नौ माह की सजा सुनाई गई ।[53]

श्रीमती शन्ति बाई

श्रीमती शन्ति बाई मदन मोहन मोंहल्ले की रहने वाली थीं, इनका जन्म 1929 में हुआ था। इनके पति का नाम श्री जमशेर सिंह था। इन्होने ने भी सन 1942 ई0 के भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया था तथा भाग लेने के कारण गिरफ्तार कर लिया गया था इन्हे सन् 1942 ई0 में 5 माह की कारावास की सजा सुनाई गई थी। [54]

श्रीमती इन्दिरा तिवारी

सन् 1942 का भारत छोड़ो आन्दोलन एक ऐसा आन्दोलन था जिसमें महिलाओं ने खुलकर भाग लिया था। जबलपुर जिले में भी बड़े पैमाने पर महिलायें इस आन्दोलन में शरीक हुई थीं। जबलपुर से श्रीमती इन्दिरा तिवारी का जन्म 1915 में हुआ तथा इनकी शिक्षा प्राथमिक स्तर तक हुई। थोड़ा बड़ा होने पर इनका विवाह श्री देवदत्त तिवारी से हो गया। स्वतन्त्रता आन्दोलन में इन्होने महिला वर्ग का नेतृत्व किया। सन् 1930–32 से ही इनके पति स्वतन्त्रता आन्दोलन में सक्रिय रहे। सन् 1942 में जब भारत छोड़ो आन्दोलन छेड़ा गया तो श्रीमती तिवारी ने कलेक्टर से कुर्सी छोड़ने का आदेश दिया था तथा झण्डा चढ़ाने के आरोप में बन्दी बनाई गई। 1वर्ष की कारावास की सजा सुनाई गई किन्तु फिर भी वह सतत् सक्रिय रहीं और महिलाओं को उन्हें इस आन्दोलन में भाग लेने की प्रेरणा देती रहीं। सरकार जितनी बर्बरता पूर्वक महलाओं पर अत्याचार करती थी उतने ही उत्साह से ये महिलायें आन्दोलन में भाग लेकर आन्दोलन को मजबूत बनातीं। इनकी मृत्यु 15.11.95 को हुई। [55]

फूलमती भटनागर

श्रीमती फूलमती जबलपुर के करनी तहसील के निवासी श्री रामभरोसे भटनागर की पत्नी थीं। इनका जन्म सन् 1908 ई0 में हुआ इनकी शिक्षा प्राथमिक स्तर पर हुई। प्राथमिक शिक्षा ग्रहण करने के बाद ही फूलमती ने राष्ट्रीय गतिविधियों में भाग लेना प्रारम्भ कर दिया था। और पूर्ण रूप से भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया जिसके कारण इन्हे 16 दिन का कारावास भोगना पडा। [56]

श्रीमती सरस्वती देवी

श्रीमती सरस्वती देवी कटनी की निवासी थीं। इनके पति का नाम देशराज था। इन्होनें भी भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और इन्हें गिरफ्तार होने पर 16 दिन की सजा सुनाई गई।[57]

मुन्नी बाई रैकवार

मुन्नी बाई रैकवार भी कटनी की निवासी थी। इन्होनें भी फूलमती भटनागर और सरस्वती देवी की तरह भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। इनका जन्म 1924 में हुआ और इनके पति श्री जगनाथ रैकवार थे यह भी एक स्वतन्त्रता सेनानी थे श्रीमती मुन्नी बाई को आन्दोलन में भाग लेने के कारण सन 1942 में 15 दिन की कारावास की सजा सुनाई गई तथा जगन्नाथ रैकवार भी सन् 1942 में 8 माह के लिये जेल गये। [58]

श्रीमती तुलसी बाई

श्रीमती तुलसी बाई कटनी के गांधीगंज मोहल्ले की निवासी थीं। इनका जन्म 1890 ई0 में हुआ इनका विवाह श्री रामकृष्ण दुबे के साथ हुआ। इन्होनें भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। आन्दोलन में भाग लेने के कारण ये गिरफ्तार कर लीं गईं और इन्हे 5.9.42 से 21.9.42 तक की कैद की सजा सुनाई गई।

श्रीमती सुन्दर बाई गौतम और सत्याग्रह

महिला स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्रीमती सुन्दर बाई गौतम का जन्म सन् 1912 में ई0 में रोसरा में हुआ था। सन् 1942 की जनक्रान्ति में आपका महती योगदान रहा इनके पति का नाम श्री अम्बिका प्रसाद गौतम था ये प्रसिद्व स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी थे अतः सुन्दर बाई के हृदय में पति की प्रेरणा पाकर देश अनुराग की भावना प्रवाहित हुई। श्री अम्बिका प्रसाद गौतम सिलौड़ी तहसील के निवासी थे। सिलौडी ग्राम का जबलपुर के स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में प्रमुख स्थान था सन् 1930 में सिहोरा में जंगल सत्याग्रह हुआ तो इसका प्रभाव सिंलौड़ी मण्डल पर भी पड़ा और पण्डित अम्बिका प्रसाद गौतम ने अन्य सेनानियों के साथ आन्दोलन में भाग लिया। इन सेनानियों के दमन के लिये सरकार को गोली चलानी पड़ी तथा मार्शल लॉ लागू करना पड़ा जिससे पुलिस की निर्दयतापूर्वक मार से कंधीलाल जैन शहीद हो गये। इनको पुलिस के द्वारा गिरफ्तार कर लिया गया।[59]

सन् 1942 में प्रसिद्ध भारत छोड़ो आन्दोलन छिड़ा इस आन्दोलन में सिहौरा तहसील के लोगों ने बढ़ चढ़कर कर भाग लिया। पं0 सुन्दर लाल गौतम स्वतन्त्रता आन्दोलन में जेल जा चुके थे ठीक उसके पश्चात आग लगाये जाने की तफ्तीश चल रही थी। स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वाली वीरांगना स्वदेशी प्रेमी उग्र भीड़ का नेतृत्व करते हुये अंग्रेजों का नाश हो, भारत छोड़ो देश हमारा, भारत माता की जय के नारा लगाते हुये पुलिस चौकी में झण्डा फहाराने पंहुची, वह झण्डा फहराने में सफल हो गयी होती मगर पुलिस आफीसर ने दौडकर बूट की लात मारी जिससे वह वीर महिला गिर पड़ी। पर वह झण्डा छोड़ने को तैयार नहीं थी। तब तक और पुलिसवाले आ गये और बल पूर्वक इस वीरंगना से झण्डा छीन कर फाड़ डाला और उसे पैरों तले कुचला तथा साथ ही इन्हें गिरफ्तार कर लिया।[60] तब भी यह निर्भीक महिला झण्डा ऊँचा रहे हमारा '' मेरा रंग दे बसन्ती चोला, भारत माता की जय के नारे लगाती रही इसे अन्य सत्यग्रहियों के साथ केन्द्रीय कारागार जबलपुर भेजा गया। पति पहले ही जेल जा चुके थे। सुन्दर बाई के तीन अबोध बच्चे थे परिवार में ऐसा कोई नहीं था जो इन अबोध बच्चो की देखभाल करता इसलिये इनके साथ तीन अबोध बच्चे तीरथ 12 वर्ष, भानुप्रताप 5 वर्ष और एक बच्ची माँ के साथ जेल गयी। वहां 20 नवम्बर 1942 से 19 मई 43 तक में 6 माह का दण्ड भोगना पड़ा। इस बीरांगना को जबलपुर जेल में स्त्रीबैरक में रखा गया था। इस बैरक में वर्धा से सेठ जमुनालाल बजाज की पुत्री और उनकी बहू के साथ उनकी नादान बच्ची(बेबी) थी। जबलपुर से श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान थीं। उसी बैठक में सुशीलाबाई नामक एक महिला भी थी। जो अपने आप को सत्याग्रही बतलाती थी जबकि वह अंग्रेज सराकर की जासूस थी। जो कि सेनानियों की कियाकलापों की जानकारी देती थी। जब यह राज श्रीमती सुन्दर बाई और सुभद्रा कुमारी चौहान को मालूम हुआ तो उन्होनें उसकी खासी मरम्मत की जिसके कारण इन्हें 15 दिनों की गुना खाने की सजा मिली। इस सजा में इन्हें अंधेरी कोटरी में बड़ी हथकड़ी डालकर अकेले स्टूल पर बैठा रहना पड़ता था। केवल भोजन और शौच किया को निकाला जाता था।[61] श्रीमती गौतम के ज्येष्ठ पुत्र तीरथ को बैरक से लगी धोबी के भटटी के पास रखे घना की गंजी में आग लगाने के अभियोग में 15 दिन की कालकोठरी

और सजा के शेष अवधि के लिये अनाथालय में रखा गया।जेल में ही श्रीमती गौतम की बच्ची सुशीला का स्वास्थ्य खराब हो गया और अंग्रेजी सरकार की कुव्यवस्था के कारण स्वास्थ्य दिन प्रतिदिन गिरता गया। फलस्वरूप जेल से छूटने के बाद तेरहवें दिन बच्ची की निधन हो गया। 15 अगस्त 1947 को स्वतन्त्रता के अरूणोदय पर सिलौड़ी ग्राम पर में श्रीमती गौतम को हाथी पर बैठाकर जुलूस निकाला गया। जीवन के अनेक कष्टों को झेलते हुये यह वीरांगना सन् 1973 में परलोक. सिधारी।

श्रीमती तरबदा बाई

श्रीमती तरबदा बाई भी कटनी की निवासी थीं। ये गुरूनानक वार्ड की रहने वाली थीं। इनके पति का नाम श्री भगवती प्रसाद गौर था। इन्होने भी 1942 के आन्दोलन में भाग लिया औरजुलूसों में भाग लेने के कारण और अंग्रेजी सरकार के खिलाफ नारेबाजी करने के कारण 17 दिन की कारावास की सजा सुनाई गई।[62] इसके अतिरिक्त कटनी की निवासनी श्री गुजरिया बाई थीं जिनका जन्म 1894 में हुआ था ये विलैया की तलैया बार्ड की निवासी थीं। इन्होने भी 1942 के आन्दोलन में भाग लिया इनके पति श्री बाबादीन आरखा थे इन्हे 15 दिन के कारावास की सजा सुनाई गई।[63]

सिहोरा तहसील की महिला स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी

सिहोरा तहसील से श्रीमती चन्दा बाई सूरत सिंह की पुत्री तथा इसी क्षेत्र की श्रीमती नन्हीं बाई जैन दोनो ने ही 1942 के इस आन्दोलन में सकिय रूप से भाग लिया जिसमें की चन्दाबाई को 13 दिन तथा नन्ही बाई को 8 माह तथा 18 दिन का कारावास सुनाया गया।

15 अगस्त सन 1947 को भारत आजाद हुआ। भारत की आजादी में जबलपुर नगर ने गदर से लेकर भारत छोड़ो आन्दोलन के दौर तक असंख्य बलिदान दिया। और यह कहना कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आजादी की लड़ाई का नेतृत्व करने में यह नगर सदैव अग्रणी रहा और कवि रामधारी सिंह दिनकर की यह पक्तियां इनके बारे में सटीक बैठती हैं —....

" कलम आज उनकी जय बोल
जला अस्थियाँ बारी बारी
छिटकाई जिनने चिनगारी

चढ़ गये जो पुण्य वेदी पर
लिये बिना गरदन का मोल।''

नरसिंहपुर का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

नरसिंहपुर में लार्ड कर्जन द्वारा 1905 ई0 में किये गये बंगाल विभाजन के पश्चात राष्ट्रीय भावना की शुरूआत हुई। जबकि राष्ट्रीय कार्यकताओं द्वारा जनता को स्वदेशी वस्तुओं और खादी का उपयोग करने की सलाह दी गई। 1942 में सर गंगाधर राव चिरनवीस की अध्यक्षता में जबलपुर अधिवेशन में तथा 1907 में नागपुर से हिन्दकेसरी के प्रकाशन का जिलास्तर पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। इन अंग्रेजी समर्थक व्यक्तियों ने लिबरल लीग नामक अपनी एक संस्था का गठन किया। सन 1918 में जिले में होमरूल लीग की शाखा खोली गई।[64] 24 नवम्बर 1918 को प्रान्तीय कांग्रेस समिति का पुनर्गठन किया गया और अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के लिये सदस्यों का निर्वाचन किया गया जिसमें अन्य सदस्यों के साथ नरसिंहपुर के मानिक कोचर भी निर्वाचित किये गये।[65]

असहयोग आन्दोलन और नरसिंहपुर की भूमिका

1920–21 में असहयोग आन्दोलन की शाखा नरसिंहपुर में खोली गई जिसमें विदेशी वस्तुओं, शालाओं, महाविधालयों तथा विधि न्यायालयों का बहिष्कार, उपाधियों का परित्याग, शराब की दुकानों पर धरना तथा विदेशी वस्त्रों को जलाना आदि कार्य शामिल थे। इस आन्दोलन में भाग लेने वाले लोगों में रविशंकर शुक्ल, राघवेन्द्र राव, डा0 मुन्जे, दौलत सिंह, माखनलाल चतुर्वेदी, विष्णु दत्त शुक्ल, और अन्य नेताओं ने बैठक में भाग लिया और जब नागपुर में झण्डा सत्याग्रह हुआ तो जिले में सत्याग्रह में भाग लेने के लिये जिले से स्वयं सेवक भेजे गये।[66]

सविनय अवज्ञा आन्दोलन और नरसिंह पुर जनपद

जब गांधी जी ने अप्रैल 1920 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ किया तो तब देश के अन्य भागों की तरह नरसिंहपुर ने भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया। इस आन्दोलन में सैकड़ों की संख्या में नरसिंहपुर की महिलायें और पुरूषों ने भागीदारी की तथा सामूहिक हड़ताल, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और नमक वस्त्र जंगल कानून को तोड़ा जाना शामिल था। नरसिंहपुर में वन सत्याग्रह चलता रहा।[67]

इस आन्दोलन का प्रथम चरण 5 मार्च 1931 की प्रसिद्व गांधी इरविन समझोंता पर हस्ताक्षर होने के पश्चात समाप्त हो गया। आन्दोलन को दबाने के लिये पुलिस ने फिर से कठोर तरीके अपनाये। नरसिंहपुर में भी कठोर दण्ड दिये गये। मध्य प्रान्तों के अन्य जिलों के साथ ही नरसिंहपुर विधि–विरूद्व संघ अध्यादेश शुरू किया गया।[68] हरिजन कोष के संग्रहण के लिये दौरा करते हुये गांधी जी ने सन् 1933 में केरली में एक सभा का आयोजन किया और उन्हे एक थैली भेंट की।

व्यक्तिगत सत्याग्रह और नरसिंहपुर जनपद

1940 को वायसराय लिनलिथगो ने कांग्रेस के सम्मुख प्रस्ताव रखा कि युद्ध के पश्चात भारत के लिये एक नये संविधान के निर्माण के लिये एक प्रतिनिधि सभा गठित करने का विचार है। कांग्रेस ने इस प्रस्ताव को असन्तोषजनक माना और महात्मा गांधी के नेतृत्व में 1940 में व्यक्तिगत सत्याग्रह छेड़ दिया। इस देश में भक्तिपूर्ण आव्हान से प्रेरणा प्राप्त कर नरसिंहपुर के ठाकुर निरंजन सिंह, श्याम सुन्दर नारायण, मुशरान, कुन्दन लाल तिवारी, शंकर दत्त तिवारी, रामसिंह चौहान, वीपी पचौरी ने इस आन्दोलन में भाग लिया। वे भारतीय प्रतिरक्षा अधिनियम के तहत गिरफ्तार हुये कठोर कारावास की सजा दी गई और भारी जुर्माना किया गया। महाकौशल क्षेत्र में सत्याग्रह में भाग लेने वाले लोगो में 311 सत्याग्रही नरसिंहपुर जिले के थे।

भारत छोड़ो आन्दोलन और नरसिंहपुर जनपद

सन् 1942 में महात्मा गांधी द्वारा समस्त भारत में करो या मरो का आवाहन किया। 9 अगस्त को कांग्रेस के सभी महत्वपूर्ण कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिये गये। और कांगेस समिति को गैर कानूनी घोषित कर दिया गया। 10 अगस्त को करैली से रघुनाथ सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। 11 अगस्त तथा 12 अगस्त को करैली तथा गोरेगांव में हड़ताल रही। 14 अगस्त को तेंदुरखेड़ा में एक आम सभा आयोजित की गई। गाउरवाडा में 8 व्यक्तियों को गिरफ्तार कर लिया गया।[68]

भारत छोड़ो आन्दोलन की अमर शहीद गोराबाई

23 अगस्त को नरसिंहपुर जिले के चीचली गांव में हुये गोली काण्ड में अमर शहीद मंशाराम के साथ शहीद होने वालों गोरा बाई का नाम भारत के इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में

लिखा जायेगा। राजनीतिक चेतना से भरपूर नरसिंहपुर जिले के चीचले गांव में जहां पुरूषों ने अपने खून से बलिदान की कथायें लिखी हैं। वहाँ गांव की स्त्रियां भी पीछे नहीं रही हैं।स्वतन्त्रता आन्दोलन में ग्राम में 23 अगस्त 1942 में हुये गोली काण्ड में शहीद मंशाराम के साथ गोरीबाई का नाम प्रमुखता से लिया जाता है।[70]

वीरांगना गौराबाई चीचली गांव की सर्वहारा वर्ग की एक श्रमिक महिला थी। 23 अगस्त को चीचली गांव में एक दुखःद घटना हो गई। यह घटना नर्मदा प्रसाद तथा बाबूलाल को जिन्होंने दो दिन पूर्व चीचली में आयोजित आम सभा में अंग्रेज विरोधी भाषण दिये थे, गिरफ्तार किये जाने के कारण हुई थी। इन्हें गिरफ्तार किये जाते ही भारी भीड़ ने पुलिस को घेर लिया और पुलिस पर पत्थर बरसाना प्रारम्भ कर दिया, बाद में गाबरबाड़ा तथा नरसिंहपुर के अतिरिक्त पुलिस दस्ते आ गये। यह भीड़ लगभग 1500 व्यक्तियों की थी और ऐसा कहा जाता है कि उनमें से कुछ लाठियों तथा कुलहाड़ियों से लैस थे। पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया किन्तु इसका कोई प्रभाव नहीं पड़ा, भीड़ को भयभीत करने के लिये पुलिस ने निर्दयता पूर्वक 20 चक गोलियां चलाईं,।[71] गोली बारी के घटना–स्थल के सामने ही इनका निवास था। शहादत के समय उनकी उम्र 45 वर्ष की थी इनके पति का नाम पतिराम था गौराबाई की सन्तान केवल एक पुत्री थी जिसका नाम पार्वती बाई था। कालान्तर में उसका भी आकस्मिक निधन हो गया ।

सन् 1942 में जब सारे देश में स्वतन्त्रता आन्दोलन की लपटें उठ रही थीं इस छोटे से गांव में भी इसकी आंच आ पंहुची, परिणाम स्वरूप 23 1942 को एक धार्मिक कार्यक्रम के समापन के बाद जुलूस ने राजनीतिक रूप धारण कर लिया और करो या मरो, अंग्रेजों भारत छोड़ो, जैसे नारे हवा में उछल रहे थे। उत्तेजित पुलिस ने जनता पर लांठी चार्ज का हुकुम दे दिया, कोधित पुलिस द्वारा चलाई गई गोली सर्वप्रथम गौराबाई पर ही लगी। गौराबाई का खून देश के लिये बहा इसलिये उनका नाम अमर है। आज इनका कोई भी वारिस नहीं है मगर सहस्त्रों सिर उनके नाम पर आज तक झुकते रहते हैं। और झुकते रहेगें गौराबाई ने अपना खून बहाकर स्वतन्त्रता की विरासत हमें सौंपी है।[72]

श्रीमती ललिताबाई का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

नरसिंहपुर जिले के स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में हम श्रीमती ललिता बाई के अपूर्व योगदान को विस्मृत नही कर सकते। श्रीमती ललिता बाई का जन्म चवरपाढा में हुआ। उनके हृदय मे बाल्यकाल से ही स्वतन्त्रता के प्रति तीव्र अनुराग की भावना प्रवाहित थी। वे चवरपाढा के रहने वाले श्री नर्मदा प्रसाद की पत्नीं थीं। जब महात्मा गांधी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आन्दोलन हुआ तो श्रीमती ललिताबाई ने भी उसमें भाग लिया और जब 14 अगस्त को तेदुरखेड़ा में आम सभा का आयोजन किया गया तथा उसमें सैकड़ों की संख्या में स्त्री पुरूषों ने भाग लेकर अंग्रेज विरोधी तीव्र भावनायें व्यक्त कीं तो उनमें श्रीमती ललिताबाई ने भी अंग्रेज विरोधी सम्मेलन में भाग लिया। इस जुलूस पर पुलिस द्वारा बेंत बरसाये गये। तेन्दुरखेड़ा में एक नेता श्री बाबूलाल जैन को गिरफ्तार कर लिया गया जिसके परिणाम स्वरूप भीड़ ने जिसमें ललिताबाई भी थी, पुलिस को घेर लिया।

परिणाम स्वरूप पुलिस ने भंयकर लाठी चार्ज किया, इस प्रकार श्रीमती ललिता बाई ने भारत छोड़ो आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हुये स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास के पन्नों में अपना नाम अमर कर दिया।[73]

श्रीमती शान्ति देवी का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

श्रीमती शान्ति देवी ग्राम करैली के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री बद्रीनाथ चौधरी की पत्नीं थीं। श्री बाबूलाल चौधरी ने करैली के स्वतन्त्रता संग्राम में गांधी जी द्वारा चलाये गये सविनय अवज्ञा आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। जब गांधी जी द्वारा साबरमती से दाण्डी तक की पद यात्रा प्रारम्भ की गई तब देश के अन्य भागों की तरह नरसिंहपुर भी स्वतन्त्रता संग्राम में अपना योगदान देने के लिये उत्सुक तथा तैयार था। करैली में भी प्रत्येक नर नारी के हृदय में स्वतन्त्रता की तीव्र भावना प्रवाहित थी। उस समय लोग सामूहिक हड़ताल, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार और नमक तथा वन कानूनों के उल्लंघन के द्वारा अंग्रेज विरोधी भावनाओं को व्यक्त कर रहे थे। श्रीमती शान्ति देवी ने भी अपने पति श्री बद्रीनाथ चौधरी के साथ आन्दोलन में भाग लिया तथा बहिष्कार और नमक कानून के

विरोध में शामिल हुईं, इस आन्दोलन में इनके पति को 4 मास के कारावास का दण्ड दिया गया श्रीमती शन्ति देवी भी एक सच्ची सहधर्मिणी की भाँति अपने पति के साथ निरन्तर देश सेवा में लगी रहीं।[74]

भारत छोड़ो आन्दोलन

विदिशा का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

विदिशा पूर्व में ग्वालियर शासन का एक भाग था। विदिशा में स्वतन्त्रता की लहर सन् 1920 में ग्वालियर में सार्वजनिक सभा नामक एक समाजिक तथा सांस्कृतिक संगठन की स्थापना करके की गई थी, जिसके सचिव 1930–1931 से 1936–1937 के छह वर्षों तक विदिशा के श्री तख्तमल जैन रहे।

उसी वर्ष विदिशा में प्रजा मण्डल की स्थापना करके उसे पंजीकृत कराने का प्रयास किया गया लेकिन ग्वालियर राज्य द्वारा उसे स्वीकार नहीं किया गया, तथापि विदिशा जिले के कार्यकर्ता उज्जैन को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाकर प्रतिनिधि ा शासन की स्थापना करने का प्रयास करते रहे। त्रयम्बक दामोदर इस आन्दोलन के जनक थे। रचनात्मक कार्यक्रम के क्षेत्र में हरिजन तथा खादी ग्रामोद्योग की शुरूआत की गई और सिरोंजा में कार्य प्रारम्भ किया गया।[75]

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने भी देशी रियासतों की अशान्त परिस्थितियों में अधिकाधिक रूचि लेना प्रारम्भ कर दिया। सन् 1938 में कांग्रेस के हरिपुर अधिवेशन में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने यह संकल्प स्वीकृत किया कि कांग्रेस शेष भारत के भांति रियासतों में भी राजनैतिक समाजिक तथा अर्थिक स्वतनत्रता के लिये कार्य करगें और यह कि रियासत भी भारत का अभिन्न अंग है तथापि यह रियासत की जनता पर छोड़ दिया कि वे अपनी स्वतन्त्रता के लिये स्वयं प्रयास करे ।[76]

व्यक्तिगत सत्याग्रह तथा विदिशा जनपद की स्वतन्त्रता सेनानी महिलायें

जब सन् 1941 में महात्मा गांधी द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह चलाया गया तो प्रारम्भ में महात्मा गांधी द्वारा भारतीय रियासतों में व्यक्तिगत आन्दोलन छेड़ने की अनुमति नहीं थी। लेकिन विदिशा के पुरूषों जिनमें श्री खुशीलाल, श्री बाबूगणेश, श्री कामता प्रसाद,

श्री सुखाराम, श्री धनाराम दत्तात्रैय तथा श्री सूर्यप्रकाश आदि नेताओं के साथ श्रीमती प्रमिला पत्नी दत्तात्रैय, श्रीमती मदन देवी नवल द्वारा सर्वप्रथम महात्मा गांधी से व्यक्तिगत सत्याग्रह छेड़ने के लिये सेवा ग्राम में भेंट की गई। गांधी जी ने उन्हें सागर जिले में आन्दोलन छेड़ने की अनुमति प्रदान कर दी ।

विदिशा में मध्यप्रदेश की महिला स्वतन्त्रता सेनानियों की भूमिका अतुलनीय है। यहां पर महिलाओं में श्रीमती प्रमिला, श्रीमती लक्ष्मी बाई, श्रीमती मदन देवी नवल, तथा श्रीमती जमुना देवी ने प्रसिद्ध भारत छोड़ो आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। [77]

श्रीमती मदन देवी नवल तथा भारत छोड़ो आन्दोलन

विदिशा जिले के स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास में हम श्रीमती मदन देवी नवल के अतुलनीय योगदान को भुला नहीं सकते। श्रीमती मदन देवी नवल प्रसिद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री रामचन्द्र नवल की पत्नीं थीं। आपके हृदय में स्वतन्त्रता की भावना कूट कूट कर विद्यमान थी। सन् 1941 में जब महात्मा गांधी द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह जब प्रारम्भ किया गया तो जब महात्मा गांधी द्वारा देशी रियासतों को सत्याग्रह में भाग लेने की अनुमति प्रदान नहीं की गई, उस समय सर्वप्रथम व्यक्तिगत आन्दोलन में भाग लेने के लिये गांधी जी से मिलने के लिये सेवा ग्राम गईं और उन्होने गांधी जी से आन्दोलन में भाग लेने की अनुमति प्राप्त की। इस प्रकार से श्रीमती मदन देवी जी द्वारा यह दुष्कर कार्य को कर दिखाया गया।[78]

सन् 1942 में अंग्रेजो द्वारा भारत छोड़ो आन्दोलन छिड़ा और बम्बई में महात्मा गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने अंग्रेज शासकों को देश के स्वाधीन करने का अल्टीमेटम दे दिया था। श्रीमती मदन देवी नवल ने भी भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और उस समय जबकि विदिशा में जन आन्दोलन चलाने का निर्णय लिया गया जो कि विदिशा प्रस्ताव था, भेलसा प्रस्ताव के नाम से प्रसिद्ध है तो उसमें मदन देवी नवल भी उपस्थिति श्री रामचन्द्र नवल के साथ रहीं। आन्दोलन के समय में जबकि बहिष्कार, शराब की दुकानो में पिंकेटिग, जिले में गांव गांव जाकर जंगल की

लकड़ी काटने जैसे कार्यक्रम विदिशा में किये जा रहे थे उस समय श्रीमती मदन देवी नवल ने श्रीमती जमना देवी राठी के साथ ग्वालियर जाकर मंत्रियों, अधिकारियों आदि को, और फिर विदिशा में भी अधिकारियों को स्वाधीनता आन्दोलन में भाग न लेने के कारण चूड़ियां आदि भेंट कीं। इस प्रकार से मदन देवी नवल ने आजीवन स्वतनत्रता आन्दोलन में अपना अमूल्य योगदान दिया तथा अपने पति श्री रामचन्द्र नवल के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर एक सच्ची सहधर्मिणी का परिचय दिया।[79]

श्रीमती जमना देवी राठी और स्वतन्त्रता आन्दोलन

श्रीमती जमना देवी विदिशा निवासी श्री देवकिशन राठी की पत्नी थी इन्होने महात्मा गांधी' द्वारा सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया और प्रसिद्व स्वतन्त्रता महिला सेनानी श्रीमती मदन देवी नवल के साथ शराब के बहिष्कार के लिये दुकानों पर धरना तथा पिकेटिंग जैसे कार्यक्रमों में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की गई। जब भारत छोड़ो आन्दोलन चल रहा था और सम्पूर्ण देश इस आन्दोलन में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदाकर रहा था उस समय विदिशा जिले में श्रीमती जमुना राठी ने श्रीमती मदन देवी नवल के साथ ग्वालियर जाकर वहां के मत्रियों, अधिकारियों और फिर विदिशा में भी अधिकारियों को स्वाधीनता आन्दोलन मे भाग न लेने के कारण चूडियां भेंट की और उन अधिकारियों में जो कि भारतीय थे अंग्रेजी शासन में उच्च पद पर आसीन थे, उन्हें सरकार के साथ सहयोग न करने के लिये इन्होने कहा। एक अन्य महत्वपूर्ण घटना में श्रीमती जमना देवी राठी ने शराब की दुकान पर धरना दिया। इस प्रकार से विदिशा जनपद में स्वतन्त्रता आन्दोलन में श्रीमती जमना राठी का योगदान अविस्मरणीय है।[80]

श्रीमती लक्ष्मीबाई और भारत छोड़ो आन्दोलन

श्रीमती लक्ष्मी बाई विदिशा के प्रसिद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री बाबूलाल गुप्ता की पत्नीं थीं। श्रीमती लक्ष्मी बाई को स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लेने की प्रेरणा अपने पति से प्राप्त हुई। श्रीमती लक्ष्मी बाई ने सन् 1942 में श्रीमती मदन देवी नवल तथा श्री रामचन्द्र नवल नामक दम्पत्ति के साथ अपने पति श्री बाबूलाल गुप्ता के साथ मिलकर शराब की दुकानों पर धरना दिया

तथा उस समय जबकि धारा 144 को चुनौती नहीं दी गई थी, इन दोनों दम्पत्ति ने मिलकर विदिशा में धारा 144 का उल्लंघन किया। इस दम्पत्ति को गिरफ्तार कर लिया गया। उन्हें कुरवाई के पास भोरासा में कैद करके रखा गया। इस प्रकार से इस दम्पत्ति ने आजीवन देश की सेवा में अपना अमूल्य योगदान जो प्रस्तुत किया वह भारत के इतिहास में स्वर्णिम अक्षरों में लिखा जायेगा। श्रीमती लक्ष्मी बाई को शराब की दुकानों में पिकेटिंग तथा जुलूसों में भाग लेने व चरखों का प्रचार करने के कारण 3 माह का कारावास दिया गया।[81]

श्रीमती प्रमिला देवी का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

श्रीमती प्रमिला देवी प्रसिद्ध स्वतन्त्रता सेनानी श्री दत्तात्रैय कृष्ण सर्वटें की पत्नीं थीं। श्री दत्तात्रैय जिला विदिशा के श्री कृष्णराव सवेटें के पुत्र थे इनके हृदय में बचपन से ही देश के प्रति अनुराग की भावना कूट कूट कर भरी थी। विवाह के पश्चात श्रीमती प्रमिला देवी के घर में प्रमुख नगर के स्वतन्त्रता सेनानियों का आवागमन रहता था। अतः श्रीमती प्रमिला देवी पर इसका प्रभाव पड़ना स्वाभाविक ही था। अतः सन 1942 के प्रसिद्ध भारत छोड़ो आन्दोलन में श्रीमती प्रमिला देवी ने अपने पति के साथ आन्दोलन में भाग लिया तथा शराब का बहिष्कार तथा विदेशी कपड़ों का बहिष्कार तथा धरने इत्यादि कार्यकमों में भाग लिया।[82]

श्रीमती प्रमिला सरवटे का जन्म 1927 में हुआ था तथा इनकी शिक्षा माध्यमिक तक हुई। सन् 1942 के प्रसिद्ध भारत छोड़ो आन्दोलन में इस वीरांगना ने जुलूस में न केवल भाग लिया वरन् महिलाओं का नेतृत्व भी किया, जिसके लिये पूना में उन्हें गिरफ्तार कर चरवदा जेल भेज दिया गया। जहां उन्हें ढाई माह से अधिक कारावास की सजा काटनी पडी।[83]

निष्कर्ष–: सन् 1942 में छेड़ा गया भारत छोड़ो आन्दोलन देशव्यापी आन्दोलन था। पूरे देश का ऐसा कोई कोना नहीं बचा था जहां इस आन्दोलन का प्रभाव न हो। इस आन्दोलन से जनता यह सिद्ध कर चुकी थी कि वह अंग्रेजो से मुक्ति चाहती है और जो वह प्राप्त करके ही रहेगी। स्वयं इंग्लैण्ड के सांसद सदस्य यह स्वीकार करने लगे कि उनके ताज का सबसे देश कीमती हीरा "**भारत**" अब उनके हाथों से जाने वाला है। न केवल पुरूष पुरोधाओं अपितु भारतीय महिलायें का भी उत्साह दृष्टव्य था। इस आन्दोलन में महिलायें केवल स्वयं सेविकओं के रूप में नहीं अपितु कान्तिकारी महिलाओं के रूप में सामने आईं। इस आन्दोलन में उन्होनें सभाओं का समापातित्व व जुलूसों का शानदार नेतृत्व किया तथा बुन्देलखण्ड की महिलाओं ने आन्दोलन की नीति निर्माण एवं पथ प्रदर्शन में पूर्ण रूप से भाग लिया। इसमें इन महिलाओं को अनगिनत कष्ट सहने पड़े। सभी प्रकार की विपत्तियों के भुलाने के पश्चात भी भरतीय वीरांगनाओं ने अगस्त आन्दोलन में जिस साहस के साथ वीरता का परिचय दिया, उसे पढ़कर भारत तो क्या विश्व की महिलायें भी गर्व से मस्तक ऊंचा कर सकती हैं।

सन्दर्भ सूची

1– डा0 पुखराज जैन, ''भारतका राष्ट्रीय आन्दोलन तथा सवैधानिक विकास'' पृष्ठ सं0 56

2– डा0 प्रताप भानुराय, ''जंगे आजादी'' में जबलपुर स्वराज्य संस्थान संचानालय भोपाल , मध्य प्रदेश पृष्ठ 121

3– मन्मथ नाथ गुप्त ''भारत के कान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास''एच0 चन्द्र एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली से 1980 ई0 में प्रकाशित भारतीय कान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास

4– ठाकुर भूपत सिंह, ''भारत के स्वतन्त्रता सेनानी'' 1968

5– कांग्रेस का इतिहास, भाग(3) , डा0 पट्टामि सीतारम्मैया, सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली से 1948 में प्रकाशित कांग्रेस का इतिहास भाग(3) पृष्ठ 119,20

6– वही पृष्ठ 120

7– दीनानाथ व्यास काव्यालंकार, ''अगस्त सन् 1942 का महान विप्लव'' , विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा, पृष्ठ 16,17,

8– वही पृष्ठ 18,19

9– रामगोपाल, ''भारतीय राजनीति'' ज्ञान मण्डल लि0 बनारस उ0प्र0से 1953 ई में प्रकाशित पृष्ठ 440

10– दीनानाथ व्यास काव्यालंकार अगस्त सन्1942 का महान विप्लव, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा पृष्ठ 19

11– आशारानी व्होरा, ''महिला और स्वराज्य'' नई दिल्ली प्रकाशन विभाग सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 1988 पृष्ठ 325

12– आशारानी व्होरा, ''महिला और स्वराज्य'' पृष्ठ 325

13– मन्मथ नाथ गुप्त, ''भारतीय कान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास'' आत्माराम एण्ड सन्स दिल्ली पृष्ठ 416,417

14– वही पृष्ठ 417

15– आशारानी व्होरा, ''महिलायें और स्वराज्य'' नई दिल्ली प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार 1988 पृष्ठ354

16– ''झांसी गजेटियर'' 1995 ई0 वी. जोशी पृष्ठ 72

17– स्वतन्त्रता आन्दोलन में झांसी जनपद का योगदान, सूचना एवं प्रकाशन पृष्ठ 24

18– स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, एस0पी0 भट्टाचार्य, पृष्ठ 51,53,54,55

19– रजत नीरांजना, परशुराम शुक्ल, पृष्ठ 39

20– रजत नीरांजना परशुराम शुक्ल, पृष्ठ 32

21– एस0पी0 भट्टाचार्य, स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, सूचना और प्रकाशन विभाग लखनऊ

22– एस0पी भट्टाचार्य, स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, सूचना विभाग लखनऊ, पृष्ठ सं0 20,21,32,33

23– एस0पी भट्टाचार्य ,स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, सूचना विभाग लखनऊ

24– एस0पी0 भट्टाचार्य, स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, सूचना विभाग लखनऊ

25– वही

26– वही

27– वही

28– वही

29– अनासक्त मनस्वी,प0 द्वारिकेश झांसी भगवानदास बालेन्दु अभिनन्दन ग्रन्था समिति 1983 पृष्ठ 89,90

30– वही पृष्ठ 90

31– एस0पी0 भट्टाचार्य, स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, सूचना विभाग लखनऊ उ0 प्र0

32– वही

33– डा0 सिद्वनाथ शर्मा, स्वतत्रंता आन्दोलन में मध्य प्रदेश की भूमिका, भाषा सचांलनालय भोपाल पृष्ठ 37

34– विन्ध्यवाणी, शहीद अंक, गांधी जंयन्ती, 1948 पृष्ठ 339

35– डा0 सिद्वनाथ शर्मा, मध्यप्रदेश का स्वमन्त्रता आन्दोलन में योगदान , भाषा सचालनालय भोपाल पृष्ठ 37

36– मध्यप्रदेश स्वाधीनता संग्राम के सैनिक, भाग 2 भाषा संचालनालय भोपाल, पृष्ठ 68

37– राष्ट्र गौरव, बुन्देलखण्ड का स्वतन्त्रता संग्राम, श्रीमती चित्रा तिवारी द्वारा लिये गये संस्मरण के आधार पर पृष्ठ 396

38– मध्य प्रदेश में स्वाधीनता संग्राम के सैनिक, भाग 2 पृष्ठ9

39– वही पृष्ठ 9

40– श्रीमती इन्दिरा ताई की पौत्री श्रीमती रामरानी से लिये गयेसाक्षात्कार के आधार पर

41– बडी बाई के पुत्र श्री लक्ष्मन कुमार से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर

42– वही

43– मध्यप्रदेश स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक, भाग दो , सागर सम्भाग , भाषा संचालनालय भोपाल मध्य प्रदेश

44– शोभाराम श्रीवास्तव, मध्यप्रदेश सन्देश, 15 अगस्त 1989 पृष्ठ 15

45– वही पृष्ठ 14

46– ठाकुर भूपत सिंह, स्वाधीनता संग्राम और हमारे सेनानी, 1968

47– ठाकुर प्रताप मानुराय, जंगेआजादी में जबलपुर का योगदान स्वराज्य संस्थान प्रकाशन, मध्यप्रदेश भोपाल पृष्ठ 127, 128

48– मध्य प्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, जबलपुर संम्भाग, सूचना तथा प्रकाशन विभाग पृष्ठ 140

49– वही पृष्ठ 68

50– जबलपुर जिला कांग्रेस अध्यक्ष से प्राप्तस्वतन्त्रतासेनानियों की सूची के आधार पर

51– वही

52– मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, जबलपुर सम्भाग, सूचना तथा प्रकाशन विभाग, पृष्ठ सं0 26

53– म0 प्र0 के स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, जबलपुर संभाग,सूचना तथा प्रकाशन विभाग, पृष्ठ सं0 26

54– जिला कांग्रेस अध्यक्ष जबलपुर से प्राप्त सूची के आधार पर

55– श्रीमती शालिनी सक्सेना, स्वतन्त्रता आन्दोलन में मध्य प्रदेश की महिलायें, स्वराज्य संस्थानसचालनालय पृष्ठ भोपाल म0प्र0 12

56– मध्य प्रदेश के स्वतन्त्रता संगाम सेनानी, जबलपुर संभाग, सूचना विभाग, पृष्ठ सं0 68

57– स्वाधीनता संग्राम की महान वीरांगनायें डा0 श्री रामायण प्रसादपृष्ठ 59

58— वही पृष्ठ 59

59— डा0 प्रताप भानुराय जंगे, आजादी में जबलपुर स्वराज्य संस्थान प्रकशन संस्कृति विभाग,भोपाल पृष्ठ 98

60— वही पृष्ठ 2336

61— डा0 प्रतापभानुराय-जंगे आजादी में जबलपुर,स्वराज्य संस्थान संस्कृति विभाग म0 प्र0 शासन

62— म0 प्र0 स्वतन्त्रता संग्राम की महान वीरांगनायें, लेखक श्री रामायणप्रसाद,पृष्ठ 59

63— श्री प्रताप भानुराय, जंगे आजादी में जबलपुर में प्रकाशित स्वतन्त्रता सेनानी की सूची के आधार पर

64— मध्य प्रदेश में स्वतनत्रता आन्दोलन का इतिहास, के लिये गयेअभिलेखों तथा नेताओ के वक्तव्यों औरअन्यसामगियों से लियेगये उदाहरणों का संग्रह

65— प्रयाग दत्त शुक्ल, कान्ति के चरण, पृष्ठ 136

66— मध्यप्रदेश नरसिंहपुर गजेटियर , भोपाल पृष्ठ 65

67— आनन्द , सिविल डिसओबिडियेन्स मूवमेन्ट इन द सी0पी0 एण्ड बरार पृष्ठ 19

68— सी0 पी0 गजट एकस्ट्रा आर्डिनरी पोलिटिकल एण्ड मिलिट्री डिपार्टमेन्ट नोटिफिकेशन तारीख 19 जनवरी 1932

69— भारत छोडो आन्दोलन, सम्बन्धित सामग्री नरसिंहपुर कलेक्ट्रेट सेप्राप्त 1942—43 सविनय अवज्ञा आन्दोलनसे सम्बन्धित फाईलो पर आधारित है।

70— मध्यप्रदेश सन्देश, 1987 ब 21

71— मध्यप्रदेश गजेटियर, नरसिंहपुर , प्रेमनारायण श्री वास्तव, पृष्ठ68

72— मध्यप्रदेश सन्देश, स्वाधीनता आन्दोलन विशेषांक, 1987 पृष्ठ9—21

73— चवरपाढ़ा के श्रीमती ललिताबाई के पड़ोसी श्री बाबूलाल विश्वकर्मा के संस्मरण के आधार पर।

74— नरसिंह पुर, कलेक्ट्रट से प्राप्त अभिलेखो के आधार पर।

75— ग्वालियर स्टेट गजेटियर तारीख 14 जून 1939

76— विदिशा मध्यप्रदेश गजेटियर पृष्ठ सं0 52

77— मध्यप्रदेश विदिशा गजेटियर भोपाल प्रकाशन पृष्ठ सं052

78— मध्यप्रदेश स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक(रायपुर, विलासपुर) भाषा संचालनालय प्रकाशन भा0 स0 विभाग मध्य प्रदेश भोपाल

79— राष्ट्रगौरव बुन्देलखण्ड का स्वतन्त्रता संग्राम में कु0 मधुरिग्रा खारे द्वारा प्रस्तुत किये गये संस्मरण के आधार पर पृष्ठ सं0 198

80— वही पृष्ठ सं0 198

81— विदिशा कलेक्टर से प्राप्त रिकार्ड के आधार तथा अभिलेखो के आधार पर

82— वही

83— मध्यप्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, भाषा संचालनालय खण्ड 4 भारतीय संस्कृति विभाग मध्य प्रदेश।

षष्ठ अध्याय

बुन्देलखण्ड़ की देशी रियासतों में महिलाओं की सहभागिता

देशी रियासतों का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

भारत के राष्ट्रीय स्वतंन्त्रता आन्दोलन का कोई भी इतिहास तब तक पूर्ण नही माना जा सकता जब तक देशी रियासतों के संघर्ष के अर्न्तगत या उनके सन्दर्भ में उनका विवेचन न किया गया हो। यह धारणा है कि भारत में स्वतन्त्रता संघर्ष मूलतः बिट्रिश भारत में ही आरम्भ हुआ था और बिट्रिश भारत में ही स्वतन्त्रता आन्दोलन का पालन पोषण हुआ किन्तु यह निर्विवाद सत्य है कि उन देशी रियासतों में रियासती जनता द्वारा जो भी आन्दोलन किये गये वे भारत के वृहत राष्ट्रीय आन्दोलन के अभिन्न अंग रहे और उनका बिट्रिश भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में अमूल्य योगदान है तथा यह भी सत्य है कि भले ही इन देशी रियासतों का स्वर अत्यन्त धीमा रहा, लेकिन ये देशी रियासतों में विद्यमान परिस्थितियां समग्र रूप से स्वतन्त्रता आन्दोलन पर बहुमूल्य ज्योति प्रदान करती रहीं।[1]

इन देशी रियसतों का शासन पैतृक, अनुवांशिक और निरंकुश था। नरेशों की क्रूर सत्ता, रियसतों की जनता के अत्यन्त छोटे छोटे आन्दोलन को कुचलने में सक्षम और तत्पर थी। यदि इस सन्दर्भ में देशी रियासतों की जनता द्वारा स्वतनत्रता संघर्ष का मूलयांकन किया जायें तो यह कहां जा सकता है , कि "देशी रियासतों के आन्दोलन अधिक विषम और कठिन परिस्थितियों में संचालित आन्दोलन थे और इसलिये भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में विट्रिश भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन से कही अधिक महात्वपूर्ण देशी रियासतों का स्वतन्त्रता सघर्ष है''।[2]

सन् 1857 में जो स्वतन्त्रता सग्राम हुआ था उसमें विट्रिश शासन द्वारा यह आभस किया गया था, कि इस विद्रोह का परिणाम कुछ और होता यदि कुद देशी नरेशों में विशेषकर हैदराबाद के निजाम और पंजाब के सिक्ख नरेशों ने बिट्रिश सत्ता का निष्ठा पूर्वक समर्थन न किया होता। अतः बिट्रिश सरकार द्वारा इन देशी नरेशों के विशेषाधिकारों को संरक्षण प्रदान किया गया।

इसका परिणाम यह हुआ की देशी रियासतों के नरेशों और उनकी रियासती जनता के बीच एक खाई उत्पन्न हो गई। ये

अंग्रेजों के प्रति निष्ठावान हो गई। और इन देशी रियासतों की जनता ने अंग्रेज विरोधी आन्दोलन के बजाय रियासती व्यवस्था और नरेशों के विरूद्ध आन्दोलन किया। ब्रिटिश भारत में कांग्रेस के आन्दोलन और महात्मा गाँधी के अभ्युदय ने देशी रियासतों की जनता के आन्दोलन को भी प्रभावित किया। "रियासती नरेशों के दमन और क्रूर शासन के विरूद्ध रियासती जनता ने भी अपने पैरों पर खड़े होने का निश्चय किया। यही कारण था कि रियासती जनता ने भिन्न भिन्न रियासतों में सेवा समितियों, हितकारिणी संस्थाओं, रात्रि पाठशालाओ, वाचनालयों और चलते फिरते पुस्तकालयों की स्थापना की। तथा अपनी अपनी रियासतों में प्रजा मण्डल की स्थापना की।3

जहाँ तक भारतीय राष्ट्रीय स्वतन्त्रता आन्दोलन में इस परिषद के योगदान का प्रश्न है इसने 1930–31 सत्याग्रह आन्दोलन मे पूर्ण उत्साह के साथ कांग्रेस का सहयोग किया और कांग्रेस के आवाह्न पर रियासती जनता ने तथा ब्रिटिश भारत के प्रान्तों की जनता ने कन्धों से कन्धा मिलाकर कार्य किया और हजारों की संख्या में गिरफ्तारियाँ दी। गाँधी इरविन समझौता और सत्याग्रह की वापसी के उपरान्त कांग्रेस और ब्रिटिश शासन के बीच एक पारस्परिक समझ उत्पन्न करने की चेष्टा की गई किन्तु रियासतों में सत्तारूढ़ नरेशों और रियासती कार्यकताओं के बीच इस प्रकार की कोई समझ उत्पन्न न हो पाई और वे रियासतों के दमन और कुचक्र का शिकार होते रहें।4

"सन् 1936 के जबलपुर अधिवेशन में कांग्रेस समिति ने यह घोषित किया कि भारतीय रियासतों की जनता का हित भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के लिये उतना ही आवश्यक है जितना ब्रिटिश भारत की जनता का और वह आश्वासन देती है कि उनके स्वतन्त्रता संघर्ष के लिये कांग्रेस पूर्ण समर्थन प्रदान करेगी। 5

सन् 1930 के सविनय अवज्ञा के दौरान राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम में रियासती जनता का सहयोग न केवल प्रशंसनीय रहा वरन् इसके सुखद परिणम भी सामने आये थे। सन् 1937 के चुनाव में छह प्रान्तों में कांग्रेस की व्यापक सफलता ने रियासती जनता के

हृदय में भी नागरिक अधिकारों और उत्तरदायी शासन को एक नई प्रेरणा दी।जिसके फलस्वरूप सामूहिक जनप्रर्दशन और सामूहिक आन्दोलन का विस्तार हुआ और सीमावर्ती कांग्रेस सरकारों ने रियासती जनता के प्रति अपना पूर्ण सर्मथन अभिव्यक्त करना प्रारम्भ किया।

दुर्भाग्य से द्वितीय विश्व युद्व के प्रारम्भ में रियासतों के आन्दोलन को अनिणीत मोड पर लाकर खाडा कर दिया। प्रान्तों में कांग्रेस मंत्रीमण्डल के त्याग पत्र ने बिट्रिश सत्ता और नरेशों को पुनः अपनी इचछा से अधिकार प्रयोग का अवसर प्रदान कर दिया और फिर एक बार देशी नरेशों ने रियासती जनता के शासन सुध ाार स्थिगित कर उनकी उत्तदायी शासन की मांग के विरूद्व पुराना रवैया अपना लिया। 6

युद्व काल में भारत के लिये क्रिप्स योजना प्रस्तावित की गई थी लेकिन रियासती जन परिषद की स्थाई समिति ने इस योजना को इस आधार पर अस्वीकृत किया कि इसमें रियसती प्रजा जिनकी संख्या लगभग 9 करोड है की उपेक्षा की गई थी यह योजना देषी राज्य तथा समस्त भारत वर्ष दोनो की स्वाधीनता को ठेस पहुचानी वाली है अगस्त 1942 में में अंग्रेजों के विरूद्व भारत छोड़ो आन्दोलन के दौरन देशी राज्यों की जनता ने उसमें भाग लिया और प्रजा मण्डलों ने राजाओं से आग्रह किया कि वे बिट्रिश सरकार से सम्बन्ध विच्छेद करें। 7 किन्तु इस भारत छोडो आन्दोलन में अखिल भारतीय रियासतों जन परिषद ने भी पत्यक्ष रूप से इस आन्दोलन में भाग नही लिया। इसका परिणाम यह हुआ कि देशी रियासतों के राजाओं ने बिट्रिश सत्ता से अपनी निष्ठा सिद्व करने करने के लिये प्रजा पर दमन कारी नीति का बडें पैमाने पर प्रयोग किया।

बुन्देलखण्ड के स्वतन्त्रता आन्दोलन में में रियासतों का योगदान

बिट्रिश शासन के आधीन उत्तरी दक्षिणी बुन्देलखण्ड में जब स्वतन्त्रता संग्राम शुरू हो गया इस समय दोनो भू–भागो के बीच स्थित सेन्ट्रल इण्डिया एजेन्सी को दतिया टीकमगढ, छतरपुर,चरखारी पन्न विजावर आदि रियासतें स्वतन्त्रता संग्राम से प्रभावित

हुये बिना कैसे रह सकती थीं। बीसवीं शताब्दी के दूसरे और तीसरे दशक में चंद्रशेखर और उनके अन्य क्रान्तिकारी साथियों का निवास और उनकी गतिविधियों का केन्द्र स्थान होने से भी इस क्षेत्र में आजादी की किरणें आई, वहीं हमीरपुर के पंडित परमानन्द तथा दीवान शत्रुघ्नसिंह व उनके साथियों के क्रियाकलापों का इस क्षेत्र में प्रभाव पड़ा। इसी समय अली बन्धु महोबा पधारे और सन् 1929 में महात्मा गाँधी के भी चरण बाँदा, महोबा आदि स्थानों पर पड़े; देश के इन कर्णधारों के मार्गदर्शन से बुन्देलखण्ड के देशी राज्यों के लोगों में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये जो एक छटपटाहट या बैचेनी थी उसने मूर्तरूप लेना शुरू किया।[8]

देशी रियासतों में छतरपुर का स्वतन्त्रता संग्राम

प्रथम विश्व युद्ध के समाप्ति पर देश के राजनीतिक क्षितिज पर महात्मा गांधी के आविर्भाव के साथ ही देश में एक नई लहर बहने लगी। उत्तर प्रदेश के पड़ोसी जिलों महोबा तथा हमीरपुर में स्वतन्त्रता संग्राम होने के साथ ही छतरपुर जिले में भी जागृति आने लगी थी। विदेशी वस्तुएें तथा विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार का प्रभाव यहां 1916 में परिलक्षित होने लगा था। छतरपुर के निवासियों में राजनीतिक चेतना तथा जागृति पैदा करने के लिये छतरपुर रियासत के ग्राम टहगा निवासी रामसहाय तिवारी ने आरम्भिक प्रयास किये।[9]

सन् 1921 में महोबा में अली भाईयों के आगमन के साथ इस क्षेत्र में भी आन्दोलन की गति तेज हो गई। रामसहाय तिवारी का नन्हे लाल पंसारी तथा मुन्नीलाल के साथ महोबा में गिरफ्तार कर लिया गया। चरखारी में रामसहाय द्वारा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार का आवाहन करने पर पुलिस द्वारा उन्हें बेरहमी से पीटा गया तथा चरखारी में सेठ ग्यासी और फूलखान के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। जेल से बाहर आने पर रामसहाय तिवारी द्वारा लोगों में जागृति जगाने का कार्य चलता रहा।[10]

छतरपुर राज्य में कर विरोधी आन्दोलन

"सन् 1930 ई0 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन चला इसके अर्न्तगत जिले के मदरा, सिजवाहा, ल्यौरया, कैमाहा, उरवारा तथा ननौरा नामक ग्रामों में नमक कानून तोडा गया परिणाम स्वरूप

रामसहाय तिवारी को गिरफ्तार कर लिया गया। 11

1930 में भू राजस्व के भुगतान के विरूद्व आन्दोलन चलाया गया रगौली के ठाकुर हीरा सिंह तथा भुजबल सिंह ने इस आन्दोलन में महात्वपूर्ण भूमिका निभाई। शीघ्र ही यह आन्दोलन राजनगर, चन्दला तथा लुगासी में भी फैल गया। राजनगर में आन्दोलन में भाग ले रही भीड़ पर भारी लाठी चार्ज किया गया। जिसमें वहां की महिलाओं सहित अनेक व्यक्ति घायल हुये उसमें डहर्रा के पडिंत सुखदेव तथा जगत सिंह आन्दोलन के प्रमुख नेता थे। 12

बुन्देलखण्ड का जलियाँवाला बाग 1930 का
चरणपादुका गोलीकाण्ड

वैसे तो छतरपुर में जनजागृति का सूत्रपात सन् 1921–1922 में ही हो गया था लेकिन आन्दोलन की जो लहर 1930 में यहाँ आयी उसने पिछले समस्त वर्षों की राजनीतिक गतिविधियों को फीका कर दिया। उस समय राज्य में जनता ने राज्य सत्ता के खिलाफ एक खासी बगावत कर डाली, इसलिये की वह शासन के जुल्म सहते सहते तंग आ चुकी थी, इसलिये की वह अपने अन्तरात्मा में आये हुये विचारों को दबाना अब उसके बस की बात नही थी। "यह वह समय था जबकि जनता पर लगान बेहिसाब लिया जाता था, उससे बेहद कर वसूली किया जाता था। राज्य की गरीब जनता ने भरसक प्रयत्न किया कि किसी तरह से बात बन जायें, किन्तु जब कोई बात नही बनी तो उसने विवश होकर सरकार को लगान और कर देना बन्द कर दिया। 13

"इस समय ठाकुर हीरा सिंह और रामसहाय तिवारी के द्वारा इस लगान के विरोध में एक विराट आन्दोलन शुरू किया गया एक ऐसा आन्दोलन जिसने राजशाही की नींव हिला दी तथा जिसने भय और घबराहट के मारे शासको की बुरी हालत कर डाली"। 14

इन्होनें अक्टूबर 1930 को चरण पादुका में एक विशाल सभा का आयोजन किया जिसमें 60,000 लोगो ने भाग लिया तथा कुंवर हीरा सिंह ने उसकी अध्यक्षता की। भाषणों में स्वदेशी वस्तुओं का उपयोग तथा लगान का भुगतान न करने पर जोर दिया गया। इसके बाद महाराजपुर में एक दूसरी सभा का आयोजन किया गया। उस अवसर पर मजिस्ट्रेट की उपस्थिति से लोगों में उत्तेजना फैल गई और आगबबूला लोगो ने उसकी कार पर पत्थर फेंकना शुरू कर दिया। बाद में अनेक लोगो पर मुकदमा चलाया गया तथा जुर्माना किया गया। 15

"30 अक्टूबर 1930 को चरण पादुका विशाल आम सभा का आयोजन किया गया जिसमें छतरपुर के लिये कुवर हीरा सिंह, रगौली से कुवर भुजबल सिंह, गिलौहा के मल्ल सिंह दऊआ, बरौहा के भोंदू तिवारी, अमरोहा के मलखान सिंह, भिनका के श्री प्राण

महतों, डहर्रा से सुखदेव इत्यादि अन्य अनेक लोगों को अनेक स्थानो के लिये प्रतिनिधि चुना गया था। 16

इस अवसर पर यह सन्देश प्राप्त हुआ कि पोलिटिकल एजेन्ट मि0 फिशर आन्दोलन के नेताओं से मिलना चाहते है। सभी लोग नेताओं के साथ हो लिये और घुर बेहर गांव की ओर बढ़ चले। रियासत के पुलिस दल की उपेक्षा करते हुये जागरूक लोगो का अवर्णनीय उत्साह से आगें बढना अपने आप से एक दुलर्भ दृश्य था। पोलिटिकल एजेन्ट ने नेताओं को बताया कि गर्वनर जनरल के इन्दौर स्थित एजेन्ट 4 जनवरी 1931 को नौगांव आने वाले है अतः जन प्रतिनिधियों को उनसे मिलकर अपनी मांगें उनके विचारार्थ उनके समक्ष रखानी चाहिए। 17

4 जनवरी को आन्दोलन के नेता लगभग 20,000 लोगो के साथ नौगांव पहुचे। गर्वनर जनरल के एजेन्ट ने उन लोगो से कड़े स्वर में कहा की आप लोगों को लगान देना ही होगा तथा उसकी सेना वहां उस समय तक तैनात रहेगी जब तक कि राजनैतिक परिस्थितियाँ सामान्य नही हो जातीं। 18

परिस्थियाँ विषम होती जा रही थीं। और जब आन्दोलन की लहर ने राज्य के कोने कोने को गीला कर दिया तो स्थिति को काबू में पाने के लिये राज्य अधिकारियों ने विवश होकर ए0जी0 जी0 इन्दौर से याचना की। फलस्वरूप एक मील-पलटन ने राज्य की सीमा में पर्दापण किया और दमन कार्य प्रारम्भ हो गया। ठाकुर हीरा सिंह और रामसहाय तिवारी को गिरफ्तार कर लिया गया। उस गिरफ्तारी का विरोंध करने के लिये सिंहपुर ग्राम में उर्मिल नदी के तट पर चरण पादुका नामक स्थान पर मकर संक्रान्ति के पावन पर्व पर जनता ने एक विशाल सभा का आयोजन किया। सभा का कार्यक्रम चल ही रहा था कि श्री फिशर, श्री इकबाल कृष्ण मय भील पलटन और स्टेट पुलिस के वहां आ धमके। आते ही उन्होने सभा को विसर्जित होने का आदेश दिया परन्तु जब उस अहिंसक भीड ने उस आदेश को मानने के लिये इनकार कर दिया तो मदान्ध ा अधिकारियों ने गुस्से में आकर सेना को गोली चलाने का हुक्म दे दिया। फिर क्या निहत्थी और शान्त जनता पर गन मशीनो के दस राउन्ड चलाये गये और मैदान लाशों और घायलों से पाट

दिया।[19] हालांकि सरकार ने अपनी रिपोर्ट में 6 व्यक्तियों की मृत्यु और 34 आदमियों को घायल होना स्वीकार किया तथा अपने मुंह में लगी हुई कालिख को धोने का प्रयास किया। वास्तव में मरने वाले तथा घायलों की संख्या सरकारी गजट के अनुसार 15 गुनी अधिक थी[20]

जिस तरह जलियां वाला बाग के नृशंस हत्याकांण्ड ने समूचे राष्ट्रीय चेतना को झकझोंरा एवं राष्ट्रीय आन्दोलन को गति प्रदान की उसी प्रकार चरणपादुका गोली काण्ड़ ने बुन्देलखण्ड के देशी राज्यों में जनजागरण को आगें बढ़ाने तथा स्वाधीनता आन्दोलन में गति प्रदान करने में महात्वपूर्ण भूमिका निभाई।

चरणपादुका गोलीकांड़ की महिला शहीद स्वर्गीय श्रीमती रामकुंवर

स्वर्गीय श्रीमती रामकुंवर छतरपुर नगर के श्री लक्ष्मण प्रसाद जी की पुत्री थीं और ये संकट मोचन के पास रहती थीं। इनका विवाह रागौल तहसील मौदहा जिला हमीरपुर के निवासी श्री भोजराज श्रीवास्तव से हुआ था। श्री भोजराज जी मौदहा तहसील के अर्न्तगत ग्राम मकरांव में पटवारी के पद पर थे किन्तु भोजराज तथा परिवार के सदस्यों द्वारा स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लेने के कारण पटवारी पद से बर्खास्त कर दिया गया था। इनके पुत्र श्री बृजभूषण के स्वामित्व में एक गढ़ी बनी हुई थीं जो उन दिनो राजनीतिक गतिविधियो का अच्छा खासा अड्डा बना हुआ था, वही कांग्रेस की सभायें हुआ करती थीं इस गढ़ी से सम्बन्धित नवाब स्टेट बांदा की एक सनद दिनांक–15.3.1820 के अनुसार यह गढ़ी सन् 1931 में श्री भोजराज के स्वामित्व में थी जों जो की सन् 1930 में ब्रजभूषण के नाम स्थान्तरित कर दी गई थी। डिस्ट्रक्ट मजिस्ट्रेट व कलेक्ट्रर के केस नं0 56/ 1931 पटवारी के निर्णय दिनांक 1 सितम्बर 1931 में लेख किया गया है। कि बृजेन्द्र भूषण कांग्रेसी है, जो जनवरी 1931 में चरणपादुका में अपनी माता जी के साथ घायल हुआ था तथा पटवारी की पत्नी रामकुंवर अपने दो

पुत्रों ब्रजेन्द्र भूषण तथा राजेन्द्र भूषण के साथ दिनांक 10.7.31 से फरार है। पटवारी को आदेशित किया गया था कि वह परिवार के तीन सदस्यों सहित सरकारी कागजातों के साथ 30.8.31 को उपस्थित हो और माफी नामा प्रस्तुत करे। 21

किन्तु वह उपस्थित नही हुआ। यदि पटवारी उक्त आदेश का तत्काल पालन नही करता है और क्षमा की याचना नही करता है, तो उसे कड़ी से कड़ी सजा दी जायें तथा उसकी जायदाद जब्त कर ली जाये।

फिर भी इस परिवार ने माफी नहीं मांगी, परिवार के लगान बन्दी आन्दोलन तथा कांग्रेस व प्रजामण्डलीय प्रचार कार्य करने से इनकी अचल सम्पत्ति भी पी0ए0 साहब नौगांव द्वारा 30.7.47 को छीन ली गई थी। श्री भोजराज श्रीवास्तव की पत्नि श्रीमति रामकुँवर कांग्रेस एवं प्रजामण्डलीय समुदाय की सक्रिय कार्यकर्ता थीं। आप सत्याग्रह आन्दोलन में पंडित रामसहाय जी तिवारी के साथ कार्य करती रहीं। उन्होनों तन मन धान से कांग्रेस की सेवा की और अन्त में अपने प्राणों की आहुति देश सेवा मे दी। शासन के विरूद्व छेड़े गये असहयोग आन्दोलन में भाग लेने के लिये श्रीमति रामकुँवर को एक चरणपादुका मीटिंग मे भाग लेने के लिये बुलाया गया था। श्रीमति रामकुँवर अपने एक पुत्र ब्रजेन्द्र भूषण को उनके मुख से अंग्रेजो तथा राजाओं के विरूद्व एक कविता उस मीटिंग में सुनवाने हेतु लायी थीं। वो 31.1.31 की संध्या को ही वहां पंहुच गई थीं उस दिन उन्होने मंगल व्रत रखा हुआ था तो भी वे पंहुच गई और उस स्थल पर मीटिंग में 14.1.31 को उनके सीने के कुछ नीचे गोली लगी। वे धायल हो कर यह कह कर कि "डरना नहीं देश की सेवा के लिये देश की सेवा करने से तो स्वर्ग मिलता है", मै तो चली, गिर पड़ीं। इतने में बालक ब्रजेन्द्र भूषण को पैर में गोली लगी। उसने कविता शुरू की ही थी कि वह धायल होकर गिर पड़ा। 22

इसके बाद श्री भोजराज जी ने पत्नी श्रीमती रामकुँवर पुत्र ब्रजेन्द्र को एक पत्थर की आड़ में छिपा दिया। वे दोनो बेहोश हो गये थे। उन्होने बैलगाडी द्वारा अगले दिन रागोल तहसील मौदहा जिला हमीरपुर पंहुचकर स्वयं इन दोनो का उपचार किया।

क्योंकि उन दिनों ऐसे लोगो की चिकित्सा दुर्लभ थी, श्री भोजराज जी एक योग्य चिकित्सक थे। उन्होनें स्वंय इन दोनों के घावों से छर्रे निकाले। ब्रजेन्द्र लगभग छह माह में ठीक हो गया किन्तु श्रीमती रामकुँवर की दशा विगड़ती ही चली गई और उन्होने मृत्यु से पूर्व चरणपादुका शहीद स्थली में जाने की इच्छा प्रकट की। श्री भोजराज उन्हे चरणपादुका ले आये। चरण पादुका के दर्शन करने के बाद श्रीमती रामकुँवर वहीं पर देवलोक वासी हो गईं। उनकी अन्तिम इच्छा पूरी हुई और चरण पादुक में शहीद हुये वीरो में एक नाम और जुड़ गया। उर्मिल नदी के तट पर ही उनका दाह संस्कार किया गया। 23

भारत छोड़ो आन्दोलन और छतरपुर की महिलायें

छतरपुर रियासत पर 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन का भी प्रभाव पडा। 11 अगस्त 1942 को मुखारी ग्राम में जिला कांग्रेस समिति की एक बैठक हुई उसमें अन्य लोगो के साथ टीकमगढ़ के चर्तुभुज पाठक और प्रेमनारायण खरे, हरपालपुर के ग्यासीलाल गुप्ता तथा मदन गोपाल और प्यारे लाल चौरसिया ने भाग लिया। बैठक में भाग लेने वाले प्रमुख लोगो को छतरपुर रियासत से निष्कासित कर दिया गया। परिणाम स्वरूप महाराजपुर में हड़ताल की गई जिसमें प्रर्दशनकारियों पर लाठी चार्ज की गई और अनेक लोग घायल हो गये ।

दिसम्बर 1942 में माहा के अनेक लोगो ने महोबा के तहसील कार्यालय को लूटने की योजना बनाई। वे महोबा पँहुच भी गये, किन्तु अंग्रेज सरकार को उनकी योजना का पता चल गया तथा गोपाल प्रसाद महाराज सहित अनेक लोंगों को गिरफ्तार कर लिया गया। दीनदयाल तिवारी को महोबा चिकित्सालय में अपना इलाज कराते समय पकड़ लिया गया और उन्हे दो वर्ष का कारावास दिया गया। 24

भारत छोड़ो आनदोलन में भाग लेने वाली प्रमुख महिलायें सत्याग्रही

श्रीमति सुशीला देवी– श्रीमती सुशीला देवी छतपुर के ग्राम रागौली निवासी श्री नारायण सिंह की पत्नी थीं। नारायण सिंह एक प्रसिद्व

स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी थे और उन्होने छतरपुर जिले के स्वतन्त्रता संग्राम में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये अपना अमूल्य योगदान दिया। श्रीमती सुशीला देवी का जन्म सन् 1921 में हुआ था। श्री नारायण सिंह से विवाहपोरान्त उनके हृदय में देश प्रेम की भावना उत्पन्न होना स्वभाविक था। पति से प्रेरणा पाकर श्रीमती सुशीला देवी भारत के स्वाधीनता आन्दोलन की रणभूमि में कूद पड़ीं, और सन् 1942 में महात्मा गांधी द्वारा चलाये गये भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होने भाग लिया तथा विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार में शामिल हुईं। आन्दोलन में भाग लेने के कारण इनको 17 अगस्त को गिरफ्तार कर लिया गया तथा जबलपुर और नागपुर में इन्हें पांच माह की सजा सुनाई गई। 25

श्रीमति शकुन्तला पत्नी मदनगोपाल चौरसिया

श्रीमती शकुन्तला देवी छतरपुर के महाराजपुर निवासी मदनगोपाल चौरसिया की पत्नी थीं। मदनगोपाल चौरसिया श्री पंचमलाल के सुपुत्र थे। विवाहोपरान्त श्रीमती शकुन्तला देवी को देशभक्ति से ओतप्रोत भावना वाले ससुराल का वातावरण मिला। जहां पर अनेक स्वतन्त्रता संग्राम सेनानियों का आवागमन लगा रहता था। अतः शकुन्तला देवी के मस्तिष्क में देशप्रेम की भावना का जन्म लेना स्वभाविक ही था। इन्होने जबकि महात्मा गांधी द्वारा 1939 ई0 में व्यक्तिगत सत्याग्रह छेड़ा गया तथा 1938 में बिट्रिश प्रान्तो में उत्तरदायी शासन बनाया गया था, अतः उसका असर देशी रियासतों पर भी पडना स्वभाविक ही था। अतः महाराजपुर के निवासियों ने भी छतरपुर रियासत में उत्तरदायी शासन की स्थापना के समर्थन में 1939 में आन्दोलन छेड़ दिया। श्रीमती शकुन्तला देवी ने गढ़ी मलहरा की श्रीमती मथुरा देवी तथा देवकी देवी के साथ मिलकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया तथा अपने पति श्री मदनलाल चौरसिया के साथ सन् 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन में भाग लिया। 1944–1945 में जब प्रजा मण्डल के आन्दोलन ने जब जोर पकड़ा, तब श्रीमती शकुन्तला देवी ने महाराजपुर में महिलाओं के साथ धरना दिया। 26

मथुरा देवी– श्रीमती मथुरा देवी प्रसिद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री काशीप्रसाद महतों की बहिन थीं। इनका जन्म गढी मल्हरा में

हुआ था। उनका विवाह महाराजपुर में श्री सूरजलाल से हुआ था बाल्यकाल से ही गढ़ी मल्हरा कान्तिकारियों का प्रसिद्ध केन्द्र रहा। जहाँ पर महोबा के श्री आजाद की प्रेरणा से तथा श्री रामसहाय तिवारी की प्रेरणा से अनेक क्षेत्र वासियों ने स्वतन्त्रता संग्राम में अपनी महती भूमिका निभाई। श्रीमती मथुरा देवी ने प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की तथा अपने परिवार के सदस्यों श्री राधाचरण महतों तथा काशी प्रसाद महतों से प्रेरणा पाकर स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़ीं। इन्होने 1931 में जब चरणपादुका काण्ड हुआ तो उसमें अन्य महिलाओं के साथ भाग लिया तथा जब सन् 1939 ई में प्रजा मण्डल की स्थापना के फलस्वरूप उत्तरदायी शासन की स्थापना ने जोर पकड़ा तो श्रीमती मथुरा देवी ने महाराजपुर में अन्य महिलाओं के साथ धरना दिया। 27

देवकी देवी का स्वतन्त्रता आन्दोलन में योगदान

देवकी देवी गढ़ी मल्हरा के निवासी हरदास चौरसिया की पत्नी थीं। देवकी देवी ने 1939 में जबकि महात्मा गांधी के नेतृत्व में सत्याग्रह आन्दोलन प्रारम्भ किया गया तथा रीवा की श्रीमती ऊषा देवी, विष्णुकान्ति देवी तथा श्रीमती राजकुमारी देवी द्वारा बुन्देलखण्ड विन्ध्याचल की समस्त महिलाओं में राजनीतिक चेतना जगाई। अतः उस समय महात्मा गांधी के आवाहन पर श्रीमती देवकी देवी ने छतरपुर की श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी, श्रीमती शान्ति बाई तिवारी, श्रीमती मुनिया देवी चौरसिया के साथ मिलकर महिला जाग्रति मे सक्रिय रूप से भाग लिया तथा व्यक्तिगत स्वतन्त्रता आन्दोलन में भाग लिया। उस समय ये सभी महिलाओं की आन्दोलन में इतनी ज्यादा भागीदारी थी कि छतरपुर में धरना प्रदर्शन रोज की बात हो गई थी। तथा दीवान आफ छतरपुर ने शिकायत पण्डित ज्वाहरलाल नेहरू से की। उस समय छतरपुर में महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता था। इसके पश्चात जबकि भारत छोड़ो आंदोलन 1942 में महात्मा गांधी के नेतृत्व में प्रारम्भ किया गया तो उसमें भी देवकी देवी ने भाग लिया। इस प्रकार स्वतंत्रता आन्दोलन में देवकी देवी का त्याग अतुलनीय है। 28

श्रीमती प्रेमलता खरे और स्वतंत्रता आन्दोलन

श्रीमती प्रेमलता खरे छतरपुर रियासत के स्वतंत्रता सेनानी श्री शिवनारायण खरे की पत्नी थीं। इनका जन्म होशंगाबाद में नारायण प्रसाद वर्मा के घर में हुआ था। श्री नारायण प्रसाद वर्मा के पिता ने भी देश को स्वतंत्र कराने में महती भूमिका निभाई। इस प्रकार से प्रेमलता खरे को बचपन से ही स्वातन्त्रय भावना से अभिभूत पारिवारिक वातावरण मिला। अतः इनके हृदय में बचपन से ही देशभक्ति की भावना विद्यमान थी। सन 1946 में इनका विवाह श्री शिवनारायण खरे के साथ हुआ। शिवनारायण खरे प्रजा सोसलिस्ट पार्टी के सदस्य थे। श्रीमती खरे ने नौगांव में चरूटैक्स आन्दोलन में भाग लिया। जब 1947 में श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी के नेतृत्व में देशी राज्यों में उत्तरदायी शासन लागू करने के लिये महिलाओं ने आन्दोलन किया जिसमें महाराजपुर की महिलाओं जिसमें मथुरा देवी, मुलिया देवी, रम्बी तथा हीरा देवी इत्यादि के साथ तहसील के सामने धरना दिया तो उसमें श्रीमती प्रेमलता खरे भी शामिल हुई। 29

श्रीमती मुन्ना राजा और स्वतंत्रता संग्राम

श्रीमती मुन्नाराजा ईसानगर के निवासी श्री विजय बहादुर की पत्नी थीं। आपने जब 1942 में भारत छोड़ो आन्दोलन गांधी जी के नेतृत्व में प्रारम्भ किया गया, तो उस आन्दोलन में मुन्ना राजा ने भाग लिया, तथा सन् 1943 ई0 में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद की स्थापना जब हुई तो उसकी देखरेख में छतरपुर में प्रजामण्डल की स्थापना की गई। जिसमें श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी के साथ तथा अन्य महिलाओं के साथ गांव गांव जाकर श्रीमती मुन्नाराजा ने जन जागृति के लिऐ काफी उत्साह से काम किया। जब कचहरी के सामने महिलाओं द्वारा उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिऐ धरना दिया गया, तो उसमें भी अत्यन्त उत्साहपूर्वक भाग लिया। इस प्रकार से श्रीमती मुन्ना राजा ने भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन में महत्वपूर्ण योगदान दिया। 30

उत्तरदायी शासन की माँग तथा महिलायें

सन् 1943 में छतरपुर में राज्य प्रजामंडल की सभा आयोजित की गई जिसमें लोगों द्वारा पूर्ण उत्तरदायी शासन की

मांग की गई। ये वे दिन थे जबकि छतरपुर में तिरंगा झंडा नहीं फहराया जा सकता था, अतः प्रजामण्डल ने नगर के पान दरीबा में सभा आयोजित करने तथा झंडा जुलूस निकालने का निर्णय लिया। यह सुनकर महाराजा भवानीसिंह ने नेताओं को मिलने के लिये आमंत्रित किया उन सभी को गालियाँ दी गईं। अतः क्रुद्ध होकर महाविद्यालय के छात्रों तथा प्रजा मण्डल के सदस्यों ने झंडा जुलूस निकाला। तत्पश्चात् प्रत्येक दिन प्रजा मण्डल कार्यालय पर झंडा फहराया जाने लगा। 11 मार्च को छतरपुर में दरबार कचहरी के सामने सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया जिसमें श्री बाबूराम चतुर्वेदी, गोकुल जगन्नाथ तथा डिक्टेटर हीरो सिंह के अतिरिक्त अनेक महिलाओं जिसमें श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी, श्रीमती मुन्नाराजा, श्रीमती सोमवती, मथुरा देवी, टहंगा की श्रीमती गौरीबाई, मड़ार की श्रीमती पार्वती देवी, चंदला की श्रीमती पार्वती गुप्ता, चंदला की ही श्रीमती सारवी सरस्वती देवी तथा विमला देवी इत्यादि महिलाओं ने सत्याग्रह में भाग लिया। सन् 1944–45 में महाराजपुर से बड़ी संख्या में महिलाओं ने आकर भाग लिया तथा छतरपुर में पुरानी तहसील के सामने धरना दिया। इस समय छतरपुर की इन महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता था। 31

श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी

श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी का देशी-रियासतों के स्वतंत्रता संग्राम में अकथनीय योगदान रहा। ये कुलपहाड़ के निवासी श्री बाबू नाथूराम रावत की सुपुत्री थीं। उनके वंशज सन् 1940 में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रथम सेनानी बुन्देला राजा श्री महाराज पारीक्षित के कर्ज देने वाले साहूकार थे। इनका विवाह पंडित श्री बाबूराम चतुर्वेदी के साथ हुआ। पंडित श्री चतुर्वेदी ग्राम कर्रा के निवासी थे और इनके पिता श्री पंडित नन्दकिशोर चतुर्वेदी किसी कारणवश ग्राम जराखार जिला हमीरपुर में आकर रहने लगे थे। श्री चतुर्वेदी की प्रारम्भिक शिक्षा जराखार में हुई और उनका विवाह 1940 में श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी के साथ हुआ। श्री चतुर्वेदी सन् 1930 में सर्वप्रथम ग्राम जराखार में नमक सत्याग्रह में सक्रिय भाग लेकर राजनीति में प्रवेश कर गये थे। सन् 1930 में जब बापू अपने राष्ट्रव्यापी दौरे के सिलसिले में राठ जिला हमीरपुर पधारे तो पं०

जी की भेंट बापू से हुई और वे उनकी सेवा में वालन्टियर के पद पर भरती हो गये ।[32]

सन् 1940 में विवाह के पश्चात श्री मती विद्यावती चतुर्वेदी गढ़ीमल्हरा जिला छतरपुर में आकर निवास करने लगी। वें गढ़ी मल्हरा की शासकीय कन्या शाला की मुख्य अध्यापिका थी सन् 1941 की एक घटना ने श्रीमती चतुर्वेदी के जीवन को राजनीतिक मोड़ दिया।विजय दशमी के दिन गढीमल्हरा में एक वृहद सम्मेलन का आयोजन था उसमें स्त्री शिक्षा पर श्रीमती चतुर्वेदी ने भाषण दिया भाषण में रानी सारन्धा, रानी लक्ष्मीबाई एवं अंग्रेजों के बीच युद्ध का कुछ उल्लेख प्रसंगवश हो गया। इस भाषण से पूरे स्टेट में तथा पोलिटिकल एजेन्ट के यहां तहलका मच गया और श्रीमती चतुर्वेदी से जवाब तलब हुआ इससे श्रीमती चतुर्वेदी के सम्मान में ठेस लगी और उन्होनें तत्काल मुख्य अध्यापिका पद से त्याग पत्र दे दिया और उसी से भारतीय संस्कृति के गरिमा के अनुरूप उन्हाने पति के कन्धो से कन्धा मिलाकर स्वतन्त्रता संग्राम में सक्रिय भाग लेना प्रारम्भ किया। उससे श्री चतुवेर्दी को एक बहुत बड़ा राजनीतिक बल मिला।[33]

मैहर का स्वतन्त्रता संग्राम और श्रीमती चतुर्वेदी

सन् 1946 ई0 में श्री बाबूराम चतुर्वेदी विन्ध्यप्रदेश लोक देशी राज्य परिषद के अध्यक्ष चुने गये उस समय मैहर स्टेट का सत्याग्रह आन्दोलन अपनी चरम सीमा पर था श्री चतुर्वेदी अपने चुने हुये नौ साथियों जिनमें श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी भी थी , मैहर जा पहुचें थे। सभी जब मैहर पहुंचे तो देखा कि मैहर में चारों ओर स्तब्ध ता छायी हुई है कोई सड़क पर नही दिखाई दे रहा है। पूरे शहर के दरवाजें बन्द हो गये है।[34]

उस समय मैहर बुन्देलखण्ड में एक छोटी सी रियासत थी मैहर राज्य प्रजामण्डल की स्थापना सन् 1946 में पं0 जवाहरलाल नेहरू के आदेश के अनुसार हुई थी। जब से यहां प्रजा मण्डल की स्थापना हुई तब से वहां नागरिक स्वाधीनता के नाम पर जनता की हत्या की जा रही थी। श्री चतुर्वेदी और उनके साथियों को एक नोटिस मिला की "तुम लोग बाहरी गुण्डें तथा सम्प्रादायिक

तत्व हो यहां पर सम्प्रदायिक दंगें कराने आये हो यहां अमन और शान्तिभंग होने की आंशका है। अतः रियासत छोड़कर चले जाओं"।

श्री बाबूराम जी ने सिपाहियों से कहां कि "हम लोग राजा के गुलाम नही है। राजा को जो करना हो करें "अब राजा साहब मैहर ने रातों रात देहातों से 600 लठठ्धारी गुन्डे बुलाकर पूरे शहर में तैनात करा दिये। जब यह बात चतुर्वेदी जी को पता चली तो उन्होने अपने नो साथियों के नो दल बनायें, जिसमें श्रीमती चतुर्वेदी को अपने साथियों के साथ शहर का हालचाल जानने के लिये भेंज दिया।[35]

तीसरा दल जिसका नेतृत्व श्रीमती चतुर्वेदी ने किया उनका कार्य इतना जबरजस्त रहा कि शहर के सभी लोग राजा के विपरीत विद्रोह की भावना से भर उठें और दूसरे दिन 1500 आदमियों का जुलूस निकला जिससे राज्य का सारा षड़यन्त्र विफल हो गया। परन्तु रात को श्रीमती चतुर्वेदी को छोड़कर सारे साथी गिरफ्तार कर लिये गये और कोतवाली में नजरबन्द कर दिये गये।

इस समाचार से मैहर की जनता भड़क और दूसरे दिन पुन5 चतुर्वेदी के नेतृत्व में एक विशाल जुलूस निकाला फलस्वरूप दूसरे दिन श्रीमती चतुर्वेदी को दूसरे दिन श्रीमती चतुर्वेदी को विभिन्न यातनायें दी गई। उस समय मैहर के राजा का इतना आंतक था कि मैहर की 22 महिलाओं को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा था। इस तरह से श्रीमती चतुवेर्दी और उसके पति ने जिस हिम्मत और धैर्य मुकाबला किया वह मैहर की जनता ही जानती है।

सभायें सत्याग्रह आन्दोलन और जुलूस आदि निकालकर इस दम्पत्ति ने जनता में जाग्रति की भावना उत्तपन्न करने के फलस्वरूप जिस प्रकार जेल यातनायें, लाठी प्रहार एवं आज्ञातवास को स्वीकार कियावह इतिहासके पन्नो मेंस्वर्णिम अक्षरोंमें लिखने योग्य है[36]

श्रीमती धार्मवती और मैहर क सत्याग्रह

श्रीमती धार्मवती भी उन महिला स्वतन्त्रता सेनानियों में से एक थी जिन्होन मैहर के निरकुंश शासन से सीधी टक्कर ली जब मैहर में निरकुंश राजा के अत्याचारों के विरूद्व आन्दोलन चल रहा था तो दिसम्बर 1947 में उपस्थित सभी नेताओं को बन्दी बना'

लिया गया और 9 दिसम्बर को श्रीमती धर्मवती ने श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी के साथ प्रभात फेरी निकाली। जिसके परिणामस्वरूप पुलिस ने निर्ममता पूर्वक लाठी चार्ज किया। राज्य में दमन चक्र चलाया गया और धारा 144 लगा दी गई। श्रीमती धर्मवती देवी पर भी लाठी चार्ज हुआ और वे घायल हो गई लेकिन उन्होने हिम्मत नहीं हारी और लगातार संघर्ष करती रहीं और मैहर राज्य को राजा के अत्याचारों से मुक्ति दिलाने के बाद ही उन्होने चैन की सांस ली।

अजयगढ शहर का कर विरोधी आन्दोलन

4 सितम्बर 1930 को अजयगढ के गोलीपाठक में एक सभा का आयोजन किया गया जिसमें सबको खादी पहनने के निर्देश दिये गये तथा प्रत्येक ग्राम में लगान न दिये जाने का प्रचार किया गया। परिणाम स्वरूप राज्य के द्वारा तहसीलदार को कठवारिया, रेगढ़, भिलसाय आदि ग्रामों में लगान शक्ति से वसूलने के आदेश दिये गये दूसरी ओर राजनीतिक कार्यकताओं द्वारा जनमानस में राज्य को असहयोग करने का प्रचार किया गया, इस का परिणाम यह हुआ कि लगान वसूली में शक्ति के साथ जुर्माना किया गया। 14 फरवरी 1931 को अनेक कार्यकर्ता चन्दीदीन चौरहा के नेतृत्व में गिरफ्तार किये गये। 37

विजावर में कर विरोधी आन्दोलन

विजावर मे 1930 में एक सभा में दिदौनिया में राज्य सरकार द्वारा बढ़े हुये टैक्सों और अत्याचारों की खुलकर निन्दा की गई। पुलिस अधीक्षक द्वारा विजावर के ग्राम बेन्डरी में सशस्त्र सेना सहित पंहुचकर अनेक लोगो को गिरफ्तार कर लिया गया, इतना ही नहीं वरन् ग्राम रैपुरा में बिना मजिस्ट्रेट की आज्ञा के ही एम0जी0 ने गोली चलाने का आदेश दे दिया, जिसमें गोकुल प्रसाद तथा करोड़े लुहार शहीद हो गये तथा अनेक व्यक्ति घायल व अपंग हो गये तथा यातना सहते मारे गये। 38

श्रीमती गोरीबाई— बिजावर में श्रीमती गोरीबाई द्वारा आन्दोलन में भाग लिया गया। श्रीमती गोरीबाई प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री रामकृष्ण पालिया की पत्नीं थीं। श्री पालिया जिला हमीरपुर बिजवई ग्राम के

निवासी थे। रामकृष्ण पालिया ने बिजावर राज्य में जनजागरण का कार्य शुरू किया। सरकार ने इनको कैद करने का प्रयास किया लेकिन सफलता नही मिली। श्रीमती गोरीबाई ने अपने पति के साथ सहधर्मिणी की भूमिका निभाते हुये राज्य में जनजागरण का कार्य किया। बाद में श्री पालिया जी की जहर देकर जीवन लीला समाप्त कर दी गई।

बंका पहाड़ी का कर विरोधी आन्दोलन

राज्य बंका पहाड़ी में कांग्रेस विचार धाराओं की जागृति सन् 1928 से प्रारम्भ हुई। यहां के पंचमलाल जैन ने अपने साथी श्री पहलवान सिंह के सहयोग से राज्य की शासन नीतियों व अत्याचारों का विरोध प्रारम्भ कर दिया। सन् 1937 में अपनी पत्नी सहित झांसी में जाकर आत्माराम गोविन्द खेर के माध्यम से सहपत्नीक सदस्यता ग्रहण की। 1931 के मऊरानीपुर आन्दोलन में भाग लिया तथा पत्नी सहित ललितपुर आन्दोलन में भाग लिया (पत्नी का नाम ज्ञात नहीं हो सका) बारडोली सत्याग्रह आन्दोलन में गिरफ्तार कर तीन माह की सजा सुनाई गई। 1934–1937 में रियासतों में बेगार प्रथा बन्द कराने का आन्दोलन कराया, सन् 1948 की टोडी फतेहपुर के जंगल सत्याग्रह में भाग लिया। इन समस्त आन्दोलन में उनकी पत्नी आदर्श पत्नी की भांति प्रत्येक चरण में पति की सहयोगिनी रही। शोधार्थिनी के द्वारा उसको शत शत नमन। 39

जिगनी राज्य का स्वतन्त्रता आन्दोलन

जिगनी में जिगनी, बंगरा, इटौलिया, अमरपुरा, गठर और विलगांव यह छः गांव थे। श्री दीवान शत्रुघ्न सिंह जिला हमीरपुर की प्रेरणा से नेता श्री लालसिंह ने 1925 में जिगनी में स्वतन्त्रता संग्राम प्रारम्भ किया। सन 1938 में लाला राम बाजपेयी द्वारा जिगनी प्रजा मण्डल की स्थापना की गई। जिगनी के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने वालों में ठाकुर मन्नू सिंह, नाथूराम वर्मा, रामदयाल, विश्राम सिंह, जानकी प्रसाद खरे के अतिरिक्त श्रीमती राधाबाई ने भाग लिया, इनके पति का नाम फकीर चन्द था। फकीर चन्द ने भी सत्याग्रह में भाग लिया। 40

समथर का स्वतन्त्रता आन्दोलन

समथर में स्वतन्त्रता संग्राम प्रारम्भ करने का श्रेय श्री प्रेमनारायण तिवारी को जाता है। जिन्होंने 1932 में ग्राम भरोसा तथा मोंठ में झण्डा फहराया। इनके साथ मोतीलाल शर्मा, रामानुज शास्त्री, हितप्रसाद गुप्त ने समथर में झण्डा सत्याग्रह किया गया। राजा ने 25 कार्यकर्ताओं की पिटाई कर दी। समथर में प्रदर्शन किया गया जिसमें राज्य में स्वतन्त्रता व उत्तरदायी शासन की मांग की गई। और राज्य में लगानबन्दी आन्दोलन छेड़ दिया गया। सन् 1944 में समथर में प्रजामण्डल की स्थापना की गई। उस समय महात्मा गांधी द्वारा बुन्देलखण्ड की रियासतों के 13 आदमियों को सत्याग्रह में भाग लेने की अनुमति मिल गई थी। सन् 1946 में लालाराम के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन चलाने के लिये आन्दोलन किया गया इस आन्दोलन के पुरूष सेनानियों के अतिरिक्त श्रीमती तुलसा अहिरवार, श्रीमती लक्ष्मी देवी अहिरवार के द्वारा भाग लिया गया। इन महिलाओं द्वारा मैहर के स्वतन्त्रता आन्दोलन में भी भाग लेकर सक्रिय भूमिका निभाई गई। 41

श्रीमती रामरती देवी और स्वतन्त्रता संग्राम

श्रीमती रामरती देवी प्रसिद्ध स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी श्री प्रेमनारायण की पत्नीं थीं। इनके पुत्र का नाम श्री सत्यदेव तिवारी था। श्री रामरती देवी ने अपने पति प्रेमनारायण तिवारी के साथ स्वतन्त्रता संग्राम मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन्होंने अपने पुत्र के हृदय में देश भक्ति की भावना कूटकूट कर भर दी । सत्यदेव पर इसका प्रभाव पड़ा और वै भी स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। 11 वर्ष की उम्र से ही सत्यदेव के स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेने के कारण 9 माह के लिये राज्य से निष्कासित कर दिया गया। गोवा आन्दोलन में भाग लेने के कारण पुलिस के जुर्म के शिकार हुये। इस प्रकार श्रीमती रामरती देवी के अपूर्व देशभक्ति प्रेम ने अपने पुत्र को सत्याग्रही बना दिया। 42

छतरपुर स्वतन्त्रता संग्राम में महाराजपुर की भूमिका

महाराजपुर में राजनीतिक चेतना का सूत्रपात प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारम्भ के दिनो में श्री लक्ष्मण भागवत ने किया। सन्

1910 में महाराजपुर मे आर्यसमाज की स्थापना हुई, इसमें बाबूराम चौरसिया ने महात्वपूर्ण योगदान दिया। सन 1930 में जब लगान बन्दी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ तो महाराजपुर में भी यह जुलूस तिरंगे झण्डे के रूप में परिवर्तित हो गया। जगह जगह सभायें की गई। यहाँ पर जनता ने तहसीलदार की कार पर लाठी व पत्थारों से प्रहार किया। 14 जनवरी की चरणपादुका में भी वंशीधर अरजरिया व भुमानीदीन थोकदार ने भाग लिया। सन 1938 में छतरपुर राज्य में प्रजामण्डल की स्थापना हुई व 9 अगस्त 1942 के भारत छोडों प्रस्ताव में श्री चतुर्भुज पाठक प्रेमनारायण खरें ने एक बैठक की तथा 17 अगस्त को वृहद् झण्डा जुलूस में असंख्य स्त्री पुरूषों ने भाग लिया। 43

सन् 1947 में कुस्मागाम में मदनगोपाल चौरसिया के नेतृत्व में उत्तरदायी शासन की प्राप्ति करने के लिये सत्याग्रह का निश्चय किया। 15 दिन का समय राज्य को उक्त मांग को स्वीकार करने को दिया गया। मांग पूरी न होने पर 11.3.1947 से दरबार छतरपुर के सामने धरना दिया गया, जिसमें अनेक महिला स्वतन्त्रता सेनानियों ने भाग लिया। जिनके नाम सुश्री मन्ची देवी, श्रीमती सूरजपाल मुलिया, श्री मती नन्दराम कौशल्या, श्रीमती रामरती खिमिया, श्रीमती टोलई रधिया, श्रीमती गोपीराम चौरसिया, श्रीमती बालाप्रसाद नामदेव, श्रीमती शकुन्तला देवी ने सत्याग्रह व आन्दोलन में भाग लिया व शिविर में काम किया।

राजनगर का योगदान

इसके अतिरिक्त उत्तरदायी शासन की स्थापना मे राजनगर से ही गनेशी बाई, सोमवती यादव, रामबाई सुनार, गनेशी बाई यादव, मंहतीबाई यादव तथा सरिता देवी ने ताल गांव से तथा धमना से सुमित्रा देवी तथा बूंदा बाई ने चन्दनगर से गंगा बाई, हल्की बाई, रामकुंवर, राजावेटी वैश्य, राजाबेटी ब्राहम्ण, मौजा बरा से सुरजन देवी, रधिया देवी, मानकुवॅर देवी सरस्वती देवी ,कृष्ण देवी ,लल्ला देवी, लक्ष्मी देवी, राजाबेटी, मूंगा देवी ,लुड़की देवी निर्मला देवी, नन्नी बाई, खरकी देवी, जानकी बाई, यशोदा बाई, मनिया बाई, पुनिया देबी, जानकी देवी, सुन्दर देवी, राधाबाई ,नयनी

देवी, **लौड़ी** से श्री मति सुखारानी देवी, रगौली से श्रीमती पार्वती देवी, विमला देबी, हरकुँवर देवी, काली देबी, गोपी देबी, **टहनगा** से श्रीमती शान्ति देबी सरजू बाई रामधीन रामकुँवर देवी वसतीदेवी भोरो बाई, काशी बाई, प्यारी बाई, सुमित्रा देवी, कमला देवी चमार ,यशोदा देवी, बसन्ती देवी, सुमित्रा देवी इत्यादि महिला सत्याग्रही ने भाग लिया प्रति दिन लोगो को मोटर मे भर भर कर 40–50 मील दूर जंगलो में छोड़ा जाता था। 44

समथर राज्य में झण्डा सत्याग्रह तथा महिलाऐं

समथर में 1939 में राज्य मे ग्यारह लोगों का एक पर्चा निकाला गया था। जिसमें उत्तरदायी शासन की मांग की गयी थी। इसी बीच लाल बहादुर शास्त्री के प्रयत्नों से समथर राज्य कांग्रेस कमेटी का चुनाव हुआ जिसमें प्रेमनारायण तिवारी अध्यक्ष चुने गये। कांग्रेस कमेटी का चुनाव हो जाने के पश्चात् राज्य के हर गांव में झण्डा फहराने का निश्चय किया गया। जिसमें राज्य शासन ने क्रुद्ध होकर दमन का सहारा लिया। और साकिन गांव में पच्चीस कार्यकर्ताओं की पिटाई कर दी। लेकिन जनता का उत्साह कम नहीं हुआ और राज्य में नागरिक स्वतंत्रता व उत्तरदाई शासन की मांगों को लेकर प्रदर्शन होते रहे।

सरीला राज्य में प्रजामण्डल की स्थापना व महिला आन्दोलन

सरीला राज्य में जनजाग्रति प्रारम्भ करने का श्रेय श्री बिहारीलाल विश्वकर्मा को जाता है। इस राज्य में आन्दोलन का शुभारम्भ बुन्देलखाण्ड की अन्य रियासतों के समान 1939 में हुआ। सरीला में बाबू बिहारीलाल जी ने प्रजा मण्डल के संगठन, सिद्धान्तों एवं कार्यप्रणाली पर लोगों के बीच बातचीत की और एक संगठन की स्थापना की। मार्च 1939 में सरीला में एक सभा का आयोजन किया गया तथा एक जुलूस निकाला गया, जिसमें राजा साहब की ओर से लाठी चार्ज हुआ। जिसमें श्रीदल सिंह विश्वकर्मा छिबौली शहीद हुऐ। जुलूस में स्त्री पुरूष दोनों शामिल हुऐ। उस दिन लाठी चार्ज

होने से 50 से ज्यादा स्वयं सेविकायें घायल हो गयीं। श्रीमती नन्नू सिंह घायल हो गईं। बल प्रयोग के लिये नौगांव से पुलिस बुलाई गई जिसके साथ राज्य कर्मचारियों ने घूम घूम कर आतंक पैदा किया और लोगों को पीटा। डा0 बेनी प्रसाद की धर्मपत्नी सरीला आन्दोलन में सम्मिलित थीं। इसके अतिरिक्त अन्य अनेक महिलाओं ने भाग लिया। 45

श्रीमती गुलाब रानी और सत्याग्रह

श्रीमती गुलाब रानी छिबौली नौगांव के श्री बृन्दावन लोधी की पत्नी थीं। उन्होनें 1939 के व्यक्तिगत सत्याग्रह में भाग लिया। तथा सरीला राज्य के विरूद्ध जुलूस में शामिल हुईं। ये गिरफ्तार कर ली गईं तथा 6 मई 1939 को इन्हें सरीला में जेल में बन्द कर दिया गया। 1 माह पश्चात ये जेल से रिहा कर दी गईं।

श्रीमती जगरानी

श्रीमती जगरानी भी लोधीग्राम छिबौली नौगांव के श्री नन्हें की पत्नी थीं। इन्होने श्रीमती गुलाबरानी तथा मुन्नू राजा के साथ 14 मई 1939 को सरीला जुलूस में भाग लिया। ये भी गिरफ्तार की गईं तथा इन्हें 1 माह के कारावास का दण्ड दिया गया।

इसके अतिरिक्त सरीला स्टेट से ही श्रीमती पातरी पत्नी शिवसहाय तथा नौनी दुलइया पत्नि स्व0 श्री दुर्गा प्रसाद ने भी 6 मई तथा 14 मई को 1 माह के कारावास का सजा पाई। 47

नागौद सत्याग्रह और दमन

नागौद राज्य में जनता ने राजा के अत्याचार से दुखी होकर आन्दोलन चलाया। जिसमें राजा साहब द्वारा 15–20 सत्याग्रहियों की गिरफ्तारी के साथ पुलिसिया मार सहन करनी पड़ी थी। नागौद सत्याग्रह में श्रीमती लटोरे लाल को गिरफ्तार किया गया बाद में इन्हें छोड़ दिया गया। अजयगढ़ स्टेट से आयी हुई सुशीला देवी के साथ मारपीट की गई। इसके अतिरिक्त 25 मार्च 47 को नागौद में पुलिस का राज्य स्थापित किया गया।

पुलिस ने उचेहरा स्थान में मारपीट धरपकड़ जारी करने के अलावा बहुत से लोगों के घरों में ताले लगा दिये।बहुत से लोगों ने जुर्माना वसूली के लिये घर के भीतर बर्तन और अन्य चीजें बाहर फेंक दिये। बाल बच्चों तथा स्त्रियों को घर के अन्दर बंद कर बाहर से ताला लगा दिया गया, जिसमें एक जुलूस विरोध स्वरूप निकाला गया, जिसमें महिलाओं की संख्या सर्वाधिक रही। पुलिस अफसर प0 सदाशिव बाजपेई ने महिलाओं के साथ मारपीट तथा अश्लील व्यवहार किया। 48

टीकमगढ़ राज्य का स्वतंत्रता संग्राम

टीकमगढ़ सागर संभाग का एक महत्वपूर्ण जिला है। टीकमगढ़ में 30.9.35 में प्रथम बार एक मिलिट्री विद्रोह हुआ जिसका उद्देश्य राजनैतिक न होकर केवल टीकमगढ़ राज्य में बड़े-बड़े पदों पर आसीन बाहरी अधिकारियों को हटाना मात्र था। किन्तु उसका प्रभाव जनता पर पड़ा तथा नौकरशाही का विरोध करने का प्रथम बार साहस जनता ने किया। 49

प्रथम झण्डा सत्याग्रह-टीकमगढ़

दिसम्बर 30, 1937 को राज्य तथा उत्तरप्रदेश के नेताओं का एक जत्था श्री मुख्तयार अहमद की अध्यक्षता में झण्डा सत्याग्रह मनाने के लिये आया। इस जत्थे में सत्याग्रहियों की जमकर पिटाई की गयी तथा उन्हें एक मोटर में भरकर राज्य की सीमा से बाहर फिंकवा दिया गया। श्री प्रेमनारायण तथा चतुर्भुज पाठक को गिरफ्तार कर नजरबंद कर दिया गया।। 14 जनवरी 1939 को राज्य तथा उत्तर प्रदेश के नेताओं ने मऊ में सभा कर निश्चित किया कि ओरछा राज्य में स्वतंत्रता संग्राम शुरू किया जाऐ। अभी आन्दोलन की तिथि निश्चित भी न हो पाई थी कि राज्य के पलेरा नामक ग्राम के एक कार्यकर्ता मल्लेदउवा ने ग्राम में झण्डा फहराकर आन्दोलन शुरू कर दिया गया। कार्यकर्ताओं को बुरी तरह पीटा गया जिन्हें मऊ अस्पताल में भर्ती कराया गया। 50

टीकमगढ़ आन्दोलन में भाग लेने वाली महिलाऐं

श्रीमती सावित्री सक्सेना– श्रीमती सावित्री सक्सेना पुत्री श्री बाबूराम सक्सेना का जन्म तालबेहट जिला झांसी में सन् 1926 में हुआ था। आपने विद्यार्थी जीवन से ही 18 वर्ष की उम्र में सन् 1942 में स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लिया। 1947 तक विन्ध्य क्षेत्र के टोड़ी फतेहपुर, दुरबई ,बिजना, छतरपुर, नागौद आदि रियासतों में जगह जगह होने वाले आन्दोलनों, सत्याग्रहों, धरनों, भूख हड़ताल आदि सभी संघर्षों में सकिय रूप से भाग लिया। इन्होनें ब्रिटिश सरकार द्वारा कई बार लाठियां खाईं, गिरफ्तार हुईं। 1945–46 में मैहर नरेश की तानाशाही के दमन चक में भी जेल गईं और अनेक यातनायें सहीं। इन्होनें राष्ट्रीय सेवा के लिये अनेकों कष्ट सहे तथा शारीरिक हानियां उठाईं। इन्होनें चंदेरा सत्याग्रह में सक्रिय भाग लिया, यहां पुलिस द्वारा श्रीमती सक्सेना के साथ मारपीट की गई। 51

इसके साथ ही ब्लाक पृथ्वीपुर की गणेशवती वर्मा, पुतराबाई जैन, मोहनगढ़ ब्लाक जतारा श्रीमती सरजूबाई ब्लाक टीकमगढ ने भी भाग लिया ।

श्रीमती मानकुँवर खारे – मानकुँवर अमर शहीद नारायण दास की पत्नी थीं। नारायणदास खारे का घर प्रारम्भ से ही सत्याग्रहियों का अखाड़ा था। जब 30 दिसम्बर 1937 को टीकमगढ़ नगर में झंण्डा सत्याग्रह हुआ, तो श्रीमती रामकुँवर ने अपने पति नारायण दास के साथ झंण्डा सत्यग्रह में भाग लिया और गिरफ्तार किये गये। 1937 में ओरछा में उत्तरदायी शासन की स्थापना के लिये किये गये जनसंगठन और आन्दोलन में उनके पति श्री खारे को बड़ागांव के पास नरोसा नामक नाले पर प्रतिकियावादियों ने श्री खारे के टुकड़े टुकड़े करके फेंक दिये। ऐसी विषम परिस्थिति में श्री खारे की पत्नी ने धैर्य नही छोड़ा और श्री खारे के शहीद हो जाने के बाद भी ये बहुत बहादुरी से श्री खारे के जीवन पथ पर चलकर कार्य करती रहीं। इनको सरकार द्वारा 150 रू0 सम्मान निधि मिलती है। 52

जब 1945 ई0 में हरपालपुर में बुन्देलखण्ड प्रान्त एकीकरण सम्मेलन हुआ तो श्रीमती मानकुँवर खारे ने अपनी बच्ची प्रकाशवती खारे जो कि उस समय अत्यन्त छोटी थी, उसके साथ भाग लिया। उनके साथ इस प्रान्तीय सम्मेलन में श्री चतुर्भुज पाठक की पत्नी श्री देवका देवी पाठक तथा श्रीमती कंचन खारे पत्नी श्री प्रेमनारायण दास खारे ने भी अपने बच्चे रमेश के साथ सम्मेलन में भाग लिया ।

<u>श्रीमती कंचन देवी कटेरा–:</u> श्रीमती कंचन देवी कटेरा ओरछा राज्य के प्रसिद्व स्वतन्त्रता सेनानी श्री प्रेमनारायण खारे की पत्नी थीं। श्री प्रेमनारायण जी का जन्म 13 जून 1910 को टीकमगढ़ में हुआ था। श्रीमती कटेरा प्रेमनारायन जी की सहधार्मिनी बनकर 1930 ई0 में टीकमगढ आयीं थीं। श्री खारे के यहां घोर आर्थिक संकट था अतः श्रीमती कटेरा का अधिकांश समय ननिहाल में ही कटा। श्री खारे 1931 में पण्डित जवाहर लाल की चुनाव सभा महरौनी में शामिल हुये और कांग्रेस के सदस्य बन गये। 1931 में प्रथम झण्डा सत्याग्रह टीकमगढ़ में हुआ, इसके परिणाम स्वरूप श्री खारे को अंग्रेज सरकार द्वारा बन्दी बना लिया गया और उन्हे अमानुषिक यातनायें दी गयीं। तथा ओरछा राज्य से निष्कासित कर दिया गया। इस भीषण समय में श्रीमती कटेरा अपने दो अबोध शिशुओं को ले कर (विधावती और रमेश) मायके चली गईं। श्री खारे को व्यक्तिगत सत्याग्रह में 17.7.41 से 21.11.41 तक झांसी सेन्ट्रल जेल में रखा गया। जनवरी 42 से जून 42 तक ओरछा राज्य में बन्दी कार्यकर्ताओं को छुडाने के लिये जुलाई में ओरछा राज्य सेवा संघ की स्थापना की गई। फरवरी 43 में अनगढ कैम्प का संचालन करते हुये बुन्देलखाण्ड की रूपरेखा बनाई गई उनमें 16 महिलाओं से कंचनदेवी ने भी इस प्रशिक्षण शिविर में अपनी पहिचान बनाई। इस प्रकार श्री मती कंचन देवी ने आजीवन देश के स्वतन्त्रता संग्राम में अपने पति के साथ सहधर्मिणी की भूमिका निभाई। देश के स्वतन्त्र हो जाने पर शासन के द्वारा इनके अपूर्व त्याग को देखकर 100 रू0 प्रतिमाह पेन्शन, सम्मान, प्रशस्ति और 5 एकड़ भूमि प्रदान की गई। 53

<u>श्रीदेवका देवी पाठक</u>– श्रीमती देवका देवी पाठक प्रसिद्ध स्वतन्त्रता

संग्राम सेनानी पं0 चतुर्भुज पाठक की पत्नी थीं। इन्होने 30 सितम्बर 1937 को हुये झण्डा सत्याग्रह में भाग लिया। ये अपने पति श्री पाठक के साथ अनवरत आन्दोलन में भाग लेती रही और कठोर आर्थिक कठिनाईयों का सामना करने के बाबजूद पूरी धैर्य और निष्ठा के साथ अपने पति के साथ कन्धो से कन्धा मिलाकर के महिला उन्नति के लिये इन्होंने सबसे उत्तम कार्य किया ।

दतिया राज्य में जन आन्दोलन

सन् 1921 में जब महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन छेड़ा गया था उस समय तक दतिया के शासक अंग्रेजों के परम भक्त तथा मित्र थे। सम्भवतः यही एक कारण था कि आन्दोलन छेड़े जाने के फलस्वरूप परिवर्तन की जो लहर चल रही थी उससे दतिया अप्रभावित रहा। 54

तथापि सन 1930 में दीवान अजीजुद्दीन अहमद के समय जिले में राजनीतिक जाग्रति आयी और फलस्वरूप झांसी में दतिया प्रजा मण्डल बना। इनका उद्देश्य जनता के लिये उत्तरदाई शासन की स्थापना करना था। अन्दोलन का नेतृत्व रामचरण वर्मा तथा दीवान कालिका प्रसाद कर रहे थे। उन्ही दिनों चन्द्रशेखर आजाद दतिया में पधारे। सन् 1936 में श्रीमती कृष्णा हरी सिंह ने दतिया की यात्रा कर अनुसूचित जातियों को संगठित करने का अभूतपूर्व कार्य किया। 55

सन 1938 में प्रजामण्डल की स्थापना हुई। स्वर्गीय दीवान कालका प्रसाद और रामचरण वर्मा ने कई बार समग्र जिले का भ्रमण कर ग्रामीण जनता को जाग्रत करने का अभूतपूर्व कार्य किया। उस समय गांधी टोपी और तिरंगा झण्डा लगाना महान अपराध समझा जाता था। 1944 में गरीब दास को गांधी टोपी लगाकर अपनी दुकान में बैठने पर बुरी तरह प्रताड़ित किया गया। सन् 1944 में डिफेन्स ऑफ इन्डिया रूल के अर्न्तगत बाबूलाल गोस्वामी और लक्ष्मी बाई को गिरफ्तार कर लिया गया। 56

श्रीमती पुख्खन देवी और स्वतन्त्रता आन्दोलन

स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में श्रीमती पुख्खन देवी

के योगदान को कौन भुला सकता है। श्रीमती पुख्खान देवी के पति श्री रामनारायण शर्मा थे, उनका जन्म 20 मार्च 1911 को हुआ। उन्होंने शिक्षा माध्यमिक स्तर तक ग्रहण की। उनको हिन्दी का अच्छा ज्ञान था। श्रीमती पुख्खान देवी ने दतिया में उत्तरदायी शासन के लिये जनआन्दोलन में भाग लिया, जिसके कारण 11 जुलाई 1930 से 30 अगस्त 1930 तक उनको झांसी में कारावास की सजा सुनाई गई।[57]

श्रीमती लक्ष्मीबाई और स्वतन्त्रता संग्राम

श्रीमती लक्ष्मीबाई दतिया की रहने वाली थीं। उन्होंने महात्मा गांधी के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया। सन् 1936 में जब श्रीमती कृष्णाहठी सिंह ने दतिया की यात्रा कर अनूसूचित जातियों को संगठित करने का अभूतपूर्व कार्य किया तो उसमें लक्ष्मीबाई ने भी सहयोग दिया। सन् 1938 में स्व0 दीवान कालका प्रसाद और राम चरण लाल वर्मा द्वारा दतिया में प्रजामण्डल की स्थापना की गई, उस समय झण्डा सत्याग्रह अपनी चरम सीमा पर था। तिरंगा झण्डा लगाना तथा गांधी टोपी पहनना अक्षम्य अपराध था। जब दतिया में तिरंगा सत्याग्रह हुआ तो लक्ष्मीबाई ने भी उसमें भाग लिया। सन् 1944 ई0 में डिफेन्स ऑफ इण्डिया रूल्स के अन्तर्गत श्रीमती लक्ष्मीबाई को गिरफ्तार कर लिया गया और इन्होने जेल की यात्रा की। 58

निष्कर्ष– भारत के स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में देशी रियासतों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इन देशी रियासतों के आन्दोलन अधिक कठिन और विषम परिस्थितियों में संचालित आन्दोलन थे और इसलिये भारत के स्वतन्त्रता संघर्ष में बिट्रिश भारत के स्वतंत्रता आन्दोलन से कहीं अधिक देशी रियासतों का स्वतंत्रता संघर्ष है। और मुझे यह कहने में तनिक भी संकोच नहीं है कि स्वतंत्रता आन्दोलन की जवानी भले ही देश के अन्य भागों को प्राप्त हो किन्तु जन्म देने का गौरव इन देशी रियासतों को प्राप्त है। इन देशी रियासतों ने प्रजामण्डलों की स्थापना के प्रारम्भिक

वर्षों में भाषाई एकता के आन्दोलन पर बल दिया। बुन्देलखण्ड की देशी रियासतों और बुन्देलखण्ड प्रान्त की सांस्कृतिक, धार्मिक और भाषाई दृष्टिकोण से एकरूपता होने के कारण बुन्देलखण्ड ने एकीकरण आन्दोलन का रूप धारण करके रियासती जनता में जन जागृति का महत्वपूर्ण कार्य किया है। और इस सन्दर्भ में बुन्देलखण्ड की देशी रियासतों का योगदान निश्चय ही प्रशंसनीय है।

सन्दर्भ सूची

1— डा0 सुधा वैसा जैन ''जंगे आजादी में बुन्देलखाण्ड की देशी रियासते '' स्वराज्य संस्थान संचालनालय संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश पृष्ठ 6,7

2— वही पृष्ठ 7

3— श्री दशरथ जैन ''विन्ध्याचल स्वतन्त्रता संग्राम'' अंक 1984

4— ''ओरछा सेवा संघ का चतुर्थ अधिवेशन'' प्रकाशक स्वागत समिति शेख अब्दुल्ला 1945

5— वही

6— ''ओरछा सेवा संघ का प्रथम द्वितीय अधिवेशन''प्रकाशक स्वागत समिति जतारा अधिवेशन 1985

7— वही

8— हरिमोहन श्रीवास्तव ''दतिया का जन आन्दोलन''

9— एनुअल एडमिनिस्टेशन रिर्पोट ऑफ छतरपुर स्टेट फार 1918, 1919

10— विन्ध्याचल छतरपुर दिनांक 1 जनवरी 1954 पृष्ठ 9

11— मध्य प्रदेश और गांधी जी पृष्ठ 187

12— वही पृष्ठ 187

13— उत्सर्ग, चरणपादुका गोलीकाण्ड और उसके अमर शहीद पृष्ठ 150

14— वही पृष्ठ 150

15— विन्ध्याचल, 14 तथा 15

16— उत्सर्ग, पृष्ठ 150

17— विन्ध्याचल, 16 तथा 58

18— वही पृष्ठ 59,60

19— उत्सर्ग, पृष्ठ150

20— उत्सर्ग, ''चरणपादुका गोलीकाण्ड और उसके अमर शहीद''पृष्ठ150

21— राष्ट्रगौरव, ''बुन्देलखण्ड का स्वतन्त्रता संग्राम'' पृष्ठ 330

22— राष्ट्रगौरव, ''बुन्देलखण्ड का स्वतन्त्रता संग्राम'' पृष्ठ 331

23— राष्ट्रगौरव, ''बुन्देलखण्ड का स्वतन्त्रता संग्राम'' पृष्ठ 331

24— छतरपुर जिला गजेटियर, पृष्ठ सं0 81

25— श्रीमती मथुरा देवी चौरसिया(स्वतन्त्रता सेनानी) से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर

26— श्री काशी प्रसाद महतों से लिये गये साक्षात्कार केआधार पर

27— श्रीमती मथुरा देवी चौरसिया (स्वतन्त्रता सेनानी) से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर

28— गढी मल्हरा के निवासी श्री हरदास चौरसिया के भतीजें श्री शिवदास से लिये गये साक्षत्कार के आधार पर

29— श्री मती प्रेमलता खारे के पति स्वतन्त्रता सेनानी श्री शिवनारायण खारे से लिये गये साक्षत्कार के आधार पर।

30— स्वतन्त्रता सेनानी श्रीमती विद्यावती चतुर्वेदी से लिये गये साक्षत्कार के आधार पर

31— स्वतन्त्रता सेनानी श्री काशीप्रसाद महतों से लिये गये सक्षत्कार के आधार पर।

32— श्रीमती चतुर्वेदी से लिये गये साक्षत्कार के आधार पर

33— उत्सर्ग, बुन्देलखण्ड का स्वतन्त्रता आन्दोलन, सम्पादक श्री दशरथ जैन।

34— उत्सर्ग, पृष्ठ 282

35— उत्सर्ग, पृष्ठ295

36— श्री मती विद्यावती चतुर्वेदी से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर

37— डा0 सुधा वैसा, बुन्देलखण्ड की देशी रियासतें, पृष्ठ 44 स्वराज्य संस्थान सचांलनालय संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश पृष्ठ 44

38— उत्सर्ग श्री गोकुल प्रसाद महाशय द्वारा लिखो गये संस्मरण केआधार पर विजावर राज्य का स्वतन्त्रता संग्राम पृष्ठ 180

39— श्याम लाल साहूँ , विन्ध्य प्रदेश के स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास , राजेन्द्र प्रिटिंग प्रेस निवाडी पृष्ठ 234

40— वही पृष्ठ 239

41— श्याम लाल साहूँ , विन्ध्य प्रदेश के स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास राजेन्द्र प्रिटिंग प्रेस निवाडी पृष्ठ 257,258

42— सत्यदेव तिवारी के पुत्र ब्रम्हदेव तिवारी से लिये गये व्यक्तिगत साक्षात्कार के आधार पर

43— उत्सर्ग ''छतरपुर स्वतन्त्रता आन्दोलन में महाराज पुर का योगदान'' लेखक मदनगोपाल चौरसिया पृष्ठ 177

44— जिला स्वतत्रंता संग्राम सैनिक संघ छतरपुर मध्यप्रदेश से

छतरपुर जिलान्तर्गत देशी राज्यों के प्रजा मण्डल आन्दोलनो में भाग लेने वाली महिला सेनानियों की सूची। दिनांक 25.9.87

45— डा0 सुधा वैसा, जंगे ए आजादी में बुन्देलखण्ड की देशी रियासतें,स्वराज्य संस्थान सचांलनालय संस्कृति विभाग मध्यप्रदेश

46— श्री श्याम लाल साहू विन्ध्य प्रदेश के राज्यों का स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास, राजेन्द्र प्रिटिंग प्रेस निवाडी पृष्ठ 316

47— श्री विहारी लाल विश्वकर्मा सरीला के सुपुत्र श्री धर्मवीर से लिये गये साक्षात्कार के आधार पर

48— श्याम लाल साहूॅ विन्ध्य प्रदेश के राज्यों का स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास राजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस निवाडी

49— म0 प्र0 स्वतन्त्रता सग्राम के सैनिक पृष्ठ 119

50— म0 प्र0 स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक पृष्ठ 121

51— श्याम लाल साहूॅ विन्ध्य प्रदेश के राज्यों का स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास राजेन्द्र प्रिंटिंग प्रेस निवाडी पृष्ठ 167,170

52— वही पृष्ठ 180

53— श्याम लाल साहूॅ विन्ध्य प्रदेश स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास पृष्ठ 165,166

54— दतिया दर्शन पृष्ठ 15

55— म0 प्र0 स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक पृष्ठ 288

56— वही पृष्ठ 288

57— मध्य प्रदेश के स्वतन्त्रता संग्राम के सैनिक पृष्ठ 392

58— सूचना तथा प्रकाशन विभाग जिला दतिया से छपे लेख के आधार पर

उपसंहार

भारत पर मुस्लिम आकमणों के दौर के समय पर राज्य की बागडोर स्वंय संभाल, युद्व लड़ने और वीरता पूवर्क शत्रु सेना के छक्के छुड़ाने से लेकर सामने हार देख, दुश्मन के हाथ आने से पूर्व स्वयं को कटारों से आत्मधात करने , सामूहिक चितायें जलाकर जौहर दिखाने, युद्व में पीठ दिखाकर आने वाले पति, पुत्रों का अपमान करने तथा उनके वीर गाथाओं से हमारा भारतीय इतिहास भरा पड़ा है। रानी दुर्गावती, माता जीजाबाई, महारानी पदमनी, रानी भवानी , तारा बाई, हाडी रानी बाई ,पन्नादाई, नूरजहां , अहिल्याबाई आदि न जाने कितने नामों ने अपने अप्रतिम देश प्रेम साहस नैपुण्य एवं बलिदान से अपना नाम व देश का नाम उज्जवल किया है वे आज भी नारी की पथ प्रर्दशक व प्रेरणा स्त्रोत है।

यही नही अंग्रेजी हुकूमत से जब स्वतन्त्रता पाने के लिये प्रथम मुक्ति युद्ध शुरू हुआ तब उस आन्दोलन की नायिका भी महारानी लक्ष्मी बाई थी, उनके साथ बेगम हजरत महल, रानी रामगढ़, रानी तपस्विनी, रानी जिंदा, रानी ताई बाई, जीनत महल तथा नाना साहब की पालिता बेटी मैना जिसे फिरंगियों ने पकड़कर जिन्दा जला दिया था इत्यादि कितने ही नाम हैं जिन्होने अंग्रेजी शासन के विरूद्ध विद्रोह का झण्डा बुलन्द किया, जान पर खेल कर लड़ी, पर शत्रु के सामने हार नही मानी ।

भारतीय नारी का यह मुक्ति आन्दोलन 19 वीं शताब्दी के प्रारम्भ से ही शुरू हो गया जबकि ब्रम्ह समाज ,आर्य समाज और प्रार्थना समाज की स्थापना हुई ।

मध्यकाल में नारी पर्दा प्रथा बाल विवाह , विधवा विवाह न होना, बाल हत्या, सती प्रथा जैसी कुप्रथाओं में जकडी हुई थी लेकिन इन तीनों सस्थाओं के द्वारा समाज सुधार का कार्यक्रम अपनाया गया और इन्होने अपने कार्यकमों में नारी उत्थान को प्रमुख स्थान दिया क्योकि जब भी कोई समाज अपने गौरव शाली अतीत से कटकर अन्ध विश्वास और रूढ़ वादिता के गर्त में डूब जाता है, तब सर्वाधिक कष्ट नारियों को ही झेलने पड़ते हैं। राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती तथा रानाडे ने अपने सुधार आन्दोलनों में नारी शिक्षा व उत्थान के कार्य को प्रमुख स्थान दिया है। 1820 में सती प्रथा कानून तथा 1856 में विधवा विवाह को कानून का रूप दिलाया। इस प्रकार से यह दोनो कानून स्त्रियों को सामाजिक

अन्याय से मुक्ति दिलाने में महात्वपूर्ण कदम थें। सन् 1917 ई0 में श्रीमती सरोजनी नायडू ने महिलाओं के एक शिष्ट मण्डल के साथ श्री मान्टेग्यू सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फार इण्डिया से मिलकर महिलाओं के लिये मताधिकार की मांग की सन् 1920 ई0 में भारतीय राजनीति में गांधी जी के पर्दापण से एक नया बदलाव आया। और उन्हे नारी की सुप्त शक्ति का साक्षात्कार हुआ। नारी की गरिमा को उन्होने विश्व के सामने प्रस्तुत किया। उनकी राजनीति से न केवल महिलाओं को नई जिन्दगी मिली बल्कि दुनिया के अन्य देशो की महिलाओं को अपने जीवन में एक नया अर्थ ढूढने का अवसर प्राप्त हुआ। महिलाओं को उत्साहित करने व उनमें जोश तथा उत्साह भरने का प्रमुख श्रेय भी गांधी जी को ही है। उनके आन्दोलन में ऊंचे खानदान से लेकर गरीब परिवार तक की सभी महिलायें शामिल थीं। गांधी जी के 1920 से 1947 तक के स्वतन्त्रता प्राप्ति के प्रत्येक लक्ष्यों में नारी पुरूषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग देती रहीं । जिस समय सम्पूर्ण देश के कोने कोने में पुरूष तथा स्त्री परस्पर सहयोग देकर इस अहिंसात्मक आन्दोलन को मजबूत बना रहे थे ठीक उसी तरह से बुन्देलखाण्ड प्रान्त की महिलाए भी 1920 से 1947 तक के इस स्वतन्त्रता संग्राम में पूर्णतया सक्रिय रही।

सन् 1600 ई0 सदी में अंग्रेजो ने भारत के अर्थागंन में व्यापारिक विसात बिछाकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के माध्यम से सियासी गोंटे चलाना प्रारम्भ कर दिया था और वें डेढ सदी की लगातार चालबाजी की चालों से 1757 में मुगल सल्तनत को मात देकर भारत में विट्रिश साम्राज्य की नीव ड़ालने में सफल हो गये थे। शिक्षा, सामाजिक चेतना, राष्ट्रीयता की भावना की कमी, परस्पर आपसी फूट, धार्म, जाति, भाषा, क्षेत्र तथा सम्प्रदाय के नाम पर मतभेद बस भारतीय इन्ही कारणो से लुटते चले गये और अंग्रेज हमें लूटते गये। सम्पूर्ण भारत में देश की स्वतन्त्रता और उसके गौरव की रक्षा के लिये छेड़ा गया संघर्ष धीरे धीरे सुलगने वाली चिंगारी की तरह जलता रहा और सबके अर्न्तमन मे एक ही भावना थी कि विदेशी शासन को उखाड़ फेंके। अतः इस संग्राम की पहली कड़ी 1857 में हुई क्रान्ति थी। भारतीयों को पूर्ण सफलता तो नही मिली लेकिन अंग्रेजो द्वारा किये गये अपेक्षा पूर्ण रवैये तथा शिक्षा के विकास के कारण भारतीयों को स्वतन्त्रता का महत्त्व समझ में आने लगा था। समाज में इस समय तक नवजागरण

का जो प्रमाण पड़ा उससे भारतीयों की विचार धारा को एक नई दिशा मिल गई।

किन्तु उस समय तक राष्ट्रीय नेतृत्व की क्षमता वाले नेता का पर्दापण भारत में नही हुआ था 1907 में सूरत विभाजन फिर गरमदल और नरम दल, मुस्लिम लींग सभी की अपनी मांगें थी। आगें चलकर महात्मा गांधी ने रोलेट एक्ट के विरोध के रूप में भारतीय राजनीति में पर्दापण किया और सन् 1919 से 1948 तक भारतीय राजनीति में महात्मा गांधी ही छाये रहे और यह पूरा युग गांधी युग के नाम से प्रसिद्ध हुआ। भारत का हृदय स्थल बुन्देलखण्ड उत्तर में कृष्ण की क्रीड़ा भूमि के चरणों को पखारने वाली यमुना, दक्षिण में शिलाओं का श्रगांर करने वाली बेतवा पश्चिम में चम्बल की सीमा रेखा के बीच स्थित है। बुन्देल खण्ड में मौर्य, गुप्तों, परिहारों तथा चन्देलों के द्वारा शासन किया गया लेकिन अन्य राज्यवंशों की तुलना में बुन्देलों ने कही अधिक इसे स्वामित्व तथा गरिमा प्रदान की।1857 केविद्रोह के दमन काल में बुन्देल खण्ड ने रानी झासी के नेतृत्व मे अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई उसके अन्य क्षेत्र सागर, जबलपुर,दमोह ,पन्ना,विदिशा ,नरसिंहपुर तथा उत्तर प्रदेश के झांसी, ललितपुर, बांदा, हमीरपुर, जालौन इत्यादि जिलों ने सन् 1857 से 1947 के स्वातन्त्रय संघर्ष में अपनी सतत् सहभगिता निभाई। संघर्ष का स्वरूप चाहें हिंसक रहा हों या अहिंसक यहां पर दोनो ही प्रकार के रणहूानों में रणठांकुरों ने बढ़चढ़कर भाग लिया है।

इसके अतिरिक्त स्वातन्त्रकाल में और सन् 1947 के बाद भी बुन्देलखण्ड के भी देशी राज्यों में उत्तरदायी शासन के लिये अथवा विलीनीकरण के लिये आन्दोलन चलते रहे। बुन्देलखण्ड की दूसरी विशेषता इसकी क्रान्तिकारी गतिविधिंया रहीं जिनमें प्राणो की बाजी लगाकर क्रान्तिकारी क्रान्ति का शंखनाद फूंकते रहे तथा इस संग्राम में जन साधारण, किसान मजदूर, व्यापारी, हरिजन, आदिवासी पिछडें वर्ग के लोग, महिलायें दीन हीन आदि लोगो की बडे पैमाने पर भागीदारी रही। बुन्देलखण्ड में जनसामान्य में स्वाभिमान कुछ अधिक ही पाया जाता है। और उसकी रक्षार्थ सदा से यहाॅं युद्ध होते रहे है। इस स्वतन्त्रता संग्राम में भी राष्ट्रीय कांग्रेस के नेताओं के मना करने पर भी लोग मैदान में कूदे, आन्दोलन किये और शहीद हुये। इसकी एक अन्य विशेषता जनता में धर्मान्धता था। साम्प्रदायिकता तथा विद्वेषता का अभाव

है। स्वतन्त्रता संग्राम के दौरान बढ़ती हुई साम्प्रदायिकता के फलस्वरूप जिस प्रकार से उपद्रव अन्य स्थान पर वह हुये पर यहाँ नही हुये जो स्थान प्रभावित भी हुये उनकी संख्या नगण्य है।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में स्वतन्त्रता आन्दोलन में पुरूषों के साथ साथ महिलाओं ने भी बडी संख्या में भाग लिया तथा कठोर से कठोर सजा, काठोर कारावास तथा अपमान भी सहा किन्तु अपने पथ से विचलित न हुईं। बुन्देलखण्ड प्रान्त में बडी संख्या में महिलाओं ने 1920 के असहयोग आन्दोलन में भाग लिया जिनमें से पिस्ता देवी, चन्द्रमुखी देवी,रानी राजेन्द्र कुमारी, सरजू देवी, किशोरी देवी, गुलाब देवी, सरस्वती देवी अनुसुईया देवी, कान्ती देवी, शान्ति देवी, श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान, श्रीमती गुजरिया बाई, तुलसाबाई इत्यादि प्रमुख है। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि 1923 के झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन का नेतृत्व भी बुन्देलखण्ड के जबलपुर से एक महिला श्रीमती सुभद्रा कुमारी चौहान ने किया।हालाकि ऐसा नही या कि इसके पूर्व कभी भी इस देश में वीरांगनायें नही हुई लेकिन इतनी बडी संख्या में जितनी भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के लिये हुई वह गौरव की बात थी।1920 ई0 में महात्मा गांधी ने जब असहयोग आन्दोलन चलाया तो उसका प्रभाव इतना व्यापक था कि भारतीय ललनायें विट्रिश सरकार और भारतीय जनता के बीच संघार्ष को केवल बैठे बैठे शान्त दर्शक की तरह नही देख सकी और महात्मा गांधी के आव्हान पर वे तुरन्त ही स्वतन्त्रता के इस महायज्ञ में कूद पड़ी और ये कार्यकेवल उत्तर भारत तक ही सीमित नही था. अपितु पूरे देश की यही स्थिति थी। मध्यप्रदेश में गांधी जी पहली बार जबलपुर पधारें तब यहां पर महिलाओं का उत्साह देखते ही बनता था। इन महिलाओं ने गांधी जी की अपील परतिलक स्वराज्य कोष के लिये बडी मात्रा में धान अपने सोने चांदी के गहने आदि अर्पित किये।

बुन्देलखण्ड की महिलाओं में रानी राजेन्द्रकुमारी, किशोरी देवी, पिस्ता देवी, सरजू देवी, तथा सुभद्रा कुमारी चौहान आदि महिलाओं के नेतृत्व में बडी संख्याओं में महिलाओं का योगदान केवल यही तक सीमित नही रहा अपितु आन्दोलन के कार्यक्रम के अनुसार इन्होने जुलूस निकाला, खादी का प्रचार किया धरना दिया, अधिवेशनों में भाग लिया और जेलों की यात्रायें भी की। प्रत्येक गली मोहल्लो में महिलाओं द्वारा सभाओं का आयोजन किया गया । महिलाओं ने पूर्णतया स्वदेशी वस्तुओं को अपनात

हुये विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार किया इन्होने अपने कंगन नथ हार इत्यादि स्वेच्छा से दानकर दिये गांधी जी ने तो यहां तक कहां कि – "जब तक भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास लिखा जायेगा। तब निसन्देह भारतीय महिलाओं द्वारा किये गये त्याग को उच्चतम स्थान प्राप्त होगा।"

सन् 1923 में झण्डा सत्याग्रह प्रारम्भ किया गया इस झण्डा सत्याग्रह के प्रचार प्रसार तथा आरोहण को गोरी सरकार फूटी आंखों भी देखना नही चाहती थी। 1923 में झण्डा सत्याग्रह में सारे देश की सहभागिता दृढतत्य थी बुन्देलखाण्ड के पुरूषों ने ही नही अपितु महिला सेनापतियों ने भी खुले दिल और मन से झण्डा सत्याग्रह में महात्वपूर्ण भूमिका निभाई। सम्पूर्ण बुन्देलखण्ड की महिलायें इस झण्डा जुलूस में सक्रिय हो गई। हमीरपुर, झांसी, जबलपुर,की महिलायें जनपद के कार्यालयों से झण्डा लेकर झण्डा गायन करती हुई ध्वज जुलूस निकालती थीं। हमीरपुर में महिलायें रानी राजेन्द्र कुमारी के नेतृत्व में और जबलपुर में सुभद्राकुमारी के नेतृत्व में दल बनाकर जिस समय तिंरगा लेकर समवेत गान करती हुई जब निकलती थी तो इनका उत्साह देखाते ही बनता था।

जिस समय देश के अधिकांश पुरूष नेता जेल के सीखाचों में बंद थे तो अब यह दायित्व देश की उन महिला सेनानियों के कंधों पर आ गया कि जनता का संकट की इस धाडी में नेतृत्व एवं मार्गदर्शन करे और यही कार्य उन्होने किया सन् 1922 में गांधी जी ने हिंसात्मक कार्यवाही के कारण आन्दोलन स्थगित कर दिया तथा रचनात्मक कार्यो पर जोर दिया। मोतीलाल नेहरू और चितरंजन दास के द्धारा स्वराज्य दल की स्थापना की गई। इस अवधि में विट्रिश शासन का रवैया उपेक्षापूर्ण ही बना रहा । सन् 1927 में दिखावे के रूप में साईमन कमीशन भारत आया जिसके विरोध स्वरूप सम्पूर्ण भारत के जनमानस में जोश बढा जिसकी परिणति ज्वाहरलाल नेहरू के द्वारा 31 दिसम्बर 1929 को लाहौर के अधिवेशन में पूर्ण स्वराज्य की धोषणा करना था। यह कार्यक्रम रावी नदी के तट पर किया गया। सन् 1930 ई0 में सविनय अवज्ञा आन्दोलन प्रारम्भ करने के पूर्व गांधी जी द्वारा, वायसराय को एक पत्र द्वारा ग्यारह सूत्री मांगों को उनके सामने रखा गया। लेकिन कोई जबाब न मिलने पर उन्होने प्रतिक्रिया व्यक्त की *"मांगी थी रोटी मिला पत्थर"* गांधी जी ने अपने चुने हुये 78 शिष्यों

के साथ दाण्डी यात्रा कर समुद्र तट पर 6 अप्रेल का नमक कानून का खुला उल्लंघन किया। उन्होने महिलाओं से शराब व अफीम के अड्डों पर तथा विदेशी कपड़ा बेचने वाली दुकानो पर धरना देने के लिये कहा। इस आन्दोलन में महिलाओं ने बडी संख्या में भाग लिया इस सभी महिलाओं का नेतृत्व श्रीमती सरोजनी नायडू ने किया । उत्तर प्रदेश में बुन्देलखण्ड का क्षेत्र तो जैसे स्वराज्य आन्दोलन का कैम्प बना हुआ था। उत्तर प्रदेश में उमा नेहरू, स्वरूपरानी नेहरू, सरला भदौरिया, कमला नेहरू, विजय लक्ष्मी पण्डित आदि आन्दोलन में अग्रणी नाम थे।

मध्य प्रदेश के बुन्देलखण्ड में महिला सेनानी नमक नियमों और वन विधानो को तोड़ती हुई स्वतन्त्रता के पथ पर निकलकर और गली में प्रभात फेरिया , जुलूस निकाल कर स्कूलों कांलेजों के पथ पर निकलपड़ी, धरना देनी लगी। 1857 में मध्य प्रदेश के गठन के बाद सम्पर्क साधनों के बढ़ जाने के फलस्वरूप यहां की जनता का सम्पर्क कार्य तेज था। सरकार द्वारा क्रूर दण्ड का प्रयोग करने के बाबजूद ये महिला दल डरा नही। जबलपुर की प्यारी बाई ठकुराईन ने जंगल सत्याग्रह में भाग लेकर अपनी वीरता का परिचय दिया। वहीं श्रीमती सुभद्रा कुमारी ने अपनी ओजस्वी कलम द्वारा तथा अपने कार्यों के द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन को नई दिशा प्रदान की। सागर जनपद के यमुना बाई का नाम स्वर्ण अक्षरो में लिखा जायेंगा। मध्य प्रदेश में अंगेज हुकूमत की नृशसता ने वन नियमों को तोड़ने के कारण तीन आन्दोलन कारी महिलाओं को जान से मार डाला। महिलाओं पर लाठी कोड़े और छड़ी की बरसात की गई तथा भद्दी गालियाँ दी गई। जेल में केवल तीन मास के छोटें बच्चो के साथ माताओं को रहने दिया जाता था। इसिलिये इनके बच्चे घरो में अनाथ की तरह रहे। पुरूषों के आन्दोलन में जेल चले जाने के कारण घर का आर्थिक संतुलन विगड़ गया इन सब तकलीफों को महिलाओं ने हंसते हंसते सहा यहां तक की घर पर पत्ति, बच्चे की बीमारी आदि अवस्थाओं में भी ये माफी मागने को तथा जेल से छूटने के लिये राजी नहीं हुई। महिलाओं के उत्साह की यह स्थिति पूरे देश में थी।

निसन्देह स्वतन्त्रता संग्राम में महिलाओं का योगदान हमेशा ही रहा ,लेकिन इस आन्दोलन में 17 हजार महिलायें जेल में थी। इस अभूतपूर्व लहर ने न केवल बिट्रिश सरकार को बल्कि अपने जन समूह को भी आश्चर्य में डाल दिया। 7 अप्रेल 1934 को महात्मा

गांधी द्वारा इस आन्दोलन को समाप्त कर दिया गया। अब पूरा संसार यह समझ चुका था कि भारतीय अपनी स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये हिंसा अहिंसा किसी भी साधन को अपना सकता है और इन्हें गुलाम बनाकर नही रखा जा सकता। इन आन्दोलनों के परिणाम स्वरूप ही अंग्रेज 1947 में भारत छोड़ने को विवश हो गयें।

सन् 1942 में क्रिप्स मिशन का भारत वर्ष पर आगमन हुआ उसकी असफलता तथा भारतीयों पर बढता आर्थिक दबाव इन सबके कारण महात्मा गांधी ने एक बार पुनः विट्रिश सराकर की नींव को हिलाने की दिशा में सक्रिय कदम उठाने के लिये जन साधारण को नेतृत्व प्रदान किया आन्दोलन का प्रारम्भ 1941 के व्यक्तिगत सत्याग्रह से हुआ, किन्तु सन् 1942 के वर्धा बैठक में भारत छोडो प्रास्ताव के द्वारा **"करो और मरो"** का नारा दिया गया।इससे भारतीयों में जो जोश और उत्साह तथा वीरता आई उसने भारत से अंग्रेजी साम्राज्य की जड़ों को हटाकर ही दम लिया। इस आन्दोलन ने विट्रिश भारत में ऐसी भयंकर सामूहिक उथल पुथल कर डाली कि विट्रिश सिहासन ही डोलयमान हो गया। इस आन्दोलन में महिलाओं पर अकथनीय अत्याचार हुए। बंगाल में मांतगिनी हाजरा जो कि 72 वर्ष की थी हाथ में झण्डा लिये हुये मारी गयी लेकिन झण्डा हाथ से नही छूटा। अनगिनत महिलायें बलात्कार की शिकार हुई। लेकिन भारत की महिलाओं ने सामूहिक विरोध में जुलूस निकाले और प्रत्येक महिला को आत्मरक्षा के लिये हथियार दिये। विट्रिश सरकार ने संगीनो की नोक पर आसन्न प्रसवा तथा गर्भस्थ महिलाओं को घर से बाहर निकाल दिया। श्रीमती अरूण आसफ अली सुचेता कृपलानी और ऊषा मेहता ने भूमिगत होकर आन्दोलन का संचालन किया। कस्तूरबा गांधी ने आगा खॉ महल में अपने प्राण त्याग दिये तथ पक्के सत्याग्रही की भॉति मानव इतिहास के इस महान प्रयास का प्रतीक बन गई।श्रीमंती सरोजनी नायडू ,कमला देवी चट्टोपाध्याय, दुर्गाबाई देशमुख, हंसा महेता, विजय लक्ष्मी पण्डित, श्रीमती इन्दिरा गांधी, जबलपुर की श्रीमती इन्दिरा तिवारी , प्यारी बाई ठकुराईन इन्दुमती राव, फूलमती भटनागर, सुन्दरबाई गौतम, जिन्होने तीन बच्चो के साथ जेल की यात्रा की नरसिंहपुर की अमर शहीद गोरा बाई श्रीमती ललिता बाई, शान्ति देवी विदिशा की मदन देवी नवल, श्री मती जमना देवी राठी हमीरपुर से सरस्वती, देवी झांसी की केसरबाई, डा० सुशीला नय्यैर, जालौन की अनुपमा देवी भदौरिया, प्रेम बाई इत्यादि और

बहुत सी महिलाओं नें इस आन्दोलन में शामिल होकर देश प्रेम का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया।बुन्देलखाण्ड के स्वतन्त्रता आन्दोलन के इतिहास में देशी रियासतो का महात्वपूर्ण योगदान है।सन् 1925 से 1928 तक ओरछा, टीकमगढ समथर, रवनिया धाना तथा बुन्देलखाण्ड के अन्य राज्यों में जन आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। ।सन् 1929 में महात्मा गांधी के चरण बांदा, महोबा आदि स्थानों पर पडे देश के इस कर्ण धारों के मार्गदर्शन से बुन्देलखाण्ड के देशी राज्यों के लोगो में स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिये जो छटपटाहट या बैचेनी थी उसने मूल रूप लेना शुरू किया तथा चरखारी, पन्ना, विजावर, दतिया में आन्दोलन प्रारम्भ हुआ सन 1931 ई0 में छतरपुर के चरणपादुका नामक स्थान पर कर के विरोध में एक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें 30 हजार व्यक्ति शामिल हुये। सरकार द्वारा भंयकर नरसंहार किया गया। झण्डा सत्याग्रह आन्दोलन के अर्न्तगत श्रीमती नन्नू सिंह गम्भीर रूप से घायल हुई। 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में लालाराम बाजपेयी, प्रेमनारायन खारे, लक्ष्मीनारायन नायक, प्रेमनारायन तिवारी इत्यादि सेनानियों को एक वर्ष की कारावास की सजा हुई। 1947 ई0 में उत्तरदायी शासन की स्थापना हेतु श्रीमती विद्यावती चौहान के नेतृत्व में मैहर आन्दोलन में सैकडों महिलाओं ने गिरफ्तारी दीं। श्रीमती सवित्री शर्मा पर लाठी चार्ज हुआ। सन् 1946 में कैविनेट मिशन भारत भेजा गया लेकिन कांग्रेस और मुस्लिम लींग के दृष्टिकोण में मतदभेद बना रहा लेकिन केविनेट मिशन भी भारत में सफल नही हो सका। अन्त में 23 मार्च 1947 को लार्ड माउण्टबेटन भारत का वायसराय बनकर आया और उसकी बनाई योजना को कांग्रेस तथा लींग दोनो ने ही स्वीकार किया और गांधी जी के न चाहने पर भी जुलाई 1947 में विट्रिश संसद में भारतीय स्वतन्त्रता का अधिनियम लागू कर दिया और भारत तथा पक्स्तिान दो नये स्वतन्त्र राष्ट्रों का जन्म हुआ। 15 अगस्त 1947 को भारत को सत्ता हस्तान्तिरित कर दी गई।

इस प्रकार से परतन्त्रता की काली छाया से एक लम्बे कष्ट दायक संघर्ष के बाद भारतीय राष्ट्र का पुर्नजन्म हुआ और भारतीयों के जीवन में स्वतन्त्रता का वह स्वर्णिय पल आया जिसे हम सभी भारतीयों को वर्षों से इन्तजार था ।

सन्दर्भ–ग्रन्थ

हिन्दी सन्दर्भ–ग्रन्थ

*प्रभात कुमार, "स्वतंत्रता संग्राम और गांधी का सत्याग्रह, दिल्ली वि० वि० हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय, 2000

*सिंह, दरयाव, स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी, वाबू बिहारी लाल विश्वकर्मा सरीला, 1967

*बादल, श्याम सुन्दर(संपादक), दीवान शत्रुघ्न सिंह अभिनन्दन ग्रंन्थ, राठ, जी० आर० वी० इ० का०, 1960

*मिश्र, पं० द्वारिकेश (संपादक), अनासक्त मनस्वी, झांसी, भगवानदास बालेन्द्रु अभिनन्दन–समिति, 1983

*शर्मा, डा० एस० के०, डा० उर्मिला, भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन, नई दिल्ली ,एटलाटिक पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 1999

*व्होरा, आशारानी, महिलायें और स्वराज, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग , सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, 1988

*डा० भवानीदीन, वैभव बहे बेतवा धार, कानपुर, साहित्य रत्नालय, 1998

*डा० भवानीदीन (संपादक) समरमाथा, महोबा बसंत प्रकाशन 1995

*गुप्ता, विश्वप्रकाश, मोहिनी, स्वतन्त्रता संग्राम और महिलायें, नई दिल्ली, नमन प्रकाशन 1999

*डा० भवानीदीन, प्राचीरें बोलती हैं, भरूआ सुमेरपुर, सन्दर्शिता, 2001

स्मारिका, पत्र पत्रिकायें पाण्डुलिपियाँ एवं अन्य रिपोर्ट्स

1. अग्रवाल अनिल कुमार (प्र0संपा0) अमर उजाला आगरा, 15 अगस्त 1989
2. अग्रवाल, डोरीलाल एवं अन्य (संपा0 मण्डल)स्मारिका, आगरा, शहीद भगतसिंह स्मारक समिति, 4,5,6, अप्रैल 1986।
3. पटेरिया, विश्वेश्वर द याल स्वातन्त्रय सेनानी, हस्तलिखित अप्रकाशित अभिलेख, महोबा।
4. अवस्थी राजेन्द्र (संपा0)साप्ताहिक हिन्दुस्तान, स्वाधीनता दिवस विशेषांक, दिल्ली हिन्दुस्तान टाइम्स प्रकाशन,17 से 23 अगस्त 1986
5 .गणेश मंत्री (कार्यकारी संपादक)धर्मयुग (सम्पूर्ण स्वतन्त्रता संग्राम भाग दो) बम्बई टाइम्स आफ इण्डिया प्रेस, 14 से 20 अगस्त 1988
6. रावत् श्रीपति सहाय, महान स्वतन्त्रता सेनानी, हस्तलिखित अप्रकाशित अभिलेख, जराखार, हमीरपुर।
7. चतुर्वेदी पं0 बनारसीदास एव अन्य (संपादक मण्डल)स्मारिका, अगरा, शहीद भगत सिंह स्मारक समिति, 9,10 अप्रैल 1985
8. वर्मा, शिव, संस्मृतियाँ, दिल्ली, निधि प्रकाशन, 1985
9. सरल श्रीकृष्ण, क्रान्ति कथायें, उज्जैन, बलिदान भारती दशहरा मैदान, म0 प्र0 1985
10. सिंह शंकर दयाल, भारत छोडो आन्दोलन, नई दिल्ली, प्रकाशन विभाग, भारत सरकार, 1987
11. शुक्ला चिन्तामणि, गांधी युगीन स्वतन्त्रता संग्राम में उ0 प्र0 का योगदान, मथुरा, राष्ट्रीय प्रेस 1988
12. सिंह अयोध्या, भारत का मुक्ति संग्रम, दिल्ली, मैक मिलन कम्पनी, 1987
13. राय, (डॉ0) सत्या, भारत में राष्ट्रवाद, दिल्ली, हिन्दी माध्यम कार्यान्वय निदेशालय 1987
14. खत्री, रामकृष्ण, शहीदों की छाया मे, हैदराबाद, हिन्दी प्रचार सभा 1983
15. गुप्त, मन्मनाथ, भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन का इतिहास, दिल्ली, आत्मा राम एण्ड सन्स 1986

PUBLISHED MATERIALS-SECONDARY SOURCE

1.मिश्र द्वारिकेश–	बुन्देलखण्ड अरजरिया अभिनन्दन ग्रन्थ– सम्पाद श्रीराम प्रेस, झाँसी से 1983 ई0 मेप्रकाशित अनासक्त मनस्वी।
2.भट्टाचार्य एस0 पी0 –	सूचना विभाग, उत्तरप्रदेश, लखनऊ से 1963 ई प्रकाशित स्वतन्त्रता संग्राम सैनिक, भाग –1 (झाँ मण्डल)
3.पाठक एस0 पी0 –	समानन्द्र विघा भवन, नई दिल्ली से 1987 ई0 प्रकाशित – झाँसी ड्यूरिंग दि ब्रिटिश रूल।
4.केला भगवान दास–	प्रेस इलाहाबाद द्ररा प्रकाशित – भारतीय स्व ीनता आन्दोंलन
5.डा एम0पी0जायसवाल–	ए ज्योग्राफिक स्टडी आफ बुन्देंलखण्ड
6.गुप्त मन्मथनाथ –	आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली से 1986 ई0 प्रकाशित–
7.विधालंकार जयचन्द्र –	हिन्दी भवन, इलाहाबाद–लखनऊ से 1952 ई0 प्रकाशित– ए हिस्ट्री ऑफ इण्डिया
8.के0एनटोनोबा प्रोगरेश–	पब्लिसर मास्को, रूस से1973 ई0 में प्रकाशित– हिस्ट्री आफ इण्डिया।
9.भगवान दास खरे, भगवान दास श्रीवास्तव–	विचार प्रकाशन दिल्ली से 1982 ई0 में प्रकाशित बुन्देलो का इतिहास
10.डा0 बी0 पट्टाभि सीताराम्मैया–	सस्ता साहित्य मण्डल, नई दिल्ली से 1946 ई0 प्रकाशित– काँग्रेस का इतिहास, भाग –3
11.गुप्त मंमथनाथ –	एच0 चन्द्र एण्ड कम्पनी, नई दिल्ली से 1980 ई0 प्रकाशित – भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन क इतिहास
12.रामनाथ सुमन –	सूचना विभाग, लखनऊ से 1969 ई0 मुं प्रकाशि उत्तर प्रदेश में गांधी जी
13.वर्मा व्रन्दावन लाल –	मयूर प्रकाशन, झाँसी से 1965 ई0 में प्रकाशि झाँसी की रानी।
14.भगवान दास महौर–	द आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली से 1984 ई0 प्रकाशित यश की धरोहर

15.त्रिपाठी मोती लाल – बुन्देलखण्ड दर्शन
16.बरगेस जेम्स – दि क्रोनोलॉजी आफ इण्डियन हिस्ट्री
17.कर्निंधम ऐलेक्जेण्डर – दि एन्सियन्ट ज्योग्राफी ऑफ इण्डिया
18.श्रीवास्तव खुशाली लाल दि रिबोल्ट आफ 1857 इन सेन्ट्रल इण्डिया एण्ड मालवा 1966
19.सर जी0 ए0 ग्रीथ – ज्योग्राफिक सर्वे आफ इण्डिया, वोल्यूम–1,भाग –1
20.सिन्हा एस0 एन0 – दि रिबोल्ट आफ 1857 इन बुन्देल खण्ड
21.डा0 कृष्ण लाल हंस – बुन्देली और उसके क्षेत्रीय रूप
22.विपिन चन्द्र – फ्रीडम हिस्ट्री
23.गोरेलाल तिवारी– काशी नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी द्वारा प्रकाशित बुन्देल खण्ड का संक्षिप्त इतिहास
24.सारदेसाई जी0एस0– न्यू हिस्ट्री आफ दि मराठा वाल्यूम
25.सरकार जे0 एन0– फाल आफ दि मुगल एम्पायर, जिल्द–3
26.शंकर सुल्तान पुर– हिन्द पॉकेट बुक्स, दिल्ली से 1975 ई0 मे प्रकाशित – क्रान्तिकारी आजाद
27.नागर वाई0 ए0 एल0– वी गोडसे माँझा प्रवास–हिन्दी अनुवाद शीर्षक – आँखों देखा गदर
28.पाठक लक्ष्मी प्रसाद– सम्पादक, स्वाधीन प्रेस, झांसी से 1975 ई0 मे प्रकाशित –पं0 परमानन्द अभिनन्दन ग्रन्थ
29.कौर एम0 ए0 – रोल ऑफ द वोमेन इन द फ्रीडम स्ट्रगल
30.आशारानी व्होरा– भारतीय नारी दशा और दिशा, नेशलन पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली
31.विपिन चन्द्र– भारत का स्वतन्त्रता संघर्ष 1998
32.विजय लक्ष्मी पंडित– दि स्कोप आफ हैपीनेस
33.सुरेन्द्रनाथ सेन– 1857 अठारह सौ सत्तावन
34.श्याम लाल साहू– विन्ध्य प्रदेश के राज्यों का स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास।
35.ऐटकिन्शन सी0यू0– हिस्ट्रीज इंगेजमैंन्ट्स एण्ड सनद्स।
36.सिंह एस0– फ्रीडम मूवमेंट इन दिल्ली 1858 से 1919,1992, नई दिल्ली।
37.डा0 भगवानदास गुहा महाराजा छत्रसाल बुन्देला।
38.इम्पै तथा मेस्टन– झांसी सेटिलमन्ट रिपोर्ट, 1892

39.के0पी0जयसवाल– अंधकार युगीन भारत

40.बेनी प्रसाद बाजपेयी– सन् 1857 का विद्रोह

41.गौरी शंकर द्विवेदी– बुन्देल वैभव

42.डा0 ताराचन्द्र– भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन का इतिहास

43.डॉक– हिन्दुस्तान का इतिहास, भाग–3

44.काल मार्क्स– भारतीय इतिहास पर टिप्पणियां।

45.द्वारिका प्रसाद मिश्र– मध्य प्रदेश स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास

46.पट्टाभि सीतारम्मैया कांग्रेस का इतिहास, पहला और दूसरा खण्ड, सस्ता साहित्य मण्डल नई दिल्ली, 1948 में प्रकाशित।

47.रामनाथ सुमन– उ0प्र0 में गांधी जी, 1969 में प्रकाशित

48.गोरेलाल तिवारी– बुन्देलखण्ड का संक्षिप्त इतिहास

49.सर सुन्दर लाल– भारत में अंग्रेजी राज्य दिल्ली

50.शालिनी सक्सेना– स्वाधीनता आन्दोलन में मध्य प्रान्त की महिलायें

51.दीनानाथ व्यास काव्यालंकार– अगस्त सन् 1942 का महान विप्लव

52.आशारानी व्होरा– स्वतन्त्रता सेनानी महिलायें, राजधानी ग्रन्थसागर दिल्ली

53.आशारानी व्होरा– महिलायें और स्वराज्य, राजधानी ग्रन्थसागर दिल्ली

54.ताराचन्द्र– भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास 1967 नई दिल्ली

55.जिनकिन्सन ई0जी0– झांसी सेटिलमेन्ट रिपोर्ट, इलाहाबाद 1871

56.भगवान दास माहौर– लक्ष्मीबाई रासो

57.डा0 भागीरथ त्रिपाठी" बागीश्वर शास्त्री"– बुन्देलखण्ड की प्राचीनता

58.मिश्रा, केशवचन्द्र– नागरी प्रचारिणी सभा, काशी से 1953 ई0 में प्रकाशित– चन्देल और उनका राजत्व काल।

59.रामगोपाल– ज्ञान मंडल लिमिटेड, बनारस, उ0प्र0 से 1953 ई0 में प्रकाशित' भारतीय राजनीति

60.भट्टाचार्य सच्चिदानन्द हिन्दी समिति, उत्तर.प्रदेश लखनऊ से 1976 ई0 में प्रकाशित– भारतीय इतिहास शब्दकोष।

62.मुंशी श्याम लाल– तवारीख बुन्देलखण्ड 1884 ई0
63.ग्रान्ड डफ– मराठों का इतिहास
64.श्री निवास बालाजी हर्डिकर– अठारह सौ सत्तावन
65.दीवान प्रतिपाल सिंह बुन्देलखण्ड का इतिहास
66.सुन्दरलाल– भारत में अंग्रेजी राज्य
67.विधाधर महाजन– आधुनिक भारत
68.डा0 रामेश्वर प्रसाद अग्रवाल– बुन्देली भाषा का शास्त्रीय अध्ययन
69.कृष्ण रमाकान्त गोखले– स्वातंत्रय लक्ष्मी "झांसी की रानी"
70.वासुदेव गोस्वामी– विद्रोही बानपुर
71.रायबहादुर हीरालाल– सागर सरोज
72.शंकर दत्तात्रेय जावड़ेकर– आधुनिक भारत

A National of India, New Delhi

1- foreign Department political consultation 16-11-1842,

2- Foreing Department political consultation Letter Dated 8 NoV. 1858, piate No.-20

3 Foreing Department political consultation,11 June 1817, file No 14

4- Foreing Department political consultation persion letter No. 256-15-4-1856

5- Foreing Department secret consultation, 18 July 1859, F. No 188

6- Foreing secret consultation, 18 December, 1857,

7- Foreing Department political proceeding consultation 17-1-1842,file No. 6-12

8- Foreing Department secret consultation, 28 May 1858, F. No. 151-55

9- Foreing Department political consultation, 26-10-1817,F No 49

10- Foreing Department political consultation,letter Dated 31 Dec.

11 Foreing Department political consultation,1858, F. No. 2131

12- Foreing Department political consultation,letter Dated 30 Dec. , 1859, . F. No. 283

13- Foreing Department political consultation,7-4-1817,.F. No.62

14- Foreing Department secret consultation, 30 April 1858, F.No. 145

15- introductory notr to discrptive Liet oy recarde oy The Bundelkhand politicl Agency, notionrl Recard office, New Deili.

1- Foreing Deptt.1841-44political July--Sept, 1841,collection No. 12

2- Foreing Deptt. 1838-39 political Apiel-June 1838, collection No. 10

C"National of India, New, Bhopal

1- file no.41, 14 july 1857, 13 aug. 1857.

2- file no.78, 14 oct. 1857

3- file no. 160, year 1832

Other historical works

1- S.N. Sen - eighteen fifty seven.

2- S.B. Choudhari - the aries of the indian muting 1857-59 (Calcutta 1965)

3- W.melleson - the revalt in central india 1857-59

4- Ramesh Chandra Dutta - Economic History of India 1757-1837

5- H.A. Stark - The case of the bood (1932)

6- Long John - Wanderings of India (London 1859)

7- D.V. Tahmankar - The Rani of jhansi (London 1958)

8- A. Duff - The Indian Rebelion- its cause and results.

9- R.S. Sharma - Making of modern India.

10- Lee Warner - The Protective Princes

11- T.R. Holm - A history of the Indian muting (London 1858)

12- G.R. Alreigh Maichay - The Chief of Central India

13- C.H. Philip - The East India Company (1940)

14- H.H. Wilson - The History of British India 1805-1838

15- Lee Warner - The protective Princes of India (London 1894)

16- Dr. M.P. Jayaswal - A Linguistic Study of Burdely.

17- Banerji - Indian Constitutional Documents Vol. II, (Calcutta 1945).

18- C.V.Aitchison - Histories Engagement and Sanads (1931)

19- The Countee Of Minto - Lord Minto in india (London 1880)

20- Ramsay muir - The Making of British India.

List Of Institution and Libraries Visited

1- museum Libraly Jhansi (U.P.)
2- Museum Library, Indore
3- National Archivers of India, Bhopal
4- Central Library, Rewa
5- Public Relations Office Library Shivpuri (M.P.)
6- Govt. Records Room, Satpura, Bhopal
7- Library of Information Department
8-Govt. Distt. Library Jhansi
9-Maharaja College Library Chattarpur

महिला स्वतन्त्रता सेनानियों के चित्र
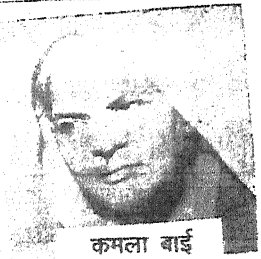
कमला बाई जैन

श्रीमती सरस्वती देवी हमीरपुर

श्री मती विद्यावती चतुर्वेदी

रानी राजेन्द्र कुमारी

सावित्र देवी देशी रियासतों की महान क्रान्तिकारी

कंचन देवी कटेरा

श्रीमती केशरबाई

दीवान शत्रुघन सिंह भाई परमानन्द के साथ

श्रीमती रमादेवी हमीरपुर

श्रीमती कमलाबाई बडोनिया सागर

श्रीमती उर्मिला कोश्ठा राठ

महान क्रान्तिकारी पं०परमानन्द

श्री रज्जब अली आजाद की पत्नी महोबा

रानी लक्ष्मी बाई
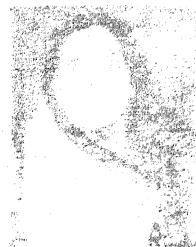
श्री मती सरजू देवी पटैरिया

1942 की अगसत क्रान्ति में महिलाओं का योगदान

श्रीमती भुवनेश्वरी देवी हमीरपुर

श्रीमती हल्की बाई झांसी

श्रीमती कस्तूरी देवी जालौन

श्रीमती कमला बाई सागर

श्रीमती पार्वती बाई गढाकोटा
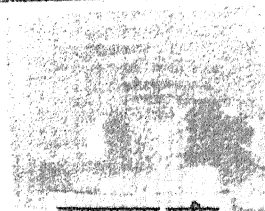
चरणपादुका शहीद स्थल

श्रीमती सावित्री देवी झांसी
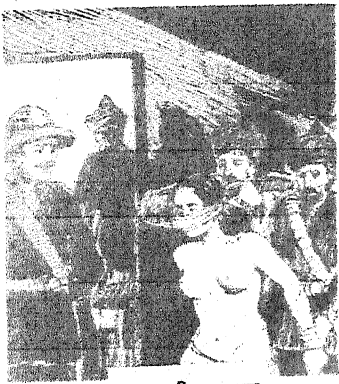
1942 की अगस्त क्रान्ति
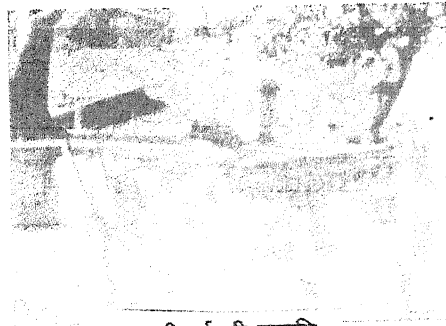
लक्ष्मीबाई की समाधि

अगस्त क्रान्ति में महिलाओं पर हुये अमानवीय अत्याचार
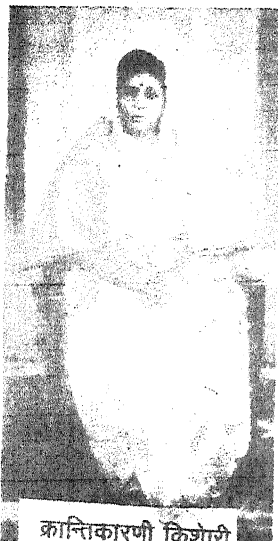
क्रान्तिकारणी किशोरी देवी

अगस्त क्रान्ति में महिलाओं पर हुये अमानवीय अत्याचार

जेल में अमानवीय यातनायें

झण्डा सत्याग्रह में ये महिला सहभागिता

सत्याग्रह में भयंकर अत्याचार

महारानी लक्ष्मीबाई अंग्रेजो से युद्ध करती हुई

एक दुलर्भ चित्र सुन्दर बाई जबलपुर अपने दोनो पुत्रो के साथ

सत्याग्रह

चरणपादुका शहीद स्थल

श्री बाबूराम चतुर्वेदी
श्रीमती इन्दिरा गांधी